Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५.
8.4

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

... Sections 18 and 19 Act XXV of 1867.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ अथ वेदाङ्गप्रकाशः ॥



तत्रत्यः ।

द्वादशो भागः ॥



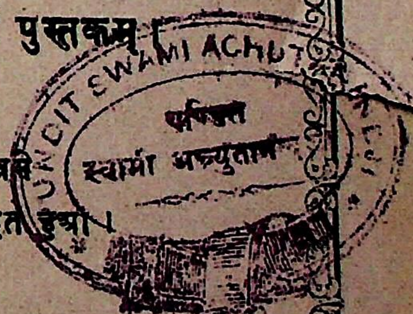
पारिभाषिकः ।

पाणिनिमुनिप्रणीतायामष्टाध्याय्यां नवमो भागः ।

श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वतीकृतव्याख्यासहितः ।

पण्डितज्वालादत्तशर्म्मणा संशोधितः ।

पठनपाठनव्यवस्थायां द्वादशं पुस्तकम् ।



मुनशी समर्थदान के प्रबन्ध से
वैदिक यन्त्रालय प्रयाग में मुद्रित हुआ ।

इस पुस्तक के छापने का अधिकार किसी को नहीं है ।
क्योंकि
इस की रजिस्टरी कराई गई है ।



संवत् १९३९ पौष कृष्णा ९

पहिली बार १००० पुस्तक छपे

मूल्य ।)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्र.)
सर्गे अ
७
जि
ददाति
ने पञ्च
क) प्रत्य
स्वरूप है
त्र से
ाता
.कान्तम
विदत्तेन
ालङ्घा-
जाती
ा निषेध
हैं और
दृष्टान्त
त् जिस
ते ङित्व
ा ङित्व
पिडलाच्
तर्ली है।
कि सन्
॥
ही हुई
पसर्ग से
ई है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अण्) का अपवाद (क) प्रत्यय हो जाता है इस अपवाद के विषय में
र्ग अण् भी होना चाहिये इस लिये ज्ञापकसिद्ध यह परिभाषा है ॥

७—नानुबन्धकृतमसारूप्यम् ॥ अ० ॥ ३ । १ । १३६ ॥

जिन में अनुबन्ध मात्र का भेद हो, वे भिन्न रूप वाले असरूप नहीं कहाते। ददातिदधात्योर्विभाषा) इस सूत्र में विभाषाग्रहण इस लिये है कि (श) प्रत्यय पक्ष में आकारान्त से विहित उत्सर्ग रूप (ण) प्रत्यय भी हो जावे और (अण्) प्रत्यय के समान (ण, श) प्रत्यय भी अनुबन्ध से असरूप और अनुबन्धरहित रूप ही हैं फिर असरूप प्रत्ययों में तो (वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्) इस परिभाषा से उत्सर्गापवाद विकल्प हो ही जाता फिर विभाषाग्रहण व्यर्थ हो कर यह ता है अनुबन्धमात्रभेद के होने से असारूप्य नहीं होता अर्थात् (ण, श) सरूप नहीं हैं कि जो (वाऽसरूप०) परिभाषा से विभाषा हो जावे इस से हण स्वार्थ में चरितार्थ और अन्यत्र फल यह है कि इसी से (गोदः,) यहां (क) अपवाद के विषय में (अण्) उत्सर्ग भी नहीं होता ॥ ७ ॥

संज्ञा दो प्रकार की होती है एक तो जो वाच्य वाचक संकेत से किन्हीं प्रयोजनों के लिये किसी का कुछ नाम रख लेना उस को कृत्रिम संज्ञा कह र जो प्रकृति प्रत्यय के योग से यौगिक अर्थ होता है उस को अकृत्रिम हते हैं। सो लौकिक व्यवहारों में तो यही रीति है कि जहां कृत्रिम और दोनों संज्ञाओं का सम्भव हो वहां कृत्रिम संज्ञा ली जावे अकृत्रिम नहीं। चिदुक्तं गोपालकमानयेति) जैसे किसी ने कहा कि गोपालक को लेआ हां गोपालक किसी निज मनुष्य का नाम है। और दूसरा जो कोई पालन करे उस को गोपाल कहते हैं तो यह अर्थ किसी निज के साथ फिर इस कृत्रिमसंज्ञा वाले निज गोपालक का ही ग्रहण होता है ऐसे रण में जहां कृत्रिम और अकृत्रिम दोनों संज्ञाओं का सम्भव है जैसे पदिक, बहुव्रीहि, तत्पुरुष, वृद्धि, गुण, सवर्ण, सम्प्रसारण, नदी इत्यादि कृत्रिम संज्ञा का ग्रहण हो वा अकृत्रिम का इस लिये यह परिभाषा है ॥

त्रिमाकृत्रिमयोः कृत्रिमे कार्यसम्प्रत्ययः ॥ अ० ॥ १।१।२३ ॥

कृत्रिम और अकृत्रिम दोनों संज्ञाओं में कार्य होना सम्भव हो वहां में कार्य होना निश्चित रहे अकृत्रिम में नहीं इस से व्याकरण में भूधातु त्रिम संज्ञाओं से कार्य लेने चाहिये सुवर्ण आदि धातु संज्ञक से नहीं ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब इस कृत्रिम परिभाषा के होने से दोष आते हैं कि जहां कृत्रिम संज्ञा के लेने से कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं होता जैसे (कर्त्तरि कर्मव्यतिहारे) इस सूत्र में जो कृत्रिम कर्म संज्ञा का ग्रहण होवे तो (देवदत्तस्य धान्यं व्यतिलुनन्ति) यहां कर्त्ता को ईप्सिततम धान्य कर्म के होने से आत्मनेपद होना चाहिये वह यहां इष्ट नहीं है इस लिये यह परिभाषा है ॥

९—उभयगतिरिह भवति ॥ अ० ॥ १ । १ । २३ ॥

इस व्याकरण शास्त्र में दोनों प्रकार का बोध होता है अर्थात् कहीं कृत्रिम और कहीं अकृत्रिम का भी ग्रहण होता है जैसे (कर्मणि द्वितीया) यहां कृत्रिम कर्म संज्ञा और (कर्त्तरि कर्मव्यतिहारे) कृषीवला व्यतिलुनते। यहां अकृत्रिम क्रिया-रूप कर्म का ग्रहण है इस लिये (देवदत्तस्य धान्यं व्यतिलुनन्ति) यहां अकृत्रिम कर्म के होने से (आत्मनेपद) नहीं होता तथा (कर्तृकरणयोस्तृतीया) देवदत्तेन ग्रामो गम्यते, रथेन गच्छति। यहां कृत्रिम करण संज्ञा और (शब्दवैर कलहा-भ्रकण्वमेघेभ्यः करणे) शब्दं करोति शब्दायते। यहां अकृत्रिम कारणसंज्ञा [illegible] जाती है इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ९ ॥

(अध्येता, शयिता) इत्यादि प्रयोगों में इङ् और शीङ् धातु को गुणनिषेध होना चाहिये क्यों कि अनुबन्धों के एकान्तपक्ष में दोनों धातु ङित् हैं और अनेकान्तपक्ष में अनुबन्ध पृथक् भी हैं इस में गुणनिषेध कार्य और इगन्त कार्यी है ॥

१०—कार्यमनुभवन् हि कार्यी निमित्तत्वेनाश्रीयते

कार्य करते हुए कार्यी का निमित्तगुण से आश्रय किया जाता है अ[illegible]त् जिस के आश्रय से कार्य होता हो वही उसका निमित्त कार्यी होता है [illegible]से ङित्त्व गुण का निमित्त इगन्त नहीं कि जो वह ङित्त्व इगन्त से उत्पन्न हुआ हो [illegible] ङित्त्व का निमित्त इगन्त कार्यी होता तो अवश्य गुण का निषेध हो जाता ([illegible]ङलाच् छयितरि०) इस सूत्र में (शीङ्) धातु को गुणपठन ज्ञापक से यह परिभाषा [illegible]कली है। तथा सन्नन्त यङन्त को कहा द्वित्व जर्णु धातु के नुभाग को हो जाता है [illegible] कि सन् का निमित्त जर्णु धातु है (जर्णुनविषति, जर्णुनुविषति) इत्यादि ॥ [illegible] ॥

(प्रणिदापयति, प्रणिधापयति) इत्यादि प्रयोगों में (दा, धा) रूप को [illegible]ही हुई घुसंज्ञा पुगन्त(दाप्, धाप्) को न प्राप्त होने से घुसंज्ञक धातुओं के परे (प्र[illegible]पसर्ग से उत्तर नि के नकार को णत्व न होना चाहिये इसलिये यह परिभाषा क[illegible]ई है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थवान् के ग्रहण में अनर्थक का ग्रहण नहीं होता यह कह चुके हैं सो (राजा) राजन् शब्द में कनिन् प्रत्यय का अन् अर्थवान् है इस लिये अन्नन्त के अकार का लोप होना ठीक है और (साम्ना) यहां सामन् शब्द में मनिन् प्रत्यय का मन् अर्थवान् और अन् अनर्थक है इस समाधान के लिये यह परिभाषा है ॥

१६—अनिनस्मन्ग्रहणान्यर्थवता चानर्थकेन च तदन्तविधिं प्रयोजयन्ति ॥अ० ॥१।१।७२॥

अन्, इन्, अस्, मन् ये जिन सूत्रों में ग्रहण हैं वहां अर्थवान् और अनर्थक दोनों से तदन्तविधि होता है। अन् में तो अर्थवान् और अनर्थक दोनों के उदाहरण दे दिये। इन् (दण्डी) यहां इनि प्रत्यय के अर्थवान् इन्नन्त को दीर्घ और (वाग्मी) यहां (मिनि) प्रत्यय के अनर्थक इन् को दीर्घ होता है। अस् (सुपयाः) यहां अर्थवान् (असुन्) प्रत्यय के अस् को दीर्घ और (पीतवाः) यहां पीत पूर्वक (वस) धातु से क्विप् हुआ है सो वस् में अनर्थक अस् को दीर्घ होता है। मन् (सु+टु शर्म यस्याः सा सुशर्मा) यहां तो अर्थवान् मन्नन्त से ङीप् का निषेध है और (सुप्रथिमा) यहां इमनिच् प्रत्यय का इमन् अर्थवान् और मन् भाग निरर्थक को भी ङीप् का निषेध होता ही है॥ १६॥

और आगे एक परिभाषा लिखेंगे कि समीपस्थ का विधान वा निषेध होता है इस में यह दोष आता है कि जैसे (लिङ्सिचावात्मनेपदेषु) इस सूत्र की अनुवृत्ति (उश्च) इसमें आती है। सो जो समीपस्थ के विधि निषेध का नियम है तो आत्मनेपद की अनुवृत्ति आनी चाहिये क्यों कि आत्मनेपद की अपेक्षा में (लिङ्,सिच्) दूर हैं और (लिङ् सिच्)की अनुवृत्ति के विना कार्यसिद्धि नहीं हो सकती इस लिये यह वक्ष्यमाण परिभाषा है ॥

१७—एकयोगनिर्दिष्टानां सह वा प्रवृत्तिः सह वा निवृत्तिः ॥

जो एक सूत्र में निर्दिष्ट किये पद हैं उन की अन्य सूत्रों में एक साथ प्रवृत्ति और एक साथ निवृत्ति हो जाती है इस से (उश्च) सूत्र में लिङ् सिच् की भी अनुवृत्ति आ जाती है। इसी प्रकार अन्यत्र बहुत स्थलों के सूत्र वार्त्तिकों में यह रीति दीख पड़ती है कि जैसे कहीं दो पदों की अनुवृत्ति आती है उन में से जब एक को छोड़ना होता है तब द्वितीय पद को फिर के पढ़ते हैं तो यही प्रयोजन है कि उन दोनों पदों की अनुवृत्ति एक साथ ही चलती है उस मेंसे एक को छोड़ के दूसरे पद की अनुवृत्ति नहीं जा सकती ॥ १७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब इस पूर्व परिभाषाके होनेमें यह दोषहै कि (अलुगुत्तरपदे) इस सब सूत्र का अधिकार चलता है उस में अलुक् अधिकार तो आनङ् विधान से पूर्व २ ही रहता है फिर उत्तरपदाधिकार पाद पर्य्यन्त क्योंजावे इस लिये यह परिभाषा है ॥

१८—एकयोगनिर्दिष्टानामप्येकदेशानुवृत्तिर्भवति ॥ अ० ॥ ४ । १ । २७ ॥

एक सूत्र में पृथक् पठित पदों में से भी कहीं एकदेश की अनुवृत्ति होती है इस से उत्तरपदाधिकार का पादपर्यन्त जाना सिद्ध हो गया । तथा (दामहायनान्ताच) यहां पूर्वसूत्र से संख्या की अनुवृत्ति आती है और अव्यय की नहीं और (पचात्तिः) इस सूत्र में पूर्वसूत्र से मूल शब्द की अनुवृत्ति आजाती है पाक की नहीं आती इत्यादि ॥ १८ ॥

(अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः) यहां प्रत्यय ग्रहण से सवर्ण का निषेध किया है इस का यही प्रयोजनहै कि (सनाशंसभिक्षउः) इत्यादि में उ आदिप्रत्यय अपने सवर्णीदीर्घ आदि के ग्राहक न हों सो जब स्त्रीप्रत्यय को छोड़ के अन्यदीर्घ प्रत्यय से किसी अर्थ की प्रतीति ही नहीं होती तो दीर्घप्रत्यय नहीं होसकता इस लिये प्रत्यय ग्रहण के व्यर्थ होने से यह ज्ञापक होता है कि इस सूत्र में यौगिक प्रत्यय का निषेध है (प्रतीयते विधीयते भाव्यतेऽनेनाऽसौ प्रत्ययः, न प्रत्ययोऽप्रत्ययः) इसी व्याख्यान से यह परिभाषा निकली है ॥

१६—भाव्यमानेन सवर्णानां ग्रहणन्न ॥ अ० ॥ १ । १ । ६९ ॥

जो विधान किया जाता है उस से सवर्णों का ग्रहण नहीं होता जैसे (त्यदादीनामः) यहां अकार का विधान किया है उस से दीर्घ सवर्णों का गहण नहीं होता और (ज्यादादीयसः) यहां ईयसुन्प्रत्यय के ईकार को आकारादेश न कहते किन्तु अकार कहते तो सवर्णग्रहण से दीर्घ हो ही जाता फिर निश्चित हुआ कि यहांभी पूर्ववत्भाव्यमान अकार सवर्ण ग्राही नहीं हो सकता इस लिये दीर्घ कहा इत्यादि ॥ ९ ॥

यदिभाव्यमान से सवर्णों का ग्रहण नहीं होता तो (दिवउत्, ऋतउत्) इन सूत्रों में भाव्यमान उकार को तपर करना व्यर्थ है । क्यों कि तपर करने का यही प्रयोजन है कि उकार तत्काल का गाहक हो अपने सवर्णों काग्रहण न करे फिर (अणुदित्०) परिभाषा से सवर्णग्रहण तो प्राप्त ही नहीं उकार तपरक्यों पढ़ा इस लिये यह परिभाषा है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०—भवत्युकारेण भाव्यमानेन सवर्णानां ग्रहणम् ॥ अ० ॥ ६ । १ । १८५ ॥

भाव्यमान उकार से सवर्णों का ग्रहण होता है इस से पूर्वोक्त उकार में तपर सार्थक हुआ और अन्यत्र फल यह है कि (अदसोऽसेर्दादुदोमः) यहां भाव्यमान ह्रस्व उकार सवर्णों का ग्राही होता है तभी (अमूभ्याम्) आदि में दीर्घ ऊकारादेश हुआ ॥ २० ॥

(गवेहितं, गोहितम्) यहां समास में चतुर्थ्येकवचन प्रत्यय का लुक् किये पीछे (प्रत्ययलोपे०) सूत्र से प्रत्ययलक्षण कार्य मानें तो (गो) शब्द के ओकार को अवादेश प्राप्त है इस लिये यह परिभाषा है ॥

२१—वर्णाश्रये नास्ति प्रत्ययलक्षणम् ॥

वर्ण के आश्रय से जो कार्य्य कर्त्तव्य होतो प्रत्ययलक्षण न हो अर्थात् उस प्रत्यय को मान के वह कार्य्य न होवे इस लिये अच् को मान के अवादेश नहीं होता इत्यादि ॥ २१ ॥

(अतः कृकमिकंस०) इस सूत्र में कंस शब्द का पाठ व्यर्थ है क्योंकि उणादि में (कमिः सः) इस सूत्र से कम धातु का कंस शब्द बना है कम धातु के सामान्य प्रयोगों के ग्रहण में कंस शब्द का भी ग्रहण हो जाता फिर कंस शब्द क्यों पढ़ा इस लिये यह परिभाषा है ॥

२२-उणादयोऽव्युत्पन्नानि प्रातिपदिकानि ॥ अ० ॥ १ । १ । ६१ ॥

उणादि प्रातिपदिक अव्युत्पन्न अर्थात् उनका सर्वत्र प्रकृति, प्रत्यय, कारक आदि से यौगिक यथार्थ अर्थ नहीं लगता अर्थात् उणादि शब्द बहुधा रूढ़ि होते हैं इस लिये (अतः कृकमिकंस०) सूत्र में कंसग्रहण सार्थक है । इसी प्रकार (प्रत्ययस्य लुक्०) इस सूत्र से (परशव्य) शब्द का लुक् कहा हुआ उकार प्रत्यय होने से भी अव्युत्पन्नपक्ष मान के परशु शब्द के उकार का लुक् नहीं होता । इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ २२ ॥

(देवदत्तश्चिकीर्षति) इत्यादि प्रयोगों में देवदत्त आदि शब्दों को सन्नन्त के धातु संज्ञा आदि कार्य्य प्राप्त हैं सो क्यों नहीं होते । जो देवदत्त के सहित सब वाक्य की धातु संज्ञा हो जावे तो (सुपोधातु०) इस सूत्र से जो देवदत्त के आगे विभक्ति है उस का लुक् प्राप्त होवे इस लिये यह परिभाषा है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३—प्रत्ययग्रहणे यस्मात्स प्रत्ययो विहितस्तदादेस्तदन्तस्य च ग्रहणं भवति ॥ अ० ॥ १ । ४ । १३ ॥

जिस से जो प्रत्यय विधान किया हो वह जिस के आदि वा अन्त में हो उसी का ग्रहण हो और जो उस वाक्य में प्रत्यय विधि से पद पृथक् हो उस का सामान्य कार्यों में ग्रहण न हो। इस से सनन्त की धातुसंज्ञा में देवदत्त का ग्रहण न हुआ तो विभक्ति का लुक् भी बच गया इसी प्रकार (देवदत्तो गार्ग्यः) यहां समुदाय को प्रातिपदिक संज्ञा हो तो मध्य विभक्ति का लुक् हो जावे तथा (ऋद्धस्य राज्ञः पुरुषः) इस समुदाय को समास संज्ञा हो तो मध्य विभक्तियों का लुक् प्राप्त होवे इत्यादि इस परिभाषा के अनेक प्रयोजन हैं ॥२३॥

(येन विधिस्तदन्तस्य) इस परिभाषा सूत्र से (दृषत्तीर्णा,परिषत्तीर्णा) इत्यादि प्रयोगों में (रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः) इस सूत्र से दृषद् परिषद् दकारान्त शब्दों से परे धातु के तकार को अनिष्ट नकारादेश प्राप्त है इस लिये यह परिभाषा है॥

२४—प्रत्ययग्रहणे चापञ्चम्याः ॥ अ० ॥ १ । १ । ७२ ॥

जिन सूत्रों में प्रत्यय ग्रहण से कार्य्य होते हैं वहां पञ्चम्यन्त से परे वह कार्य्य न हो अर्थात् पञ्चम्यन्त से परे प्रत्यय ग्रहण में तदन्तविधि न होवे इस से (परिषत्तीर्णा) आदि में धातु के तकार को नकार आदेश नहीं होता इत्यादि ॥२४॥ कुमारीगौरितरा। इत्यादि प्रयोगों में तदन्तविधि माने तो कुमारी शब्द को भी ह्रस्व प्राप्त है इस लिये यह परिभाषा है ॥

२५—उत्तरपदाधिकारे प्रत्ययग्रहणे रूपग्रहणं द्रष्टव्यम् ॥ अ० ॥ ६ । ३ । ५० ॥

(अलुगुत्तरपदे) जो षष्ठाऽध्याय के तृतीयपाद में प्रत्यय निमित्त कार्य है वहां स्वरूप का ग्रहण होना चाहिये अर्थात् तदन्तविधि न हो इस से (कुमारी गौरितरा) यहां कुमारी शब्द को ह्रस्व नहीं होता और रूप ग्रहण से यह भी प्रयोजन है कि (हृदयस्य हृल्लेखयदण्लासेषु) जो इस सूत्र में (२३) वीं परिभाषा के अनुकूल (यत्) और (अण्) प्रत्यय जिस से विहित हों उस उत्तरपद के परे पूर्व को कार्य हो जावे सो इष्ट नहीं है। क्योंकि जो तदन्तविधि हो तो केवल हृदय शब्द से (हृद्यम्,हार्दम्) प्रयोग नहीं बनें इस में लेख ग्रहण ज्ञापक है कि अणन्त उत्तरपद का ग्रहण हो तो लेख शब्द (अण्) प्रत्ययान्त पृथग् ग्रहण व्यर्थ है। इस से यह निश्चित हुआ कि इस उत्तरपदाधिकार के प्रत्ययाश्रितकार्यविधायक सूत्रों में तदन्तविधि नहीं होती॥ २५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(प्रत्ययग्रहणे०) इस २३ वी परिभाषा से (ष्यङः संप्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे) यहां तत्पुरुष में (पुत्र) और (पति) उत्तरपदों के परे (ष्यङ्) को संप्रसारण कहा है तो (ष्यङ्) का जो आदि वा ष्यङन्त को कार्य होगा। इस से (कारीषगन्ध्यायाः पुत्रः कारीषगन्धीपुत्रः, कारीषगन्धीपतिः, वाराहीपुत्रः, वाराहीपतिः) इत्यादि प्रयोग तो सिद्ध हो जावेंगे परन्तु (परमकारीषगन्धीपुत्रः, परमकारीषगन्धीपतिः) इत्यादि प्रयोग नहीं सिद्ध होंगे क्यों कि जिस (कारीषगन्धि) शब्द से (ष्यङ्) प्रत्यय विहित है तो वही जिस के आदि में हो ऐसे (ष्यङ्) का ग्रहण हो सकता है और परम के सहित ग्रहण नहीं हो सकता इस लिये यह परिभाषा है ॥

२६—अस्त्रीप्रत्ययेनानुपसर्जनेन ॥ अ० ॥ ६ । १ । १३ ॥

(तदादि ग्रहणपरिभाषा) स्त्रीप्रत्यय और उपसर्जन को छोड़ के प्रवृत्त होवे इस से सामान्य स्त्रीप्रत्यय (परमकारीषगन्धीपुत्रः) इत्यादि में तदादि ग्रहण के दोष से संप्रसारण का निषेध नहीं होता और (कारीषगन्ध्यामतिक्रान्तोऽतिकारीषगन्ध्यः, अतिकारीषगन्ध्यस्य पुत्रः, अतिकारीषगन्ध्यपुत्रः) यहां ष्यङन्त स्त्रीप्रत्यय उपसर्जन अर्थात् स्वार्थ में अप्रधान है इस लिये संप्रसारण नहीं होता इत्यादि ॥२६॥

(सुप्तिङन्तं पदम्) इस सूत्र में अन्तग्रहण व्यर्थ है क्योंकि जो (सुप्तिङ् पदम्) ऐसा सूत्र करते तो तदन्तविधिपरिभाषा से अन्त की उपलब्धि से (सुबन्त,तिङन्त) की पदसंज्ञा हो ही जाती फिर अन्तग्रहण व्यर्थ हो कर इस परिभाषा का ज्ञापक है ॥

२७—संज्ञाविधौ प्रत्ययग्रहणे तदन्तविधिर्न भवति ॥अ० ॥ १ । ४ । १४ ॥

प्रत्ययों की संज्ञा करने में तदन्तविधि नहीं होती। इस से अन्तग्रहण सार्थक होना तो स्वार्थ में चरितार्थ है और अन्यत्र फल यह है कि (तरप्तमपौ घः) यहां (तरप् तमप्) प्रत्ययान्त की (घ) संज्ञा नहीं होती जो तरप् प्रत्ययान्त की (घ) संज्ञा होजावे तो (कुमारीगौरितरा) यहां घसंज्ञक के परे कुमारी शब्द को ह्रस्व हो जावे सो इस परिभाषा से नहीं होता। और (कृत्तद्धितसमासाश्च) यहां कृत्तद्धित प्रत्ययों में अन्तग्रहण नहीं किया और प्रातिपदिक संज्ञा के होने से तदन्तविधि भी नहीं हो सकती इस लिये कृत्तद्धित में अर्थवान् की अनुवृत्ति करने से कृदन्त और तद्धितान्त ही अर्थवान् होते हैं केवल (कृत्,तद्धित) नहीं क्यों कि (न केवला प्रकृतिः प्रयोक्तव्या न च केवलप्रत्ययः) इस महाभाष्य के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमाण से प्रत्ययान्त ही अर्थवान् होता है। और (बहुच्) प्रत्यय प्रातिपदिक से नहीं होता किन्तु सुबन्त से पूर्व बहुच् कहा है बहुच् प्रत्यय के सहित जो समुदाय है वहां प्रातिपदिक संज्ञा होने की कुछ आवश्यकता नहीं है जैसे (बहुपटवः) यहां बहुच् के होने से पहिले ही अर्थवा पटु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा तो सिद्ध ही है। फिर बहुच् प्रत्यय की विवचा में जिस विभक्ति और वचन का प्रयोग करना हो उस को रख के बहुच् प्रत्यय लाना चाहिये जैसे (पटु, जस्) इस सुबन्त के पूर्व बहुच् आकर (बहुपटवः) प्रयोग सिद्ध हो गया। इसी प्रकार अन्य प्रयोगों में जान लेना चाहिये और (सर्वकः) (विश्वकः) इत्यादि में जो अकच् प्रत्यय मध्य में होता है उस के आगे परिभाषा लिखी है कि (तदेकदेशभूतस्तद्ग्रहणेन गृह्यते (सर्व) प्रातिपदिक के एक देश के मध्य में आया अकच् उसी प्रातिपदिक के ग्रहण से ग्रहण किया जाता है ॥ २७ ॥

(२३) वी परिभाषा के होने में ये भी दोष हैं कि (अवतप्ते नकुलस्थितं त एतत्) यहां क्त प्रत्ययान्त स्थित शब्द के साथ सप्तम्यन्त का समास कहा है सो गतिसंज्ञक अव शब्द के सहित सप्तम्यन्त और कर्तृकारक वाची नकुल शब्द के सहित क्तान्त कृदन्त स्थित शब्द है इस कारण समास नहीं प्राप्त है इसलिये यह परिभाषा है॥

२८–कृद्ग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणं भवति ॥ अ० ॥ १। ४। १३ ॥

जहां कृत् प्रत्यय के ग्रहण से कार्य हो वहां उस कृदन्त के पूर्व गतिसंज्ञक और कारक हो तो भी वह कार्य हो जावे। इस से गति संज्ञक अव और कारक नकुल के होने से भी (समास हो जाता है तथा) सांकूटिनम् (यहां (इनुण्) कृत्प्रत्ययान्त से (अण्) तद्धित होता है सो जो (कूटिन्) शब्द से करें तो उसी के आदि को वृद्धि होवे इस परिभाषा से गतिसंज्ञक (सम्) के सहित के (अण्) के होने से (सम्) के सकार को वृद्धि होती है इत्यादि अनेक प्रयोजन (हैं गतिरनन्तरः) इस सूत्र में (अनन्तर) ग्रहण इस परिभाषा के होने में ज्ञापक है॥

(येन विधिस्तदन्तस्य) इस परिभाषा सूत्र में समान्य करके तदन्त विधि कही है विशेषविषय में उस का अपवादरूप वक्ष्यमाण परिभाषा है॥

२९—पदाङ्गाधिकारे तस्य तदन्तस्य च ॥ अ० ॥ १। १। ७२ ॥

उत्तरपदाधिकार अर्थात् षष्ठाध्याय के तृतीयपाद में और अङ्गाधिकार में जिस को कार्य्य विधान हो वा जिस के आश्रय हो उस का और वह जिस के अन्त में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो उन दोनों का ग्रहण होता है जैसे (इष्टकेषीकामालानां चिततूलभारिषु) इस सूत्र में (इष्टकचितं चिन्वीत) यहां उसी इष्टका शब्द को ह्रस्व और (पक्वेष्टकचितं चिन्वीत) यहां तदन्त को भी ह्रस्व होता है (इषीकतूलेन, मुञ्जेषीकतूलेन, मालभारिणी कन्या, उत्पलमालभारिणीकन्या) यहां भी इषीका और माला शब्द को दोनों प्रकार ह्रस्व हुआ है। अङ्गाधिकार में (सान्तमहतः संयोगस्य) महान् यहां उसी महत् शब्द की उपधा को दीर्घ और (परममहान्) यहां तदन्त को भी होता है इत्यादि अनेक उदाहरण महाभाष्य में लिखे हैं ॥ २९ ॥

(एकाचो द्वे प्रथमस्य) यहां अनेकाच् धातु के प्रथम एकाच् अवयव को द्वित्व होता है जैसे (जजागार) यहां जा भाग को द्वित्व हुआ है। जो केवल एकाच् धातु है उस में प्रथम एकाच् अवयव कहां है जिस को द्वित्व हो जैसे (पपाच, इयाज) इत्यादि। तथा (एकाच्) शब्द में भी बहुव्रीहि समास है कि एक अच् जिस में हो अर्थात् अन्य एक वा अधिक हल् हों वह (एकाच्) अवयव कहाता है। सो जहां केवल एकही अच् धातु है जैसे (इयाय, आर) यहां (इ, ऋ) धातुओं को द्वित्व कैसे होसके इस लिये यह परिभाषा है ॥

३०—व्यपदेशिवदेकस्मिन् ॥ अ० ॥ १ । १ । २१ ॥

सत् निमित्त के होने से मुख्य जिस का व्यपदेश (व्यवहार) हो वह व्यपदेशी कहाता है और एक वह है जिस के व्यवहार का कोई सहायी कारण नहो उस एक में व्यपदेशी के तुल्य कार्य होता है इस से (एकाच्) धातु (पपाच) आदि में द्वित्व और केवल एक ही अच् धातु (इयाय, आर) आदि में भी द्विर्वचन हो जाता है। क्योंकि एकाच् और एक ही अच् धातु की अपेक्षा में अनेकाच् व्यपदेशी है तद्वत् कार्य मानने से सर्वत्र द्वित्व होजाता है (आदेशप्रत्यययोः) इस सूत्र में प्रत्यय के अवयव सकार को मूर्द्धन्य कहा है सो (करिष्यति) आदि में तो हो ही जाता है। और (स देवान् यक्षत्) यहां यक्षत् क्रिया में केवल सिप् वि: रक्ष का सकार मात्र प्रत्यय है उस को (व्यपदेशिवद्भाव) मान के मूर्द्धन्य होता है। इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं। लोक में भी यह व्यवहार होता है कि किसी के बहुत पुत्र हैं वहां तो ज्येष्ठ मध्यमें और कनिष्ठ का व्यवहार बनता है और जिस का एकही पुत्र है तो वहां उसी में ज्येष्ठ मध्यम और कनिष्ठ व्यवहार होता है ॥ ३० ॥

तद्धित में जैसे नड़ादि, गर्गादि और शिवादि इत्यादि प्रातिपदिकों से अपत्य आदि अर्थों में अण् आदि प्रत्यय कहे हैं सो उत्तमनड़ परमगर्ग और महाशिव आदि प्रातिपदिकों से तदन्तविधि में क्यों नहीं होते इस लिये यह परिभाषा है॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१—ग्रहणवता प्रातिपदिकेन तदन्तविधिः प्रतिषिध्यते ॥ अ० ॥ ५ । २ । ८७ ॥

प्रत्यय का ग्रहण करने वाले प्रातिपदिक से तदन्तविधि नहीं होता इस लिये (उत्तमनड़) और (परमगर्ग) आदि प्रातिपदिकों से (फक्) और (यञ्) आदि प्रत्यय नहीं होते और इस परिभाषा के निकलने का ज्ञापक (पूर्वादिनिः, सपूर्वाच्च) ये दोनों सूत्र हैं क्योंकि जो पूर्व शब्द से विधान किया इनि प्रत्यय तदन्त से भी होजाता तो द्वितीय सूत्र व्यर्थ हो जाता फिर व्यर्थ हो कर यह ज्ञापक होता है कि यहां तदन्तविधि नहीं होता ॥ ३१ ॥

सूत्रान्त प्रातिपदिकों से (ठक्) और दशान्त आदि प्रातिपदिकों से (ड) आदि प्रत्यय कहे हैं सो (३०) वीं परिभाषा से (व्यपदेशिवद्भाव) मान कर केवल सूत्र और दश आदि से (ठक्) तथा (ड) आदि प्रत्यय क्यों नहीं हो जाते इस लिये यह परिभाषा है ॥

३२—व्यपदेशिवद्भावोऽप्रातिपदिकेन ॥ अ० ॥ १ । १ । ७२ ॥

व्यपदेशिवद्भाव की प्रवृत्ति प्रातिपदिकाधिकार को छोड़ के होती है। इसलिये केवल सूत्र आदि शब्दों से ठक् आदि प्रत्यय नहीं होते और इस परिभाषा का ज्ञापक भी (पूर्वादिनिः,सपूर्वाच्च) ये दोनों सूत्र हैं क्यों कि जो यहां व्यपदेशिवद्भाव होता तो (पूर्वान्तादिनिः) ऐसा एक सूत्र कर देते तो सब काम सिद्ध हो जाता फिर पृथक् २ दो सूत्र करने से ज्ञात हुआ कि यहां व्यपदेशिवद्भाव नहीं होता ॥ ३२ ॥

(अचि श्नुधातु०) यहां (श्रियौ, भ्रुवौ) उदाहरणों में तो केवल (अच्) के परे (इयङ्,उवङ्) हो जाते हैं और (श्रियः,भ्रुवः) यहां (इयङ्,उवङ्) न होने चाहिये क्यों कि यहां केवल (अच्) परे नहीं है इस लिये यह परिभाषा है ॥

३३—यस्मिन् विधिस्तदादावल्ग्रहणे ॥ अ० ॥ १ । १ । ७० ॥

जिस प्रत्याहाररूप पर विशेषण के आश्रय से विधि हो वह जिस के आदि में हो उस के परे वह कार्य होना चाहिये इस से अजादि प्रत्यय के परे (इयङ् उवङ्) होते हैं तो (श्रियः, भ्रुवः) यहां अजादि (जस्) में भी दोष नहीं आता। तथा (अवश्यलाव्यम्, अवश्यपाव्यम्) इत्यादि में (वान्तो यि प्रत्यये) सूत्र से यकारादि प्रत्यय के परे वान्तादेश हो जाता है (इको झल्) यहां झलादि सन् लिया जाता है। इत्यादि इस परिभाषा के अनेक प्रयोजन हैं ॥ ३३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम्) इस सूत्र में बहुवचनग्रहण न करते तो भी प्रयोजन सिद्ध हो जाता। क्यों कि एक (तिष्य) और दो (पुनर्वसु) इन तीन के होने से बहुवचन तो प्राप्त ही था फिर द्विवचन के कहने से उसी बहुवचन की प्राप्ति में द्विवचन हो जाता इस प्रकार बहुवचनग्रहण व्यर्थ हो कर ज्ञापक है कि (तिष्य, पुनर्वसु) में कहीं एकवचन भी होता है वहां एकवचन को द्विवचन न हो इस लिये यह परिभाषा है ॥

३४—सर्वो द्वन्द्वो विभाषैकवद्भवति ॥ अ० ॥ १। २। ६३ ॥

दो वा अधिक किन्हीं शब्दों का द्वन्द्वसमास हो वह सब विकल्प करके एकवचन होता है। इस से तिष्य पुनर्वसु के एकवचनपक्ष में द्विवचन हो इस लिये बहुवचनस्थानी का ग्रहण है। तथा इसी परिभाषा से (घटपटम्, घटपटौ, ईपेलीमकूलम्, माथोत्तरपदपदव्यनुपदम्) इत्यादि में भी एकवचन सिद्ध हो जाता है। समाहार द्वन्द्व सर्वत्र एक ही वचन होता है। और यह परिभाषा इतरेतरद्वन्द्वसमास में लगती है इसी से इस के उदाहरण भी सब इतरेतरद्वन्द्व के दिये हैं॥३४॥

(व्यत्ययो बहुलम्) इस से स्य आदि विकरणों का व्यत्यय होना सूत्रार्थ है। तथा (षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा) इस सूत्र से भी षष्ठीयुक्त पति शब्द की घि संज्ञा का वेद में विकल्प है इन दोनों में भाष्यकारने विभाग करके यह परिभाषा सिद्ध की है ॥

३५—वा च्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति ॥ अ० ॥ १। ४। ६ ॥

वेद में सब कार्य विकल्प करके होते हैं जैसे (दक्षिणायाम्) इस सप्तम्यन्त की प्राप्ति में (दक्षिणायाः) ऐसा प्रयोग होता है। इत्यादि अनेकप्रयोजन हैं ॥ ३५ ॥

किसी विद्यार्थी ने (अग्नी) ऐसा द्विवचनान्त शब्द उच्चारण किया जो उस का कोई अनुकरण करे कि (अग्नी इत्याह) तो यहां अनुकरण में साक्षात् द्विवचन के न होने से जो प्रगृह्य संज्ञा न होवे तो इकार के साथ संधि होना चाहिये इस लिये यह परिभाषा है ॥

३६—प्रकृतिवदनुकरणं भवति ॥ अ० ॥ ८। २। ४६ ॥

जो अनुकरण किया जाता है वह प्रकृति के तुल्य होता है इस से (अग्नी) द्विवचनप्रकृति के तुल्य अनुकरण को मान के प्रगृह्य संज्ञा होने से संधि नहीं होती। और एकवचन बहुवचन में तो संधि होता है (कुमार्य्लृतक इत्याह) यहां (ऋतक) शब्द जो अनुकरण (लृतक) के परे भी यणादेश होता है (द्विः पचन्त्वित्याह) यहां

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(द्विः पचन्तु) शब्द के अनुकरण में भी अतिङ् से परे तिङ् पद निघात हो जाता है। (अर्थवदधातुरप्रत्ययः०) इस सूत्र में धातु का पर्युदास प्रतिषेध मानें कि धातु से अन्य अर्थवान् की प्रातिपदिक संज्ञा हो इस से चि आदि धातुओं के अनुकरण को प्रकृतिवत् होने से स्वाश्रय कार्य मानकर प्रातिपदिक संज्ञा हो जाती है फिर पंचमी विभक्ति के एकवचन में चिधातु को (इयङ्) आदेश नहीं प्राप्त है इस लिये धातु के अनुकरण को प्रकृतिवत् मान के (इयङ्) आदेश भी हो जाता है इस से (चियोदीर्घात्, परौभुवोऽवज्ञाने, नेर्विशः) इत्यादि सब निर्देश ठीक बनजाते हैं॥३६॥

(भवतु, पचतु) इत्यादि की पदसंज्ञा न होनी चाहिये क्योंकि तिङन्त को पद संज्ञा कही है यहां तो तिप् के इकार को उकार हो जाने से तिङ् नहीं रहा इस लिये यह परिभाषा है॥

३७—एकदेशविकृतमनन्यवद्भवति ॥ अ० ॥ ४ । १ । ८३ ॥

जिस किसी का एक अवयव विपरीत हो जावे तो वह अन्य नहीं हो जाता किन्तु वही बना रहता है। इस से इकार के स्थान में उकार हो जाने से भी पद संज्ञा हो जाती है (प्राग्दीव्यतोऽण्) इस सूत्र से (दीव्यत्) शब्दपर्यन्त (अण्) प्रत्यय का अधिकार करते हैं और दीव्यत् शब्द कहीं नहीं है किन्तु (दीव्यति) शब्द है इस का एक देश इकार के जाने से (दीव्यत्) रह जाता है इसी ज्ञापक से यह परिभाषा निकली है। लोक में भी किसी कुत्ते का कान वा पूंछ काट लिया जावे तो उस को घोड़ा वा गधा नहीं कहते किन्तु कुत्ता ही कहते हैं इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं॥३७॥

(स्योनः) यहां (सिवु) धातु से उणादि (न) प्रत्यय के परे वकार को (ऊठ्) होकर वकार को स्थानिवत् मानने से धातु के इकार को (लघूपधगुण) और उसी इकार को (यणादेश) दोनों प्राप्त हैं। इस में गुण पर और यणादेश (अन्तरङ्ग) है अब दोनों में से कौन सा कार्य होना चाहिये इसलिये यह परिभाषा है॥

३८—पूर्वपरनित्यान्तरङ्गाऽपवादानामुत्तरोत्तरं बलीयः ॥

पूर्व से पर, पर से नित्य, नित्य से अन्तरङ्ग और अन्तरङ्ग से अपवाद ये सब पूर्व २ से उत्तर २ बलवान् होते हैं। यह परिभाषा महाभाष्य के अभिप्रायानुकूल है अर्थात् इसी प्रकार की कहीं नहीं लिखी। पूर्व से पर बलवान् होना यह विषय (विप्रतिषेधे परं कार्यम्) इसी सूत्र का है जैसे (अग्नि) इस शब्द से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपधित्याकार में ऋषिवाची होने से (अण्) प्राप्त और इकारान्तद्व्यच्) होने से ढक् प्राप्त है सो पूर्व (अण्) को बाध के परविहित (ढक्) होता है जैसे (अत्रेरपत्यम्, आत्रेयः) इत्यादि। भू धातु से लिट् लकार के णल् प्रत्यय के परे (भू + अ) इस अवस्था में द्वित्व, यणादेश, उवङ्, गुण, वृद्धि और वुक् आगम ये सब प्राप्त हैं (द्विर्वचन) नित्य होने से पर यणादेश का बाधक है (उवङ्) अन्तरङ्ग होने से नित्य द्वित्व का भी बाधक है और (उवङ्) का अपवाद (गुण) गुण का अपवाद (वृद्धि) और इन दोनों का अपवाद निरवकाश होने से (वुक्) होजाता है। इसी प्रकार अन्य भी बहुत प्रयोगों में यह परिभाषा लगती है (दुद्यूषति) यहां सन् प्रत्यय के परे (दिव्) धातु के वकार को ऊठ् किये पीछे द्विर्वचन और यणादेश दोनों प्राप्त हैं नित्य होने से द्विर्वचन होना चाहिये फिर नित्य द्विर्वचन से भी अन्तरङ्ग होने से यणादेश प्रथम होजाता है। इत्यादि ॥ ३८ ॥

(ईजतुः) यहां यज धातु से (अतुस्) प्रत्यय के परे द्वित्व को बाध के परत्व से (संप्रसारण) होता है फिर द्वित्व होना चाहियेवा नहीं इसलिये यह परिभाषा है॥

३६—पुनः प्रसङ्गविज्ञानात् सिद्धम् ॥ अ० ॥ १ । ४ । २ ॥

परत्व से वा अन्य किसी प्रकार से प्रथम बाधक कार्य होजावे। फिर जो उत्सर्ग कार्य की प्राप्ति हो तो उत्सर्ग भी होजावे। इस से (यज) धातु को संप्रसारण किये पीछे भी द्वित्व होजाता है। इसी प्रकार परत्व से (हि) के स्थान में तातङ् आदेश होने से फिर हि को धि न होना चाहिये सो भी (तातङ्) के निषेध पक्ष में (हि) को (धि) होकर (भिन्धि) आदि प्रयोग बन जाते हैं इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ३९ ॥

लोक में यह रीति है कि तुल्य अधिकारी दो स्वामियों का एक भृत्य होता है तो वह आगे पीछे दोनों के कार्य किया करता है परन्तु जो उस भृत्य को दोनों स्वामी अनेक दिशाओं में एक काल में कार्य करने के लिये आज्ञा दें तो उस समय जो वह किसी का विरोधी न हुआ चाहे तो दोनों के कार्य न करें क्योंकि एक को एककाल में दो दिशाओं में जाके दो कार्य करना असम्भव है फिर जिस का पीछे करेगा वही अप्रसन्न होगा। इसी प्रकार सूत्रों में भी दो में जो बलवान् होगा वह प्रथम हो जावे गा और जो दोनों तुल्यबल वाले होंगे तो एक दूसरे को हटाने से लोक के तुल्य एक भी कार्य न होगा। जैसे स्त्री लिङ्ग में वर्त्तमान (त्रि, चतुर्) शब्द को सामान्य विभक्तियों में (तिसृ, चतसृ) आदेश कहे हैं और (त्रि) शब्द को (आम्) विभक्ति के परे (त्रय) आदेश भी कहा है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर (विप्रतिषेधे परं कार्यम्) इस सूत्र से पर विप्रतिषेध मान के प्रथम (तिसृ) आदेश होगया। फिर उस को स्थानिवत् मान के (त्रय) आदेश भी होना चाहिये तो लोकवत् अनिष्ट प्रसङ्ग आजावे इस लिये यह परिभाषा है॥

४०—सकृद्गतौ विप्रतिषेधे यद् बाधितं तद् बाधितमेव ॥ अ० ॥ १। ४। २॥

एककाल में जब दो कार्यों की प्राप्ति होती है तब विप्रतिषेध में पर का कार्य होकर फिर दूसरे पूर्व सूत्र का कार्य्य प्रवृत्त नहीं हो सकता क्योंकि जो बाधक हुआ सो हुआ इस से फिर स्थानिवत् मान के (त्रय) आदेश नहीं होता इस कारण (तिसृणाम्) इत्यादि प्रयोग शुद्ध ठीक बन जाते हैं। और जो दूसरा कार्य्य भी पश्चात् प्राप्त हो और प्रथम हुआ कार्य्य कुछ न बिगड़े तो (३८) वीं परिभाषा के अनुकूल वह भी कार्य्य हो जावेगा ॥ ४० ॥

अब यह विचार भी कर्त्तव्य है कि धातुओं से परे जो लकारों के स्थान में तिप् आदि परस्मैपद और आत्मनेपद प्रत्यय होते हैं वे पहिले हों किंवा विकरण हों आत्मनेपदादि के करने से प्रथम और पीछे भी विकरणों की प्राप्ति है इस से वे नित्य हैं। और आत्मनेपद परस्मैपद विधायक प्रकरण से परे भी विकरण ही हैं और विकरण किये पीछे आत्मनेपद नियम की प्राप्ति नहीं क्योंकि (अनुदात्तङित०) यह पंचमीनिर्दिष्ट कार्य व्यवधानरहित उत्तर को होना चाहिये विकरणों के व्यवधान से फिर आत्मनेपद नहीं पाता और जो आत्मनेपद नियम को अनवकाश मानें सो भी नहीं क्योंकि अदादि और जुहोत्यादि गण में जहां विकरण विद्यमान नहीं रहते वहां और (लिङ्, लिट्) लकारों में (आत्मनेपद, परस्मैपद) को अवकाश हो है फिर (एधते, स्पर्द्धते) आदि में आत्मनेपद नहीं होसकता इस लिये यह परिभाषा है ॥

४१—विकरणेभ्यो नियमो बलीयान् ॥ अ० ॥ १। ४ १२ ॥

विकरणविधि से आत्मनेपद परस्मैपद नियमविधान बलवान् है क्योंकि जो आत्मनेपद आदि के होने से पहिले विकरण हो होते हों तो (आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्, पुषादिद्युताद्यॢदितः परस्मैपदेषु) इन विकरणविधायकसूत्रों में आत्मनेपद के आश्रय से विकरणविधान क्यों किया इस से यह ज्ञापक है कि विकरणविधि से पहिले ही आत्मनेपद परस्मैपद नियम कार्य होते हैं। इस से (एधते, स्पर्द्धते) आदि में आत्मनेपद सिद्ध होगया इत्यादि प्रयोजन इस के हैं॥४१॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(न्यविशत, व्यक्रीणीत) यहां (नि,वि) उपसर्गों से परे (विश) और (क्री) धातु से आत्मनेपद होता है सो विकरण आत्मनेपद और अट् आगम तीनों कार्य्य एक साथ प्राप्त हैं इन में से आत्मनेपद सब से पहिले होकर अब विकरण करने के पहिले और पीछे भी (अट्) प्राप्त है इस से अट् नित्य हुआ और विकरण भी अट् करने से पहिले तथा पीछे भी प्राप्त है तो विकरण भी नित्य हुए। जब दोनों नित्य हुए तो परत्व से अट् प्राप्त है। और अङ्ग कार्य अट् से विकरणों का होना प्रथम इष्ट है क्योंकि विकरण के आजाने पर सब की (अङ्ग) संज्ञा हो और अङ्ग संज्ञा के पश्चात् अट् होवे इस लिये यह परिभाषा है ॥

४२—शब्दान्तरस्य च प्राप्नुवन् विधिरनित्यो भवति ॥ अ० ॥ १।३।६० ॥

जो दो कार्य एकसाथ प्राप्त हों और वे दोनों नित्य ठहरते हों तो उन में एकविधि के होने से पहिले जिस शब्द को दूसरा विधि प्राप्त है और पहिले कार्य के होने पश्चात् वह विधि दूसरे शब्द को प्राप्त हो तो वह अनित्य होता है यहां (अट्) आगम पहिले तो केवल (विश) को प्राप्त है और विकरण किये पीछे विकरणसहित सब को अंग संज्ञा होने से सब को प्राप्त है इस लिये अट् अनित्य हुआ। फिर प्रथम विकरण हो कर पुनः प्रसंग मानने से (अट्) हो जाता है। इत्यादि प्रयोजन हैं ॥ ४२ ॥

(नृ कुट्यां भवः नार्कुटः, नृपतेरपत्यं नार्पत्यः) यहां जो (नृ) शब्द को वृद्धि होती है उसी वृद्धिरूप आकार का सहचारी रेफ रहता है उस रेफ को खर् प्रत्याहार के परे (खरवसानयोर्विसर्जनीयः) इस सूत्र से विसर्जनीय होने चाहिये इस लिये यह परिभाषा है ॥

४३—असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे ॥ अ० ॥ ८ । ३ । १५ ॥

४४—असिद्धं बहिरङ्गलक्षणमन्तरङ्गलक्षणे ॥ अ० ॥ ६।४।१३२ ॥

इन में से पहिली परिभाषा बहुधा व्यवहारकाल में प्रवृत्त होती और दूसरी बहुधा व्याकरणादिशास्त्रों में लगती है। बहिरंग कार्य करने में अन्तरंग कार्य असिद्ध हो जाता है। बहिर् और अन्तर् इन दोनों शब्दों के आगे जो अंग शब्द है वह उपकारकवाची और अंग शब्द के साथ दोनों शब्दों का बहुब्रीहि समास है (निमित्तसमुदायस्य मध्ये यस्य कार्यस्यांगमुपकारि निमित्तं बहिः कार्यान्तरापेक्षया दूरमधिकं वा वर्त्तते तद्बहिरङ्गं कार्य्यम्, एवं निमित्तसमुदायस्य मध्ये यस्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यस्याङ्गमुपकारिनिमित्तमन्तःकार्यान्तरापेक्षया सन्निहितं वा न्यूनं वर्त्तते तदन्तरङ्गं कार्यम्, तथा बह्वपेक्षं बहिरङ्गमल्पापेक्षमन्तरङ्गम्) बहिरङ्ग उस को कहते हैं कि प्रकृति, प्रत्यय, वर्ण और पद के समुदाय में जिस कार्य के उपकारी अवयव दूसरे कार्य की अपेक्षा से दूर वा अधिक हों। और अन्तरङ्ग वह कहाता है कि प्रकृति आदि निमित्तों के समुदाय में जिस कार्य के उपकारी अवयव दूसरे कार्य की अपेक्षा से समीप वा न्यून हों। तथा जो बहुत निमित्त और व्याख्यान की अपेक्षा रक्खे वह बहिरङ्ग तथा थोड़े निमित्त और व्याख्यान की अपेक्षा रक्खे वह अन्तरङ्ग कहाता है। इस लिये प्रायः अन्तरङ्ग कार्य प्रथम होता है और बहिरङ्ग असिद्ध हो जाता है। और कहीं २ बहिरङ्ग प्रथम हो भी जावे तो अन्तरङ्ग कार्य की दृष्टि में असिद्ध अर्थात् नहीं हुआ सा ही रहता है। अब प्रकृत में (नार्कुटः, नार्पत्यः) यहां ककार पकार विसर्जनीय के निमित्त अन्तरङ्ग और वृद्धि का निमित्त तद्धित बहिरङ्ग है सो प्रथम बहिरङ्ग कार्य वृद्धि हो भी जाती है। परन्तु अन्तरङ्ग कार्य विसर्जनीय करने में वृद्धि के असिद्ध होने से रेफ ही नहीं फिर विसर्जनीय किस को हो तथा (वाह ऊठ्) इस सूत्र में (ऊठ्) नहीं पढ़ते तो संप्रसारण की अनुवृत्ति आकर (प्रष्ट+वाह्+ण्वि+अस्) इस अवस्था में ण्वि प्रत्यय के परे वकार को (उ) संप्रसारण और पूर्वरूप हो कर। (प्रष्ठ+उह्+ण्वि+अस्) इस अवस्था में उकार को ओकार (गुण) और उस ओकार के साथ वृद्धि एकादेश हो कर (प्रष्ठौहः) आदि प्रयोग सिद्ध हो ही जाते फिर ऊठ् ग्रहण व्यर्थ हो कर यह ज्ञापक होता है कि (प्रष्ठौहः) आदि में गुण करते समय संप्रसारण (असिद्ध) होता है अर्थात् यजादि प्रत्यय निमित्त भसंज्ञा और भ संज्ञा के आश्रय संप्रसारण होता है इस प्रकार बहुत अपेक्षा वाला होने से संप्रसारण बहिरङ्ग और (वि) प्रत्यय को मान के गुण अन्तरङ्ग है फिर अन्तरंग गुण करने में जब संप्रसारण असिद्ध हुआ तो गुण की प्राप्ति नहीं जब गुण नहीं हुआ तो वृद्धि हो कर (प्राष्ठौहः) आदि प्रयोग भी नहीं बन सकते इस लिये ऊठ् ग्रहण करना चाहिये इसी ऊठ् ग्रहण के ज्ञापक से यह परिभाषा निकली है तथा (पचाविदम्, पचामेद) यहां लोट् के उत्तम पुरुष के एकार को ऐकारादेश प्राप्त है सो ऐत्व अन्तरंग की दृष्टि में (आद्गुणः) सूत्र से हुआ गुण बहिरंग होने से असिद्ध है इस लिये वहां एकार ही नहीं तो ऐकार किस को हो। इत्यादि इस परिभाषा के असंख्य प्रयोजन हैं। लोक में भी अन्तरंग कार्य करने में बहिरंग असिद्ध ही माना जाता है जैसे। मनुष्य प्रातःकाल उठ कर पहिले निज शरीर संबन्धी अन्तरंग कार्यों को करता है पीछे मित्रों के और उस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पीछे संबन्धियों के काम करता है क्यों कि मित्र आदि के कार्य निज शरीर की अपेक्षा में बहिरंग हैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

अब अन्तरंगबहिरंगलक्षण परिभाषा में ये दोष हैं कि (अक्षद्यूः, हिरण्यद्यूः) यहां (दिव्) धातु से क्विप् प्रत्यय के परे क्विप् की मान के वकार को ऊठ् होता है उस बहिरंग ऊठ् को असिद्ध मानें तो यणादेश नहीं हो सकता इत्यादि दोषों की निवृत्ति के लिये यह अगली परिभाषा है ॥

४५—नाजानन्तर्ये बहिष्ट्वप्रकॢप्तिः ॥ अ० ॥ १ । ४ । २ ॥

जहां दोनों अचों के समीप था मध्य में कार्य विधान करते हो वहां अन्तरंग बहिरंग लक्षण परिभाषा नहीं लगती इस से (अक्षद्यूः) आदि में बहिरंग ऊठ् को जब असिद्ध नहीं माना तो यणादेश भी हो गया तथा (षत्वतुकोरसिद्धः) इस सूत्र में तुक् ग्रहण का यही प्रयोजन है कि (अधीत्य, प्रेत्य) इत्यादि प्रयोगों में तुक् अन्तरंग और सवर्णदीर्घ तथा गुण एकादेश बहिरंग है जो तुक् अन्तरंग के करने में बहिरंग एकादेश असिद्ध हो जाता तो तुक् हो ही जाता फिर तुग्-विधि में एकादेश को असिद्ध करने से यह ज्ञापक निकला कि जो दो अचों के आश्रय बहिरंग कार्य हो वह अन्तरंग कार्य की दृष्टि में असिद्ध नहीं होता। इसी तुक् ग्रहण ज्ञापक से यह परिभाषा निकली है ॥ ४५ ॥

(गोमान् प्रियो यस्य स गोमत्प्रियः यवत्प्रियः, गोमानिवाचरति गोमत्यते, यवमत्यते) इत्यादि प्रयोगों में समासाश्रित अन्तर्वर्तिनी विभक्ति का लुक् द्विपदाश्रय होने से बहिरंग और (हल्ङ्यादि) सूत्र से प्राप्त सुलोप एकपदाश्रय होने से अन्तरंग है सो जो बहिरंग का बाधक अन्तरंग हो जावे तो नुम् आदि कार्य हो कर (गोमत्-प्रियः) प्रयोग सिद्ध न हो किन्तु (गोमान् प्रियः) ऐसा प्राप्त होवे सो अनिष्ट है इस लिये यह परिभाषा है ॥

४६—अन्तरङ्गानपि विधीन् बाधित्वा बहिरङ्गो लुग् भवति ॥ अ० ॥ ७ । २ । ६८ ॥

अन्तरंग विधियों को बाध के भी बहिरंग लुक् होता है अर्थात् जब अन्तर्वर्तिनी विभक्ति का लुक् समासाश्रय होने से बहिरङ्ग हुआ एकपदाश्रय सुलोप आदि अन्तरं-गों का बाधक होगया तो (नलुमताङ्गस्य) इस सूत्र से नुम् आदि करने में प्रत्ययलक्षण का निषेध होकर (गोमत्प्रियः) इत्यादि प्रयोग बनजाते हैं तथा (प्रत्ययोत्तरपदयोश्च)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सूत्र का यही प्रयोजन है कि (त्वामिच्छति, त्वयति, मयति, तवपुत्रस्त्वत्पुत्रः, मत्पुत्रः त्वं नाथोऽस्य त्वन्नाथः, मन्नाथः) इत्यादि प्रयोगों में (युष्मद्, अस्मद्) शब्दों को (त्व, म) आदेश होजावें (त्वं नाथोऽस्य) इस अवस्था में मध्यवर्त्तिनी विभक्ति का लुक् (त्व, म) आदेश होने के पहिले और पीछे भी प्राप्त होने से नित्य और (त्व, म) आदेश अन्तरंग हैं नित्य से अन्तरंग बलवान् होता है यह तो कह चुके हैं। सो जो अन्तरंग होने से (त्व, म) आदेश पहिले हो जावें तो इस सूत्र का कुछ प्रयोजन न रहे क्योंकि वर्त्तमान विभक्ति के परे (त्वमावेकवचने) सूत्र से (त्व, म) होही जावेंगे फिर व्यर्थ हो कर यह ज्ञापक हुआ कि अन्तरंग विधियों का भी बहिरंग लुक् बाधक होता है फिर जब बहिरंग लुक् पहिले हुआ तो सूत्र सार्थक रहा और इसी ज्ञापक से यह परिभाषा निकली ॥ ४६ ॥

(पूर्वैषुकामशमः) यहां (पूर्वेषुकामशमी) शब्द से तद्धित (अण्) प्रत्यय होता है (पूर्व+इषु+काम+शमी+अ) इस अवस्था में जो तद्धित प्रत्ययाश्रित बहिरङ्ग उत्तर पद वृद्धि से अन्तरङ्ग होने के कारण अकार इकार को गुण एकारादेश पहिले हो जावे तो पूर्वोत्तरपद के पृथक् २ न रहने और उभयाश्रय कार्य में अन्तादिवद्भाव के निषेध होने से (दिशोऽमद्राणाम्०) इस सूत्र से उभयपदवृद्धि नहीं हो सकती इत्यादिदोषों की निवृत्ति के लिये यह परिभाषा है ॥

४७-पूर्वोत्तरपदयोस्तावत्कार्यं भवति नैकादेशः ॥ अ०॥१।४।२ ॥

पूर्वोत्तरपदनिमित्तकार्य से अन्तरङ्ग भी एकादेश पहिले नहीं होता किन्तु पूर्वोत्तरपद निमित्त कार्य अन्तरङ्ग एकादेश से पहिले हो जाता है इस से (पूर्वैषुकामशमः) यहां अन्तरङ्ग मान कर प्रथम गुण एकादेश नहीं होता किन्तु पहिले उत्तरपद को वृद्धि हो कर वृद्धि एकादेश हो जाता है। यह भी परिभाषा (४५) वीं परिभाषा की सहचारिणी है। इस का ज्ञापक यह है कि (नेन्द्रस्य परस्य) इस सूत्र में उत्तरपदवृद्धि का निषेध है कि उत्तरपद में इन्द्र शब्द को वृद्धि न हो जिस से (सौमेन्द्रः) प्रयोग सिद्ध होजावे। सो जो सोम के साथ इन्द्र का एकादेश अन्तरङ्ग होने से पहिले हो जावे तो इन्द्र शब्द का इकार तो एकादेश में गया अन्त्य का अच् तद्धित प्रत्यय के परे लोप में गया फिर जब उत्तर पद इन्द्र शब्द में कोई अच् ही नहीं तो वृद्धि का निषेध क्यों किया इस से व्यर्थ हो कर यह ज्ञापक हुआ कि अन्तरङ्ग भी एकादेश पूर्वोत्तरपदकार्य के पहिले नहीं होता किन्तु अन्तरङ्ग का बाधक उत्तरपदवृद्धि पहिले होती है इस लिये उत्तरपद में इन्द्र शब्द की वृद्धि का निषेध किया है ॥ ४७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(प्रधाय, प्रस्थाय) इत्यादि प्रयोगों में (क्त्वा) प्रत्यय के स्थान में (ल्यप्) आदेश होता है सो ल्यप् होने से पहिले (प्रधा+त्वा) इस अवस्था में धा के स्थान में (हि) और (स्था) को इकारादेश तथा (त्वा) को (ल्यप्) भी प्राप्त है इस में हि आदि आदेश पर और अन्तरङ्ग हैं और ल्यप् बहिरङ्ग है सो पर और अन्तरङ्ग मान के हि आदि आदेश करलें तो (प्रधाय, प्रस्थाय) आदि प्रयोग नहीं बन सकें इस लिये यह परिभाषा है ॥

४८—अन्तरङ्गानपि विधीन् बहिरङ्गो ल्यब् बाधते ॥ अ० ॥ २ । ४ । ३६ ॥

अन्तरङ्ग विधियों का भी बहिरङ्ग ल्यबादेश बाध करता है । इस से (हि) आदि आदेशों को बाध के प्रथम (ल्यप्) हो गया फिर हि आदि की प्राप्ति नहीं तो (प्रदाय, प्रधाय, प्रस्थाय) आदि प्रयोग सिद्ध हो गये और (अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति) इस सूत्र में ल्यप् का ग्रहण नहीं करते तो तकारादि प्रत्ययमात्र की अपेक्षा रखने वाला अद धातु को (जग्धि) आदेश अन्तरङ्ग होने के कारण पूर्वपद की अपेक्षा रखने वाले समासाश्रित बहिरङ्ग ल्यप् आदेश से प्रथम हो जाता फिर ल्यप् ग्रहण व्यर्थ हो कर इस का ज्ञापक हुआ कि (अन्तरङ्गविधियों को भी बाध के पहिले ल्यप् होता है) फिर तकारादि कित् न होने से (जग्धि) आदेश प्राप्त नहीं होता इस लिये ल्यप् ग्रहण किया है । यही ल्यप् ग्रहण इस परिभाषा के निकलने में ज्ञापक है ॥ ४८ ॥

(इयाय, इययिथ) इत्यादि प्रयोगों में पर होने से गुण वृद्धि और नित्य होने से द्वित्व प्राप्त है द्वित्व होने के पश्चात् (इ+इ+अ, इ+इ+इथ) इस अवस्था में परत्व से गुण वृद्धि और अन्तरङ्ग होने से सवर्णदीर्घ एकादेश प्राप्त है सो जो बलवान् होने से अन्तरङ्ग सवर्णदीर्घ एकादेश हो जावे तो (इयाय, इययिथ) आदि प्रयोग सिद्ध नहीं हो सकें इस लिये यह परिभाषा है ॥

४९—वार्णादाङ्गं बलीयो भवति ॥ अ० ॥ ६ । ४ । ७८ ॥

वर्णकार्य से अङ्ग कार्य बलवान् होता है । यहां वर्णकार्य सवर्णदीर्घ एकादेश और अंगकार्य गुण वृद्धि हैं उस वर्णकार्य से अंगकार्य बलवान् होने से गुण वृद्धि प्रथम हो कर (इयाय, इययिथ) इत्यादि प्रयोग सिद्ध हो जाते हैं (अभ्यासस्यासवर्णे) इस सूत्र में असवर्ण अच् के परे अभ्यास के इवर्ण उवर्ण को (इयङ्, उवङ्) आदेश कहे हैं सो जो गुण वृद्धि का बाधक एकादेश हो जावे तो अभ्यास से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परे असवर्ण अच् हो ही नहीं सकता फिर उस असवर्ण गुण वृद्धि किये अच् के परे (इयङ्, उवङ्) कहने से निश्चित ज्ञात हुआ कि (वर्णकार्य का बाधक अंग कार्य होता है) यही असवर्ण अच् के परे (इयङ्, उवङ्) का विधान इस परिभाषा के होने में ज्ञापक है ॥ ४८ ॥

यह बात प्रथम लिख चुके हैं कि अन्तरङ्ग से भी अपवाद बलवान् होता है (जुसि च) इस सूत्र से जो गुणविधान है सो (क्ङिति च) आदि निषेध प्रकरण का अपवाद है क्यों कि (झि) के ङित् होने से उस के स्थान में जुस् भी ङित् ही आदेश होता है सो जैसे (अबिभयुः, अबिभरुः) इत्यादि में निषेध का बाध जुस् में गुण होता है वैसे ही (चिनुयुः, सुनुयुः) यहां (यासुट्) के आश्रय से प्राप्त गुणनिषेध का भी बाधक हो जावे तो (चिनुयुः, सुनुयुः) आदि प्रयोगों में गुण होना चाहिये इस लिये यह परिभाषा है ॥

५०—येन नाप्राप्ते यो विधिरारभ्यते स तस्य बाधको भवति ॥ अ० ॥ १ । १ । ६ ॥

जिस कार्य की प्राप्ति में अपवाद का आरम्भ किया जाता है वह अपवाद उसी कार्य का बाधक होता है और जिस की प्राप्ति अप्राप्ति में सर्वथा अपवाद का आरम्भ है उस का बाधक नहीं होता इस से यह आया कि (चिनुयुः,सुनुयुः) यहां दो ङित् हैं एक सार्वधातुक जुस् प्रत्यय का और दूसरा यासुट् का सो सार्वधातुकप्रत्ययाश्रित जो ङित्त्व है उसी को मान के प्राप्त गुण का निषेध है उस निषेध की प्राप्ति में जुस् के परे गुण कहा है और यासुट् के ङित्त्वनिमित्तप्राप्त निषेध के होने वा न होने में उभयत्र जुस् के परे गुण कहा है क्योंकि (अबिभयुः) आदि में यासुट् के विना केवल सार्वधातुक के आश्रयगुण का निषेध प्राप्त है इस लिये (चिनुयुः) आदि में गुण नहीं होता। इत्यादि इस परिभाषा के अनेक प्रयोजन हैं ॥ ५० ॥

अब इस पूर्वोक्त परिभाषा के विषय में यह विशेष विचार है कि (नासिकोदरोष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च) यह सूत्र अगले (न क्रोडादिबह्वचः सहनञ्०) इन दो सूत्रों का अपवाद है और दोनों की प्राप्ति में इस का आरम्भ भी है पूर्व परिभाषा के अनुकूल माना जावे तो सह,नञ् और विद्यमान पूर्वक शब्दों से प्राप्त निषेध का बाधक ङीष् प्रत्यय (सनासिका, अनासिका, विद्यमाननासिका) आदि में भी (ङीष्) प्रत्यय होना चाहिये तो ये प्रयोग नहीं बनसकें इस लिये यह परिभाषा है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५१—पुरस्तादपवादा अनन्तरान् विधीन् बाधन्ते न परान् ॥ अ० ॥ ४ । १ । ५५ ॥

जो पहिले अपवाद और पीछे उत्सर्ग पढ़ा हो तो वह अपने समीपस्थ कार्य का बाधक हो और परविधि अर्थात् जिस के साथ व्यवधान है उस का बाधक नहीं होवे। इस से बह्वच् लक्षण से प्राप्त (ङीष्) के निषेध का बाधक हुआ और सह, नञ्, विद्यमान पूर्वक नासिका से प्राप्त ङीष् के निषेध का बाधक नहीं हुआ। इस प्रकार (सनासिका, अनासिका) आदि प्रयोग सिद्ध हो गये। इसी प्रकार अन्यत्र भी इस का विषय जानना ॥ ५१ ॥

अब (नासिकोदरौष्ठ०) इस सूत्र में जो ओष्ठ आदि पांच संयोगोपध शब्द हैं उन से निषेध भी प्राप्त है उस का बाधक पूर्व परिभाषा नहीं हो सकती क्योंकि (नासिकोदर०) सूत्र से भी संयोगोपध का निषेध पूर्व है (नासिकोदर०) सूत्र में नासिका और उदर शब्द तो सह आदि पूर्व होने से पर दोनों सूत्रों के अपवाद हैं और ओष्ठ आदि शब्द सह आदि पूर्व हों तो (सहनञ्) इस पर सूत्र के और सामान्य उपपद में (स्वाङ्गाच्चोप०) इस पूर्व सूत्र के भी अपवाद हों। सो दोनों के अपवाद होने चाहिये या किसी एक के। इस सन्देह की निवृत्ति के लिये यह परिभाषा है ॥

५२—मध्येऽपवादाः पूर्वान् विधीन् बाधन्ते नोत्तरान् ॥ अ० ॥ ४ । १ । ५५ ॥

जो पूर्व पर दोनों ओर उत्सर्ग और मध्य में अपवाद पढ़ा हो तो वह अपने से पूर्वविधि का बाधक होता है उत्तर का नहीं इस से (बिम्बोष्ठी, बिम्बोष्ठा दीर्घजङ्घी दीर्घजङ्घा) इत्यादि उदाहरणों में संयोगोपधलक्षण निषेध का बाधक होगया और (सदन्ता, अदन्ता, विद्यमानदन्ता) इत्यादि में पर सूत्र से प्राप्त निषेध की बाधा नहीं हुई। इसी प्रकार सर्वत्र योजना करलेनी चाहिये ॥ ५२ ॥

(सुडनपुंसकस्य) इस सूत्र में सुट् के सर्वनाम संज्ञा का निषेध है सो (कुण्डानि तिष्ठन्ति, वनानि तिष्ठन्ति यहां भी जो नपुंसक के सुट् की सर्वनामस्थान संज्ञा का निषेध होजाते तो (नुम्) आदि होकर (कुण्डानि) आदि प्रयोग सिद्ध होते हैं सो न होसकें इसलिये यह परिभाषा है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५३—अनन्तरस्य विधिर्वा प्रतिषेधो वा ॥ अ० ॥ १ । १ । ४३ ॥

जिस में कुछ अन्तर न हो अर्थात् जो अत्यन्त समीप हो उस का विधि वा निषेध होता है दूरस्थ का नहीं । इस से सुट् करके जो सर्वनामस्थान संज्ञा की प्राप्ति है उसी का निषेध करता है (शि) की सर्वनामस्थानसंज्ञा का निषेध नहीं इस से (कुण्डानि) आदि प्रयोग बन जाते हैं । और (नेटि) सूत्र में इडादि सिच् के परे वृद्धि का निषेध होता है सो जो दूरस्थ वृद्धि का भी हो तो (अमार्जीत्, अलावीत्, अपावीत्) इत्यादि में भी वृद्धि का निषेध होना चाहिये इस परिभाषा से समीपस्थ हलन्तलक्षण वृद्धि का निषेध हो जाता है समान्य करके नहीं इत्यादि प्रयोजन हैं ॥ ५३ ॥

(ददति, दधति) इत्यादि प्रयोगों में जो प्रत्ययादि झकारको अन्तरंग होने से अन्तादेश प्रथम हो जावें तो अभ्यस्तसंज्ञकों से विहित प्रत्ययादि झकार को अत् आदेश व्यर्थ और अनिष्ट प्रयोग सिद्ध होने लगें इस लिये ये परिभाषा हैं ॥

५४—नचापवादविषये उत्सर्गोऽभिनिविशते ॥

५५—पूर्वं ह्यपवादा अभिनिविशन्ते पश्चादुत्सर्गाः ॥

५६—प्रकल्प्य चापवादविषयमुत्सर्गः प्रवर्तते ॥अ०॥ ६ । १।५ ॥

ये तीनों परिभाषा उत्सर्गापवाद की व्यवस्था के लिये हैं अपवादविषय में उत्सर्ग की प्रवृत्ति नहीं होती । प्रथम अपवादों की और पश्चात् शेषविषय में उत्सर्गों की प्रवृत्ति होती है । अपवाद के विषय को छोड़ के अपने विषय में उत्सर्ग प्रवृत्त होते हैं । इस से यह आया कि अभ्यस्त संज्ञक से प्राप्त जो प्रत्ययादि झकार को अत्, आदेश उस अपवाद के विषय में उत्सर्ग की प्रवृत्ति न होने से प्रथम अपवाद प्रवृत्त हुआ तो प्रत्ययादि झकार को अत् आदेश हो कर (ददति, दधति) आदि प्रयोग सिद्ध हो गए। और जैसे अन्त आदेश का बाधक (पचेयुः, अजागरुः) आदि प्रयोगों में झि को जुस् होता है वैसे (ऐषन्) आदि प्रयोगों में उत्सर्ग का विषय है उस में झि को जुस् नहीं होता । अर्थात् अपवाद के विषय में उत्सर्ग की प्रवृत्ति नहीं होती और उत्सर्ग के विषयमें अपवाद की प्रवृत्ति हो हो जाती है ॥५६॥

अब पूर्व परिभाषाओं से यह आया कि अपवादविषय में उत्सर्गों की प्रवृत्ति नहीं होती किन्तु स्वविषय में अपवाद उत्सर्गका बाधक होता है तो (दीर्घोऽकितः) इस सूत्र में अकित् ग्रहण व्यर्थ होता है क्यों कि जो सामान्य से अभ्यास को दीर्घ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते तो अनुनासिकान्त अकारोपध धातुओं के अभ्यास को दीर्घ का बाधक (नुक्) आगम हो कर अजन्त के न रहने से दीर्घ की प्राप्ति ही नहीं थी तो (यंयम्यते, रंरम्यते) आदि प्रयोग सिद्ध हो ही जाते फिर अकित्ग्रहण व्यर्थ हो कर इस वक्ष्यमाण परिभाषा के निकलने में ज्ञापक है ॥

५७–अभ्यासविकारेष्वपवादा उत्सर्गान्न बाधन्ते ॥ अ० ॥ ७।४।८३॥

अभ्यास के आदेशविधानप्रकरण में अपवाद उत्सर्गों के बाधक नहीं होते तो जब दीर्घरूप उत्सर्ग का बाधक नुक् न रहा तो (यंयम्यते) आदि में दीर्घ की प्राप्ति हुई इस लिये अकित् ग्रहण सार्थक हुआ यह तो स्वार्थ में चरितार्थ और अन्यत्र फल यह है कि (डोढौक्यते, तोत्रौक्यते) इत्यादि प्रयोगों में उत्सर्गरूप ह्रस्व का बाधक दीर्घ नहीं होता और जो ह्रस्व का अपवाद होने से औकार को औकार ही दीर्घ कर लेवें तो फिर ह्रस्व होकर गुण न होवे तो (डोढौक्यते) आदि प्रयोग भी सिद्ध न हों इत्यादि इस परिभाषा के अनेक प्रयोजन हैं ॥ ५७ ॥

तच्छीलादि अर्थों में (तृन्) प्रत्यय ण्वुल् का अपवाद है और (ण्वुल्) तथा (तृन्) असरूप प्रत्यय भी हैं सो धात्वधिकार में असरूप प्रत्यय उत्सर्ग का बाधक विकल्प करके होता है पक्ष में उत्सर्ग भी हो जाता है अब (निन्दहिंसक्लिश०) इस सूत्र में (वुञ्) प्रत्यय का (तृन्) अपवाद क्यों पढ़ा क्योंकि तृन् के द्वितीय पक्ष में ण्वुल् होकर (निन्दकः, हिंसकः) आदि प्रयोग बन ही जाते कि जो (वुञ्) प्रत्यय के होने से बनते हैं और (निन्दकः) आदि में (ण्वुल्, वुञ्) का स्वर भी एक ही होता है एक (असूयक) शब्द के स्वर में तो (ण्वुल्, वुञ्) के होने से भेद पड़ेगा। ण्वुल् का स्वर (असूयकः) वुञ् का (असूयकः) और (निन्दकः) आदि में आद्युदात्त ही रहेगा। फिर निन्द आदि धातुओं से वुञ् विधान व्यर्थ हुआ इसलिये यह ज्ञापक सिद्ध परिभाषा हैं ॥

५८–ताच्छीलिकेषु सर्व एव तृनादयो वाऽसरूपेण न भवन्ति ॥ अ० ॥ ३।२।१४६ ॥

तृन् आदि अपवादों के साथ असरूप उत्सर्ग रूप प्रत्यय तच्छीलाधिकारविहित अपवादों के पक्ष में नहीं होते। इस से तच्छीलाधिकारविहित तृन् के पक्ष में जब ण्वुल् नहीं होसकता तो निन्द आदि धातुओं से वुञ् विधान सार्थक होगया और (असूयकः) में स्वरभेद होने के लिये (वुञ्) कहना आवश्यक ही है। इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ५८।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब धात्वधिकार में सर्वत्र वाऽसरूपविधि के मानने से (हसितं, हसनं वा छात्रस्य शोभनम् यहां (क्त) और ल्युट् के विषय में घञ् (इच्छति भोक्तुम्) यहां (लिङ्, लोट्) और (ईषत्पानः सोमो भवता) यहां (खल्) असरूप उत्सर्ग होने से प्राप्त हैं इस सन्देह की निवृत्ति के लिये यह परिभाषा है ॥

५९—क्तल्युट्तुमुन्खलर्थेषु वाऽसरूपविधिर्नास्ति ॥ अ० ॥ ३।१।९४ ॥

क्त, ल्युट्, तुमुन् और खलर्थप्रत्ययों के विषय में असरूप उत्सर्ग प्रत्यय अपवाद पक्ष में नहीं होते इस से (हसितम्, हसनम्) आदि प्रयोगों के विषय में घञ् आदि उत्सर्ग प्रत्यय नहीं होते (अर्हे कृत्यतृचश्च) इस सूत्र में कृत्य और तृच् प्रत्यय नहीं कहते तो अर्ह अर्थ में कहे हुए लिङ् के साथ असारूप्य होने से अर्ह अर्थ में कृत्य और तृच् हो ही जाते फिर कृत्य और तृच् ग्रहण व्यर्थ होकर यह जनाते हैं कि (वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्) यह परिभाषा अनित्य है ॥ ५९ ॥

(हशश्वतोर्लङ् च) इस सूत्र में लङ् ग्रहण नहीं करते तो भूतानद्यतनपरोक्षकाल में विहित (लिट्) के साथ असरूप (लङ्) का समावेश हो ही जाता फिर लङ् व्यर्थ होकर इस परिभाषा का ज्ञापक होता है ॥

६०—लादेशेषु वाऽसरूपविधिर्न भवति ॥ अ० ॥ ३ । १ । ९४ ॥

लकारार्थविधान में वाऽसरूपविधि नहीं होती । इस से लङ् लकार का ग्रहण सार्थक हुआ । और (लटः शतृशानचा०) यहां विकल्प की अनुवृत्ति इसी लिये करते हैं कि जिस से तिङ् का भी पक्ष में समावेश होजावे जो (वाऽसरूपविधि) होजाती तो तिङ् समावेश के लिये विकल्प नहीं लाने पड़ता इत्यादि अनेक प्रयोजन इस परिभाषा के समझने चाहियें ॥ ६० ॥

अब (तस्मिन्निति,तस्मादित्युत्तरस्य) इन सूत्रों से सप्तमीनिर्दिष्टकार्य अव्यवहित पूर्व को और पंचमीनिर्दिष्ट उत्तर को होता है सो (इको यणचि) यहां सप्तमी निर्दिष्ट पूर्व को और (हरन्तरूपसर्गेभ्योऽप ईत्) द्वीपम् । यहां पंचमीनिर्दिष्ट उत्तर को होता है।परन्तु जहां पंचमी और सप्तमी दोनों विभक्तियों का निर्देश हो वहां किस को कार्य होना चाहिये इस सन्देह की निवृत्ति के लिये यह परिभाषा है ॥

६१—उभयनिर्देशे विप्रतिषेधात् पंचमीनिर्देशः ॥ अ० ॥ १।१।६६ ॥

जहां सप्तमी पंचमी दोनों विभक्तियों से निर्देश किया है वहां (तस्मिन्निति० तस्मादित्यु०) इन दोनों सूत्रों में पर विप्रतिषेध मान के पंचमीनिर्दिष्ट का कार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होना चाहिये जैसे (बहोर्लोपो भू च बहोः) यहां (बहु) शब्द पंचमीनिर्दिष्ट और (इष्ठन्, इमनिच्, ईयसुन्) सप्तमीनिर्दिष्ट हैं यह बहु से परे इष्ठन् आदि को वा इष्ठन् आदि के परे बहु शब्द को कार्य होवे इस सन्देह की निवृत्ति इस परिभाषा से हुई कि पंचमी निर्दिष्ट को कार्य होना चाहिये अर्थात् बहु से परे इष्ठन् आदि को कार्य होवे सो पर को विहितकार्य अर्थात् ईयसुन् के आदि का लोप हो जाता है भूयान्, भूमा तथा (ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्) यहां ङम् से परे अच् को वा अच् परे होतो ङम् को कार्य हो यह सन्देह है। सो ह्रस्व से परे जो ङम् उस से परे अच् को कार्य होता है (तिङ्ङतिङः) कुर्वन्नास्ते। इत्यादि बहुत सन्देह निवृत्त हो जाते हैं ॥ ६१ ॥

इस व्याकरणशास्त्र में (स्वं रूपं शब्दस्या०) इस परिभाषा सूत्र के अनुकूल (पयस्कुम्भी, पयस्पात्री) इत्यादि प्रयोगों में विसर्जनीय को सकारादेश न होना चाहिये क्योंकि कुम्भ और पात्र आदि शब्दों के परे कहा है उन के स्वरूप ग्रहण होने से स्त्रीलिङ्ग में नहीं हो सकता। इस लिये यह परिभाषा है ॥

६२—प्रातिपदिकग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि ग्रहणं भवति ॥ अ० ॥ ४।१।१ ॥

प्रातिपदिक के परे वा प्रातिपदिक को जहां कार्य कहा हो वहां पठित लिङ्ग से विशेष लिङ्ग का भी ग्रहण होना चाहिये इस से (पयस्कुम्भी) आदि प्रयोग भी सिद्ध हो जाते हैं जैसे सर्वनाम को सुट् कहा है सो (येषाम्, तेषाम्) यहां तो होता ही है (यासाम्, तासाम्,) यहां भी हो जावे जैसे (कष्टं श्रितः कष्टश्रितः) यहां समास होता है वैसे (कष्टं श्रिता कष्टश्रिता) यहां भी होजावे जैसे (हस्तिनां समूहो हास्तिकम्) यहां ठक् होता है वैसे (हस्तिनीनां समूहो हास्तिकम्) यहां भी होजावे जैसे (ग्रामेवासी) यहां सप्तमी का अलुक् होता है वैसे (ग्रामे वासिनी) यहां भी हो जावे इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ६२ ॥

जब प्रातिपदिक के ग्रहण में लिङ्गविशिष्ट का भी ग्रहण होता है तो जैसे (यूनः पश्य) यहां युवन् शब्द को सम्प्रसारण होता है वैसे (युवतीः पश्य) यहां स्त्रीलिंग में भी होना चाहिये इत्यादि सन्देहों की निवृत्ति के लिये यह परि० ॥

६३—विभक्तौ लिङ्गविशिष्टग्रहणं न ॥ अ० ॥ ७।१।१ ॥

विभक्ति के आश्रय कार्य करने में पठित लिंग से अन्य लिंग का ग्रहण नहीं होता। इस से भसंज्ञाश्रय सम्प्रसारण युवति शब्द को नहीं होता तथा जैसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(गोमान्,यवमान्) यहां नुम् और दीर्घ होते हैं वैसे (गोमती,यवमती) यहां होवे सो सर्वनामस्थ विभक्त्याश्रित कार्य होने से नहीं होता जैसे(सखा,सखायौ)यहां सखि शब्द को आकारादेश होता है वैसे (सखी, सख्यौ,सख्यः) यहां स्त्रीलिङ्ग में विभक्त्याश्रित आकार नहीं होता इत्यादि इस परिभाषा के भी बहुत प्रयोजन हैं॥ ६३ ॥

(तस्यापत्यम्) इस सूत्र में (तस्य) यह पुंल्लिंग षष्ठी का एक वचन और अपत्य शब्द नपुंसकलिंग प्रथमैकवचननिर्दिष्ट किया है तो (कन्याया अपत्यं,कानीनः) यहां स्त्रीलिंग शब्द से कानीन शब्द नहीं सिद्ध होना चाहिये और (द्वयोर्मात्रोरपत्यं द्वैमातुरः) यहां द्विवचन से प्रत्यय त्पत्ति भी नहीं होनी चाहिये इस लिये यह परिभाषा है ॥

६४—सूत्रे लिङ्गवचनमतन्त्रम् ॥ अ० ॥ ४ । १ । ६२ ॥

जो सूत्र में लिंग और वचन पढ़े हैं वे कार्य्य करने में प्रधान नहीं होते अर्थात् जहां स्त्रीलिंग, पुंलिङ्ग वा नपुंसकलिंग से तथा एकवचन, द्विवचन बहुवचन से निर्देश किये जावें वहां उसी पठित लिंग वा बचन से कार्य्य लिया जाय यह नियम नहीं समझना चाहिये किन्तु एक किसी लिङ्ग वा वचन से शब्द पढ़ा हो तो सभी लिङ्ग वचनों से कार्य्य हो सकते हैं इस से (कानीनः,द्वैमातुरः) इत्यादि शब्द सिद्ध हो जाते हैं । इत्यादि अनेक प्रयोजन इस परिभाषा से सिद्ध होते हैं॥६४॥

अब अच्व्यन्त भृशादि प्रातिपदिकों से जो भू धातु के अर्थ में (क्यङ्) प्रत्यय होता है वह (क्व दिवा भृशा भवन्ति)यहां भी भृश शब्द से होना चाहिये इत्यादि सन्देहों की निवृत्ति के लिये यह परिभाषा है ॥

६५—नञिवयुक्तमन्यसदृशाधिकरणे तथा ह्यर्थगतिः ॥ अ० ॥ ३ । १ । १२ ॥

वाक्य में जो नञ् युक्त पद है उस के समान जो वाक्य में युक्त और उस नञ् युक्त पदार्थ के सदृश धर्म वाला हो उस में कार्य्य विधान होना चाहिये ।ऐसा ही अर्थ लोक में प्रतीत होता है । अर्थात् वाक्य में जिस पदार्थ को जिस क्रिया का निषेध होवे उस पदार्थ के तुल्य धर्म वाले को उसी क्रिया का विधान कर लेना चाहिये । जैसे लोक में किसी ने कहा कि (अब्राह्मणमानय) ब्राह्मण से भिन्न को लेआ तो ब्राह्मण से भिन्न क्षत्रियादि किसी मनुष्य को ले आता है क्यों कि ब्राह्मण के तुल्य धर्म्म वाला मनुष्य ही होता है किन्तु यह नहीं होता कि ब्राह्मण से इतर को मंगवाने में मट्टी वा पत्थर आदि किसी पदार्थ को लेआ के अपना अभीष्ट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्धि कर लेवे । इसी प्रकार शास्त्रों में भी जिस का निषेध किया हो उस के सदृश दूसरे का विधान करना चाहिये । यहां जो च्वि प्रत्ययान्त से अन्य भृशादि शब्दों से क्यङ् प्रत्यय विधान किया है वह च्वि प्रत्ययान्त के तुल्य अर्थ वाले भृशादिकों से क्यङ् होना चाहिये । च्वि प्रत्यय का अर्थ अभूततद्भाव है उसी अर्थ में क्यङ् होता है (अभृशो भृशो भवति,भृशायते) इत्यादि (क्व दिवा भृशा भवन्ति) यहां अभूततद्भाव के न होने से (क्यङ्) नहीं होता । तथा (दधिच्छादयति, मधुच्छादयति) इत्यादि प्रयोगों में (तुक्) आगम को अभक्त मानें कि न पूर्वान्त और न परादि दोनों से पृथक् है तो अतिङ् से परे तिङ् पद को निघात होजावे । सो तुक् तिङ् से भिन्न तिङ् के तुल्य धर्म वाला पद नहीं है इस से निघात नहीं पावेगा और निघात होना इष्ट है इस लिये (तुक्) को अभक्त नहीं करना किन्तु पूर्वान्त ही करना चाहिये इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ६५ ॥

(उपपदमतिङ्) इस सूत्र में अतिङ् ग्रहण का यही प्रयोजन है कि तिङन्त उपपद का समास न होवे सो जो (सुप्, सुपा) इन दोनों की अनुवृत्ति चली आती है तब तो तिङ् उपपद का समास प्राप्त ही नहीं फिर निषेधार्थ करना व्यर्थ हुआ इस लिये ऐसा ज्ञापक होना चाहिये कि असुबन्त के साथ असुबन्त का भी समास होता है तब तो अतिङ् ग्रहण सार्थक होता है इस लिये यह प० ॥

६६—गतिकारकोपपदानां कृद्भिः सह समासवचनं प्राक् सुबुत्पत्तेः ॥ अ० ॥ ४ । १ । ४८ ॥

गति, कारक और उपपद इन का कृदन्त के साथ सु आदि की उत्पत्ति से पहिले ही समास हो जाता है । यहां केवल सुप्रहित कृदन्त के साथ समास हुआ तो अतिङ् ग्रहण सार्थक होने से स्वार्थ में चरितार्थ हो गया । और अन्यत्र फल यह है कि गति, (सांकूटिनम्) यहां जो तद्धितोत्पत्ति से पहिले सम् और कूटिन् सुबन्तों का समास करके पीछे तद्धित उत्पन्न किया चाहें तो तद्धितोत्पत्ति को विवक्षा में कूटिन् शब्द की पृथक् पदसंज्ञा रहने से सम् शब्द को वृद्धि नहीं हो सकती । और जब सुप्रहित केवल कूटिन् कृदन्त के साथ समास होता है तब समाससमुदाय की एक पद संज्ञा हो कर तद्धितोत्पत्ति होने से सम् को वृद्धि हो जाता है । कारक, (या वस्त्रेण क्रीयते सा वस्त्रक्रीती, अश्वक्रीती) इत्यादि शब्दों में केवल क्रीत कृदन्त के साथ वस्त्र आदि शब्दों का समास हो कर कारण पूर्व क्रीतान्त प्रातिपदिक से (ङीष्) प्रत्यय हो जाता है । और जो सुबन्त के साथ ही समास नियम रहे तो समास की विवक्षा में ही अन्तरङ्ग होने से अकारान्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीत शब्द से टाप् होजावे पुनः अकारान्त हो जाने से अकारान्त से विहित ङीष् प्रत्यय नहीं होवे तो (दस्त्रक्रीती) आदि प्रयोग भी सिद्ध न हो सकें । उगपद, (माषवापिणी, व्रीहिवापिणी) यहां प्रातिपदिकान्त नकार को णत्व होता है । सो जो सुबन्तों का ही समास करें तो समास की विवक्षा में ही नकारान्त (वापिन्) शब्द से ङीप् हो कर पीछे समास हो तब उस ङीबन्त (माषवापिनी) समुदाय की प्रातिपदिक संज्ञा होवे तो प्रातिपदिकान्त ईकार के होने से फिर णत्व नहीं हो सके । और जब केवल कृदन्त वापिन् शब्द के साथ समास होता है तब केवल माषवापिन् नकारान्त शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा हो कर ङीप् होता है तो प्रातिपदिकान्त नकार को णत्व हो जाता है इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ६६ ॥

(उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः) इस सूत्र में उगित् धातु के निषेध का यही प्रयोजन है कि (उखास्रत्, पर्णध्वत्) इत्यादि में नुम् आगम न हो सो यह प्रयोजन तो (अञ्चु) धातु के ग्रहण से निकल जाता कि (उगित्) धातु को (नुम्) आगम हो तो अञ्चु ही को हो इस नियम से अन्य उगित् धातु को नुम् होता ही नहीं फिर अधातु ग्रहण व्यर्थ हुआ। इस के व्यर्थ होने रूपज्ञापक से यह परिभाषा निकली है॥

६७—साम्प्रतिकाऽभावे भूतपूर्वगतिः ॥

जो पदार्थ वर्त्तमान काल में अपनी प्रथमावस्था से पृथक् हो गया हो तो उसी पूर्वावस्था के सम्बन्ध से उस को वर्त्तमान में भी कार्य्य हों जैसे (गोमन्तमिच्छति,-गोमत्यति, गोमत्यतेः क्विप्, गोमान्) यहां प्रथम तो गोमान् प्रातिपदिक है पीछे उस से क्यच् हुआ तो धातु संज्ञा हुई फिर क्यच् प्रत्ययान्त से क्विप् होने से धातु संज्ञा उस की बनी रही। सो पूर्व रही प्रातिपदिक संज्ञा के स्मरण से पीछे धातुसंज्ञा के बने रहते भी (नुम्) होता है अर्थात् अधातु निषेध नहीं लगता इस से अधातु निषेध भी सार्थक रहा । तथा (आत्मनः कुमारीमिच्छति, कुमारीयति, कुमारीयतेः कर्त्तरि क्विप्, कुमारी ब्राह्मणः, तस्मै कुमार्यै * ब्राह्मणाय) यहां कुमारी शब्द प्रथमावस्था में स्त्रीलिंग ईकारान्त है तब तो स्त्र्याख्य ईकारान्त नदी संज्ञा सिद्ध है पीछे जब पुल्लिङ्गवाची हो गया तब भी पूर्वावस्था के भूतपूर्व स्त्रीत्व को लेकर नदी संज्ञा हो के नदीसंज्ञा के कार्य्य भी होते हैं । इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ६७ ॥

* यहां भूतपूर्वगति परिभाषा के मानने से कार्य्य भी चल जाता तथा अन्यत्र भी सब काम चलता है फिर कुमार्यै ब्राह्मणाय । इत्यादि प्रयोगसिद्धि के लिये नदीसंज्ञा में (प्रथमलिङ्गग्रहणञ्च) इस वार्त्तिक का भी कुछ प्रयोजन नहीं रहा क्यों कि इस परिभाषा के होने से सब काम निकल जाते हैं । वार्त्तिक एकदेशी और परिभाषा सर्वदेशी है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुव्रीहिसमास में अन्य पदार्थ प्रधान होता है अर्थात् जिन दो वा अधिकपदों का समास किया जावे उन पदों से पृथक् पद वाच्य अन्य पदार्थ कहाता है जैसे (चित्रा गावो यस्य स चित्रगुः,शवलगुः) यहां गौओं का विशेषण (चित्रगुण)और गौ इन दोनों पदों से भिन्न इन का स्वामी (चित्रगु) कहाता है इसी प्रकार (सर्व आदिर्येषां तानि सर्वादीनि) यहां सर्व और आदि दोनों शब्द से पृथक् अन्यपदार्थ लिया जावे तो सर्वशब्द की सर्वनाम संज्ञा नहीं हो सके इसलिये यह परिभाषा है॥

६८-भवति हि बहुव्रीहौ तद्गुणसंविज्ञानमपि* ॥अ०।१।१।२७॥

बहुव्रीहि दो प्रकार का होता है एक (तद्गुणसंविज्ञान) और दूसरा (अतद्गुण संविज्ञान) तद्गुण संविज्ञान उस को कहते हैं कि जहां उस अन्य पदार्थ के साथ उस के निज गुणों का समवाय सम्बन्ध हो जैसे (लम्बकर्णः, तुङ्गनासिकः, दीर्घबाहुः, कृशकेशनखश्मश्रुः) इत्यादि में अन्य पदार्थ का बोध कान आदि के सहित होता है। अतद्गुणसंविज्ञान वह है कि जिन पदों का समास किया जावे उन से अन्य पदार्थ का पृथक् सम्बन्ध बना रहे कि जैसे (चित्रगु) शब्द में दिखा दिया है। इस से सर्वादि में भी तद्गुणसंविज्ञान मान के सर्व शब्द को भी सर्वनाम संज्ञा हो जाती है। इसी प्रकार अन्यत्र भी जानना चाहिये ॥ ६८ ॥

जहां समास को अन्तोदात्त स्वर कहा है वहां (ब्राह्मणसमित्, राजदृषत्) इत्यादि प्रयोगों के अन्त में तकार है तो विधान सामर्थ्य से उस व्यञ्जन को ही उदात्त हो जाना चाहिये इत्यादि सन्देह की निवृत्ति के लिये यह परि० ॥

६९-हलस्वरप्राप्तौ व्यञ्जनमविद्यमानवद्भवति † ॥अ०॥६।१।२२३॥

व्यञ्जन को उदात्तादि स्वर प्राप्त होतो वह व्यञ्जन अविद्यमानवत् होता है इस से (ब्राह्मणसमित्) आदि प्रयोगों में अन्त्य तकार को अविद्यमानवत् मान के इकार

* इस परिभाषा के आगे नागेश ने (चानुकृष्टं नोत्तरत्र) यह परिभाषा लिखी है सो ठीक नहीं क्यों कि उस का मूल कहीं महाभाष्य से वा सूत्रों से नहीं निकलता। और न कोई उदाहरण मुख्य प्रयोजन का दिया।

† इस परिभाषा को नागेश भट्ट तथा अन्य लोग भी महाभाष्य से विरुद्ध लिखते पढ़ते हैं कि (स्वरविधौ व्यञ्जनमविद्यमानवत्) ऐसा पाठ करने में महाभाष्यकार ने ये दोष भी दिखाये हैंकि उदात्तादि स्वरोंके विधान मात्र में जो व्यञ्जन अविद्यमानवत् माना जावे तो (विद्युत्वान् वलाहकः) यहां विद्युत् के तकार को अविद्यमान मानें तो ह्रस्व से परे मतुप् को उदात्त स्वर (ह्रस्वनुड्भ्यां०] सूत्र से प्राप्त है० इत्यादि अनेक दोष आवेंगे। और (हल्स्वरप्राप्तौ०) इस प्रकार की परिभाषा में कोई दोष नहीं आता इस लिये नागेश आदि का मानना ठीक नहीं है॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को उदात्त होजाता है। इस का ज्ञापक (यतोऽनावः) इस सूत्र में यत् प्रत्ययान्त द्व्यच् प्रातिपदिक को आद्युदात्त कहा है। और (नौ) शब्द का निषेध इसी लिये है कि (नाव्यम्) यहां आद्युदात्त नहो सो जब आदि में नकार है तब स्वर के होने से आद्युदात्त प्राप्त ही नहीं फिर निषेध करने से यही प्रयोजन है कि उस नकार का भी स्वर प्राप्त होता है सो अविद्यमानवत् मान के आकार को होजाता इस लिये निषेध किया। तथा अनुदात्तादि वा अन्तोदात्त से परे जो कार्य कहे हैं उन में जहां आदि और अन्त में व्यञ्जन हैं वहां उन कार्यों की प्राप्ति नहीं होगी वहां भी अविद्यमानवत् मान कर काम चल जाता है। और जो कदाचित् ऐसा मान लिया जावे कि उदात्तादि गुण व्यंजनों के ही हैं उन के संयोग से अचों के भी धर्म समझे जाते हैं सो नहीं बन सकता क्योंकि व्यंजन के विना भी केवल अचों में उदात्तादि धर्म प्रसिद्ध हैं और अच्, के विना व्यंजन का उच्चारण होना भी कठिन है इस लिये उदात्तादि गुण स्वतंत्र व्यंजनों के नहीं होसकते। परन्तु यह बात तो माननी चाहिये कि अच् के संयोग से व्यंजन को भी उदात्तादि गुण प्राप्त हो जाते हैं। जैसे दो रंगे वस्त्रों के बीच एक श्वेत वस्त्र होतो वह भी कुछ रंगित प्रतीत होता है ॥ ६९ ॥

(वामदेवाड् ड्यड्ड्यौ) इस सूत्र में ड्यत् औ ड्य प्रत्यय डित् इसी लिये पढ़े हैं कि डित् के परे वामदेव शब्द के टि भाग का लोप हो जावे सो (यस्येति च) सूत्र से तद्धित के परे भसंज्ञक अवर्ण का लोप हो ही जाता फिर डित् करण व्यर्थ हो कर इन परिभाषाओं के निकलने में ज्ञापक है ॥

७०—अननुबन्धकग्रहणे न सानुबन्धकस्य ग्रहणम् ॥

७१—तदनुबन्धकग्रहणे नातदनुबन्धकस्य ग्रहणम् ॥ अ० ॥ ४।२।६ ॥

अनुबन्धरहित प्रयोगों के ग्रहण में अनुबन्धसहितों का ग्रहण नहीं होसकता अर्थात् जहां यत् प्रत्यय डकार अनुबन्ध से रहित पढ़ा हैं और ड्यत् में डकार की इत्संज्ञा होकर यत् ही रह जाता है जहां यत् और य प्रत्यय का ग्रहण किया है वहां (ड्यत्, ड्य) प्रत्यय का ग्रहण न हो। और जिस अनुबन्ध से जो प्रत्यय पढ़ा है उस में द्वितीय अनुबन्ध के सहित प्रत्यय का ग्रहण न हो अर्थात् यत् कहने से ण्यत् अङ् कहने से चङ्, और अच् कहने से णच् का ग्रहण न हो इस से यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया कि (ययतोश्चातदर्थे) इस स्वरविधायक सूत्र में नञ् से परे (य, यत्) प्रत्ययान्त को अन्तोदात्त स्वर होता है सो जो (ड्यत्, ड्य) का जो ग्रहण होवे तो (अवामदेव्यम्) यहां भी अन्तोदात्त स्वर होजावे और पूर्वपद प्रकृतिस्वर इष्ट है इस लिये डित् ग्रहण का सार्थक होना स्वार्थ में चरितार्थ और अङ् के परे जो गुणआदि कार्य कहा है सो चङ् के परे नहीं होता और चङ् के परे जो द्वित्वादि कार्य कहा है सो अङ् के परे नहीं होता इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ७० ॥ ७१॥

(णचः स्त्रियामञ्) यहां णच् प्रत्ययान्त से स्वार्थ में अञ् प्रत्यय कहा है सो (कर्मव्यतिहारे णच् स्त्रियाम्) इस सूत्र से णच् प्रत्यय तो स्त्रीलिंग में ही विधान है फिर स्वार्थ में णच् प्रत्ययान्त से अञ् कहने से स्त्रीलिंग ही हो जाता क्यों कि स्वार्थिक प्रत्ययों के होने में प्रकृति के लिङ्ग और वचन की अनुवृत्ति होती है फिर स्त्रीग्रहण व्यर्थ हुआ इस लिये यह परिभाषा है ॥

७२-क्वचित्स्वार्थिका अपि प्रकृतितो लिङ्गवचनान्यतिवर्त्तन्ते॥

अ० ॥ ५ । ३ । ६८ ॥

कहीं २ स्वार्थिक प्रत्यय भी प्रकृति के लिङ्ग वचनों को छोड़ देते हैं । जब प्रकृति के लिङ्ग वचन स्वार्थ प्रत्ययोत्पत्ति में सर्वत्र नहीं बने रहते तो (णचः स्त्रियामञ्) सूत्र में स्त्री ग्रहण सार्थक हो गया । तथा (अप्कल्पम्) यहां नियत स्त्रीलिङ्ग बहुवचनान्त अप् शब्द से कल्पप् प्रत्यय स्वार्थ में हुआ है सो अपने लिङ्ग वचन छोड़ के नपुंसकलिङ्ग एकवचन रह जाता है तथा (गुड़कल्पाद्राक्षा, पयस्कल्पा यवागूः) यहां गुडपुंल्लिङ्ग और पयः नपुंसकलिङ्ग से कल्पप् प्रत्यय होकर स्त्रीलिङ्ग हो जाता है । और क्वचित् कहने से यह प्रयोजन है कि(बहुगुडोद्राक्षा, बहुपयो यवागूः) इत्यादि में प्रकृति के अनुकूल ही लिङ्ग वचन रहते हैं इत्यादि अनेक प्रयोजन है ॥ ७२ ॥

(प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे) इस सूत्र के अंश्वादिगण में राजन् शब्द पढ़ा है तो उस का यही प्रयोजन है कि प्रति से परे तत्पुरुष समास में राजन् शब्द अन्तोदात्त हो जावे सो जब प्रतिपूर्वक राजन् शब्द से तत्पुरुष समास में समासान्त टच् प्रत्यय प्राप्त है तब तो चित् होने से अन्तोदात्त हो ही जाता फिर राजन् शब्द का पाठ व्यर्थ हुआ इस लिये यह परिभाषा है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७३—विभाषा समासान्तो भवति* ॥ अ० ॥ ६ । २ । १९७ ॥

समासान्त सब प्रत्यय विकल्प करके होते हैं तो प्रतिपूर्वक राजन् शब्द से जिस पक्ष में समासान्त टच् न हुआ वहां (प्रतिराजा) में भी अन्तोदात्त हो जावे इस लिये राजन् शब्द का अंग्वादिगण में पढ़ना सार्थक हो गया । तथा (द्वित्रिभ्यां षाइन्) इस सूत्र से भी बहुव्रीहिसमास में द्वित्रिपूर्वक मूर्द्ध शब्द को अन्तोदात्त स्वर कहा है सो यहां भी द्वित्रिपूर्वक मूर्द्ध से जब समासान्त ष प्रत्यय विधान है तो प्रत्ययस्वर से अन्तोदात्त सिद्ध ही है फिर मूर्द्धन् शब्द का ग्रहण इसी लिये है कि समासान्त प्रत्यय विकल्प होते हैं सो जिस पक्ष में समासान्त नहीं होता (द्विमूर्द्धा,त्रिमूर्द्धा) यहां भी अन्तोदात्त स्वर हो जावे । इत्यादि प्रयोजनों के लिये यह परिभाषा है ॥ ७३ ॥

(शतानि, सहस्राणि) यहां जब सर्वनामस्थान शि को मान के नुम् आगम होता है तब (शतन्, सहस्रन्)शब्दों के नकारान्त हो जाने से (ष्णान्ताषट्) सूत्र से षट्संज्ञा होजावे तो(षड्भ्यो लुक्) सूत्र से शि का लुक् होना चाहिये इत्यादि समाधान के लिये यह परिभाषा है ॥

७४—सन्निपातलक्षणो विधिरनिमित्तं तद्विघातस्य ॥अ०॥१।१।३९॥

जो एक के आश्रय से दूसरे का सम्बन्ध होना है वह सन्निपात कहाता है उसी सन्निपातसंबन्ध का जो निमित्त हो ऐसा जो विधि कार्य है वह उस अपने निमित्त के बिगाने को अनिमित्त अर्थात् असमर्थ होता है । यहां शत,सहस्र शब्द से जस् आकर शि आदेश हुआ अब शि के आश्रय से शत शब्द को नुम् हो कर शतनान्त हुआ अब जिस के आश्रय से शत को नान्तत्व गुण मिला उस नान्त गुण से उसी का विघात करे यह ठीक नहीं इस से (शतानि, सहस्राणि) आदि में शि का लुक् नहीं होता तथा (इयेष,उवोष) यहां णल् प्रत्यय के आश्रय से (इष, उष) धातु को गुण होता है गुण होने से इजादि मान कर आम् प्राप्त है और

* इस परिभाषा को नागेश भट्ट ने ‘समासान्तविधिरनित्यः’ ऐसा लिखा है सो महाभाष्य से विरुद्ध है क्यों कि अनित्य और विभाषा में बहुत भेद है अनित्य उस को कहते हैं कि जो कभी हो और कभी न हो और विकल्प के दो पक्ष सदा बने रहते हैं और इस परिभाषा की भूमि का में ‘सुपथी नगरी’ यह महाभाष्य का उदाहरण करके रक्खा है कि पथिन् शब्द से ‘इनः स्त्रियाम्’ सूत्र से समासान्त कप् नहीं हुआ तो समासान्त अनित्य है। सो यह नहीं विचारा कि ‘न पूजनात्’ सूत्र से ‘सुपथी नगरी’ आदि सब में पूजनवाची समास से समासान्त का निषेध सिद्ध है जब कप् प्राप्त ही नहीं तो समासान्तविधि के अनित्य होने में ‘सुपथी नगरी’ यह प्रयोग कब समर्थ हो सकता है । देखो व्याकरण में नागेश की कितनी बड़ी भूल है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आम् के होजाने से उस से परे लुक् कहा है तो उसी षल् का विघात हो कि जिस के आश्रय से इष उष इजादि हुए हैं इत्यादि इस के अनेक प्रयोजन हैं। और लोक के साथ भी इस परिभाषा का सम्बन्ध है कि जो पुरुष जिस धनाढ्य के धन से स्वयंधनवान् हुआ हो वह उसी धन से धनाढ्य का विघात करे यह बहुत विरुद्ध है अर्थात् ऐसा कभी न होना चाहिये कि जिस के संग से जो सामर्थ्य प्राप्त हो उस सामर्थ्य से उसी को नष्ट करे ॥ ७४ ॥

(पञ्चेन्द्राण्यो देवता अस्य स पञ्चेन्द्रः स्थालीपाकः) पञ्चेन्द्राणी शब्द से देवता अर्थ में विहित अण् प्रत्यय का (द्विगोर्लुगनपत्ये) सूत्र से लुक् हो कर (लुक्तद्धितलुकि) सूत्र से ईकार स्त्रीप्रत्यय का भी लुक् हो जाता है। तब ङीष् के संयोग से आया जो आनुक् आगम उस का लुक् विधान किसी सूत्र से नहीं किया सो उस आनुक् का श्रवण होतो (पञ्चेन्द्रः) आदि शब्द सिद्ध नहीं होसकें इस लिये यह परिभाषा है ॥

७५—संनियोगशिष्टानामन्यतराऽभावे उभयोरप्यभावः ॥ अ० ॥ ६ । ४ । १५३ ॥

जिस कार्य के होने में एक साथ दोका नियम हुआ हो उन में से जब एक का अभाव होजावे तब दूसरे का अपने आप अभाव होजाता है। जैसा किसी कार्यका नियम है कि देवदत्त यज्ञदत्त दोनों मिल के इस काम को करें सो जो देवदत्त न रहे तो यज्ञदत्त उस कार्य से स्वयं निवृत्त हो जाता है। इसी प्रकार यहां भी इन्द्र शब्द से स्त्रीत्व रूप कार्य की विवक्षा को ङीष् और आनुक् दोनों पूरी करते हैं सो जब ङीष् का अभाव होता है तब आनुक् भी वहां से निवृत्त हो जाता है। तथा (पञ्चाग्नाय्यो देवता अस्य स पञ्चाग्निः। यहां स्त्री प्रत्यय का लुक् होने के पश्चात् ऐकार आगम की भी निवृत्ति होजाती है। इस परिभाषा का ज्ञापक यह है कि (बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक्) इस सूत्र में बिल्वकादि से परे छ प्रत्यय का लुक् कहा है और उसी छ प्रत्यय के संयोग से बिल्वादि शब्दों को कुक् होता है। सो बिल्वादिशब्दों से छ को लुक् कह देते तो कुक् आगम की भी निवृत्ति होजाती। इस लिये बिल्वादि शब्दों को कुक् आगम के सहित पढ़ उन से परे छ प्रत्यय मात्र का लुक् कहा है। इस से सिद्ध हुआ कि आगमी की निवृत्ति में आगम की निवृत्ति होजाती है। तब कृत कुगागम बिल्वकादि से छ प्रत्यय का लुक् कहा है इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ७५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद्दनुबन्धकग्रहणे० इस पूर्व लिखित परिभाषा के अनुकूल अण् प्रत्यय के आश्रय कार्य है वह ण प्रत्यय को आश्रय करके न होना चाहिये तो (कार्मस्ताच्छील्ये) इस सूत्र का यही प्रयोजन है कि ताच्छील्य अर्थ में ण प्रत्यय परे हो तो कर्मन् शब्द के टि भाग का लोप हो सो (नस्तद्धिते) सूत्र से नान्त भ संज्ञक अङ्ग के टि का लोप सिद्ध ही है तो ताच्छील्य अर्थ में (कार्मः) प्रयोग बनही जाता फिर यह सूत्र व्यर्थ होकर इस परिभाषा का ज्ञापक है ॥

७६—ताच्छीलिके णेऽण् कृतानि भवन्ति ॥ अ० ॥ ६ । ४ । १७२ ॥

तच्छील अर्थ में विहित ण प्रत्यय के परे अण् प्रत्ययाश्रित कार्य भी होते हैं इस से यह आया कि (अन्) सूत्र से अण् प्रत्यय के परे अन्नन्त को प्रकृतिभाव कहा है सो ताच्छील्य अर्थ में ण प्रत्यय के परे अन्नन्त कर्मन् शब्द को भी प्राप्त था इस लिये (कार्मस्ताच्छील्ये) सूत्र में टि लोप निपातन सार्थक हो गया यह स्वार्थ में चरितार्थ है। अन्यत्र फल यह है कि (चुरा शीलमस्याः सा चौरी, तपः शीलमस्याः सा तापसी) इत्यादि प्रयोगों में ताच्छीलिक ण प्रत्ययान्त से (टिड्ढाणञ्०) सूत्र में अणन्त से कहा ङीप् हो जाता है इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ७६ ॥

(दाण्डिनाय०) इस सूत्र में भ्रौणहत्य शब्द निपातन किया है उस से यही प्रयोजन है कि (भ्रूणघ्नो भावः भ्रौणहत्यम्) यहां निपातन से तकारादेश हो जावे सो जो (हनस्तोऽचिण्णलोः) सूत्र से ष्यञ् प्रत्यय के परे हन के नकार को तकारादेश हो जाता तो फिर निपातन करना व्यर्थ है इस लिये यह परिभाषा है ॥

७७—धातोः कार्यमुच्यमानं तत्प्रत्यये भवति ॥ अ० ॥ ७ । २ । ११४ ॥

जो धातु को कार्य कहा है वह उसी धातु से विहित प्रत्यय के परे हो अर्थात् धातु को कार्य प्रातिपदिक से विहित तद्धित के परे न हो। इस से हन् धातु को कहा तकारादेश भ्रौणहत्य में प्रातिपदिक से विहित तद्धित ष्यञ् के परे नहीं हो सकता। इसलिये भ्रौणहत्य में तकारादेश निपातन करना सार्थक हुआ और अन्यत्र फल यह है कि (भ्रौणघ्नः) यहां अण् प्रत्यय के परे तकारादेश नहीं होता तथा (कंसपरिमृड्भ्याम्) यहां प्रातिपदिक से विहित विभक्ति के परे मृज धातु को कही वृद्धि नहीं होती (रज्जुसृड्भ्याम्, देवदृग्भ्याम्) यहां झलादि अकित् विभक्ति के परे सृज धातु को अम् आगम नहीं होता। इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ७७ ॥

(सर्वके, विश्वके, उच्चकैः, नीचकैः) यहां सर्वनाम और अव्यय संज्ञा नहीं होनी चाहिये क्योंकि सर्वादि में सर्व विश्व शब्द और अव्ययों में उच्चैस् नीचैस् शब्द पढ़े हैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो जब शब्द के स्वरूप का ग्रहण होता है तो उक्त शब्दों को सर्वनाम और अव्यय संज्ञा कैसे होगी और संज्ञा के बिना सर्वनाम और अव्यय के कार्य भी नहीं हो सकते इसलिये यह परिभाषा है ॥

७८—तदेकदेशभूतस्तद्ग्रहणेन गृह्यते ॥ अ० ॥ १ । १ । ७२ ॥

किसी के एकदेश में कोई अन्य आजावे तो वह उसी के ग्रहण से ग्रहण किया जाता है इस से यहां सर्व आदि शब्दों के मध्य में अकच् प्रत्यय आगया वह उसी के ग्रहण से ग्रहण किया गया तो सर्वनाम संज्ञा होगई। इसी प्रकार (उच्चकैः) आदि में अव्यय संज्ञा होना जानो। तथा (अहं पठामकि) यहां अतिङ् से परे तिङ्पद अनुदात्त भी हो जाता है। इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ७८ ॥

(गातिस्थाघुपा०) इस सूत्र में गाति निर्देश से तो अदादि के इण् धातु का ग्रहण होना ठीक है। परन्तु पा धातु के ग्रहण में संदेह है कि अलुक् विकरण भ्वादि और लुक् विकरण अदादि इन दोनों में से किस का ग्रहण किया जावे सो जो अदादि के पा धातु का भी ग्रहण होतो (अपासीद्वनम्) यहां भी सिच् का लुक् हो जाना चाहिये इस लिये यह परिभाषा है ॥

७९—लुग्विकरणालुग्विकरणयोरलुग्विकरणस्यैव ग्रहणम् ॥ अ० ॥ ७ । २ । ४४ ॥

लुग्विकरण और अलुग्विकरण के ग्रहण में जहां संदेह पड़े वहां अलुग्विकरण का ही ग्रहण होना चाहिये इस से उक्त (गातिस्था०) सूत्र में (पा पाने) अलुग्विकरण धातु का ग्रहण हो जाता है। और लुग्विकरण (पा रक्षणे) का ग्रहण नहीं होता। इस का ज्ञापक यह है कि (स्वरतिसूतिसूयति) इस सूत्र में (सूति, सूयति) दोनों के स्थान में सूङ् पढते तो इन्हीं दोनों का ग्रहण हो जाता क्योंकि ये ही दोनों सूङ् हैं तीसरा नहीं परन्तु सूति लुग्विकरण अदादि और सूयति अलुग्विकरण दिवादि का है। इस से यही आया कि सामान्य सूङ् के पढ़ने से अलुग् विकरण सूयति का ग्रहण होता और सूति का नहीं होता इस लिये पृथक् २ दोनों का निर्देश किया है इत्यादि इस के अनेक प्रयोजन हैं ॥ ७९ ॥

(हेरचङि) इस सूत्र में अभ्यास से परे हि धातु के हकार को कुत्व कहा है परन्तु वह कुत्व चङ् में नहीं सो चङ् णिजन्त से होता है उस चङ् के परे हि को अङ्गसंज्ञा ही नहीं किन्तु णिच् के सहित और णिच् के परे हि को अंग संज्ञा है और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगाधिकार में अंग को कार्य का विधान वा निषेध होता है इस चङ् के परे कुत्व प्राप्त हो नहीं फिर निषेध क्यों किया इस लिये यह परिभाषा है ॥

८०—प्रकृतिग्रहणे ण्यधिकस्यापि कुत्वं भवति ॥ अ० ॥ ७।३।५६ ॥

कुत्वप्रकरण में जहां मूलप्रकृति का ग्रहण है वहां णिच्सहित प्रकृति का भी ग्रहण हो जावे । इस से चङ् के परे निषेध सार्थक होगया और अन्यत्र फल यह है कि (प्रजिघाययिषति) यहां णिजन्त हि धातु को सन् प्रत्यय के परे कुत्व हो जाता है इत्यादि प्रयोजन हैं ॥ ८० ॥

(ज्यादादीयसः) इस सूत्र में जो ज्य से परे ईयसुन् प्रत्यय को आकारादेश न कहते तो भी लोप की अनुवृत्ति आकार पर के आदि ईकार का लोप हो कर अकित् यकारादि प्रत्यय के परे ज्य को दीर्घ होके (ज्यायान्) प्रयोग सिद्ध होही जावेगा फिर आकारादेश विधान व्यर्थ होने से यह परिभाषा है ॥

८१—अङ्गवृत्ते पुनर्वृत्तावविधिः ॥ अ० ॥ ६ । ४ । १६० ॥

अंगाधिकार में कोई कार्य निष्पन्न हो गया होतो फिर दूसरे कार्य में प्रवृत्ति न होवे । इस से यह आया कि अंगाधिकार के एक ईयसुन्लोप कार्य होने में फिर द्वितीय कार्य दीर्घ नहीं हो सकता इस लिये पूर्वोक्त (ज्यादादीयसः) सूत्र में आकारादेश सार्थक होगया तथा (रीङ् ऋतः) यहां जो दीर्घ रीङ् न कहते तो भी (मात्रीयति) आदि में अकित् यकारादि प्रत्यय के परे दीर्घ हो जाता फिर दीर्घ रीङ् ग्रहण का यही प्रयोजन है कि रिङ् किये पीछे दीर्घ नहीं होसकता इस लिये दीर्घ रीङ् पढ़ना चाहिये । इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ८१ ॥

(परमात्मानं नमस्करोति नमस्यति वा) इत्यादि प्रयोगों में नमः शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति (नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च) इस सूत्र से होनी चाहिये सो इस समाधान के लिये यह परिभाषा है ॥

८२—उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी ॥ अ० ॥ २।३।१६ ॥

उपपदविभक्ति से कारकविभक्ति बलवान् होती है । उपपदविभक्ति वह कहाती है कि जहां कर्मादि कारक व्यवस्था से किसी नियत विभक्ति का नियम न किया हो और जहां कर्मादि कारक व्यवस्था से नियत विभक्ति होती है उस को कारक विभक्ति कहते हैं सो (परमात्मने नमः, गुरवे नमः) इत्यादि में तो उपपदविभक्ति चतुर्थी हो जाती और (परमात्मानं नमस्करोति) इत्यादि में उपपदविभक्ति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बाध के कारकविभक्ति हो जाती है। तथा (गाः स्वामी व्रजति) यहां स्वामी शब्द के योग में उपपदविभक्ति षष्ठी सप्तमी (स्वामीश्वराधिपति०) इस सूत्र से प्राप्त है परन्तु व्रजति क्रिया में गौओं को कर्मत्व होने से द्वितीयाविभक्ति हो जाती है। इत्यादि ॥ ८२ ॥

(मिमार्जिषति) यहां (मृज्+सन्+तिप्=) इस अवस्था में बह्वपेक्ष वृद्धि की अपेक्षा में अल्पापेक्ष अन्तरङ्ग होने से द्वित्व हो कर परत्व से अभ्यास कार्य होके (मिमृज्+सन्×तिप्=) इस अवस्था में इकार ऋकार दोनों को वृद्धि प्राप्त है सो जो अभ्यास को भी वृद्धि हो जावे तो ह्रस्व का अपवाद होने से फिर ह्रस्व नहीं हो सकता तो (मिमार्जिषति) आदि प्रयोग भी सिद्ध नहीं हो सकते इस लिये यह परि०॥

८३—अनन्त्यविकारेऽन्त्यसदेशस्य कार्यं भवति ॥अ० ।६।१।१३॥

जहां अनन्त्य और अन्त्य वर्ण के समीपस्थ दोनों वर्ण को जो कार्य प्राप्त हो वहां अन्त्य के समीपस्थ वर्ण को कार्य होना चाहिये और दूरस्थ व्यवहित पूर्व वर्ण को नहीं होवे इस से (मिमार्जिषति) में अभ्यास को वृद्धि नहीं होती तथा (अदोऽद्यति, अदसुयङ्) यहां क्विप् प्रत्ययान्त अञ्चु धातु के परे अदस् शब्द के टि भाग को अद्रि आदेश हो कर (अदद्र्याङ्) इस अवस्था में (अदसोऽसेर्दादु दो मः) इस सूत्र से दोनों दकारों से परे उ और दकारों को मकार प्राप्त है सो इस परिभाषा से अन्त्य को होता है अनन्त्य पूर्व को नहीं इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ८३ ॥

(देहि, धेहि) इत्यादि प्रयोगों में जो अभ्यास का लोप होता है सो अलोन्त्यविधि मान के अन्त्य अल् का लोप होवे तो (देहि, धेहि) आदि प्रयोग सिद्ध नहीं होसके इस लिये यह परिभाषा है ॥

८४—नानर्थकेऽलोन्त्यविधिरनभ्यासविकारे ॥अ०॥ १।१।६५॥

अनर्थक शब्द को कहा कार्य अन्त्य अल् को न हो परन्तु अभ्यास विकार को छोड़ के धातु को जो द्वित्व किया जाता है उस में एक भाग अनर्थक और दोनों भाग सार्थक होते हैं क्यों कि वहां शब्दाधिक्य होने से अर्थाधिक्य नहीं हो जाता इस से अनर्थक अभ्यास का लोप अन्त्य अल् को न हुआ तो (देहि, धेहि) आदि प्रयोग सिद्ध हो गये। तथा (अव्यक्तानुकरणस्यात इतौ) इस से अत् भाग को कहा पर रूप इस परिभाषा के आश्रय से अन्त्य अल् को नहीं होता (घटत्+इति= घटिति, पटिति) इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ८४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे (ब्राह्मणश्च, ब्राह्मणी च ब्राह्मणौ वत्सश्च वत्सा च वत्सौ) यहां स्त्री वाचक शब्द के साथ पुरुषवाची शब्द एक शेष रह जाता है वैसे (ब्राह्मणवत्सा च ब्राह्मणीवत्सश्च। यहां भी एक शेष होना चाहिये इस लिये यह परिभाषा है॥

८५—प्रधानाप्रधानयोः प्रधाने कार्यसम्प्रत्ययः ॥

जहां प्रधान और अप्रधान दोनों में कार्य प्राप्त हो वहां प्रधान में कार्य होना निश्चित रहे अप्रधान में नहीं (ब्राह्मणवत्सा च ब्राह्मणीवत्सश्च) यहां स्त्रीत्व और पुंस्त्व स्वार्थ में अप्रधान और स्वस्वामिसम्बन्ध में प्रधान हैं इस लिये एक शेष नहीं होता इत्यादि। तथा लोक में भी और किसी ने किसी से पूछा कि यह कौन जाता है उसने उत्तर दिया कि राजा यद्यपि राजा के साथ सेनादि सब थे तथापि प्रधान राजा का ग्रहण होता और दो मनुष्यों का देवदत्त नाम हो तो उन में जो प्रधान होता है उसी से व्यवहाहार किया जाता है ॥ ८५ ॥

स्वस्रादि गण में मातृ शब्द पढ़ा है उस से ङीप् प्रत्यय का निषेध किया है सो जननी वाचक है और परिमाण अर्थात् तोलन करने वाली सामान्य स्त्री को भी मातृ कहते हैं सो दोनों का निषेध हो वा किसी एक का इस सन्देह की निवृत्ति के लिये यह परिभाषा है ॥

८६—अवयवप्रसिद्धेः समुदायप्रसिद्धिर्बलीयसी ॥

अवयव की प्रसिद्धि से समुदाय की प्रसिद्धि बलवान् होती है। अवयव की प्रवृत्ति थोड़े अंश में और समुदाय की प्रवृत्ति बहुत अंश में होती है। इस कारण जननी वाचक मातृ शब्द के रूढि होने से अवयव मान कर स्वस्रादिगण से ङीप् का निषेध होजाता है और परिमाण कर्तृवाचक मातृ शब्द के यौगिक होने से समुदायवाची मान कर स्वस्रादि गण से ङीप् का निषेध नहीं होता अर्थात् परिमाणवाचक मातृ पुरुष हो तो (माता, मातारौ, मातारः) और स्त्री हो तो (मात्री, मात्र्यौ, मात्र्यः) ऐसे प्रयोग होंगे इस परिभाषा के इत्यादि प्रयोजन हैं ॥ ८६ ॥

(अचि विभाषा) इस सूत्र में गृ धातु के रेफ को लकारादेश होता है। सो जहां कण्ठवाचीगल शब्द है वहांभी लत्वका विकल्पहोता गर शब्दभी कण्ठवाचक होजावे सो नियम से विरुद्ध है क्योंकि गर शब्द केवल विष का वाची और गल शब्द कण्ठ वाची है इन दोनों के अर्थ में लत्व के विकल्प से व्यभिचार होजाना चाहिये इस के समाधान के लिये यह परिभाषा है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८७—व्यवस्थितविभाषयाऽपि कार्याणि क्रियन्ते ॥

व्यवस्थित विभाषा से भी कार्य किये जाते हैं। व्यवस्थित विभाषा उस को कहते हैं कि जिस कार्य का विकल्प किया हो वही कार्य किसी नियतार्थवाचक शिष्टप्रयुक्त शब्द में नित्य होजावे और किसी में होही नहीं और जहां सब प्रयोगों में उस कार्य का होना न होना दोनों भेद रहें तो उसे को अव्यवस्थित विभाषा कहते हैं इस से काष्ठवाची गल शब्द में नित्य लत्व हो जाता है इस के उदाहरणों की कारिका महाभाष्य की यह है कि:—

देवत्रातो गलो ग्राह इतियोगे च सद्विधिः ।
मिथस्ते न विभाष्यन्ते गवाक्षः संशितव्रतः ॥ १ ॥

(देवश्चासौ त्रातो देवत्रातः) यहां संज्ञावाचक त्रात शब्द में (नुदविदोन्दत्रा०) इस सूत्र से निष्ठा के तकार को नकार नित्य हो नहीं होता और क्रियावाचक में तो (त्राणम्, त्रातम्) दोनों होते हैं। गल शब्द का लिख दिया। सामान्य यौगिकवाची (गरः,गलः) दोनों ही होते हैं (विभाषा ग्रहः) इस सूत्र में ग्रह धातु से ण प्रत्यय होकर (ग्राहः) प्रयोग बनता है सो यह जल जन्तु की संज्ञा है इस में नित्य ण हो जाता है। और जहां नक्षत्र आदि लोकवाची में ग्रह शब्द अच् प्रत्ययान्त होगा वहां ण नहीं होता तथा (इति) शब्द के योग में सत् संज्ञक (शतृ, शानच्) प्रत्यय विकल्प से प्राप्त भी हैं जैसे (हन्तीति पलायते, वर्षतीति धावति) यहां प्रथमासमानाधिकरण में व्यवस्थितविभाषा मान कर नित्य नहीं होते (गवाक्षः) यह झरोखा की संज्ञा है यहां गो शब्द को अवङ् आदेश विकल्प से प्राप्त है सो नित्यही हो जाता है। और जहां गौ के अक्ष नेत्र का नाम होगा वहां (गवाक्षम्, गोअक्षम्, गोऽक्षम्) ये तीन प्रयोग होजावेंगे और (संशितव्रतः) यहां (शाच्छोरन्यतरस्याम्) इस सूत्र से तादि कित् के परे शो धातु को विकल्प से प्राप्त इकारादेश नित्य होता है इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ८७ ॥

(आशंसायां भूतवच्च) इस सूत्र में प्रिय पदार्थ की इच्छा संबन्धी भविष्यत् काल में भूतवत् और वर्त्तमानवत् प्रत्यय कहे हैं अर्थात् भूतकालिक जिस अर्थ में प्रकृति से जो प्रत्यय कहा है वह प्रत्यय उसी अर्थ में उसी प्रकृति से होना चाहिये सो सामान्यभूत में निष्ठा और लुङ् आदि होते हैं और अनद्यतनभूत में लङ् तथा परोक्षानद्यतनभूत में लिट् होता है इस में यह संदेह है कि भूतवत् कहने से सामान्यभूतकालिक प्रत्ययों का अतिदेश होवे वा सामान्य विशेष दोनोंका । इस लिये यह परिभाषा है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८८—सामान्यातिदेशे विशेषानतिदेशः ॥

जहां सामान्य और विशेष दोनों का अतिदेश प्राप्त हो वहां विशेष का अतिदेश नहीं होता। इस से सामान्यभूत के अतिदेश में विशेष भूत में विहित लङ् लिट् का अतिदेश नहीं होता इत्यादि ॥ ८८ ॥

(सनाशंसभिक्ष उः) इस सूत्र में सन् धातु वा सन् प्रत्यय का ग्रहण होना चाहिये इस सन्देह की निवृत्ति के लिये यह परिभाषा है ॥

८९—प्रत्ययाप्रत्यययोः प्रत्ययस्यैव ग्रहणम् ॥ अ० ॥ ६ । ४ । १ ॥

जहां प्रत्यय और अप्रत्यय दोनों का एकस्वरूप होने से ग्रहण हो सकता हो वहां प्रत्यय ही का ग्रहण हो अप्रयत्य का नहीं। इस लिये सन् धातु का ग्रहण नहीं होता किन्तु सन् प्रत्ययान्त से उ प्रत्यय होता है तथा (चिचीषति, तुष्टूषति) यहां सन् के परे अजन्त को दीर्घ होता है सो (दधि सनोति, मधु सनोति) यहां सन् धातु के परे दीर्घ नहीं होवे। इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ८९ ॥

(विपराभ्यां जेः) इस सूत्र में वि परा पूर्वक जि धातु से आत्मनेपद कहा है सो (परा जयति सेना) यहां सेना शब्द के विशेषण परा शब्द से परे भी आत्मनेपद होना चाहिये इस संदेह की निवृत्ति के लिये यह परिभाषा है ॥

९०—सहचरितासहचरितयोः सहचरितस्यैव ग्रहणम् ॥

सहचारी और असहचारी दोनों का जहां हो सकता हो वहां सहचारी का ही ग्रहण हो। और असहचारी का नहीं (विजयते, पराजयते) यहां आत्मनेपद होगया और (बहुवि जयति वनम्,परा जयति सेना) यहां न हुआ। क्योंकि जहां वि, परा, केवल उपसर्ग हैं वहां हो। यहां बहुवि वन का और परा, सेना का विशेषण अर्थात् दोनों अनुपसर्ग हैं वहां आत्मनेपद नहीं होता। वन और सेना के विशेषण में वि और परा शब्द उपसर्ग के सह चारी नहीं हैं इस कारण वहां आत्मनेपद नहीं हुआ तथा (पंचम्यपाङ्परिभिः) यहां कर्मप्रवचनीय अप आङ् और परि के योग में पंचमी विभक्ति होती है सो वर्जनार्थ अपशब्द के साहचर्य से (वृक्षंपरि विद्योतते विद्युत्) यहां लक्षण अर्थ में पंचमी विभक्ति नहीं होती। इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ९० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे (अहो आश्चर्यम्, उताहो इमे) इत्यादि में ओकारान्त निपात की प्रगृह्य संज्ञा हो कर प्रकृतिभाव हो जाता है वैसे (अतिरस्तिरः सम्पद्यत, तिरोऽभवत्) यहां च्विप्रत्ययान्त लाक्षणिक ओकारान्त की निपात संज्ञा होकर प्रगृह्य संज्ञा होजावे तो प्रकृतिभाव होना चाहिये इस लिये यह परिभाषा है॥

६१—लक्षणप्रतिपदोक्तयोः प्रतिपदोक्तस्यैवग्रहणम्॥अ०॥१।१।१५॥

लक्षण नाम जो सूत्र से कार्य हो कर बना हो वह लाक्षणिक और जो स्वाभाविक है वह प्रतिपदोक्त कहाता है। उन लाक्षणिक और प्रतिपदोक्त के बीच में जहां संदेह पड़े वहां प्रतिपदोक्त को कार्य हो और लाक्षणिक को नहीं इस से (तिरोऽभवत्) यहां लाक्षणिक ओकारान्त निपात को प्रगृह्य संज्ञा होकर प्रकृतिभाव नहीं होता। तथा (आशिषा तरति, आशिषिकः) यहां इस भाग के लाक्षणिक होने से (इसुसुक्तान्तात्कः) सूत्र से ठक् प्रत्यय को ककारादेश नहीं होता इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं॥ ६१॥

इस परिभाषा के होने में ये दोष हैं कि जो (दाधा घ्वदाप्) सूत्र से दाधा को घु संज्ञा होती है सो (देङ्रक्षणे, दाप्ख़ण्डने, धेट् पाने) आदि की घु संज्ञा नहीं होनी चाहिये क्योंकि (डुदाञ्, डुधाञ्) प्रतिपदोक्त और देङ् आदि लाक्षणिक हैं इस संदेह की निवृत्ति के लिये यह परिभाषा है॥

६२—गामादाग्रहणेष्वविशेषः॥ अ०॥ १।१।२०॥

गा, मा, दा ये तीनों जिन सूत्रों में ग्रहण किये हों वहां सामान्य करके लाक्षणिक और प्रतिपदोक्त दोनों का ग्रहण होता है इस से (देङ्) आदि लाक्षणिक धातुओं की भी घु संज्ञा हो जाती है (दैप्) धातु में पित् पढ़ने का यही प्रयोजन है कि जो दाप् की घु संज्ञा का निषेध है सो दै मात्र के पढ़ने से प्राप्त नहीं था इस लिये पित् किया सो जो लाक्षणिक दै मात्र की घु संज्ञा प्राप्त ही नहीं थी तो निषेध के लिये पित् क्यों पढ़ा। इस से यह आया कि लाक्षणिक की भी घु संज्ञा होती है (घुमास्थागापाजहातिसां हलि) यहां मा कर के मेङ् आदि को भी ईकारादेश होता है (मीयते, मेमीयते) इत्यादि गा करके गै आदि भी लिये जाते हैं (गीयते, जेगीयते) इङ् धातु के स्थान में जो गाङ् आदेश होता है उस का भी ग्रहण होता है जैसे (अध्यगीष्ट, अध्यगीषाताम्) इत्यादि बहुत प्रयोजन हैं॥६२॥

(वृद्धिरादैच्) सूत्र में आ, ऐ, औ, इनतीनों की वृद्धि संज्ञा होती है। इस में यह संदेह होता है कि जो तीनों वर्ण की एक साथ वृद्धि संज्ञा हो जावे तो (कारकः) आदि में एक साथ तीनों वर्ण वृद्धि होने चाहिये। इस लिये यह परिभाषा है॥

६३—प्रत्यवयवं वाक्यपरिसमाप्तिः॥ अ०॥ १।१।१॥

वाक्य की समाप्ति प्रत्येक अवयव के साथ होती है अर्थात् जहां समुदाय को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य्य कहा है वहां वाक्यस्थ क्रिया जब प्रत्येक अवयव के साथ सम्बन्ध कर लेती है तब उस को पूर्ण वाक्य कहते हैं । जैसे किसीने कहा कि (देवदत्तयज्ञदत्तविष्णुमित्रा भोज्यन्ताम्) यद्यपि यहां यह नहीं कहा कि देवदत्त,यज्ञदत्त और विष्णुमित्र को पृथक् २ भोजन कराओ तथापि भोजन क्रिया प्रत्येक के साथ सम्बन्ध रखती है इसी प्रकार यहां आ,ऐ,औ की वृद्धि संज्ञा पृथक् कही है इसी से प्रत्येकवर्ण के साथ वृद्धि का सम्बन्ध पृथक् २ रहता है ऐसे ही गुण आदि संज्ञा भी प्रत्येक की होती है॥९३॥

अब इस पूर्वोक्त परिभाषा से यह दोष आया कि जो (हलोऽनन्तराः संयोगः) यहां प्रत्येक वर्ण की संयोग संज्ञा रहे तो (निर्यायात्, निर्वायात्) यहां या, वा धातु को संयोगादि मान कर (वान्यस्य संयोगादेः) इस सूत्र से एकारादेश होना चाहिये इत्यादि अनेक दोष आवेंगे । इस लिये यह परिभाषा है ॥

९४—समुदाये वाक्यपरिसमाप्तिः ॥ अ० ॥ १ । १ । ७ ॥

कहीं ऐसा भी होता है कि समुदाय में वाक्य की परिसमाप्ति होवे अर्थात् वाक्यस्थ क्रिया का केवल समुदाय के साथ सम्बन्ध रहे । और प्रत्येक अवयव के साथ पृथक् २ संबन्ध न होवे जैसे राजा ने आज्ञा किई कि (गर्गाः शतन्दण्ड्यन्ताम्) यहां गर्गों पर सौ रुपये दण्ड कहा तो उन में प्रत्येक पर सौ २ दण्ड किया जावे वा समुदाय पर तो जैसे समुदाय पर एक दण्ड होता है वैसेही समुदित हलों की संयोगसंज्ञा होती है । इत्यादि अनेक प्रयोजन है ॥ ९४ ॥

(वृद्धिरादैच्) सूत्र में आ, ऐ, औ इन तीन दीर्घ वर्णों की वृद्धि संज्ञा की है फिर आकार तपर क्यों पढ़ा क्यों कि सवर्ण ग्रहण परिभाषा से अक्षरसमाम्नाय का ही अण् सवर्ण ग्राहक है परन्तु जो अक्षरसमाम्नाय में ह्रस्व पढ़ते हैं उन्हीं का ग्रहण होगा दीर्घों का नहीं फिर दीर्घ से सवर्ण ग्रहण की प्राप्ति ही नहीं और तपरकरण का यही प्रयोजन होता है कि तपर से भिन्नकालिक सवर्णों का ग्रहण न हो । इस के समाधान के लिये यह परिभाषा है ॥

९५—भेदका उदात्तादयः ॥ अ० ॥ १ । १ । १ ॥

जिस वर्ण के साथ जो उदात्तादि गुण लगता है वह उसको स्वभावसे भिन्न कर देताहै परन्तु काल भेद नहीं होता।दीर्घ उदात्त,दीर्घ अनुदात्त,दीर्घ स्वरित इनमें काल का तो भेद नहीं परन्तु उच्चत्व,नीचत्व,समत्व आदिका भेदहै सो जो आकार को तपर न पढ़ते तो भी अभेदकों का ग्रहणहो ही जाता फिर तपर से यही प्रयोजन है कि भिन्न धर्म वाले तात्कालिक उदात्तादि का भी ग्रहण होजावे इस लिये आकार में तपरकरण सार्थक हुआ तथा अन्यत्र भी दीर्घवर्णों को तपर पढ़ने का यही प्रयोजनहै। और लोक में भी उदात्तादि का भेद दीख पड़ताहै जैसे कोई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थी उदात्त के स्थान में अनुदात्त बोले तो अध्यापक उस को शासन करता है कि तू अन्यथा क्यों बोलता है । सो जो उदात्तादि में भेद नहीं होता तो शासन भी नहीं बन सकता । और यह भी दृष्टान्त है कि एक जल शीत, उष्ण और खारी आदि भेदक गुणों के होने से भिन्न २ हो जाता है इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ९५ ॥

इस पूर्वोक्त विषय में ऐसे भी दृष्टान्त मिलते हैं कि एक देवदत्त बालक युवा वृद्ध आदि अवस्था गुणों और मुण्ड जटिल आदि गुणों से वही बना रहता है कोई भिन्न नहीं हो जाता । इस से यह भी आया कि गुण अभेदक हैं और (यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च) इस सूत्र में यासुट् को उदात्त न कहते किन्तु उस को उदात्त ही पढ़ देते तो उदात्तादि गुणों के भिन्न २ होने से उदात्त के पढ़ने में अनुदात्त हो ही नहीं सकता फिर उदात्त ग्रहण व्यर्थ हुआ इस लिये यह परिभाषा है ॥

९६—अभेदका गुणाः ॥ अ० ॥ १ । १ । १ ॥

उदात्तादि गुण अभेदक होते हैं अर्थात् गुणों के स्वरूप को कुछ भी नहीं बदल सकते । इसी लिये (अच्छिदधि०) इत्यादि सूत्रों में उदात्त वा अनुदात्त पढ़ा है जो उदात्तादि शब्दों से उदात्त नहीं पढ़ते तो अभेदक होने से विशेष गुणों का ज्ञान नहीं होता इस से उदात्तादि शब्दों का पढ़ना सार्थक होगया । इन गुणों के अभेदक पक्ष में दीर्घों को तपर पढ़ने का द्वितीय समाधान है (आदैच्) यहां तो आकार के तपर पढ़ने का यही प्रयोजन है कि तकार से परे ऐ औ तपर माने जावें तो (महा ओजाः, महौजाः) यहां चार मात्रिक स्थानी के स्थान में चार मात्राओं का आदेश भी प्राप्त होता है सो न हो किन्तु द्विमात्रिक ही (ए, ऐ, ओ, औ) आदेश होवें इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं इन दोनों में गुणों का अभेदक पक्ष ही बलवान् है ॥ ९६ ॥

(सर्वादीनि सर्वनामानि) इस सूत्र में सर्वनाम शब्द में णत्व निषेध निपातन किया है सो उस को सूत्र में चरितार्थ होजाने से लौकिक प्रयोगविषय में सर्वनाम शब्द को णत्व होना चाहिये इस लिये यह परिभाषा है ॥

९७—बाधकान्येव हि निपातनानि ॥ अ० ॥ १ । १ । २७ ॥

जिस अप्राप्त कार्य का विधान वा प्राप्त का निषेध निपातन से कर दिया हो वह सर्वथा बाधक हो जाता है फिर वह वैसा ही प्रयोग काल में भी रहेगा । इस से सर्वनाम आदि शब्दों में णत्व निषेध आदि कार्य सिद्ध हो जाते हैं ॥ ९७ ॥

(स्यन्त्स्यति) इस स्यन्दू धातु के प्रयोग में इट् का विकल्प अन्तरङ्ग और निषेध बहिरङ्ग है सो जो अन्तरङ्ग कार्य करने में बहिरङ्ग असिद्ध माना जावे तो परस्मैपद में भी इट् का विकल्प होना चाहिये । इस सन्देह की निवृत्ति के लिये यह परिभाषा है ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९८—प्रतिषेधाश्च बलीयांसो भवन्ति ॥ अ० ॥ १ । १ । ६३ ॥

पर, नित्य और अन्तरङ्गसे भी प्रतिषेध बलवान् होतेहैं इससे अन्तरङ्गभीइट् विकल्प को बाध के नित्य प्राप्त इट् का निषेध होजाता है इत्यादि प्रयोजनहैं॥९८॥

(अइउण्)आदि प्रत्याहार सूत्रों में जो (ण्,क्)आदि अनुबन्ध पढ़े हैं उनकाअच् के ग्रहण से ग्रहण किया जावे तो (दधिणकारीयति, जरीकरोति) इत्यादि में णकार ककार के परे इकार ईकार को यणादेश होना चाहिये इस लिये यह परिभाषा है॥

९९—सर्वविधिभ्यो लोपविधिर्बलीयान् ॥

सब विधियों से लोपविधि बलवान् होती है । इस से (ण्,क्)आदि अनुबन्धों का प्रत्याहार की प्रवृत्ति से पहिलेही लोप होजाता है फिर अच् में णकार ककार के न रहने से (दधि णकारीयति, जरीकरोति) आदि में यणादेश नहीं होता। इत्यादि । और लोक में भी यही रीति है कि किसी का मृत्यु आजावे तो सब कामों का बाधक हो जाता है अर्थात् अदर्शन अग्रहण होता है ॥ ९९ ॥

(अर्थं प्रत्याययति स प्रत्ययः) जो अर्थ का निश्चय करावे वह प्रत्यय कहाता है इस अर्थ के न होने से केवल स्वार्थ में विहितों की प्रत्यय संज्ञा नहीं होवे इस लिये यह परिभाषा है ॥

१००—अनिर्दिष्टार्थाश्च प्रत्ययाः स्वार्थे भवन्ति ॥अ०।३।२४ ।४ ॥

जिन प्रत्ययों की उत्पत्ति में कोई विशेष अर्थ नियत न किया हो वे स्वार्थ में हों अर्थात् प्रकृत्यर्थ के सहायक और बोधक रहैं । इसी से वे प्रत्यय कहावें जैसे (गुप्तिज्किद्भ्यः सन्, यावादिभ्यः कन्) इत्यादि प्रत्यय स्वार्थ में होते हैं (जुगुप्सते, यावकः) इत्यादि ॥ १०० ॥

(सुपिस्थः)इस सूत्रसे कर्त्तामें प्रत्यय होतेहैं इस लिये(आखूनामुत्थानमाखूत्थः। इत्यादि प्रयोगोंमें भावमें क प्रत्यय नहीं हो सकता इस लिये यहपरिभाषा है ॥

१०१—योगविभागादिष्टसिद्धिः ॥

जहां इष्ट कार्य की सिद्धि नही वहां योगविभाग करना चाहिये । और योगविभाग करके इष्ट कार्य साध लेना अनिष्ट नहीं होने देना (सुपि) इतना पृथक् सूत्र किया तो यह अर्थ हुआ कि सुबन्त उपपद होतो आकारान्त धातु से क प्रत्यय हो इस से (कच्छेन पिबति, कच्छपः, कटाहपः, द्वाभ्यां पिबति, द्विपः) इत्यादि प्रयोग सिद्ध हुए पीछे (स्थः) इतना पृथक् किया तो यह अर्थ हुआ कि स्था धातु से सुबन्त उपपद होतो क प्रत्यय हो यहां योगविभाग करके कर्त्ता से हठाया तो स्वार्थ भाव में आखूत्थ आदि प्रयोग सिद्ध होगये। इसीप्रकार सर्वत्र जानो ॥ १०१ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाघव गौरव का विचार सर्वत्र रहता है कि । जहां तक हो थोड़ा वचन पढ़के बहुत अर्थ निकालना परन्तु ॥

१०२—पर्यायशब्दानां लाघवगौरवचर्चा नाद्रियते ॥

पर्याय शब्दों में थोड़े बहुत होने का विचार नहीं करते कि जहां थोड़े वचन से काम चल सकता है तो उस का पर्याय अधिक अक्षर का शब्द न पढ़ना जैसे (अन्यतरस्याम्, विभाषा, वा उभयथा) इत्यादि एकार्थ शब्दों में किसी को पढ़ दिया यह नियम नहीं कि इतना अधिक क्यों पढ़ा इत्यादि ॥ १०२ ॥

जो ज्ञापक रूप परिभाषाओं से कार्य सिद्ध होते हैं वहां सर्वत्र ज्ञापकसिद्ध की प्रवृत्ति नहीं होती इस लिये यह परिभाषा है ॥

१०३—ज्ञापकसिद्धं न सर्वत्र ॥

जैसे अर्थवान् और अनर्थक के ग्रहण में ज्ञापकसिद्ध परिभाषा से अर्थवान् को कार्य होता है सो अनन्त को कहा कार्य क्वनिन् प्रत्यय के परे सार्थक अन् को और सन् प्रत्यय के निरर्थक अन् को भी होते हैं ॥ १०३ ॥

त्रिपादी में हुआ कार्य सपादसप्ताऽध्यायी में असिद्ध माना जाता है सो (द्रोग्धा, द्रोग्धा, द्रोढा, द्रोढा) यहां त्रिपादिस्थ (वा द्रुहमुह०) सूत्र से हकार को घ और ढ आदेश होते हैं सो जो द्वित्व करने में उस घ को असिद्ध मानें तो द्वित्व के एकभाग में घ और द्वितीय भाग में ढ आदेश रहना चाहिये इस लिये यह परिभाषा है ॥

१०४—पूर्वत्रासिद्धीयमद्विर्वचने ॥ अ० ॥ ८ । १ । १ ॥

त्रिपादी का कार्य द्वित्व करने में असिद्ध न माना जावे इस से (द्रोग्धा द्रोग्धा) आदि में ढत्व नहीं होता तथा (नुन्नं नुन्नम्, नुत्तं नुत्तम्) यहां भी द्वित्व के एकभाग में न और एक में तकार प्राप्त है सो नहो इत्यादि ॥ १०४ ॥

जैसे (गोषु स्वाम्यश्वेषु च) यहां एकस्वामी शब्द के योग में दोनों भिन्नाकृति शब्दों में एकाकृति सप्तमी विभक्ति होती है वैसे गो शब्द में सप्तमी और अश्व में षष्ठी विभक्ति क्यों नहीं होती इसलिये यह परिभाषा है ॥

१०५—एकस्या आकृतेश्चरितः प्रयोगो द्वितीयस्यास्तृतीयाश्च न भवति ॥ १ । ३ । ३६ ॥

जहां एक आकृति का प्रयोग चरितार्थ होता है वहां द्वितीय वा तृतीय अन्यार्थ सम्भव कारक का प्रयोग नहीं होता इस से वहां अश्व शब्द में षष्ठी नहीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होसकती क्यों कि एकाकृति सप्तमी विभक्ति का चरितार्थ है और षष्ठी के होने से भिन्नार्थ भी सम्भव होजावे ॥ १०५ ॥

(विव्याध) इत्यादि प्रयोगोंमें परत्वसे(हलादि:शेष:)इससूत्रसे अभ्यासके यकार का लोप होजावे तो वकारको संप्रसारण प्राप्त होता है इसलिये यहपरिभाषाहै॥

१०६—संप्रसारणं संप्रसारणाश्रयं च कार्यं बलीयो भवति॥ अ० ॥ १ । १ । १७ ॥

जो संप्रसारण और संप्रसारण के आश्रय कार्य हैं वे दोनों बलवान् होते हैं इस से (हलादि: शेष:) सूत्र से प्राप्त परलोप को भी बाध के प्रथम यकार को संप्रसारण होगया तो फिर (विव्याध) आदि प्रयोग बन गये । तथा (जुहुवतु:, जुहुवु:) यहां संप्रसारण और ह्वे धातु के आकार का अजादि आर्द्धधातुक के परे लोप भी प्राप्त है परत्व से लोप होना चाहिये बलवान् होने से संप्रसारण हो जाता है और संप्रसारण हुए पीछे भी आकारलोप तथा संप्रसारणाश्रय पूर्वरूप भी प्राप्त है परत्व से आकारलोप होना चाहिये बलवान् होने से संप्रसारणाश्रय पूर्व रूप होजाता है । इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ १०६ ॥

जब शुक्ल नील आदि गुणवाचक शब्द अपने केवल गुणवाचकपन अर्थात् स्वतन्त्र अर्थ में पुल्लिङ्गादि किसी विशेष लिङ्ग वा एकत्वादि वचन का आश्रय करने से नहीं प्रतीत होते पुन: जब इन का द्रव्य के साथ समानाधिकरण हो तब कौन लिङ्ग वचन इन में होना चाहिये इस लिये यह परिभाषा है ॥

१०७—गुणवचनानां हि शब्दानामाश्रयतो लिङ्गवचनानि भवन्ति ॥ अ० ॥ १ ॥ २ । ६४ ॥

गुणवाची शब्द जिस द्रव्यके आश्रित हों उस द्रव्य वाचक शब्दके जो लिङ्गवचन हों वे ही गुणवाचक शब्द के भी होजावे जैसे । शुक्लम् वस्त्रम् । शुक्ला शाटी । शुक्ल: कम्बल: । शुक्लौ कंबलौ । शुक्ला: कंबला: । इत्यादि इसी प्रकार सर्वत्र जानो ॥१०७॥

जैसे । कष्टं श्रित:, कष्टश्रित: । इत्यादि में समास होजाता है वैसे । महत् कष्टं श्रित: । यहां भी समास होना चाहिये इसलिये यह परिभाषा है॥

१०८—सापेक्षमसमर्थं भवति ॥ अ० ॥ २ । १ । १ ॥

जो पद विशेष्यविशेषणभाव से द्वितीय पद के साथ सम्बन्ध रखता हो वह सापेक्ष होने से समास होने में असमर्थ कहाता है उस का समास नहीं हो सकता । इस कारण महत् शब्द विशेषण के साथ कष्ट सापेक्ष होने से पद की साथ समास को प्राप्त नहीं होता तथा (भार्या राज्ञ: पुरुषो देवदत्तस्य) यहां

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्या के साथ राजन् शब्द सापेक्ष विशेषण और देवदत्त विशेषण के साथ पुरुष सापेक्ष है इस लिये राजन् और पुरुष दोनों के परस्पर असमर्थ होने से समास नहीं होता । इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ १०८ ॥

(परीयात्, अतीयात्) यहां परि-इयात् । हो इकार को दीर्घ एकादेश हुआ है सो जो अन्तादिवत् मानें तो (एतेर्लिङि) सूत्र से उपसर्गों से परे इण् धातु को ह्रस्व प्राप्त है इसलिये यह परिभाषा है ॥

१०९—उभयत आश्रयेणान्तादिवत् ॥ अ० ॥ ६ । १ । ८५ ॥

पूर्व पर के स्थान में जो एकादेश हुआ हो वह पूर्व पर दोनों के आश्रयकार्य की प्राप्ति में अन्तादिवत् न हो इस से (परीयात्, अतीयात्) आदि में ह्रस्व नहीं होता । इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ १०९ ॥

जो टित्, कित्, मित् आगम होते हैं उन में किसी टकारादि अनुबन्ध से कोई उदात्तादि विशेष स्वर का विधान नहीं किया है वहां क्या स्वर होना चाहिये इस लिये यह परिभाषा है ॥

११०—आगमा अनुदात्ता भवन्ति ॥ अ० ॥ ३ । १ । ३ ॥

टित् आदि आगम अनुदात्त होते हैं । यद्यपि यह बात है कि (अर्थवत आगम०) इस परिभाषा के अनुकूल जो प्रत्यय वा प्रकृति का स्वर है वही आगम का भी हो तो एक पद में दो स्वर नहीं रहते इस लिये (भविता) इत्यादि में आगम भी अनुदात्त विधान किये हैं इस में ज्ञापक यह है कि (यासुट् परस्मैपदेषूदा०) इस सूत्र में उदात्तादि करने का यही प्रयोजन है कि आगम सब अनुदात्त होते हैं इस से उदात्त प्राप्त नहीं था और जो प्रत्यय को आद्युदात्त स्वर होता है वह आगम को नहीं प्राप्त था इस लिये उदात्त कहा इत्यादि ॥ ११० ॥

गुप्, तिज्, कित् मान आदि धातुओं से स्वार्थ में सन् प्रत्यय होता है उस सन् के नित्य होने से प्रथम गण में शुद्ध प्रयोग नहीं होता तो यह सन्देह होता है कि इन से आत्मनेपद हो वा परस्मैपद हो जो सन्नन्त से पहिले कोई पद विधान होता हो वह (पूर्ववत्सनः) इस सूत्र से सन्नन्त से भी हो जाता सो तो नहीं होता और सन्नन्तों में कोई विशेष अनुबन्ध भी नहीं है इस लिये यह परिभाषा है ॥

१११—अवयवे कृतं लिङ्गं तस्य समुदायस्य विशेषकं भवति यं समुदायं सोऽवयवो न व्यभिचरति ॥ अ० ॥ ३ । १ । ५ ॥

अवयव में किया हुआ चिन्ह उस समुदाय का विशेषक होता है कि जिस को वह अवयव फिर न छोड़ देवे । इस से यह आया कि जिन गुप आदि धातुओं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जो अनुदात्तेत् चिह्न किया है उस का सन् के बिना कहीं पृथक् प्रयोग भी नहीं होता इस लिये गुप आदि धातुओं का अनुदात्तेत् सन्नन्त का विशेषक होता है अर्थात् गुप आदि सन्नन्तों को भी अनुदात्तेत् मान कर आत्मनेपद हो (जुगुप्सते, मीमांसते) यहां आत्मनेपद होगया और जुगुप्सयति वा जुगुप्सयते मीमांसयति। वा मिमांसयते यहां णिजन्त समुदाय को णिच् छोड़ देता है इसलिये परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों होते हैं तथा पण धातु अनुदात्तेत् है उस के (पणायति) प्रयोग में आय प्रत्ययान्त से परस्मैपद ही होता है क्योंकि आत्मनेपद तो व्यवहार अर्थ में और एकपक्ष में आर्द्धधातुकविषय में चरितार्थ है (शतस्य पणते) पणायांचकार । पेणे । पणाते । और आय प्रत्ययान्त समुदाय को पण छोड़ भी देता है। इसलिये आय प्रत्ययान्त से आत्मनेपद नहीं होता और लोक में भी बैल को किसी अवयव में दाग देते हैं तो वह चिह्न उस बैल का विशेषक होजाता है कि यह अङ्कित् बैल है उसी अवयव का और सब साथ के बैलों का भी विशेषक नहीं होता ॥ १११ ॥

(अपृक्त एकाल् प्रत्ययः) इस सूत्र में एक ग्रहण का यही प्रयोजन है कि (दर्विः, जागृविः) यहां वि प्रत्यय की अपृक्त संज्ञा नहीं सो जो एक ग्रहण न करते और अल् प्रत्यय कहते तो भी अनेकाल् में नहीं होती फिर एक ग्रहण व्यर्थ हुआ इस से यह ज्ञापक सिद्ध परिभाषा निकली ॥

११२—वर्णग्रहणे जातिग्रहणम् ॥ अ० ॥ १ । २ । ४१ ॥

वर्ण के ग्रहण में वर्ण जाति का ग्रहण होता है इस से एक ग्रहण तो सार्थक होगया क्योंकि अल् मात्र पढ़ते तो जाति ग्रहण होने से अनेक अलों का ग्रहण होजाता फिर एक ग्रहण से नहीं हुआ और (धीप्सति, धिप्सति) यहां दम्भ धातु के दो हलों में भी हल्जाति मानकर (हलन्ताच्च) सूत्र से इक् समीप हल् मान के सन् प्रत्यय कित् होजाता है । इत्यादि अनेक प्रयोजन हैं ॥ ११२ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्याणां श्रीयुतविरजानन्द सरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते वेदाङ्गप्रकाशे द्वादशोऽष्टाध्याय्यां नवमश्च पारिभाषिको ग्रन्थोऽलङ्कृतिमगात् ॥

—:*:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ अथ पारिभाषिकशुद्धिपत्रम् ॥

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
१	५	परिभा	पारिभा
५	६	शिता	शित
६	६	यस्तु	यस्त
८	२	नज	अन
१९	१८	शब्दजे	शब्दकी
२१	१	अपधित्या	अपत्याधि
२३	२७	समुदया	समुदाय
२४	२	रङ्गं	रङ्गं
२५	१७	यवत्	यवमत्
३५	१	सिद्धि	सिद्ध
३८	२३	हैं	है
३९	२	दत्त	दात्त
४३	२४	सति	स्तुति
४६	१	ह्मण	ह्मष
९	१९	हंज्ञा	संज्ञा
५०	३१	पढ़ता	पड़ता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Copy right Registered under Sections 18 and 19 Act XXV of 1867.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ अथ वेदाङ्गप्रकाशः ॥

तत्रत्यः ।

त्रयोदशो भागः ॥

धातुपाठः ।

पाणिनिमुनिप्रणीतायामष्टाध्याय्यां

दशमो भागः ।

श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वतीकृतसूचीपत्रेणसहितः ।
पण्डितज्वालादत्तशर्म्मणा संशोधितः ।

पठनपाठनव्यवस्थायां त्रयोदशं पुस्तकम् ।

मुन्शी समर्थदान के प्रबन्ध से
वैदिकयन्त्रालय प्रयाग में मुद्रित हुआ

इस पुस्तक के छापने का अधिकार किसी को नहीं है ।

क्योंकि

इस की रजिस्टरी कराई गई है ॥

संवत् १९४० कार्तिकशुक्ला २

पहली बार १००० पुस्तक छपे

मूल्य ॥)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयसूचीपत्रम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका ॥

--३:॥:६--

यह ग्रन्थ यथार्थव्याख्यान और भूमिका के सहित आख्यातिक में छप चुका है परंतु उस में धातु अर्थों के सहित व्याख्यान के बीच २ में पड़े हैं । इस कारण उस ग्रंथ में मूल का पाठ करना तथा घोष के कण्ठ स्थ करना अध्येता ओं को कठिन पड़ता इस लिये यह मूल पुस्तक सूचीपत्र के सहित पृथक् छप वाते हैं । इस में एक प्रकार के जितने धातु हैं उन के आदि में उन की संख्या, आत्मनेपद, परस्मैपद तथा उदात्त और अनुदात्त भी रख दिया है। उदात्त से सेट् और अनुदात्त से अनिट् समझना चाहिये। उदात्तेत् से परस्मैपद और अनुदात्तेत् से आत्मनेपद तो समझा जाता है तथापि अति सुगमता के लिये आत्मनेपद परस्मैपद शब्द भी रख दिये हैं । इस से पढ़ने पढ़ाने हारे लोगों को बड़ी सुगमता होगी । परंतु धातुओं के रूप मूल पुस्तक पर लेना सेट् अनिट् आदि प्रकरणों के उपयुक्त सूत्रों को देख समझ के ही कर सकेंगे । क्योंकि कोई अनिट् धातु किसी विशेष प्रत्यय में सेट् और कोई सेट् धातु कहीं अनिट् भी हो जाता है । इस का सूचीपत्र भी साथ ही छपता है इस में तीन संकेत हैं पहिला, भ्वादिगण का (भ्वा०) अदादि का (अ०) जुहोत्यादि का (जु०) दिवादि का (दि०) स्वादि का (स्वा०) तुदादि का (तु०) रुधादि का (रु०) तनादि का (त०) क्र्यादि का (क्र्या०) चुरादि का (चु०) और कण्ड्वादि का (कं) लिखा है । दूसरा, आत्मनेपद का (आ०) परस्मैपद का (प०) और उभयपद का (उ०) लिखा है । तीसरा, सेट्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का (से०) वा अनिट् का (अ०) लिखा है । और नीचे के धातुओं में जहां पूर्व का ही संकेत है । वहां उस के बराबर नीचे बिन्दु दिये हैं । सूची में मूल धातुओं के आदि अनुबन्ध इस लिये छोड़ दिये हैं कि उन धातुओं के आद्यक्षर में संदेह न पड़े । और जो धातु उपदेश में षकारादि और प्रयोग काल में सकारादि हो जाते हैं । उनसब को सकारादि में लिखा है । क्योंकि वे सूत्रों से विशेष कार्य होने के लिये षोपदेश हैं । दशों गण के अन्त में कण्ड्वादि गण इस लिये छप वाया है कि यह बहुधा धातुओं से अर्थ विधान के सहित सम्बन्ध रखता है। धातुपाठविषयक विशेष व्याख्यान आख्यातिक की भूमिका और उस पुस्तक को देखने से विदित हो जावेगा ॥

अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वर्येषु ।

इति भूमिका ।

स्थान महाराणा जी का
उदयपुर

दयानन्दसरस्वती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

अथ पाणिनिमुनिकृतधातुपाठाऽऽरम्भः ॥

—:※:—

भू सत्तायाम् । उदात्त उदात्तेत् परस्मैभाषः ॥

अथ तवर्गीयान्ता एधादयः कथ्यन्ताः षट्त्रिंशदात्मनेभाषाः ॥

एध, वृद्धौ । स्पर्द्ध, सङ्घर्षे । गाधृ, प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च । बाधृ, विलोडने । नाथृ, नाधृ, याच्ञोपतापैश्वर्य्याऽऽशीःषु । दध, धारणे । स्कुदि, आप्रवणे । श्विदि, श्वैत्ये । वदि, अभिवादन स्तुत्योः । भदि, कल्याणे सुखे च । मदि, स्तुतिमोदमदस्वप्न-कान्तिगतिषु । स्पदि, किञ्चिच्चलने । क्लिदि, परि देवने । मुद, हर्षे । दद, दाने । ष्वद, स्वर्द, आस्वादने । उर्द, माने क्रीडायाञ्च । कुर्द, खुर्द, गुर्द, गुद, क्रीडायामेव । षूद, क्षरणे । ह्राद, अव्यक्ते शब्दे । ह्लादी, सुखेच । स्वाद, आस्वादने । पर्द, कुत्सितेशब्दे । यती, प्रयत्ने । युत, जुत, भासने । विथृ, वेथृ, याचने । श्रथि, शैथिल्ये । ग्रथि, कौटिल्ये । कत्थ, श्लाघायाम् । इत्युदात्ता अनुदात्तेतः ॥

अथाऽतादयः शुन्ध्यन्ता अष्टत्रिंशत्परस्मैभाषाः ॥

अत, सातत्यगमने । चिती, संज्ञाने । च्युतिर्, आसेचने । श्च्युतिर् क्षरणे । मन्थ, विलोडने । कुथि, पुथि, लुथि, मथि, हिंसासंक्लेशनयोः । षिधु, गत्याम् । षिधू, शास्त्रे माङ्गल्येच । खादृ, भक्षणे । खद, स्थैर्ये हिंसायाञ्च । बद, स्थैर्ये । गद, व्यक्तायां वाचि । रद, विलेखने । णद, अव्यक्ते शब्दे । अर्द, गतौ याचने च । नर्द,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्द, शब्दे। तर्द, हिंसायाम्। कर्द, कुत्सितेशब्दे। खर्द,दन्दशूके। अति, अदि, बन्धने। इदि, परमैश्वर्य्ये। बिदि, भिदि, अवयवे। गडि, वदनैकदेशे। णिदि, कुत्सायाम्। टुनदि, समृद्धौ। चदि, आल्हादने दीप्तौ च। त्रदि,चेष्टायाम्। कदि,क्रदि,क्लदि, आह्वाने रोदने च। क्लिदि,परिदेवने। शुन्ध,शुद्धौ। इत्युदात्ता उदात्तेतः॥

अथ कवर्गीयान्ताः॥

शीकादयः श्लाघान्ता द्विचत्वारिंशदात्मनेभाषाः॥

शीकृ, सेचने। लोकृ, दर्शने। श्लोकृ, संघाते। द्रेकृ, ध्रेकृ, शब्दोत्साहयोः। रेकृ, शंकायाम्। सेकृ, स्रेकृ, स्रकि, श्रकि, श्लकि, गत्यर्थाः। शकि, शंकायाम्। अकि, लक्षणे। वकि, कौटिल्ये। मकि, मण्डने। ककि, लौल्ये। कुक, वृक, आदाने। चक, तृप्तौ प्रतिघाते च। ककि,वकि, मकि,श्वकि,त्रकि, ढौकृ, त्रौकृ, ष्वष्क, वस्क, मस्क,टिकृ, टीकृ,तिकृ,तीकृ,रघि,लघि, गत्यर्थाः। लघि, भोजननिवृत्तावपि। अघि, वघि, मघि, गत्याक्षेपे। मघि, कैतवेच। राघृ, लाघृ, द्राघृ, ध्राघृ, सामर्थ्ये। द्राघृ, आयामे च। श्लाघृ, कत्थने। इत्युदात्ता अनुदात्तेतः॥

अथ फक्कादय शिघन्ता द्विपंचाशत् परस्मैभाषाः॥

फक्क, नीचैर्गतौ। तक,हसने। तकि,कृच्छ्रजीवने। बुक्क, भषणे। कख,हसने। ओखृ, राखृ,लाखृ,द्राखृ, ध्राखृ, शोषणाऽलमर्थयोः।शाखृ, श्लाखृ, व्याप्तौ। उख, उखि, नख, नखि, मख, मखि,णख, णखि,रख, रखि,लख,लखि, इख, इखि, ईखि, वल्ग, रगि, लगि, अगि, वगि, मगि, तगि, त्वगि, श्रगि, श्लगि, इगि,रिगि,लिगि,गत्यर्थाः। रिख,त्रख,त्रखि,शिखि,इत्यपि केचित्। त्वगि, कंपने च। युगि, जुगि, बुगि, वर्जने घघ, हसने। मघि, मण्डने। लघि,शोषणे। शिघि, आघ्राणे। इत्युदात्ता उदात्तेतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चवर्गीयान्ताः ॥

वर्चादय ईजन्ता एकविंशतिरात्मनेभाषाः ॥

वर्च,दीप्तौ । षच,सेचने सेवने च । लोचृ,दर्शने । शच,व्यक्तायां वाचि । श्वच, श्वचि, गतौ । कच, बन्धने । कचि, काचि, दीप्तिबन्धनयोः । मुच, मुचि,कल्कने । मचि,धारणोच्छ्रायपूजनेषु । पचि, व्यक्तीकरणे । ष्टुच,प्रसादे । ऋज,गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु । ऋजि, भृजी, भर्जने । एजृ, भ्रेजृ, भ्राजृ, दीप्तौ । ईज, गतिकुत्सनयोः । इत्युदात्ता अनुदात्तेतः ॥

अथ शुचादयो वज्यन्ता द्विसप्ततिः परस्मैभाषाः ॥

शुच, शोके । कुच, शब्देतारे । कुच, क्रुञ्च, गतिकौटिल्याल्पीभावयोः । लुञ्च,अपनयने । अञ्चु,गतिपूजनयोः । वञ्चु,चञ्चु, तञ्चु,त्वञ्चु,म्रुञ्चु,म्लुञ्चु,म्रुचु,म्लुचु,गत्यर्थाः । ग्रुचु, ग्लुचु, कुजु, खुजु, स्तेयकरणे । ग्लुञ्चु, षस्ज, गतौ । गुज, गुजि, अव्यक्ते शब्दे । अर्च, पूजायाम् । म्लेच्छ, अव्यक्ते शब्दे । लच्छ, लाच्छि, लक्षणे । वाच्छि, इच्छायाम् । आच्छि, आयामे । ह्रीच्छ, लज्जायाम् । हुर्छा,कौटिल्ये । मुर्छा मोहसमुच्छ्राययोः । स्फुर्छा, विस्तृतौ । युच्छ, प्रमादे । उच्छि, उञ्छे । उच्छी, विवासे । ध्रज, ध्रजि, धृज, धृजि, ध्वज, ध्वजि, गतौ । कूज, अव्यक्ते शब्दे । अर्ज, षर्ज, अर्जने । गर्ज, शब्दे । तर्ज, भर्त्सने । कर्ज, व्यथने । खर्ज, पूजने च । अज, गतिपूजनयोः । तेज, पालने । खज, मन्थे । खजि, गतिवैकल्ये । एजृ, कंपने । टुओस्फूर्जा, वज्रनिर्घोषे । क्षि, क्षये । क्षीज, अव्यक्ते शब्दे । लज, लजि, भर्जने लाज, लाजि, भर्त्सने च । जज, जजि, युद्धे । तुज, हिंसायाम् । तुजि, पालने च । गज, गजि, गृज, गृजि, मुज, मुजि, शब्दार्थाः । गज, मदे च । वज,व्रज, गतौ । इति क्षिवर्जमुदात्ता उदात्तेतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ टवर्गीयान्ताः

अट्टादयः शाड्यन्ताः षट्त्रिंशदात्मनेभाषाः ॥

अट्ट, अतिक्रमणहिंसनयोः । वेष्ट, वेष्टने । चेष्ट, चेष्टायाम् । गोष्ट, लोष्ट, सङ्घाते । घट्ट, चलने । स्फुट, विकसने । अठि, गतौ । वठि, एकचर्यायाम् । मठि, कठि, शोके । मुठि, पालने । हेठ, विबाधायाम् । एठ, च । हिडि, गत्यनादरयोः । हुडि, संघाते । कुडि, दाहे । वडि, विभाजने । मडि, च । भडि, परिभाषणे । पिडि, संघाते । मुडि, मार्जने । तुडि, तोडने । हुडि, वरणे । चडि, कोपे । शडि, रुजायां संघाते च । तडि, ताडने । पडि, गतौ । कडि, मदे । खडि, मन्थे । हेडृ, होडृ, अनादरे । वाडृ, आप्लाव्ये । द्राडृ, ध्राडृ, विशरणे । शाडृ, श्लाघायाम् । इत्युदात्ता अनुदात्तेतः ॥

अथ शौडादयो गडन्ता द्वाशीतिः परस्मैभाषाः ॥

शौडृ, गर्वे । पौडृ, बन्धने । म्लेडृ, मेडृ, म्ले डृ, उन्मादे । कटे, वर्षावर्णयोः । चटे, इत्येके । अट, पट, गतौ । रट, परिभाषणे । लट, बाल्ये । शट, रुजाविशरणगत्यवसादनेषु । वट, वेष्टने । किट, खिट, त्रासे । शिट, षिट, अनादरे । जट, झट, संघाते । भट, भृतौ । तट, उच्छ्राये । खट, कांक्षायाम् । णट, नृतौ । पिट, शब्दसंघातयोः । हट, दीप्तौ च । षट, अवयवे । लुट, विलोडने । चिट, परप्रैष्ये । विट, शब्दे । बिट, आक्रोशे । हिट, इत्येके । इट, किट, कटी, गतौ । मडि, भूषायाम् । कुडि, वैकल्ये । मुट, पुट, मर्दने । चुडि, अल्पीभावे । मुडि, खंडने । पुडि, चेत्येके । रुटि, लुटि, स्तेये । रुठि, लुठि, इत्येके । स्फुटिर् विशरणे । पठ, व्यक्तायां वाचि । वठ, स्थौल्ये । मठ, मदनिवासयोः । कठ, कृच्छ्रजीवने । रठ, परिभाषणे । हठ, प्लुतिशठत्वयोः । बलात्कारे चेत्येके ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुठ,लुठ,उठ,उपघाते। ऊठ,इत्येके। पिठ,हिंसासंक्लेशनयोः। शठ, कैतवे च। शुठ, प्रतिघाते। शुठीत्येके। कुठि, च। लुठि, आलस्ये प्रतीघाते च। शुठि, शोषणे। रुठि, लुठि, गतौ। चुड्ड भावकरणे। अड्ड, अभियोगे। कड्ड, कार्कश्ये। क्रीडृ, विहारे। तुडृ, तोडने। तूडृ, इत्येके। हुडृ, हूडृ,होडृ, गतौ। रौडृ, अनादरे। रोडृ, लोडृ, उन्मादे। अडृ, उद्यमने। लड, विलासे। कड, मदे। कडि, इत्येके। गडि, वदनैकदेशे॥ इत्युदात्ता उदात्तेतः॥

अथ तवर्गीयान्तास्तिपादयः ष्टुभ्यन्ताश्चत्वारिंशदात्मनेभाषाः॥

तिपृ,तेपृ, ष्टिपृ, ष्टेपृ, क्षरणार्थाः। षिपृ,षेपृ, इत्यन्ये। तेपृ, कम्पने। ग्लेपृ, दैन्ये। टुवेपृ, कम्पने। केपृ, गेपृ, ग्लेपृ च। मेपृ, रेपृ, लेपृ, गतौ। त्रपूष्, लज्जायाम्। कपि, चलने। रबि, अबि, लबि, शब्दे। लबि,अवस्रंसने च। कबृ, वर्णे। क्लीबृ, अधार्ष्ट्ये। क्षीबृ, मदे। शीभृ कत्थने। चीभृ च। रेभृ, शब्दे। अभि, रभि, शब्दे। ष्टभि स्कभि, प्रतिबन्धे। जभी, जृभि, गात्रविनामे। शल्भ, कत्थने। वल्भ, भोजने। गल्भ, धार्ष्ट्ये। श्रम्भु, प्रमादे। ष्टुभु, स्तम्भे। इति तिपिवर्जमुदात्ता अनुदात्तेतः॥

अथ गुपादयः शुंभ्यन्ता एकचत्वारिंशत्परस्मैभाषाः॥

गुपू, रक्षणे। धूप, सन्तापे। जप, जल्प, व्यक्तायां वाचि। जप, मानसे च। चप सान्त्वने। षप, समवाये। रप, लप, व्यक्तायां वाचि। चुप, मन्दायां गतौ। तुप, तुम्प, त्रुप, त्रुंप तुफ, तुम्फ, त्रुफ, त्रुम्फ, हिंसार्थाः। पर्प, रफ, रफि, अर्ब, पर्ब, लर्ब, बर्ब, मर्ब, कर्ब, खर्ब गर्ब, शर्ब, षर्ब, चर्ब, गतौ। चर्ब, अदने च। कुबि, आच्छादने। लुबि, तुबि, अर्दने। चुबि, वक्त्रसंयोगे। षृभु, षृम्भु, हिंसार्थौ। षिभु, षिम्भु, इत्येके। शुभ, शुम्भ, भाषणे। हिंसायामित्यन्ये। इत्युदात्ता उदात्तेतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाऽनुनासिकान्ता घिण्यन्ता दशात्मनेभाषाः ॥

घिणि, घुणि, घृणि, ग्रहणे। घुण, घूर्ण, भ्रमणे। पण, व्यवहारे स्तुतौ च। पन, च। भाम, क्रोधे। क्षमूष्, सहने। कमु, कान्तौ। इति घिण्यादय उदात्ता अनुदात्तेतः ॥

अथाणादयः क्रम्यन्तास्त्रिंशत्परस्मैभाषाः ॥

अण, रण, वण, भण, मण, कण, क्वण, व्रण, भ्रण, ध्वण, शब्दार्थाः। ओणृ, अपनयने। शोणृ, वर्णगत्योः। श्रोणृ, संघाते। श्लोणृ च,। पैणृ, गतिप्रेरणश्लेषणेषु। ध्रण, बण, शब्दे। कनी, दीप्तिकान्तिगतिषु। ष्टन, वन, शब्दे। वन, षण, संभक्तौ। अम, गत्यादिषु। द्रम, हम्म, मीमृ, गतौ। मीमृ,शब्दे च। चमु, छमु, जमु, झमु, अदने। क्रमु, पादविक्षेपे। इत्युदात्ता उदात्तेतः ॥

अथ पवर्गीयान्ता अयादयो रेवत्यन्ता सप्तत्रिंशदात्मनेभाषाः

अय, वय, पय, मय, चय, तय, णय गतौ। णय, रक्षणे च। दय, दानगतिरक्षणहिंसादानेषु। रय, गतौ। ऊयी तन्तुसन्ताने। पूयी, विशरणे, दुर्गन्धे च। क्नूयी शब्दे उन्दे च। क्ष्मायी, विधूनने। स्फायी,ओप्यायी,वृद्धौ। तायृ, सन्तानपालनयोः। शल, चलनसंवरणयोः। वल,वल्ल,संवरणे संचलने च। मल,मल्ल,धारणे। भल,भल्ल, परिभाषणहिंसादानेषु। कल,शब्दसंख्यानयोः। कल्ल,अव्यक्ते शब्दे। तेवृ, देवृ, देवने। षेवृ, गेवृ, ग्लेवृ, पेवृ,मेवृ म्लेवृ, सेवने। शेवृ, खेवृ, केवृ, इत्येके। रेवृ, प्लवगतौ। इत्युदात्ता अनुदात्तेतः ॥

अथ मव्यादयोऽवत्यन्ताः सप्तनवतिः परस्मैभाषाः ॥

सूर्क्ष्य, ईर्क्ष्य, ईर्ष्य, इर्ष्यार्थाः। हय, गतौ। शुच्य, चुच्य, अभिषवे। हर्य, गतिकान्त्योः। अल, भूषणपर्याप्तिवारणेषु। ञिफला, विशरणे। मील, श्मील, स्मील, क्ष्मील, निमेषणे। पील, प्रतिष्टम्भे। णील, वर्णे। शील, समाधौ। कील, बन्धने।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूल, आवरणे । शूल, रुजायाम् । संघाते च । तूल, निष्कर्षे । पूल, संघाते । मूल, प्रतिष्ठायाम् । फल, निष्पत्तौ । चुल्ल, भाव-करणे । फुल्ल, विकसने । चिल्ल, शैथिल्ये भावकरणे च । तिल, तिल्ल, गतौ । वेलृ, चेलृ, केलृ, खेलृ, क्ष्वेलृ, वेल्ल, चलने । पेलृ, फेलृ, खेलृ, षेलृ, शेलृ, गतौ । स्खल, संचलने । खल, संचये च । गल, अदने । षल, गतौ । दल, विशरणे । श्वल, श्वल्ल, आशुगमने । खोलृ, खोर्ऋ, गतिप्रतिघाते । धोर्ऋ, गतिचातुर्ये । त्सर, छद्मगतौ । क्मर, हूर्च्छने । अभ्र, वभ्र, मभ्र, चर, गत्यर्थाः । चर, भक्षणे च । ष्ठिवु, निरसने । जि, जये । जीव, प्राणधारणे । पीव, मीव, तीव, णीव, स्थौल्ये । क्षिवु, क्षेवु, निरसने । उर्वी, तुर्वी, थुर्वी, दुर्वी, धुर्वी, हिंसार्थाः । गुर्वी, उद्यमने । मुर्वी, बन्धने । पुर्व, पर्व, मर्व, पूरणे । चर्व, अदने । भर्व, हिंसायाम् । कर्व, खर्व, गर्व, दर्पे । अर्व, शर्व, षर्व, हिंसायाम् । इवि, व्याप्तौ । पिवि, मिवि, णिवि, सेवने । सेचने चेत्येके । हिवि,दिवि,धिवि, जिवि, प्रीणनार्थाः । रिवि, रवि, धवि, गत्यर्थाः । कृवि, हिंसा-करणयोश्च । मव,बन्धने । अवरक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिंगनहिंसादा-नभागवृद्धिषु । इति जयतिवर्जमुदात्ता उदात्तेतः ॥

धावु,गतिशुद्ध्योः । उदात्तः स्वरितेदुभयतोभाषः ॥

अथोष्मान्ताः ॥

तत्र धुक्षादयो घुष्यन्ता द्विपञ्चाशदात्मनेभाषाः ॥

धुक्ष, धिक्ष,सन्दीपनक्लेशनजीवनेषु । वृक्ष, वरणे शिक्षविद्यो-पादाने । भिक्ष,भिक्षायामलाभे लाभे च । क्लेश,अव्यक्तायां वाचि । बाधने च । दक्ष,वृद्धौ शीघ्रार्थे च । दीक्ष, मौण्ड्येज्योपनयननियम-व्रतादेशेषु । ईक्ष, दर्शने । ईष, गतिहिंसादर्शनेषु । भाष, व्यक्तायां वाचि । वर्ष, स्नेहने । गेषृ, अन्विच्छायाम् । ग्लेषृ, इत्यन्ये ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेषृ, प्रयत्ने । जेषृ, णेषृ, एषृ, प्रेषृ, गतौ ।रेषृ, हेषृ, ह्रेषृ, अव्यक्ते शब्दे । कासृ, शब्दकुत्सायाम् भासृ, दीप्तौ । णासृ, रासृ, शब्दे । णस, कौटिल्ये । भ्यस, भये । आङः शसि,इच्छायाम् । ग्रसु, ग्लसु, अदने । ईह, चेष्टायाम् । बहि, महि, वृद्धौ । अहि, गतौ । गर्ह, गल्ह, कुत्सायाम् । बर्ह, बल्ह, प्राधान्ये । बर्ह, बल्ह, परिभाषणहिंसाच्छादनेषु । प्लिह, गतौ । वेहृ, जेहृ, बाहृ, प्रयत्ने । द्राहृ, निद्राक्षये । निक्षेप इत्येके । काशृ, दीप्तौ । ऊह, वितर्के । गाहू, विलोडने । गृहू, ग्लहू, ग्रहणे । घुषि, कान्तिकरणे ॥ इत्युदात्ता अनुदात्तेतः ॥

अथ घुषिरादयोऽर्हत्यन्ता एक नवतिः परस्मैभाषाः ॥

घुषिर्, अविशब्दने । अक्षू, व्याप्तौ । तक्षू, त्वक्षू, तनूकरणे । उक्ष, सेचने । रक्ष, पालने । णिक्ष, चुंबने । टक्ष, षृक्ष, ष्वक्ष, । गतौ । वक्ष, रोषे । संघात इत्येके । मृक्ष, संघाते । म्रक्ष, इत्येके। तक्ष, त्वचने । पक्ष, परिग्रह इत्येके । सूर्क्ष, आदरानादरयोः । काक्षि, वाक्षि, माक्षि, काङ्क्षायाम् । द्राक्षि,ध्राक्षि,ध्वाक्षि,घोर वाशिते च । चूष, पाने । तूष, तुष्टौ । पूष, वृद्धौ । मूष, स्तेये । लूष, रूष, भूषायाम् । शूष, प्रसवे । यूष, हिंसायाम् । जूष, च । भूष, अलंकारे । ऊष, रुजायाम् । ईष, उंछे । कष,खष, शिष, जष, झष, शष, वष, मष, रुष, रिष, हिंसार्थाः । भष, भर्त्सने । उष, दाहे । जिषु, विषु, मिषु, सेचने । पुष, पुष्टौ । श्रिषु, श्लिषु, प्रुषु, प्लुषु, दाहे । पृषु, वृषु, मृषु, सेचने । मृषु, सहने च । इतरो हिंसासंक्लेशनयोश्च । घृषु, संघर्षणे । हृषु, अलीके । तुस, ह्रस, ह्लस, रस, शब्दे । लस, श्लेषणक्रीडनयोः । घस्लृ, अदने । जर्ज, चर्च, झर्झ, परिभाषणहिंसातर्जनेषु । पिसृ, पेसृ, गतौ । हसे, हसने । णिश, समाधौ । मिश, मश, शब्दे । रोषकृते च । शव, गतौ । शश, प्लुतगतौ । शसु, हिंसायाम् । शंसु, स्तुतौ । चह, परि-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्कने। मह, पूजायाम्। रह, त्यागे। रहि गतौ। दृह, दृहि, बृह, बृहि, वृद्धौ। बृहि, शब्दे च। बृहिर् इत्येके। तुहिर्, दुहिर्, उहिर्, अर्दने, अर्ह, पूजायाम्॥ इत्युदात्ता उदात्तेतः॥

अथ द्युतादयः कृपूपर्यन्ताः पञ्चविंशतिरात्मनेभाषाः॥

द्युत, दीप्तौ। श्विता, वर्णे। ञिमिदा, स्नेहने। ञिष्विदा, स्नेहनमोचनयोः। ञिक्ष्विदा, चेत्येके। रुच, दीप्तावभिप्रीतौ च। घुट, परिवर्तने। रुट, लुट, लुठ, उपघाते। शुभ, दीप्तौ। क्षुभ, संचलने। णभ, तुभ, हिंसायाम्। स्रंसु, ध्वंसु, भ्रंसु, अवस्रंसने। ध्वंसु, गतौ च। भ्रशु, भ्रंशु, अधःपतने,। स्रंभु, विश्वासे। वृतु, वर्तने। वृधु, वृद्धौ। शृधु, शब्दकुत्सायाम्। स्यन्दू, प्रस्रवणे। कृपू, सामर्थ्ये (वृत्)* इति द्युतादय उदात्ता अनुदात्तेतः

अथ घटादयस्त्वरत्यन्ताः षोडशात्मनेभाषाः॥

घट, चेष्टायाम्। व्यथ, भयसंचलनयोः। प्रथ, प्रख्याने। प्रस, विस्तारे। म्रद, मर्दने। स्खद, स्खदने। क्षजि, गतिदानयोः। दक्ष, गतिहिंसनयोः। क्रप, कृपायां गतौ च। कदि, क्रदि, क्लदि, वैक्लव्ये। वैकल्य इत्येके। कद, क्रद, क्लद, इत्यन्ये। ञित्वरा, संभ्रमे॥ इति घटादय उदात्ता अनुदात्तेतः॥

अथ ज्वरादयः फणान्ताः सप्तपंचाशत् परस्मैभाषाः

ज्वर, रोगे। गड, सेचने। हेड, वेष्टने। वट, भट, परिभाषणे। णट, नृतौ। ष्टक, प्रतीघाते। चक, तृप्तौ। कखे, हसने। रगे, शंकायाम्। लगे, संगे। ह्रगे, ल्हगे, षगे, ष्टगे, संवरणे। कगे, नोच्यते। क्रियासामान्यार्थत्वात् अनेकार्थत्वादित्यन्ये। अक, अग, कुटिलायां गतौ। कण, रण, गतौ। चण, शण, श्रण, दाने च। शण, गतावित्यन्ये। श्रथ, क्नथ, क्रथ, क्लथ, हिंसार्थाः। वन, च। वनु च नोच्यते।

* संपूर्णो द्युतादिर्वृतादिश्चेत्यर्थः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वल, दीप्तौ । ह्वल, ह्मल, संचलने । स्मृ, आध्याने । दॄ, भये । नॄ, नये । श्रा, पाके । मारणतोषणनिशामनेषु ज्ञा । कंपने, चलिः । छदि ऊर्जने । जिह्वोन्मथने, लडिः । मदी, हर्षग्लेपनयोः । ध्वन, शब्दे । दलि, वलि, स्खलि, रणि, ध्वनि, त्रपि, क्षपयश्च । स्वन, अवतंसने । घटादयो मितः । जनीजॄष्क्नसुरंजोऽमन्ताश्च । ज्वल ह्वलह्मलनमामनुपसर्गाद्वा । ग्लास्नावनुवमां च । न कम्यमिचमाम् । शमोदर्शने । यमो, परिवेषणे । स्खदिरवपरिभ्यां च । फण, गतौ । वृत् * । इति ज्वरादय उदात्ता उदात्तेतः

राजृ, दीप्तौ । उदात्तः स्वरितेदुभयतोभाषः ॥

टुभ्राजृ, टुभ्राशृ, टुभ्लाशृ दीप्तौ । उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः ॥

अथ स्यमादयः क्षुरत्यन्ताः सप्तविंशतिः परस्मैभाषाः ॥

स्यमु, स्वन, ध्वन, शब्दे । षम, ष्टम, अवैक्लव्ये । ज्वल, दीप्तौ चल, कंपने । जल, घातने । टल, ट्वल, वैक्लव्ये । ष्ठल, स्थाने हल, विलेखने । णल, गन्धे । बन्धन इत्येके । पल, गतौ । बल, प्राणने धान्यावरोधे च । पुल, महत्त्वे । कुल, संस्त्याने बन्धुषु च । शल, हुल, पत्लृ, गतौ । क्वथे, निष्पाके । पथे, गतौ । मथे, विलोडने । टुवम, उद्गिरणे । भ्रमु, चलने । क्षर, संचलने । क्षुर, संचये । इतिस्यमादय उदात्ता उदात्तेतः ।

अथ द्वावनुदात्तेतौ ॥

षह, मर्षणे । उदात्तोऽनुदात्तेत् ॥

रमु, क्रीडायाम् । अनुदात्तोऽनुदात्तेत् ॥

अथ षदादयः कसंताः सप्त परस्मैभाषाः ॥

षद्लृ, विशरणगत्यवसादनेषु । शद्लृ, शातने । क्रुश, आह्वाने रोदने च । कुच, संपर्चनकौटिल्यप्रतिष्टम्भविलेखनेषु । बुध, अवगमने ।

* घटादिर्गणः समाप्तः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहबीजजन्मनिप्रादुर्भावेच । कस,गतौ । कुचादय उदात्ताउदात्ते तोविहित्वनुदात्तः ॥ वृत् ॥ इति ज्वलादिर्गणः ॥

अथ हिक्कादयो गूहत्यन्ताः पंचचत्वारिंशदुभयतोभाषाः ॥

हिक्क,अव्यक्ते शब्दे । अंचु,गतौ याचने च। अचु,इत्येके,अचि, इत्यपरे । टुयाचृ, याञ्चायाम् । रेटृ, परिभाषणे । चते, चदे, याचने । प्रोथृ, पर्याप्तौ । मिदृ, मेदृ, मेधाहिंसनयोः । मेधृ,संगमे च । मिथृ,मेथृ, मेधाहिंसयोरित्येके । मिधृ,मेधृ, इत्यन्ये। णिदृ,णेदृ, कुत्सासन्निकर्षयोः । शृधु, मृधु, उन्दने । बुधिर्, बोधने उबुंदिर् निशामने । वेणृ, गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु। वेनृ, इत्येके। खनु, अवदारणे । चीवृ,आदानसंवरणयोः । चायृ,पूजानिशामनयोः । व्यय, गतौ । दाशृ,दाने । भेषृ, भये । गतावित्येके भ्रेषृ,भ्लेषृ, गतौ । अस,गतिदीप्त्यादानेषु । अषेत्येके । स्पश, बाधस्पर्शनयोः । लष, कान्तौ । चष, भक्षणे । छष, हिंसायाम् झष, आदानसंवरणयोः । भक्ष, भ्लक्ष, अदने । भक्ष, च । दासृ,दाने । माहृ, माने । गुहू,संवरणे । इति हिक्कादय उदात्ताःस्वरितेतः ॥

अथाऽजन्ताः श्रिञादयो नयत्यन्ताः पंचोभयतोभाषाः ॥

श्रिञ्, सेवायाम् । उदात्तः स्वरितेत् । भृञ्, भरणे । हृञ्, हरणे । धृञ्,धारणे । णीञ्,प्रापणे । इति भरत्यादयोऽनुदात्ताः स्वरितेतः ॥

अथ धेटादयो जयत्यान्ताः षट्चत्वारिंशत्परस्मैभाषाः ॥

धेट्,पाने । ग्लै,म्लै,हर्षक्षये । द्यै न्यक्करणे । द्रै,स्वप्ने । ध्रै,तृप्तौ । ध्यै, चिन्तायाम् । रै,शब्दे । स्त्यै, ष्ट्यै, शब्दसंघातयोः । खै खदने । क्षै,जै, षै, क्षये । कै, गै, शब्दे । शै,श्रै,पाके । पै,ओवै,शोषणे । ष्टै, वेष्टने । ष्णै, वेष्टने । शोभायां चेत्येके । दैप्, शोधने । पा, पाने । घ्रा,गन्धोपादाने । ध्मा, शब्दाग्निसंयोगयोः । ष्ठा, गतिनिवृत्तौ । म्ना,अभ्यासे । दाण्, दाने । ह्वृ, कौटिल्ये । स्वृ, शब्दोपतापयोः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृ, चिन्तायाम् । ह्वृ, संवरणे । सृ, गतौ । ऋ, गतिप्रापणयोः । गृ, घृ, सेचने । ध्वृ, हूर्छने । स्रु, गतौ । षु, प्रसवैश्वर्य्ययोः । श्रु, श्रवणे । ध्रु, स्थैर्य्ये । दु, द्रु, गतौ । जि, ज्रि, अभिभवे । इति घेटादयोऽनुदात्ताः ॥

अथ ष्मिङादयो डीङन्ताङितः सप्तत्रिंशतिरात्मनेभाषाः ॥

ष्मिङ्, ईषद्धसने । गुङ्, अव्यक्ते शब्दे । गाङ्, गतौ । कुङ्, घुङ्, उङ्, ङुङ्, शब्दे । क्रुङ्, खुङ्, गुङ्, डुङ्, चेत्याहुरन्ये । च्युङ्, ज्युङ्, जुङ्, प्रुङ्, प्लुङ्, गतौ । क्लुङ् इत्येके । रुङ्, गतिरेषणयोः । धृङ्, अवध्वंसने । मेङ्, प्रणिदाने । देङ्, रक्षणे । श्यैङ्, गतौ । प्यैङ्, वृद्धौ । त्रैङ्, पालने ।

इति ष्मिङ्प्रभृतयोऽनुदात्ताः ॥

पूङ्, पवने । मूङ्, बन्धने । डीङ्, विहायसागतौ । इति पूङादय उदात्ताः ॥

तॄ, प्लवनसंतरणयोः । उदात्तः परस्मैभाषः ॥

अथ गुपादयो दहत्यन्ता अष्टावात्मनेभाषाः ॥

गुप, गोपने । तिज, निशाने । मान, पूजायाम् । वध, बन्धने । गुपादयश्चत्वार उदात्ता अनुदात्तेतः ॥

रभ, राभस्ये । डुलभष्, प्राप्तौ । ष्वञ्ज, परिष्वङ्गे । हद, पुरीषोत्सर्गे । रभादयश्चत्वारोऽनुदात्ता अनुदात्तेतः ॥

अथ ञिष्विदादयो मेहत्यन्ताः पञ्चदश परस्मैभाषाः ॥

ञिष्विदा, अव्यक्ते शब्दे । उदात्तः । स्कन्दिर्, गतिशोषणयोः । यभ, मैथुने । णम, प्रह्वत्वे शब्दे च । गम्लृ, सृप्लृ, गतौ । यम, उपरमे । तप, सन्तापे । त्यज, हानौ । षंज, संगे । दृशिर्, प्रेक्षणे । दंश, दशने । कृष, विलेखने । दह, भस्मीकरणे । मिह, सेचने । स्कन्दादयोऽनुदात्ताः । इति ष्विदादय उदात्तेतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकः परस्मैभाषः ॥

कित, निवासे रोगापनयने च। उदात्तेत् ॥

अथ द्वावुभयतोभाषौ ॥

दान, खंडने। शान, तेजने। स्वरितेतौ ॥

अथ पचादयो वहत्यन्ता नवोभयतोभाषाः ॥

डुपचष्, पाके। षच, समवाये। भज, सेवायाम्। रंज, रागे। शप, आक्रोशे। त्विष, दीप्तौ। यज, देवपूजासंगतिकरणदानेषु। डुवप, बीजसन्ताने छेदने च। वह, प्रापणे॥ इति पचादयोऽनुदात्ताः स्वरितेतः सचतिस्तूदात्तः।

अथैकः परस्मैभाषः।

वस, निवासे। उदात्तेदनुदात्तः।

अथ व्येञादयस्त्रय उभयतोभाषाः।

वेञ्, तन्तुसन्ताने। व्येञ् संवरणे। ह्वेञ्, स्पर्द्धायां शब्दे च। व्येञादयोऽनुदात्ताः।

अथ द्वौ परस्मैभाषौ।

वद, व्यक्तायां वाचि। टुओश्वि, गतिवृद्ध्योः इत्युदात्तौ। वृत्। इति यजादिर्गणः समाप्तः।

इति शब्विकरणा भ्वादयः समाप्ताः ॥



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाऽदादिर्गणः।

---:※:---

अथ द्वौ परस्मैभाषौ ।

अद, भक्षणे । हन, हिंसागत्योः । अनुदात्तावुदात्तेतौ ॥

अथ चत्वार उभयतोभाषाः ।

द्विष, अप्रीतौ । दुह, प्रपूरणे । दिह, उपचये । लिह, आस्वादने । द्विषादयोनुदात्ताः स्वरितेतः ।

अथैक आत्मनेभाषः ॥

चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि । अयं दर्शनेऽपि । अनुदात्तेतोऽनुदात्तेत्॥

अथ षट्चत्वारिंशत् ... अथ एच्यन्ताः षोडशात्मनेभाषाः ।

ईर, गतौ कंपने च । ईड, स्तुतौ । ईश, ऐश्वर्ये । आस, उपवेशने । आङः शासु, इच्छायाम् । वस, आच्छादने । कसि, गति, शासनयोः । कस इत्येके । कश, इत्यन्ये । णिसि, चुंबने । णिजि, शुद्धौ॥ शिजि, अव्यक्ते शब्दे । पिजि, वर्णे । पृजीत्येके । वृजी, वर्जने । पृची, संपर्चने । इतीरादय उदात्ता अनुदात्तेतः ॥

अथ द्वावात्मनेभाषौ ॥

षूङ्, प्राणिगर्भविमोचने । शीङ्, स्वप्ने । उदात्तौ ॥

अथ पञ्च परस्मैभाषाः ॥

यु, मिश्रणे अमिश्रणे च । णु, स्तुतौ । रु, शब्दे । टुक्षु, शब्दे । क्ष्णु, तेजने । इत्युदात्ता उदात्तेतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैक उभयतोभाषः ॥

ऊर्णुञ्, आच्छादने । उदात्तः ॥

अथ पञ्च परस्मैभाषाः ॥

ष्णु, प्रस्रवणे । द्यु, अभिगमने । षु, प्रसवैश्वर्ययोः । कु, शब्दे । तु, गतिवृद्धिहिंसासु । इत्यनुदात्ता उदात्तेतः ॥

अथ द्वावुभयतोभाषौ ॥

ष्टुञ्, स्तुतौ । ब्रूञ्, व्यक्तायां वाचि । इत्यनुदात्तौ ॥

अथैकोनविंशतिः परस्मैभाषा इङ्त्वात्मनेभाषः ॥

इण्, गतौ । इङ्, अध्ययने । इक्, स्मरणे । वी, गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु । या, प्रापणे । वा, गतिगन्धनयोः । भा, दीप्तौ । ष्णा, शौचे । श्रा, पाके । द्रा, कुत्सायां गतौ च । प्सा, भक्षणे । पा, रक्षणे । रा, दाने । ला, आदाने । दाप्, लवने । ख्या, प्रकथने । प्रा, पूरणे । मा, माने । वच, परिभाषणे । इत्यनुदात्ता उदात्तेतः ॥

अथ चत्वारः परस्मैभाषाः ॥

विद, ज्ञाने । अस, भुवि । मृजूष, शुद्धौ । रुदिर्, अश्रुविमोचने । इत्युदात्ता उदात्तेतः ॥

अथैकः परस्मैभाषः ॥

ञिष्वप्, शये । उदात्तेदनुदात्तः

अथ सप्त परस्मैभाषाः ।

श्वस, प्राणने । अन, च । जक्ष, भक्षहसनयोः । जागृ, निद्राक्षये । दरिद्रा, दुर्गतौ । चकासृ, दीप्तौ । शासु, अनुशिष्टौ । इत्युदात्ता उदात्तेतः ।

अथ द्वावात्मनेभाषौ ।

दीधीङ्, दीप्तिदेवनयोः । वेवीङ्, वेतिना तुल्ये । इत्युदात्तौ ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयः परस्मैभाषाः ।

षस, षस्ति, स्वप्ने । वश, कान्तौ । इत्युदात्ता उदात्तेतः । चर्करीतं च ।

अथैक आत्मनेभाषः ।

ह्नुङ्, अपनयने । इत्यनुदात्तः ।

इति लुग्विकरणा अदादयः ॥

अथ जुहोत्यादिगणः

—:※:—

अथ त्रयः परस्मैभाषाः ।

हु, दानादनयोः । आदाने चेत्येके । ञिभी, भये । ह्री, लज्जायाम् । जुहोत्यादयोऽनुदात्ताः ।

अथैकः परस्मैभाषः ।

पॄ, पालनपूरणयोः उदात्तः । ह्रस्वान्तोयमित्येके ।

अथैक उभयतोभाषः ।

डुभृञ्, धारणपोषणयोः । अनुदात्तः ॥

अथ द्वावात्मनेभाषौ ।

माङ् माने शब्दे च । ओहाङ्, गतौ ।

अथैकः परस्मैभाषः ।

ओहाक्, त्यागे । अनुदात्तः ॥

अथ द्वावुभयतोभाषौ ॥

डुदाञ्, दाने । डुधाञ्, धारणपोषणयोः । अनुदात्तौ ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ मथ उभयतोभाषाः ।

णिजिर्, शौचपोषणयोः । विजिर्, पृथग्भावे । विष्लृ, व्याप्तौ । इति णिजादयोऽनुदात्ताः स्वरितेतः ॥

अथ गणान्ताः परस्मैभाषाश्छन्दसाश्चैकादश ॥

घृ, क्षरणदीप्त्योः । हृ, प्रसह्यकरणे । ऋ, सृ, गतौ । इति घादय श्चत्वारोऽनुदात्ताः ॥

भस, भर्त्सनदीप्त्योः । उदात्त उदात्तेत् । कि, ज्ञाने । अनुदात्तः । तुर, त्वरणे । धिष, शब्दे । धन, धान्ये । जन, जनने । तुरादय उदात्ता उदात्तेतः । गा, स्तुतौ अनुदात्तः । छन्दसि

वृत् । इति श्लु विकरणा जुहोत्यादयः ॥

अथ दिवादिर्गणः ॥

—:※:—

अथ दिवादयः षड्विंशतिः परस्मैभाषाः ॥

दिवु, क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु । षिवु, तन्तुसन्ताने । स्रिवु, गतिशोषणयोः । ष्ठिवु, निरसने । स्नुसु, अदने । आदान इत्येके । अदर्शन इत्यपरे । स्नसु, निरसने । क्नसु, ह्वरणदीप्त्योः । व्युष, दाहे । प्लुष, च । नृती, गात्रविक्षेपे । त्रसी, उद्वेगे । कुथ, पूतीभावे । पुथ, हिंसायाम् । गुध, परिवेष्टने । क्षिप, प्रेरणे । अनुदात्तः । पुष्प, विकसने । तिम, तीम, ष्टिम, ष्टीम, आर्द्रीभावे । व्रीड, चोदने लज्जायाञ्च इष, गतौ । षह, षुह, चक्यर्थे । जॄष्, झॄष्, वयोहानौ । इति दिवादय उदात्ता उदात्तेतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वावात्मनेभाषौ ॥

षूङ्, प्राणिप्रसवे । दूङ्, परितापे । इत्युदात्तौ ॥

अथ दीङादय एकादश आत्मनेभाषाः ॥

दीङ्, क्षये । डीङ् विहायसा गतौ । धीङ्, आधारे । मीङ्, हिंसायाम् । रीङ्, स्रवणे । लीङ्, श्लेषणे । व्रीङ्, वृणोत्यर्थे । (वृत्) स्वादय ओदितः । पीङ्, पाने । माङ्, माने । ईङ्, गतौ । प्रीङ्, प्रीणने । इति दीङादय अनुदात्ता डीङ् तूदात्तः ॥

अथ चत्वारः परस्मैभाषाः ॥

शो, तनूकरणे । छो, छेदने । षो, अन्तकर्मणि । दो, अवखण्डने । श्यतिप्रभृतयोनुदात्ताः ॥

अथ पंचदशात्मनेभाषाः ॥

जनी, प्रादुर्भावे । दीपी, दीप्तौ । पूरी, आप्यायने । तूरी, गतित्वरणहिंसनयोः । धूरी, गूरी, हिंसागत्योः । घूरी, जूरी, हिंसावयोहान्योः । शूरी, हिंसास्तंभनयोः । चूरी, दाहे । तप, ऐश्वर्ये वा वृतु, वरणे । क्लिश, उपतापे । काशृ, दीप्तौ । वाशृ, शब्दे । इति तपिवर्जमुदात्ता अनुदात्तेतः ।

अथ द्वावुभयतोभाषौ ।

मृष, तितिक्षायाम् । ईशुचिर्, पूतीभावे । उदात्तौ स्वरितेतौ ।

अथ त्रय उभयतोभाषाः ।

णह, बन्धने । रंज, रागे । शप, आक्रोशे । इत्यनुदात्ताः स्वरितेतः ।

अथैकादशात्मनेभाषाः ।

पद, गतौ । खिद, दैन्ये । विद, सत्तायाम् । बुध, अवगमने । युध, संप्रहारे । अनोरुध, कामे । अण, प्राणने । उदात्तः । मन, ज्ञाने । युज, समाधौ । सृज, विसर्गे । लिश, अल्पीभावे । इत्यनुदात्ता अनुदात्तेतः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ णान्ता एकसप्ततिः परस्मैभाषाः ।

राधोऽकर्मकाद्वृद्धावेव । व्यध, ताडने । पुष, पुष्टौ । शुष, शोषणे । तुष,प्रीतौ । दुष, वैकृत्ये । श्लिष, आलिंगने । शक, विभाषितो मर्षणे । ञिष्विदा,गात्रप्रक्षरणे । क्रुध, क्रोधे । क्षुध, बुभुक्षायाम् । शुध, शौचे । षिधु,संराद्धौ । इत्यनुदात्ता उदात्तेतः । रध, हिंसासंराध्योः । णश, अदर्शने । तृप, प्रीणने । दृप, हर्षणमोहनयोः । द्रुह, जिघांसायाम्।मुह,वैचित्ये । ष्णुह,उद्गिरणे । ष्णिह, प्रीतौ । वृत् रधादयः । इत्युदात्ता उदात्तेतस्तृपिदृपीत्वनुदात्तौ ।

अथ शमादयः ॥

शमु, उपशमे । तमु,कांक्षायाम् । दमु,उपशमे । श्रमु, तपसि खेदे च । भ्रमु, अनवस्थाने । क्षमूष्, सहने । क्लमु, ग्लानौ । मदी, हर्षे । इत्यष्टौ शमादयः । असु, क्षेपणे । यसु, प्रयत्ने । जसु, मोक्षणे । तसु, उपक्षये । दसु, च । वसु, स्तंभे । बशादिरित्येके । ओष्ठ्यादिर्दन्त्यान्तो व्युस् इत्यन्ये । अयकारं बुस् इत्यपरे । व्युष, विभागे । प्लुष, दाहे । बिस, प्रेरणे । कुस, संश्लेषणे । बुस, उत्सर्गे । मुस, खंडने । मसी, परिणामे । समी इत्येके । लुठ, विलोडने उच, समवाये । भृशु, भ्रंशु, अधःपतने । वृश, वरणे । कृश, तनूकरणे । ञितृष, पिपासायाम् । हृष, तुष्टौ । रुष, रिष, हिंसायाम् । डिप, क्षेपे । कुप,क्रोधे । गुप,व्याकुलत्वे । युपु, रुपु, लुपु, विमोहने । लुभ, गार्ध्ये । क्षुभ, संचलने । णभ, तुभ,हिंसायाम् । क्लिदू,आर्द्रीभावे। ञिमिदा,स्नेहने। ञिक्ष्विदा,स्नेहनमोचनयोः। ऋधु,वृद्धौ। गृधु,अभिकांक्षायाम् । वृत्। इत्युदात्ता उदात्तेतः ।

इति श्यन्विकरणा दिवादयः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ स्वादिर्गणः ॥

—:०:—

अथ स्वादयो द्विशोभयतोभाषाः ।

षुञ्, अभिषवे । षिञ्, बन्धने । शिञ्, निशाने । डुमिञ्, प्रक्षेपणे । चिञ्, चयने । स्तृञ्, आच्छादने । कृञ्, हिंसायाम् । वृञ्, वरणे । धुञ्, कंपने । दीर्घान्तोपीत्येके । इति वृञ् वर्ज-मनुदात्ताः ।

अथ नव परस्मैभाषाः ।

टुदु, उपतापे । हि, गतौ वृद्धौ च । पृ, प्रीतौ । स्पृ, प्रीति सेवनयोः । प्रीतिचलनयोरित्यन्ये । स्मृ, इत्येके । आप्लृ, व्याप्तौ । शक्लृ, शक्तौ । राध, साध, संसिद्धौ । इत्यनुदात्ताः ।

अथ द्वावात्मनेभाषौ ।

अशूङ् व्याप्तौ संघाते च । ष्टिघ, आस्कन्दने । इत्युदात्तावनु-दात्तेतौ ।

अथागणान्ताः षोडश परस्मैभाषाः ।

तिक, तिग, गतौ च । षघ, हिंसायाम् । ञिधृषा, प्रागल्भ्ये । दंभु, दंभने । ऋधु, वृद्धौ । छन्दसि । तृप, प्रीणन इत्येके । अह, व्याप्तौ । दघ, घातने पालने च । चमु, भक्षणे । रि, क्षि, चिरि, जिरि, दाशृ, दृ, हिंसायाम् । इत्युदात्ता उदात्तेतः ।

वृत् । इति श्नुविकरणाः स्वादयः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ तुदादिर्गणः ।

—३:⁂:६—

अथ षडुभयतोभाषाः ।

तुद, व्यथने । णुद, प्रेरणे । दिश, अतिसर्जने । भ्रस्ज, पाके । क्षिप, प्रेरणे । कृष, विलेखने । इत्यनुदात्ताः स्वरितेतः ।

अथैकः परस्मैभाषः ।

ऋषी, गतौ । उदात्त उदात्तेत् ।

अथ चत्वार आत्मनेभाषाः ।

जुषी, प्रीतिसेवनयोः । ओविजी, भयचलनयोः । ओलजी, ओलस्जी, व्रीडायाम् । इत्युदात्ता अनुदात्तेतः ।

अथ व्रश्चादयश्चतुर्दशोत्तरशतं परस्मैभाषाः ।

ओव्रश्चू, छेदने । व्यच, व्याजीकरणे । उछि, उञ्छे । उच्छी, विवासे । ऋच्छ, गतीन्द्रियप्रलयमूर्त्तिभावेषु । मिच्छ, उत्क्लेशे । जर्ज, चर्च, झर्झ, परिभाषणभर्त्सनयोः । त्वच, संवरणे । ऋच, स्तुतौ । उज, आर्जवे । उज्झ, उत्सर्गे । लुभ, विमोहने । रिफ, कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसादानेषु । रिह, इत्येके । तृप, तृम्प, तृप्तौ । तृफ, तृम्फ इत्येके । तुप, तुम्प, तुफ, तुम्फ, हिंसायाम् । दृफ, दृम्फ, उत्क्लेशे । दृफ, इत्यन्ये । ऋफ, ऋम्फ, हिंसायाम् । गुफ, गुम्फ, ग्रन्थे । उभ, उम्भ, पूरणे । शुभ, शुम्भ, शोभार्थे । दृभी, ग्रन्थे । चृती, हिंसाग्रन्थनयोः । विध, विधाने । जुड, गतौ । जुन, इत्येके । मृड, सुखने । पृड, च । पृण, प्रीणने । वृण, च । मृड, हिंसायाम् । तुण, कौटिल्ये । पुण, कर्मणि शुभे । मुण, प्रतिज्ञाने । कुण, शब्दोपकरणयोः । शुन, गतौ । द्रुण, हिंसागतिकौटिल्येषु । घुण, घूर्ण, भ्रमणे । षुर, ऐश्वर्यदीप्त्योः । कुर, शब्दे । खुर, छेदने । मुर, संवेष्टने । क्षुर,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलेखने । घुर, भीमार्थशब्दयोः । पुर, गमने । वृहू, उद्यमने । बृहू, इत्येके । तृहू, स्तृहू, तृंहू, हिंसार्थाः । इषु, इच्छायाम् । मिष, स्पर्द्धायाम् । किल, श्वैत्यक्रीडनयोः । तिल, स्नेहे । चिल, वसने । चल, विलसने । इल, स्वप्नक्षेपणयोः । विल, संवरणे । बिल, भेदने । णिल, गहने । हिल, भावकरणे । शिल, षिल, उञ्छे । मिल,श्लेषणे । लिख, अक्षरविन्यासे । कुट, कौटिल्ये । पुट, संश्लेषणे । कुच, संकोचने । गुज, शब्दे । गुड, रक्षायाम् । डिप,क्षेपे । छुर,छेदने । स्फुट,विकसने । मुट, आक्षेपप्रमर्दनयोः । त्रुट, छेदने । तुट, कलहकर्मणि । चुट, छुट, छेदने । जुड,बन्धने । कड, मदे । लुठ, संश्लेषणे । लुट, इत्येके । कृड, घनत्वे । कुड, बाल्ये । पुड, उत्सर्गे । घुट, प्रतिघाते । तुड, तोडने । थुड,स्थुड, संवरणे । खुड,छुड,इत्येके । स्फुर,स्फुरणे । स्फर, इत्येके । स्फुल, संचलने । स्फुड, चुड, व्रुड, सम्वरणे । क्रुड, भृड, निमज्जने । इत्युदात्ता उदात्तेतः ॥

अथैक आत्मनेभाषः ॥

गुरी,उद्यमने । इत्युदात्तोऽनुदात्तेत् ।

अथ पंच परस्मैभाषाः ॥

णू,स्तवने । धू,विधूनने । गु,पुरीषोत्सर्गे । ध्रु, गतिस्थैर्ययोः । ध्रुव, इत्येके । इत्याद्यावुदात्तावन्त्याश्चानुदात्ताः ।

अथ द्वावात्मने भाषौ।कूङ्, शब्दे।कुङ्,शब्द इत्येके ।इत्युदात्तौ।

(वृत्) इति कुटादिगणः समाप्तः ॥

अथ द्वावात्मनेभाषौ ॥

पृङ्, व्यायामे । मृङ्, प्राणत्यागे । इत्यनुदात्तौ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्त परस्मैभाषाः ॥

—:*:—

रि, पि, गतौ। धि, धारणे। क्षि, निवासगत्योः। इत्यनुदात्ताः षू, प्रेरणे। कॄ, विक्षेपे। गॄ, निगरणे। इत्युदात्ताः ॥

अथ द्वावात्मनेभाषौ ॥

दृङ्, आदरे। धृङ्, अनवस्थाने। इत्यनुदात्तौ ॥

अथ षोडश परस्मैभाषाः ॥

प्रच्छ, ज्ञीप्सायाम्। वृत्। किरादयो वृतः ॥

सृज, विसर्गे। टुमस्जो, शुद्धौ। रुजो, भङ्गे। भुजो, कौटिल्ये। छुप, स्पर्शे। रुश, रिश, हिंसायाम्। लिश, गतौ। स्पृश, संस्पर्शने। विच्छ, गतौ। विश, प्रवेशने। मृश, आमर्शने। णुद, प्रेरणे। षद्लृ, विशरणगत्यवसादनेषु। शद्लृ, शातने। इत्यनुदात्ता उदात्तेतो विच्छिस्तूदात्तः ॥

अथ षडुभयतोभाषाः ॥

मिल, संगमे। मुच्लृ, मोचने। लुप्लृ, छेदने। विद्लृ, लाभे। लिप, उपदेहे। षिच, क्षरणे। इत्यनुदात्ताः स्वरितेतो मिलिस्तूदात्तः ॥

अथ त्रयः परस्मैभाषाः ॥

कृती, छेदने। खिद, परिघातने। पिश, अवयवे। इत्युदात्ता उदात्तेतः खिदिस्त्वनुदात्तः। वृत्।

इति शविकरणास्तुदादयः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ रुधादिर्गणः ॥

अथ नवोभयतोभाषाः ॥

रुधिर्, आवरणे । भिदिर्, विदारणे । छिदिर्, द्वैधीकरणे । रिचिर्, विरेचने । विचिर्, पृथग्भावे । क्षुदिर्, संपेषणे । युजिर्, योगे । उच्छृदिर्, दीप्तिदेवनयोः । उतृदिर्, हिंसानादरयोः । इत्यनुदात्ताः स्वरितेतः छृदितृदी तूदात्तौ ।

अथैकः परस्मैभाषः ।

कृती, छेदने । इत्युदात्त उदात्तेत् ।

अथैक आत्मनेभाषः ।

ञिइन्धी, दीप्तौ । उदात्तोऽनुदात्तेत्

अथ द्वावात्मनेभाषौ ।

खिद, दैन्ये । विद, विचारणे । इत्यनुदात्तावनुदात्तेतौ ।

अथ द्वादश परस्मैभाषाः ॥

शिष्लृ, विशेषणे । पिष्लृ, संचूर्णने । भंजो, आमर्दने । भुज, पालनाभ्यवहारयोः । तृह, हिंसि, हिंसायाम् । उन्दी, क्लेदने । अञ्जू, व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु । तंचू, संकोचने । ओविजी, भयचलनयोः । वृजी, वर्जने । पृची, संपर्के । इत्युदात्ता उदात्तेतः । आद्यास्त्वारस्त्वनुदात्ताः । वृत् ।

इति श्नम्विकरणा रुधादयः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथतनादिर्गणः ॥

—:॥:—

अथसप्तोभयतोभाषाः ।

तनु, विस्तारे । षणु, दाने । क्षणु, हिंसायाम् । क्षिणु, च । ऋणु, गतौ । तृणु, अदने । घृणु, दीप्तौ । इत्युदात्ताः स्वरितेतः ।

अथ द्वावात्मनेभाषौ ।

वनु, याचने । मनु, अवबोधने । इत्युदात्तावनुदात्तेतौ ।

अथैक उभयतोभाषः ।

डुकृञ्, करणे । अनुदात्तः । वृत्

इत्युविकरणास्तनादयः ॥

अथ क्र्यादिर्गणः ।

—:॥:—

अथ सप्तोभयतोभाषाः ।

डुक्रीञ्, द्रव्यविनिमये । प्रीञ्, तर्पणे कान्तौ च । श्रीञ्, पाके । मीञ्, हिंसायाम् । षिञ्, बन्धने । स्कुञ्, आप्रवणे । युञ्, बन्धने । इत्यनुदात्ताः ।

अथ नवोभयतोभाषाः ।

कूञ्, शब्दे । द्रूञ्, हिंसायाम् । पूञ्, पवने । मूञ्, बन्धने । लूञ्, छेदने । स्तृञ्, आच्छादने । कृञ्, हिंसायाम् । वृञ्, वरणे । धूञ्, कम्पने । इत्युदात्ताः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ आदयो गॄप्रत्यन्तास्त्रयोदश परस्मैभाषाः ।

शॄ, हिंसायाम् । पॄ, पालनपूरणयोः । वॄ, वरणे । दॄ, हिंसायाम् भॄ, भरणे । भॄ, भर्त्सने । जॄ, वयोहानौ । झॄ, इत्येके । दॄ, विदारणे । धॄ, इत्यन्ये । नॄ, नये । मॄ, हिंसायाम् । कॄ, गतौ । गॄ, शब्दे । इति आदय उदात्ताः ।

अथ दश परस्मैभाषाः ।

ज्या, वयोहानौ । व्री, वरणे । री, गतिरेषणयोः । ली, श्लेषणे । व्ली, वरणे । प्ली, गतौ । वृत् । इति ल्वादयः ॥

व्रीष्, हिंसायाम् । भ्री, भये । ज्ञा, अवबोधने । बन्ध, बन्धने । इति ज्यादयोऽनुदात्ताः ।

अथैक आत्मनेभाषः ।

वृङ्, संभक्तौ । इत्युदात्तः । इति ल्वादयः ।

अथ पञ्चविंशतिः परस्मैभाषाः ।

श्रन्थ, विमोचनप्रतिहर्षयोः । मन्थ, विलोडने । श्रन्थ, ग्रन्थ, संदर्भे । कुन्थ, संश्लेषणे । मृद, क्षोदे । मृड, च । मृड, सुखेच । गुध, रोषे । कुष, निष्कर्षे । क्षुभ, सञ्चलने । णभ, तुभ, हिंसायाम् । क्लिशू, विबाधने । अश, भोजने । उध्रस, उञ्छे । इष, आभीक्ष्ण्ये । विष, विप्रयोगे । प्रुष, प्लुष, स्नेहनसेचनपूरणेषु । पुष, पुष्टौ । मुष, स्तेये । खच, भूतप्रादुर्भावे । खव, इत्येके । हिठ, च । इति श्रन्थादय उदात्ता उदात्तेतः ।

अथैक उभयतोभाषः ।

ग्रह, उपादाने । इत्युदात्तः स्वरितेत् । वृत् ।

इति श्नाविकरणाः क्र्यादयः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चुरादिर्गणः

---*---

अथ चुरादयस्तुप्यन्तास्त्रिषष्ट्युत्तरमेकशतमुदात्तेतः परस्मैभाषाः ॥

चुर, स्तेये। चिति, स्मृत्याम्। यत्रि, सङ्कोचने। स्फुडि, परिहासे। लक्ष, दर्शनाङ्कनयोः। कुद्रि, अनृतभाषणे। लड, उपसेवायाम्। मिदि, स्नेहने। ओलडि, उत्क्षेपणे। जल, अपवारणे लजेत्येके। पीड, अवगाहने। नट, अवस्यन्दने। श्रथ, प्रयत्ने प्रस्थान इत्येके। बध, संयमने। ऊर्ज्ज, बलप्राणनयोः। पक्ष, परिग्रहे। वर्ण, वर्णने, वर्ण, चूर्ण, प्रेरणे। प्रथ, प्रख्याने। पृथ, प्रक्षेपे। पथ, इत्येके। षम्ब, संबन्धने। शम्ब, च। साम्ब, इत्येके। भक्ष, अदने। कुट्ट, छेदनभर्त्सनयोः। पूरण इत्येके। युट्ट, चुट्ट, अल्पीभावे। अट्ट, पुट्ट, अनादरे। लुण्ठ, स्तेये। शठ, श्वठ, असंस्कारगत्योः। श्वठि, इत्येके। पिज, वुजि, तुजि, पिजि, लजि, लुजि, हिंसाबलादाननिकेतनेषु। पिस, गतौ। षान्त्व, सामप्रयोगे। श्वल्क, वल्क, परिभाषणे। ष्णिह, स्नेहने। स्फिट, इत्येके। स्मिट, अनादरे। ष्मिङ्, अनादर इत्येके। श्लिष, श्लेषणे। पथि, गतौ। पिच्छ, कुट्टने। छदि, संवरणे। श्रण, दाने। तड, आघाते। खड, खडि, कडि, भेदने। कुडि, रक्षणे। गुडि, वेष्टने च। कुठि, गुठि, चेत्यन्ये। खुडि, खंडने। वटि, विभाजने। वडि, इत्येके। चडि, कोपे। मडि, भूषायाम्। हर्षे च। भडि, कल्याणे। छर्द, वमने। पुस्त, बुस्त, आदरानादरयोः। चुद, संचोदने। नक्क, धक्क, नाशने। चक्क, चुक्क, व्यथने। क्षल, शौचकर्मणि। तल, प्रतिष्ठायाम्। तुल, उन्माने। दुल, उत्क्षेपे। पुल, महत्त्वे। चुल, समुच्छ्राये। मूल, रोहणे। वुल, निमज्जने। कल, विल, क्षेपे। बिल, भेदने। तिल, स्नेहने।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल, भृतौ । पाल, रक्षणे । तूष, हिंसायाम् । शुल्ब, माने । शूर्प, च । चुट, छेदने । मुट, संचूर्णने । पिश, नाशने । पडि, पसि, नाशने । व्रज, मार्गसंस्कारगत्योः । शुल्क, अतिस्पर्शने । चपि, गत्याम् । क्षपि, क्षान्त्याम् । क्षजि, कृच्छ्रजीवने । स्वर्त, गत्याम् । श्वभ्र, च । ज्ञप, मिच्च । क्षप, मारणतोषणनिशामनेषु । यम, च परिवेषणे । चह, परिकल्कने । बल, प्राणने । चिञ्, चयने । रह, त्यागे । घट्ट, चलने । मुस्त, संघाते । खट्ट, संवरणे । खट्ट, स्फिट्ट, चुबि, हिंसायाम् । पूल, सङ्घाते । पूर्ण, इत्येके । पुंस, अभिवर्द्धने । टकि, बन्धने । धूस, कान्तिकरणे । कीट, वरणे । चूर्ण, संकोचने । पूज, पूजायाम् । अर्क, स्तवने । शुठ, आलस्ये । शुठि, शोषणे । जुड, प्रेरणे । गज, मार्ज, शब्दार्थौ । मर्च, च । धृ, प्रस्रवणे । पचि, विस्तारवचने । तिज, निशाने । कृत, संशब्दे । ऊर्द्ध, वर्द्ध, छेदनपूरणयोः । कुबि, आच्छादने । कुभि, इत्येके । लुबि, तुबि, अदर्शने । अर्दन इत्यन्ये । ह्लप, व्यक्तायां वाचि । क्लप, इत्येके । चुठि, छेदने । इल, प्रेरणे । म्लेच्छ, म्लेच्छने । म्लेच्छ, भ्रक्ष, छेदने । म्लेच्छ, अव्यक्तायां वाचि । ब्रूस, बर्ह, हिंसायाम् । गर्द्द, गर्ज, शब्दे । गर्ध, अभिकांक्षायाम् । गुर्द, पूर्वनिकेतने । जसि, रक्षणे । ईड, स्तुतौ । जसु, हिंसायाम् । पिडि, संघाते । रुष, रोषे । रुड, इत्येके । डिप, क्षेपे । ष्टुप, समुच्छ्राये ॥ इत्युदात्ता उदात्तेतः ॥

अथ आकुस्माद् द्विचत्वारिंशदात्मनेभाषाः ॥

चित, संचेतने । दशि, दंशदर्शनयोः । दसि, दस, इत्येके । डप, डिप, संघाते । तत्रि, कुटुम्बधारणे । मत्रि, गुप्तपरिभाषणे । स्पश, ग्रहणसंश्लेषणयोः । तर्ज, भर्त्स, तर्ज्जने । वस्त, गन्ध, अर्दने । विष्क, हिंसायाम् । हिष्क, इत्येके । निष्क, परिमाणे । लल, ईप्सायाम् । कूण, संकोचने । तूण, पूरणे । भ्रूण, आशाविशंकयोः । शठ, श्लाघायाम् । यक्ष, पूजायाम् । स्यम, वितर्के ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गूरु, उद्यमने। शम, लक्ष, आलोचने। कुट,छेदने। कुठ, इत्येके। कुत्स, अवक्षेपणे। गल, स्रवणे। भल, आभण्डने। कूट, आप्रदाने। अवसादन इत्येके। कुट्ट, प्रतापने। वञ्चु, प्रलंभने। वृष, शक्तिबन्धने। मद, तृप्तियोगे। दिवु, परिकूजने। गृ, विज्ञाने। विद, चेतनाख्याननिवासेषु। मन, स्तम्भे। यु, जुगुप्सायाम्। कुस्म, नाम्नोवा॥ इत्युदात्ता अनुदात्तेतः।

अथोभयतोभाषाः।

चर्च, अध्ययने। बुक्क,भाषणे। शब्द,उपसर्गादाविष्कारे च। कण, निमीलने। जभि, नाशने। षूद, क्षरणे। जसु, ताडने। पश, बन्धने। अम, रोगे। चट, स्फुट, भेदने। घट, संघाते। हन्त्यर्थाश्च। दिवु, मर्दने। अर्ज, प्रतियत्ने। घुषिर्, विशब्दने। आङः क्रन्द सातत्ये। लस, शिल्पयोगे। तसि, भूष, अलङ्कारे। अर्ह, पूजायाम्। ज्ञा, नियोगे। भज, विश्राणने। शृधु, प्रसहने। यत, निकारोपस्कारयोः। कल, गल, आस्वादने। रघ, इत्येके। रगेत्यन्ये अञ्चु, विशेषणे। लिगि,चित्रीकरणे। मुद,संसर्गे। त्रस, धारणग्रहणवारणेषु। उध्रस, उञ्छे। मुच, प्रमोचनमोदनयोः। वस, स्नेहच्छेदापहरणेषु। चर, संशये। च्यु, हसनसहनयोः। भुवो, अवकल्कने। मिश्रीकरण इत्येके। चिन्तन इत्यन्ये। कृपेश्च।

आस्वदः सकर्मकात्।

ग्रस,ग्रहणे। पुष,धारणे। दल,विदारणे। पट,पुट,लुट,तुजि, मिजि,पिजि,भजि,लघि, त्रसि,पिसि,कुसि,दसि, कुशि,घट,घटि, बृहि,बर्ह,बल्ह,गुप,धूप, विच्छ,चीव,पुथ, लोकृ, लोचृ, णद,कुप, तर्क,वृतु,वृधु,भाषार्थाः। रुट, लजि अजि,दसि,भृसि, रुषि,शीक, नट, पुटि, जिवि, रघि, लघि,अहि,रहि,महि, च। लडि, तड, नल,च। पूरी, आप्यायने। रुज, हिंसायाम्। ष्वद, आस्वादने॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधृषाद्वा

युज, पृच, संयमने । अर्च, पूजायाम् । षह, मर्षणे । ईर, क्षये । ली, द्रवीकरणे । वृजी, वर्जने । वृञ्, आवरणे । जॄ, वयोहानौ । ज्रिच, रिच, वियोजनसंपर्चनयोः । शिष, असर्वोपयोगे । तप, दाहे । तृप, तृप्तौ । छृदी, सन्दीपने । चृप, छृप, दृप, सन्दीपने । दृभी, भये । दृभ, सन्दर्भे । छद, संवरणे । श्रथ, मोक्षणे । मी, गतौ । ग्रन्थ, बन्धने । क्रथ, हिंसायाम् । स्वरितेदित्येके । शीक, आमर्षणे । चीक, च । अर्द, हिंसायाम् । अर्ह, पूजायाम् । आङः षद, पद्यर्थे । शुन्ध, शौचकर्मणि । छद, अपवारणे । स्वरितेत् । जुष, परितर्कणे । धूञ्, कंपने । प्रीञ्, तर्पणे । श्रन्थ, ग्रन्थ, सन्दर्भे । आप्लृ, लंभने । तनु, श्रद्धोपकरणयोः । उपसर्गाच्चादैर्घ्ये । वद, सन्देशवचने । स्वरितेत् । वच, परिभाषणे । मान, पूजायाम् । भू, प्राप्तावात्मनेपदी । गर्ह, विनिन्दने । मार्ग, अन्वेषणे । कठि, शोके । मृजू, शौचालंकरणयोः । मृष, तितिक्षायाम् । धृष, प्रसहने । इत्याधृषीयाः ॥

अथादन्ताः ।

कथ, वाक्यप्रबन्धे । वर, ईप्सायाम् । गण, संख्याने । शठ, श्वठ, सम्यगवभाषणे । पट, वट, ग्रन्थे । रह, त्यागे । रञ्ज, गतौ । स्तन, गदी, देवशब्दे । पत, गतौ । पष, अनुपसर्गात् । स्वर, आक्षेपे । रच, प्रतियत्ने । कल, गतौ संख्याने च । चह, परिकल्कने । मह, पूजायाम् । सार, कृप, श्रथ, दौर्बल्ये । स्पृह, ईप्सायाम् । भाम, क्रोधे । सूच, पैशुन्ये । खेट, भक्षणे । खोट, इत्येके । क्षोट, क्षेपे । गोम, उपलेपने । कुमार, क्रीडायाम् । शील, उपधारणे । साम, सान्त्वप्रयोगे । वेल, कालोपदेशे । काल, च । पल्पूल, लवनपवनयोः । वात, सुखसेवनयोः । गवेष, मार्गणे । वास, उपसेवायाम् । निवास, आच्छादने । भाज, पृथक्कर्मणि । समाज, प्रीतिदर्शनयोः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊन, परिहाणे । ध्वन, शब्दे । कूट, परितापे । कूट, परिदाह इत्येके । सङ्केत, ग्राम, कुण, गुण, चामन्त्रणे । कूण, संकोचने । स्तेन, चौर्ये ॥

आगर्वीदात्मनेभाषाः ।

पद, गतौ । गृह, ग्रहणे । मृग, अन्वेषणे । कुह, विस्मापने । शूर, वीर, विक्रान्तौ स्थूल, परिबृंहणे । अर्थ, उपयाच्ञायाम् । सत्र, सन्तानक्रियायाम् । गर्व, माने । इत्यागर्वीयाः । सूत्र, वेष्टने । विमोचन, इत्यन्ये । मूत्र, प्रस्रवणे । रूक्ष, पारुष्ये । पार, तीर, कर्मसमाप्तौ । पुट, संसर्गे । धेक, दर्शनइत्येके । कत्र, शैथिल्ये । कर्त्त इत्यप्येके ।

प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च ॥ तत्करोतितदाचष्टे ॥ तेनातिक्रामति ॥ धातुरूपं च ॥ कर्तृकरणाद्धात्वर्थे ॥

वष्कदर्शने । चित्र, चित्रीकरणे । कदाचिद्दर्शने । अंस, समाघाते । वट, विभाजने । वटि, लजि इत्येके । लज, प्रकाशे । मिश्र, सम्पर्के । सङ्ग्राम, युद्धे । अयमनुदात्तेत् । स्तोम, श्लाघायाम् । छिद्र, कर्णभेदने । अन्ध, दृष्ट्युपघाते । उपसंहार इत्यन्ये । दण्ड, दण्डनिपातने । अङ्क, पदे लक्षणे च । अङ्ग, च । सुख, दुःख, तत्क्रियायाम् । रस, आस्वादनस्नेहनयोः । व्यय, वित्तसमुत्सर्गे । रूप, रूपक्रियायाम् । छेद, द्वैधीकरणे । छद, अपवारणे । लाभ, प्रेरणे । व्रण, गात्रविचूर्णने । वर्ण, वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु ।

बहुलमेतन्निदर्शनम् । णिङङ्गान्निरसने । श्वेताश्वाश्वतरगालोडिताह्वरकाणामश्वतरेतकलोपश्च । पुच्छादिषु धात्वर्थ इत्येव सिद्धम् ॥

इति चुरादयः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ कंड्वादयः

—ः॥ः—

कण्डूञ्, गात्रविघर्षणे। मन्तु, अपराधे। वल्गु, पूजामाधुर्य्ययोः। असु, उपतापे। असू, असूञ् इत्येके। लेट्, लोट्, धौर्त्ये पूर्वभावे स्वप्ने च। लेला, दीप्तौ। इरस् इरज् इरञ् ईर्ष्यायाम्। उषस्, प्रभातभावे। वेद, धौर्त्ये स्वप्ने च। मेधा, आशुग्रहणे। कुषुभ, क्षये। मगध, परिवेष्टने। नीचदास्य इत्यन्ये। तन्तस्, पम्पस्, दुःखे। सुख, दुःख, तत्क्रियायाम्। सपर, पूजायाम्। अरर, आराकर्मणि। भिषज्, चिकित्सायाम्। भिष्णज्, उपसेवायाम्। इषुध, शरधारणे। चरण, वरण, गतौ। चुरण, चौर्य्ये। तुरण, त्वरायाम्। भुरण, धारणपोषणयोः। गद्गद, वाक्स्खलने। एला, केला, खेला, विलासे। वेला, शेला, इले, त्यन्ये। खेला, स्खलने च। अदन्तोयमित्येके। लिट, अल्पकुत्सनयोः। लाट्, जीवने। हृणीङ्, रोषणे लज्जायाञ्च। महीङ्, पूजायाम्। रेखा, श्लाघासादनयोः। दुवस्, परिताप परिचरणयोः। तिरस्, अन्तर्द्धौ। अगद, नीरोगत्वे। उरस्, बलार्थः। तरण, गतौ। पयस्, प्रसृतौ। संभूयस्, प्रभूतभावे। अम्बर, संवर, संभरणे। आकृतिगणोऽयम्॥

इति धातुपाठे कंड्वादिगणः समाप्तः॥

इति श्रीयुतदयानन्दसरस्वतीस्वामिनाऽकारादिक्रमसूचीपत्रेण सह धातुपाठो रचयितः।

पौषवदि १० गुरुवारे
संवत् १९ ३९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचीपत्रम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
ईह ..	भ्वा० आ० से०	१०	४
उक्ष ..	,, प० ,,	१०	१२
उख ..	,, ,, ,,	४	१९
उखि ..	,, ,, ,,	४	१९
उङ् ..	,, आ० अ०	१४	६
उच ..	दि० प० से०	२१	१७
उच्छि ..	भ्वा० ,, ,,	५	१७
उच्छि ..	तु० ,, ,,	२३	११
उच्छी ..	भ्वा० ,, ,,	५	१७
उच्छी ..	तु० ,, ,,	२३	११
उच्छृदिर् ..	रु० उ० ,,	२६	५
उज्झ ..	तु० प० से०	२३	१४
उठ ..	भ्वा० ,, ,,	७	१
उतृदिर् ..	रु० उ० ,,	२६	५
उन्दी ..	रु० प० ,,	२६	१५
उब्ज ..	तु० ,, ,,	२३	१४
उभ ..	,, ,, ,,	२३	१८
उम्भ ..	,, ,, ,,	२३	१८
उर्दँ ..	भ्वा० आ० ,,	३	१०
उर्वी ..	,, प० ,,	९	१०
उरस् ..	कं० ,, ,,	३४	१५
उष ..	भ्वा० ,, ,,	१०	२०
उषस् ..	कं० ,, ,,	३४	५
उहिर् ..	भ्वा० ,, ,,	११	३
ऊठ ..	भ्वा० प० ,,	७	१
ऊन ..	चु० उ० ,,	३३	१
ऊयी ..	भ्वा० आ० ,,	८	१४
ऊर्ज्ज ..	चु० प० ,,	२९	८

ऊकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
ऊर्णुञ् ..	अ० उ० ,,	१७	२
ऊर्दँ ..	चु० प० से०	३०	१३
ऊष ..	भ्वा० ,, ,,	१०	१८
ऊह ..	,, आ० ,,	१०	७
ऋ ..	भ्वा० आ० अ०	१४	१
ऋ ..	जु० प० ,,	१९	५
ऋच ..	तु० ,, ,,	२४	१३
ऋच्छ ..	,, ,, ,,	२३	१२
ऋज ..	भ्वा० आ० ,,	५	६
ऋञ्जि ..	,, ,, ,,	५	६
ऋणु ..	त० उ० ,,	२७	४
ऋधु ..	दि० प० ,,	२१	२२
ऋधु ..	स्वा० ,, ,,	२२	१६
ऋफ ..	तु० ,, ,,	२३	१७
ऋम्फ ..	,, ,, ,,	२३	१७
ऋषी ..	,, ,, प०	२३	६
ॠ ..	क्र्या० आ० ,,	८	२४
एजृ ..	भ्वा० आ० ,,	५	७
एजृ ..	,, प० ,,	५	२१
एठ ..	,, आ० ,,	६	६
एध ..	,, ,, ,,	३	५
एला ..	कं० प० ,,	३४	१०
एषृ ..	भ्वा० आ० ,,	१०	१
ओखृ ..	,, प० ,,	४	१८
ओणृ ..	भ्वा० ,, ,,	८	७
ककि ..	भ्वा० आ० ,,	४	१०
ककि ..	,, ,, ,,	४	११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ककारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	ककारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
कख ..	भ्वा० प० से०	४	१८	कर्ज्ज ..	भ्वा० प० से०	५	१९
कखे ..	,, ,, ,,	११	२०	कर्त्त ..	चु० उ० ,,	२३	८
कगे ..	,, ,, ,,	११	२१	कर्द ..	भ्वा प० ,,	४	१
कच ..	,, आ० ,,	५	४	कर्व ..	,, ,, ,,	९	१३
कचि ..	,, ,, ,,	५	४	कर्व ..	,, ,, ,,	७	२२
कटी ..	,, प० ,,	६	२१	कल ..	भ्वा० आ० ,,	८	१८
कटे ..	,, ,, ,,	६	१५	कल्ल ..	चु० ,, ,,	२९	२४
कठ ..	,, ,, ,,	६	२४	कल ..	,, उ० ,,	३१	१४
कठि ..	,, आ० ,,	६	५	कल्ल ..	,, ,, ,,	३२	२०
कठि ..	चु० उ० ,,	३२	१३	कल्ल ..	भ्वा० आ० ,,	८	१९
कड ..	भ्वा० प० ,,	७	६	कश्र ..	,, ,, ,,	७	१२
कड ..	तु० ,, ,,	२४	१०	कश्य ..	अ० अ० ,,	१६	१२
कड्ड ..	भ्वा० ,, ,,	७	४	कष ..	भ्वा० प० ,,	१०	१८
कडि ..	,, आ० ,,	६	१०	कस ..	,, ,, ,,	१३	१
कडि ..	,, प० ,,	७	६	कस ..	अ० आ० ,,	१६	१२
कडि ..	चु० ,, ,,	२९	१८	कसि ..	,, ,, ,,	१६	११
कण ..	भ्वा० ,, ,,	११	२३	काञ्चि ..	भ्वा० प० ,,	१०	१५
कण ..	,, ,, ,,	८	६	काचि ..	,, आ० ,,	५	४
कण ..	चु० उ० ,,	३१	९	काल ..	चु० उ० ,,	३२	२४
कण्डूञ् ..	कं० प० ,,	३४	२	काश ..	भ्वा० आ० ,,	१०	२
कत्थ ..	भ्वा० आ० ,,	३	१४	काशृ ..	,, ,, ,,	१०	७
कत्र ..	चु० उ० ,,	३३	८	काशृ ..	दि० आ० ,,	२०	१५
कथ ..	चु० उ० ,,	३२	१७	कि ..	जु० प० अ०	१९	७
कद ..	भ्वा० आ० ,,	११	१६	किट ..	भ्वा० ,, से०	६	१७
कदि ..	,, प० ,,	४	४	किट ..	भ्वा० ,, ,,	६	२१
कदि ..	,, आ० ,,	११	१५	कित ..	,, ,, ,,	१५	२
कनी ..	,, प० ,,	८	८	किल ..	तु० ,, ,,	२४	३
कपि ..	,, आ० ,,	७	११	कीट ..	चु० ,, ,,	३०	९
कमु ..	,, आ० ,,	८	२	कील ..	भ्वा० ,, ,,	८	२६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ककारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
कु ..	अ० प० अ०	१७	४
कुक ..	भ्वा० आ० से	४	११
कुङ् ..	,, ,, अ०	१४	५
कुङ् ..	तु० ,, ,,	२४	२०
कुच ..	भ्वा० प० से	५	१०
कुच ..	,, ,, ,,	१२	२५
कुच ..	तु० ,, ,,	२४	७
कुञ्च ..	भ्वा० ,, ,,	५	१०
कुजु ..	,, ,, ,,	५	१२
कुट ..	तु० ,, ,,	२४	६
कुट्ट ..	चु० ,, ,,	२९	११
कुट्ट ..	,, आ० ,,	३१	२
कुठ ..	,, ,, ,,	३१	१
कुठि ..	भ्वा० प० ,,	७	२
कुठि ..	चु० ,, ,,	२९	१८
कुड ..	तु० ,, ,,	२४	१०
कुडि ..	भ्वा० आ० ,,	६	७
कुडि ..	,, प० ,,	६	२१
कुडि ..	चु० ,, ,,	२९	१८
कुण ..	तु० प० ,,	२३	२१
कुण ..	चु० उ० ,,	३२	२
कुत्स ..	,, आ० ,,	३१	२
कुथ ..	दि० प० ,,	१९	१७
कुन्थ ..	क्र्या० ,, ,,	२८	१४
कुथि ..	भ्वा० प० ,,	३	१८
कुद्रि ..	चु० ,, ,,	२९	५
कुप ..	दि० ,, ,,	२१	१९
कुप ..	चु० उ० ,,	३१	२२
कुबि ..	भ्वा० प० ,,	७	२३
कुबि ..	चु० प० से	३०	१३
कुभि ..	,, ,, ,,	३०	१३
कुमार ..	चु० उ० ,,	३२	२३
कुर ..	तु० प० ,,	२३	२३
कुर ..	,, ,, ,,	२४	८
कुर्द ..	भ्वा० आ० ,,	३	११
कुल ..	,, प० ,,	१२	१६
कुशि ..	चु० उ० ,,	३१	२१
कुष ..	क्र्या० प० ,,	२८	१५
कुषुभ ..	कं० ,, ,,	३४	५
कुस ..	दि० ,, ,,	२१	१५
कुसि ..	चु० उ० ,,	३१	२१
कुस्म ..	,, आ० ,,	३१	६
कुह ..	चु० उ० ,,	३२	४
कूङ् ..	तु० आ० ,,	२४	२०
कूज ..	भ्वा० प० ,,	५	१८
कूट ..	चु० आ० ,,	३१	२
कूट ..	,, उ० ,,	३२	१
कूण ..	चु० आ० ,,	३०	२५
कूण ..	,, उ० ,,	३२	२
कूल ..	भ्वा० प० ,,	९	१
कृञ् ..	स्वा० उ० अ०	२२	४
कृञ् ..	त० उ० ,,	२७	८
कृड ..	तु० प० से०	२४	१०
कृती ..	,, ,, ,,	२५	१८
कृती ..	रु० ,, ,,	२६	८
कृप ..	चु० उ० ,,	३२	२१
कॄ ..	भ्वा० आ० ,,	११	१०
कृपेय ..	चु० उ० ,,	३१	१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ककारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	ककारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
कृवि ..	भ्वा० प० से	९	१५	क्लमु ..	दि० प० से०	२१	११
कृश ..	दि० ,, ,,	२१	१७	क्वण ..	भ्वा० ,, ,,	८	६
कृष ..	भ्वा० ,, अ०	१४	२३	क्वथे ..	,, ,, ,,	१२	१७
कृष ..	तु० उ० अ०	२३	४	क्षजि ..	,, आ० ,,	११	१४
कॄ ..	,, प० से०	२५	३	क्षजि ..	चु० प० ,,	३०	४
कॄञ् ..	क्रया० उ० से०	२७	१७	क्षणु ..	त० उ० ,,	२७	३
कॄत ..	चु० प० ,,	३०	१२	क्षपिः ..	भ्वा० प० ,,	१२	४
केपृ ..	भ्वा० आ० ,,	७	१०	क्षपि ..	चु० ,, ,,	३०	४
केवृ ..	भ्वा० ,, ,,	८	२०	क्षमूष् ..	भ्वा० आ० ,,	८	३
केला ..	कं० प० ,,	३४	१०	क्षर ..	,, प० ,,	१२	१८
केलृ ..	भ्वा० ,, ,,	९	४	क्षल ..	चु० ,, ,,	२९	२२
कै ..	,, ,, ,,	१३	२३	क्ष्मायी ..	भ्वा० प० ,,	८	१५
क्नथ ..	,, ,, ,,	११	२४	क्लिदि ..	,, आ० ,,	३	९
क्नसु ..	,, ,, ,,	१२	५	क्लिदि ..	,, प० ,,	४	५
क्नसु ..	दि० ,, ,,	१९	१६	क्लिदू ..	दि० ,, ,,	२१	२१
क्मर ..	भ्वा० ,, ,,	९	८	क्लिश ..	,, आ० ,,	२०	१५
क्रथ ..	,, ,, ,,	११	२४	क्लिशू ..	क्रया० प० ,,	२८	१६
क्रथ ..	चु० उ० ,,	३२	७	क्षि ..	भ्वा० ,, अ०	५	२२
क्रद ..	भ्वा० आ० ,,	११	१६	क्षि ..	स्वा० ,, अ०	२२	१७
क्रदि ..	,, प० ,,	४	४	क्षि ..	तु० ,, अ०	२५	२
क्रदि ..	,, आ० ,,	११	१५	क्षिणु ..	त० उ० से०	२७	३
क्रन्द ..	चु० उ० ,,	३१	११	क्षिप ..	दि० प० अ०	१९	१८
क्रप ..	भ्वा० आ० ,,	११	१५	क्षिप ..	तु० उ० ,,	२३	४
क्रमु ..	,, प० ,,	८	११	क्ष्विदा ..	भ्वा० आ० से०	११	६
क्लथ ..	,, ,, ,,	११	२४	क्ष्विदा ..	दि० प० ,,	२१	२१
क्लद ..	,, आ० ,,	११	१६	क्षिवु ..	भ्वा० ,, ,,	९	१०
क्लदि ..	भ्वा० प० ,,	४	४	क्रौञ्च् ..	क्रया० उ० ,,	२७	१२
क्लदि ..	,, आ० ,,	११	१५	क्रीडृ ..	भ्वा० प० ,,	७	४
क्लप ..	चु० प० ,,	३०	१४	क्लीब ..	,, आ० ,,	७	१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खकारादयः		गणादयः	पृ०	पं०	गकारादयः		गणादयः	पृ०	पं०
खे	..	भ्वा० प० अ०	१३	२२	गल	..	चु० आ० से	३१	२
खोट	..	चु० उ० से०	३२	२२	गल	..	,, उ० ,,	३१	१४
खोर्ऋ	..	भ्वा० प० ,,	९	७	गल्ह	..	भ्वा० आ० ,,	१०	५
खोलृ	..	,, ,, ,,	९	७	गल्भ	..	,, ,, ,,	७	१५
ख्या	..	अ० ,, अ०	१७	१२	गवेष	..	चु० उ० ,,	३२	२५
खुङ्	..	भ्वा० आ० अ०	१४	६	गा	..	जु० प० अ०	१९	८
गज	..	,, प० से०	५	२४	गाङ्	..	भ्वा० आ० अ०	१४	५
गज	..	चु० प० ,,	३०	११	गाधृ	..	,, ,, से०	३	५
गजि	..	भ्वा० ,, ,,	५	२४	गाहू	..	,, ,, ,,	१०	८
गड	..	,, ,, ,,	११	१९	गु	..	तु० प० अ०	२४	१८
गडि	..	,, ,, ,,	४	३	गुङ्	..	भ्वा० आ० ,,	१४	५
गडि	..	,, ,, ,,	७	७	गुङ्	..	,, ,, ,,	१४	६
गण	..	चु० उ० ,,	३२	१७	गुज	..	,, प० से०	५	१३
गद	..	भ्वा० प० ,,	३	२०	गुज	..	तु० ,, ,,	२४	७
गद्गद	..	कं० ,, ,,	३४	१०	गुजि	..	भ्वा० ,, ,,	५	१३
गदी	..	चु० उ ,,	३२	१९	गुठि	..	चु० ,, ,,	२९	१८
गन्ध	..	,, आ० ,,	३०	२३	गुड	..	तु० ,, ,,	२४	७
गम्लृ	..	भ्वा० प० अ०	१४	२१	गुडि	..	चु० ,, ,,	२९	१८
गर्ज	..	,, ,, से०	५	१९	गुण	..	,, उ० ,,	३३	२
गर्ज	..	चु० ,, ,,	३०	१७	गुद	..	भ्वा० आ० ,,	३	११
गर्द	..	भ्वा० ,, ,,	४	१	गुध	..	दि० प० ,,	१९	१८
गर्द	..	चु० ,, ,,	३०	१७	गुध	..	क्र्या० ,, ,,	२८	१५
गर्ध	..	,, ,, ,,	३०	१७	गुप	..	भ्वा० आ० ,,	१४	१५
गर्ब	..	भ्वा० ,, ,,	७	२२	गुप	..	दि० प० ,,	२१	१८
गर्व	..	,, ,, ,,	९	१३	गुप	..	चु० उ० ,,	३१	२[illegible]
गर्व	..	चु० उ० ,,	३३	६	गुपू	..	भ्वा० प० ,,	७	१८
गर्ह	..	भ्वा० आ० ,,	१०	५	गुफ	..	तु० ,, ,,	२३	१७
गर्ह	..	चु० उ० ,,	३२	१३	गुम्फ	..	,, ,, ,,	२३	१७
गल	..	भ्वा० प० से०	९	६	गुरी	..	तु० आ० ,,	२४	१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गकारादयः		गणादयः	पृ०	पं०	घकारादयः		गणादयः	पृ०	पं०
गुर्दँ	..	भ्वा० आ० से०	३	११	ग्लह	..	भ्वा० आ० से०	१०	५
गुर्द	..	चु० प० „	३०	१७	ग्लह्न	..	„ „ „	१०	८
गुर्वी	..	भ्वा० „ „	९	११	ग्राम	..	चु० उ० „	३२	२
गुड़	..	„ उ० „	१३	१५	ग्ला	..	भ्वा० प० अ०	१२	६
गूर	..	चु० आ० „	३१	१	ग्लुचु	..	„ „ से०	५	१२
गूरी	..	दि० „ „	२०	१३	ग्लुचु	..	„ „ „	५	१२
गृ	..	भ्वा० „ अ०	१४	१	ग्लुञ्चु	..	„ „ „	५	१३
गृज	..	„ प० से०	५	२४	ग्लेपृ	..	„ आ० „	७	१०
गृजि	..	„ „ „	५	२४	ग्लेट	..	„ „ „	८	१९
गृधु	..	दि० प० „	२१	२२	ग्लेषृ	..	„ „ „	९	२६
गृह	..	चु० उ० „	३३	४	ग्लै	..	„ प० अ०	१३	२१
गृह्न	..	भ्वा० आ० „	१०	८	घघ	..	„ प० से०	४	२३
गॄ	..	तु० प० „	२५	३	घट	..	„ आ० „	११	१३
गॄ	..	क्र्या० प० „	२८	४	घट	..	चु० उ० „	३१	१०
गॄ	..	चु० आ० „	३१	४	घट	..	„ „ „	३१	२१
गेपृ	..	भ्वा० „ „	७	१०	घटि	..	„ „ „	३१	२१
गेट	..	„ „ „	८	१९	घट्ट	..	भ्वा० आ० „	६	४
गेषृ	..	„ „ „	९	२९	घट्ट	..	चु० प० „	३०	७
गै	..	„ प० अ०	१३	२३	घस्लृ	..	भ्वा० „ अ०	१०	२३
गोम	..	चु० उ० से०	३२	२३	घिणि	..	„ आ० से०	८	२
गोष्ट	..	भ्वा० आ० „	६	४	घुङ्	..	„ „ अ०	१४	६
ग्रन्थ	..	क्र्या० प० „	२८	१३	घुट	..	„ „ से०	११	७
ग्रन्थ	..	चु० उ० „	३२	१०	घुट	..	तु० प० „	२४	११
ग्रन्थ	..	„ „ „	३२	७	घुण	..	भ्वा० आ० „	८	२
ग्रथि	..	भ्वा० आ० „	३	१४	घुण	..	तु० प० „	२३	२२
ग्रस	..	चु० उ० „	३१	२०	घुणि	..	भ्वा० आ० „	८	२
ग्रसु	..	भ्वा० आ० „	१०	३	घुर	..	तु० प० „	२४	१
ग्रह	..	क्र्या० उ० „	२८	२१	घुषि	..	भ्वा० आ० „	१०	८
ग्लसु	..	भ्वा० आ० „	१०	४	घुषिर्	..	„ प० „	१०	११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	चकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
घुषिर् ..	चु० उ० से०	३१	११	चमु ..	स्वा० प० से०	२२	१७
घूर्ण ..	भ्वा० आ० ,,	८	२	चय ..	भ्वा० आ० ,,	८	१३
घूर्ण ..	तु० प० ,,	२३	२२	चर ..	,, प० ,,	९	९
घूरी ..	दि० आ ,,	२०	१३	चर ..	चु० उ० ,,	३१	१७
घृ ..	भ्वा० ,, अ०	१४	२	चर्करीतंच	अ० प० ,,	१८	३
घृ ..	जु० प० से०	१९	५	चर्च ..	भ्वा० प० ,,	१०	२४
घृणि ..	भ्वा० आ ,,	८	२	चर्च ..	चु० ,, ,,	३१	८
घृणु ..	त० उ० ,,	२७	४	चर्च ..	तु० ,, ,,	२३	१३
घृषु ..	भ्वा० प० ,,	१०	२२	चरण ..	कं० ,, ,,	३४	९
घ्रा ..	,, ,, अ०	१३	२५	चर्ब ..	भ्वा० ,, ,,	७	२२
ङुङ् ..	,, आ० ,,	१४	६	चर्व ..	,, ,, ,,	९	१२
चक ..	,, आ० से०	४	११	चल ..	,, ,, ,,	१२	१४
चक ..	,, प० ,,	११	२०	चल ..	तु० ,, ,,	२४	४
चकास्ट ..	अ० ,, से०	१७	२१	चल ..	चु० ,, ,,	३०	१
चक्षिङ् ..	,, आ० ,,	१६	८	चलिः ..	भ्वा० ,, ,,	१२	२
चक्क ..	चु० प० से०	२९	२१	चष ..	,, उ० ,,	१३	१३
चञ्चु ..	भ्वा० ,, ,,	५	११	चह ..	,, प० ,,	१०	२६
चट ..	चु० उ० ,,	३१	१०	चह ..	चु० प० ,,	३०	६
चटे ..	भ्वा० प० ,,	६	१५	चह ..	,, उ० ,,	३२	२०
चडि ..	,, आ० ,,	६	९	चायृ ..	भ्वा० उ० ,,	१३	१०
चडि ..	चु० प० ,,	२९	१९	चिञ् ..	चु० प० ,,	३०	६
चण ..	भ्वा० ,, ,,	११	२३	चिञ् ..	स्वा० उ० अ०	२२	४
चते ..	,, ,, ,,	१३	५	चिट ..	भ्वा० प० से०	६	२०
चदि ..	,, प० ,,	४	३	चित ..	चु० आ० ,,	३०	२१
चदे ..	,, उ० ,,	१३	५	चिति ..	,, ,, ,,	२९	४
चन ..	,, प० ,,	११	२४	चिती ..	भ्वा० प० ,,	३	१७
चप ..	,, ,, ,,	७	१९	चित्र ..	चु० उ० ,,	३३	१३
चपि ..	चु० प० से०	३०	३	चिरि ..	स्वा० प० ,,	२२	१७
चमु ..	भ्वा० ,, ,,	८	१०	चिल ..	तु० ,, ,,	२४	२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	छकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
चिल्ल ..	भ्वा० प० से०	९	३	चेलृ ..	भ्वा० प० से०	९	४
चीक ..	चु० उ० ,,	२२	८	चेष्ट ..	,, आ० से०	६	३
चीव ..	,, ,, ,,	२१	२२	च्यु ..	चु० उ० ,,	२१	१७
चीवृ ..	भ्वा० प० ,,	१३	१०	च्युङ् ..	भ्वा० आ० ,,	१४	७
चीभृ ..	,, आ० ,,	७	१२	च्युतिर् ..	,, प० ,,	३	१७
चुक्क ..	चु० प० ,,	२९	२१	छद ..	चु० उ० ,,	२२	६
चुच्य ..	भ्वा० ,, ,,	८	२३	छद ..	,, ,, ,,	२२	९
चुट ..	चु० ,, ,,	३०	२	छद ..	,, ,, ,,	२३	१
चुट ..	तु० ,, ,,	२४	९	छदिः ..	भ्वा० प० ,,	१२	३
चुट्ट ..	चु० ,, ,,	२९	११	छदि ..	चु० ,, ,,	२९	१७
चुठि ..	,, ,, ,,	३०	१५	छमु ..	भ्वा० ,, ,,	८	१०
चुड ..	तु० ,, ,,	२४	१३	छर्द ..	चु० ,, ,,	२९	२०
चुडि ..	भ्वा० ,, ,,	६	२२	छष ..	भ्वा० उ० ,,	१३	१३
चुड्ड ..	,, ,, ,,	७	३	छिदिर् ..	रु० ,, अ०	२६	३
चुद ..	चु० ,, ,,	२९	२१	छिद्र ..	चु० ,, से०	३३	१६
चुप ..	भ्वा० ,, ,,	७	२०	छुट ..	तु० प० ,,	२४	९
चुबि ..	,, ,, ,,	७	२३	छुड ..	,, ,, ,,	२४	१२
चुर ..	चु० ,, ,,	२९	४	छुप ..	,, ,, अ०	२५	९
चुरण ..	कं० ,, ,,	३४	९	छृदिर् ..	रु० उ० से०	२६	५
चुवि ..	चु० ,, ,,	३०	८	छृदी ..	चु० ,, ,,	३२	५
चुल ..	,, ,, ,,	२९	२३	छृप ..	,, ,, ,,	३२	५
चुल्ल ..	भ्वा० ,, ,,	९	२	छेद ..	,, ,, ,,	३३	१९
चूरी ..	दि० आ० ,,	२०	१४	छो ..	दि० प० अ०	२०	९
चूर्ण ..	चु० प० ,,	२९	९	जक्ष ..	अ० ,, से०	१७	२०
चूर्ण ..	,, ,, ,,	३०	१०	जज ..	भ्वा० ,, ,,	५	२२
चूष ..	भ्वा० प० ,,	१०	१६	जजि ..	,, ,, ,,	५	२३
चृती ..	तु० ,, ,,	२२	१८	जट ..	,, ,, ,,	६	१७
चृप ..	चु० ,, ,,	३२	५	जन ..	जु० ,, ,,	१९	८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	जकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
जनी ..	भ्वा० प० से०	१२	५	जुड ..	चु० ,, से०	३०	११
जनी ..	दि० आ० ,,	२०	१२	जुट ..	भ्वा० आ० ,,	३	१३
जप ..	भ्वा० प० ,,	७	१८	जुन ..	तु० प० ,,	२३	१९
जप ..	,, ,, ,,	७	१९	जुष ..	चु० उ० ,,	३२	१०
जभि ..	चु० उ० ,,	३१	९	जुषी ..	तु० आ० ,,	२३	८
जभी ..	भ्वा० आ० ,,	७	१४	जूरी ..	दि० ,, ,,	२०	१३
जमु ..	,, प० ,,	८	११	जूष ..	भ्वा० प० ,,	१०	१७
जर्ज ..	,, ,, ,,	१०	२३	जृभि ..	,, आ० ,,	७	१४
जर्ज ..	तु० ,, ,,	२३	१३	जॄ ..	क्र्या० प० ,,	२८	३
जल ..	चु० ,, ,,	२९	६	जॄ ..	चु० उ० ,,	३२	३
जल ..	भ्वा० ,, ,,	१२	१४	जॄष ..	भ्वा० प० ,,	१२	५
जल्प ..	,, ,, ,,	७	१८	जॄष ..	दि० ,, ,,	१९	२०
जष ..	,, ,, ,,	१०	१९	जेहृ ..	भ्वा० आ० ,,	१०	६
जसि ..	चु० ,, ,,	३०	१७	जेषृ ..	,, ,, ,,	१०	१
जसु ..	,, ,, ,,	३०	१८	जै ..	,, प० अ०	१३	२३
जसु ..	,, उ० ,,	३१	९	ज्ञप ..	चु० ,, से०	३०	५
जसु ..	दि० प० ,,	२१	१२	ज्वर ..	भ्वा० ,, ,,	११	१९
जागृ ..	अ० ,, ,,	१७	२०	ज्वल ..	,, ,, ,,	१२	५
जि ..	भ्वा० ,, अ०	९	९	ज्वल ..	,, ,, ,,	१२	१
जि ..	,, आ० ,,	१४	३	ज्वल ..	,, ,, ,,	१२	१३
जिवि ..	भ्वा० प० ,,	९	१५	ज्ञा ..	,, ,, अ०	१२	२
जिरि ..	स्वा० ,, ,,	२२	१७	ज्ञा ..	क्र्या० ,, ,,	२८	८
जिषु ..	भ्वा० ,, ,,	१०	२०	ज्ञा ..	चु० उ० ,,	३१	१३
जीव ..	,, ,, ,,	९	९	ज्या ..	क्र्या० प० ,,	२८	६
जुङ् ..	,, ,, अ०	१४	७	ज्रि ..	भ्वा० आ० ,,	१४	३
जुगि ..	,, ,, से०	४	२३	ज्रि ..	चु० उ० से०	३२	४
जुड् ..	तु० ,, ,,	२३	१९	ज्यु ..	भ्वा० प० अ०	१४	७
जुड ..	तु० प० से०	२४	९	झट ..	,, प० से०	६	१७
				झमु ..	,, ,, ,,	८	११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तकारादय:	गणादय:	पृ०	पं०	तकारादय:	गणादय:	पृ०	पं०
तुफ ..	भ्वा० प० से०	७	२०	तृप ..	तु० प० से०	२३	१५
तुम्फ ..	,, ,, ,,	७	२१	तृफ ..	,, ,, ,,	२३	१६
तुफ ..	तु० ,, ,,	२३	१६	तृम्फ ..	,, ,, ,,	२३	१६
तुम्फ ..	,, ,, ,,	२३	१६	तृष ..	दि० ,, ,,	२१	१८
तुवि ..	चु० ,, ,,	३०	१४	तृह ..	रु० ,, ,,	२६	१५
तुवि ..	भ्वा० ,, ,,	७	२३	तृहू ..	तु० ,, ,,	२४	२
तुर्वी ..	,, ,, ,,	९	११	तृंहू ..	,, ,, ,,	२४	२
तुभ ..	,, आ० ,,	११	८	तॄ ..	भ्वा० ,, ,,	१४	१३
तुभ ..	क्र्या० प० ,,	२८	१५	तेज ..	,, ,, ,,	५	२०
तुभ ..	दि० ,, ,,	२१	२०	तेपृ ..	,, आ० ,,	७	९
तुर ..	जु० ,, ,,	१९	८	तेपृ ..	,, ,, ,,	७	९
तुल ..	चु० ,, ,,	२९	२२	तेवृ ..	,, ,, ,,	८	१९
तुष ..	दि० ,, अ	२१	३	तौकृ ..	,, ,, ,,	४	१२
तुस ..	भ्वा० ,, से०	१०	२२	त्यज ..	,, प० अ०	१४	२२
तुरण ..	कं० ,, ,,	३४	९	त्रकि ..	,, आ० से०	४	११
तुहिर् ..	भ्वा० ,, ,,	११	२	त्रख ..	,, प० ,,	४	२२
तूड् ..	,, ,, ,,	७	५	त्रखि ..	,, ,, ,,	४	२२
तूण ..	चु० आ० ,,	३०	२५	त्रदि ..	,, ,, ,,	४	४
तूरी ..	दि० ,, ,,	२०	१२	त्रपि: ..	,, ,, ,,	१२	४
तूल ..	भ्वा० प० ,,	९	१	त्रपूष् ..	,, आ० ,,	७	११
तूष ..	,, ,, ,,	१०	१६	त्रस ..	चु० उ० ,,	३१	१५
तृक्ष ..	भ्वा० ,, ,,	१०	१२	त्रसि ..	,, ,, ,,	३१	२१
तृणु ..	त० उ० ,,	२७	४	त्रसी ..	दि० प० ,,	१९	१७
तृदिर् ..	रु० ,, ,,	२६	५	त्वचू ..	भ्वा० ,, ,,	१०	११
तृप ..	दि० प० ,,	२१	६	त्वगि ..	,, ,, ,,	४	२१
तृप :	स्वा० ,, ,,	२२	१६	त्वगि ..	,, ,, ,,	४	२४
तृप :	चु० उ० से०	३२	५	त्वच ..	तु० ,, ,,	२३	१३
तृप ..	तु० प० ,,	२३	१५	त्वञ्चु ..	भ्वा० ,, ,,	५	१२
				त्वरा ..	,, आ० ,,	११	१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	दकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
त्वरा ..	कं० प० से०	२४	६	दसि ..	चु० आ० से	३०	२१
त्सर ..	भ्वा० प० „	६	८	दसि ..	„ उ० „	३१	२३
त्विष ..	„ उ० „	१५	७	दसि ..	„ „ „	३१	२१
त्रुट ..	चु० आ० „	३१	१	दसु ..	दि० प० „	२१	१३
त्रुप ..	भ्वा० प० „	७	२०	दह ..	भ्वा० „ अ०	१४	२३
त्रुम्प ..	„ „ „	७	२०	दाञ् ..	जु० उ० „	१८	२०
त्रुफ ..	„ „ „	७	२१	दाण् ..	भ्वा० प० अ०	१३	२६
त्रुम्फ ..	„ „ „	७	२१	दान ..	„ उ० से०	१५	४
त्रैङ् ..	भ्वा० आ० अ०	१४	६	दाप् ..	अ० प० अ०	१७	१२
थिष्ट ..	„ „ से०	७	६	दाशृ ..	स्वा० „ से०	२२	१८
थुड ..	तु० प० „	२४	११	दाशृ ..	भ्वा० उ० „	१३	११
थुर्वी ..	भ्वा० „ „	६	११	दासृ ..	„ „ „	१३	१४
थेपृ ..	„ आ० „	७	६	दिवु ..	चु० आ० „	३१	४
दक्ष ..	„ „ „	११	१४	दिवि ..	भ्वा० प० „	६	१४
दच ..	„ „ „	६	२४	दिवु ..	दि० „ „	१६	१३
दव ..	स्वा० प० अ०	२२	१७	दिवु ..	चु० उ० „	३१	११
दण्ड ..	चु० उ० से०	३३	१६	दिश ..	तु० „ अ०	२३	३
दद ..	भ्वा० आ० „	३	१०	दिह ..	अ० „ „	१६	५
दध ..	„ „ „	३	७	दीक्ष ..	भ्वा० आ० से०	६	२४
दम्भु ..	स्वा० प० „	२२	१६	दीङ् ..	दि० आ० अ०	२०	४
दमु ..	दि० „ „	२१	१०	दीधीङ् ..	अ० „ से०	१७	२४
दय ..	भ्वा० आ० „	८	१४	दीपी ..	दि० „ „	२०	१२
दरिद्रा ..	अ० प० „	१७	२१	दु ..	भ्वा० प० अ०	१४	३
दल ..	चु० उ० „	३१	२०	दु ..	स्वा० „ „	२२	८
दल ..	भ्वा० प० „	६	६	दुःख ..	चु० उ० से०	३३	१७
दलि: :	„ „ „	१२	४	दुःख ..	कं० प० „	३४	७
दंश ..	भ्वा० प० अ०	१४	२३	दुर्वी ..	भ्वा० „ „	६	११
दंशि ..	चु० आ० से०	३०	२१	दुल ..	चु० „ „	२९	२३
दस ..	„ „ „	३०	२१	दुवस् ..	कं० „ „	३४	१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
पॄ ..	भ्वा० प० से०	१९	१७
नॄ ..	क्र्या० ,, ,,	२८	४
पक्ष ..	भ्वा० ,, ,,	१०	१४
पक्ष ..	चु० ,, ,,	२९	८
पच ..	भ्वा० उ० अ०	१५	६
पचि ..	,, आ० से०	५	५
पचि ..	चु० प० ,,	३०	१२
पट ..	भ्वा० ,, ,,	६	१५
पट ..	चु० उ० ,,	३१	२०
पट ..	,, ,, ,,	३२	१८
पठ ..	भ्वा० प० ,,	६	२३
पडि ..	,, आ० ,,	६	९
पडि ..	चु० प० ,,	३०	२
पण ..	भ्वा० आ० ,,	८	२
पत ..	चु० उ० ,,	३२	१९
पतॢ ..	भ्वा० प० ,,	१२	१७
पथ ..	चु० ,, ,,	२९	१०
पथि ..	,, ,, ,,	२९	१६
पथे ..	भ्वा० ,, ,,	१२	१७
पद ..	दि० आ० अ०	२०	२२
पद ..	चु० उ० से०	३३	४
पन ..	भ्वा० आ० ,,	८	३
पम्पस् ..	कं० प० ,,	३४	६
पय ..	भ्वा० आ० ,,	८	१२
पयस् ..	कं० प० ,,	३४	१५
पर्द ..	भ्वा० आ० ,,	३	१२
पर्प ..	,, प० ,,	७	२१
पर्ब ..	,, ,, ,,	७	२१
पर्व ..	,, ,, ,,	९	१२
पल ..	भ्वा० प० से०	१२	१५
पल्पूल ..	चु० उ० ,,	३२	२४
पश ..	,, ,, ,,	३१	९
पष ..	,, ,, ,,	३२	१९
पसि ..	,, प० ,,	३०	२
पा ..	भ्वा० ,, अ०	१३	२४
पा ..	अ० ,, ,,	१७	११
पार ..	चु० उ० से०	३३	७
पाल ..	,, प० ,,	३०	१
पि ..	तु० ,, अ०	२५	२
पिच्छ ..	चु० ,, से०	२९	१६
पिज ..	,, ,, ,,	२९	१३
पिजि ..	अ० आ० ,,	१६	१३
पिजि ..	चु० प० ,,	२९	१३
पिजि ..	,, उ० ,,	३१	२१
पिट ..	भ्वा० प० ,,	६	१८
पिठ ..	,, ,, ,,	७	१
पिडि ..	,, आ० ,,	६	८
पिडि ..	चु० प० ,,	३०	१८
पिवि ..	भ्वा० ,, ,,	९	१४
पिश ..	तु० ,, ,,	२५	१८
पिश ..	चु० ,, ,,	३०	२
पिषॢ ..	रु० ,, ,,	२६	१४
पिस ..	चु० ,, ,,	२९	१४
पिसि ..	,, उ० ,,	३१	२१
पिसृ ..	भ्वा० प० ,,	१०	२४
पीङ् ..	दि० आ० अ०	२०	६
पीड ..	चु० प० से०	२९	७
पीव ..	भ्वा० ,, ,,	९	१०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	बकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
प्यायी ..	भ्वा० आ० से०	८	१६	बद ..	भ्वा० प० से०	३	२०
प्रा ..	अ० प० अ०	१७	१२	बध ..	„ आ० „	१४	१५
प्सा ..	„ „ „	१७	११	बन्ध ..	क्र्या० „ „	२८	८
प्लिह ..	भ्वा० आ० से०	१०	६	बभ्र ..	भ्वा० „ „	९	८
प्रीङ् ..	दि० आ० अ०	२०	७	बर्ब ..	„ „ „	७	२२
प्रीञ् ..	क्र्या० उ० अ०	२७	१२	बर्ह ..	„ आ० „	१०	५
प्रीञ् ..	चु० उ० से०	३२	१०	बल ..	„ „ „	१२	१५
प्ली ..	क्र्या० प० अ०	२८	७	बल ..	„ प० „	८	१७
प्रुङ् ..	भ्वा० आ० „	१४	७	बल ..	चु० „ „	३०	६
प्रुष ..	क्र्या० प० से०	२८	१७	बल्भ ..	भ्वा० आ० „	७	१५
प्रुषु ..	भ्वा० „ „	१०	२१	बल्ल ..	„ „ „	८	१७
प्लुङ् ..	„ आ० अ०	१४	७	बल्ह ..	„ „ „	१०	५
प्लुष ..	दि० प० से०	१९	१६	बसु ..	दि० प० „	२१	१२
प्लुषु ..	भ्वा० „ „	१०	२१	बष ..	भ्वा० „ „	१०	१९
प्रेषृ ..	„ आ० „	१०	१	बहि ..	„ आ० „	१०	४
प्येङ् ..	„ „ „	१४	९	बाधृ ..	„ „ „	२	६
प्रोथृ ..	„ उ० „	१२	६	बाहृ ..	„ „ „	१०	६
फक्क ..	„ प० „	४	१७	बिट ..	„ प० „	६	२०
फण ..	„ „ „	१२	७	बिदि ..	„ „ „	४	२
फल ..	„ „ „	९	२	बिल ..	तु० „ „	२४	५
फला ..	„ „ „	८	२५	बिषु ..	भ्वा० „ „	१०	२०
फुल्ल ..	„ „ „	९	३	बिस ..	दि० „ „	२१	१५
फेलृ ..	„ „ „	९	५	बुक्क ..	भ्वा० „ „	४	१७
बज ..	„ „ „	५	२५	बुक्क ..	चु० „ „	३१	८
बट ..	„ आ० „	११	१९	बुगि ..	भ्वा० „ „	४	२३
बटि ..	„ „ „	६	५	बुध ..	„ „ „	१२	२५
बठ ..	„ प० „	६	२४	बुध ..	दि० आ० अ०	२०	२२
बडि ..	„ आ० „	६	७	बुधिर् ..	भ्वा० उ० से०	१२	८
बण ..	„ प० „	८	८	बुन्दिर् ..	„ „ „	१२	८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	अकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
बुस ..	दि० प० से०	२१	१४	भल्ल ..	भ्वा० आ० से०	८	१८
बुस ..	” ” ”	२१	१५	भष ..	” प० ”	१०	१९
बुस्त ..	चु० ” ”	२९	२०	भस ..	जु० ” ”	१९	७
बृषु ..	भ्वा० ” ”	१०	२१	भा ..	अ० ” अ०	१७	१०
बृह ..	” ” ”	११	२	भाज ..	चु० उ० से०	३२	२६
बृहि ..	” ” ”	११	२	भाम ..	भ्वा० आ० ”	८	३
बृहि ..	चु० उ० ”	३१	२२	भाम ..	चु० उ० ”	३२	२२
बृहिर् ..	भ्वा० प० ”	११	२	भाष ..	भ्वा० आ० ”	९	२५
बृह् :	तु० ” ”	२४	१	भासृ ..	” ” ”	१०	२
बेहृ ..	भ्वा० आ० ”	१०	६	भिक्ष ..	” ” ”	९	२३
ब्रज ..	” प० ”	५	२५	भिदि ..	” प० ”	४	२
ब्रण ..	” ” ”	८	६	भिदिर् ..	रु० उ० अ०	२६	३
ब्रीड ..	दि० ” ”	१७	१९	भिषज् ..	कं० प० से०	३४	८
ब्रूञ् ..	अ० ” ”	१७	७	भिष्णज् ..	” ” ”	३४	८
भक्ष ..	चु० ” ”	२९	१०	भी ..	जु० ” अ०	१८	९
भज ..	भ्वा० उ० ”	१५	६	भुज ..	रु० ” से०	२६	१४
भज ..	चु० ” ”	३१	१३	भुरण ..	कं० प० ”	३४	१०
भजि ..	” ” ”	३१	२१	भुवः ..	चु० उ० ”	३१	१७
भञ्जो ..	रु० प० ”	२६	१४	भू ..	भ्वा० प० ”	३	३
भट ..	भ्वा० ” ”	६	१८	भू ..	चु० उ० ”	३२	१३
भट ..	” ” ”	११	१९	भूष ..	भ्वा० प० ”	१०	१८
भडि ..	” आ० ”	६	७	भूष ..	चु० उ० ”	३१	१२
भडि ..	चु० प० ”	२९	२०	भृजी ..	भ्वा० आ० ”	५	७
भण ..	भ्वा० ” ”	८	६	भृञ् ..	भ्वा० उ० अ०	१३	१७
भदि ..	भ्वा० आ० ”	३	८	भृञ् ..	जु० ” ”	१८	१४
भर्त्सं :	चु० ” ”	३०	२३	भृड ..	तु० प० से०	२४	१३
भर्वं ..	भ्वा० प० ”	९	१२	भृशु ..	दि० ” ”	२१	१७
भल्ल ..	भ्वा० आ० ”	८	१८	भृसि ..	चु० उ० ”	३१	२३
भल ..	चु० आ० ”	३१	२				

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	मकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
भॄ ..	क्र्या० प० से०	२८	२	मघि ..	भ्वा० आ० से०	४	१४
भॄ ..	„ „ „	२८	३	मघि ..	„ „ „	४	१५
भेषृ ..	भ्वा० उ० „	१३	११	मघि ..	„ प० „	४	२४
भ्यस ..	„ आ० „	१०	३	मचि ..	„ आ० „	५	५
भ्रण ..	„ प० „	८	६	मठ ..	„ प० „	६	२४
भ्रमु ..	भ्वा० „ „	१२	१८	मठि ..	„ आ० „	६	५
भ्रमु ..	दि० „ „	२१	११	मडि ..	„ „ „	६	७
भ्रशु ..	„ आ० „	११	९	मडि ..	„ प० „	६	२१
भ्रंशु ..	भ्वा० „ „	११	९	मडि ..	चु० „ „	२९	१९
भ्रंशु ..	दि० प० „	२१	१७	मण ..	भ्वा० „ „	८	६
भ्रंसु ..	भ्वा० आ० „	११	८	मत्रि ..	चु० „ „	३०	२२
भ्रस्ज ..	तु० उ० अ०	२३	३	मथि ..	भ्वा० „ „	३	१८
भ्रक्ष ..	भ्वा० „ से	१३	१४	मथे ..	„ „ „	१२	१७
भ्लक्ष ..	„ „ „	१३	१४	मद ..	चु० आ० „	३१	४
भ्राजृ ..	„ आ० „	५	७	मदि ..	भ्वा० „ „	३	८
भ्राजृ ..	„ „ „	१२	१०	मदी ..	„ प० „	१२	३
भ्राशृ ..	„ „ „	१२	१०	मदी ..	दि० „ „	२१	१२
भ्लाशृ ..	„ „ „	१२	१०	मन ..	„ आ० अ०	२०	२३
भ्री ..	क्र्या० प० अ०	२८	८	मन ..	चु० „ से०	३१	५
भ्रूण ..	चु० आ० से०	३०	२५	मनु ..	त० „ „	२७	६
भ्रेजृ ..	भ्वा० „ „	५	७	मन्तु ..	कं० प० „	३४	२
भ्रेषृ ..	„ उ० „	१३	१२	मन्थ ..	भ्वा० „ „	३	१८
भ्लेषृ ..	„ „ „	१३	१२	मन्थ ..	क्र्या० „ „	२८	१३
मक्कि ..	„ आ० „	४	११	मव्य ..	भ्वा० „ „	८	२४
मकि ..	„ „ „	४	१२	मभ्र ..	„ „ „	९	८
मख ..	„ प० „	४	२०	मय ..	„ आ० „	८	१३
मखि ..	„ „ „	४	२१	मर्च ..	चु० प० „	३०	११
मगध ..	कं० „ „	३४	६	मर्व ..	भ्वा० „ „	७	२२
मगि ..	भ्वा० प० „	४	२२	मर्व ..	„ „ „	९	१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	मकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
मल ..	भ्वा० आ० से०	८	१७	मिदृ ..	भ्वा० उ० से०	१३	६
मल्ल ..	,, ,, ,,	८	१७	मिधृ ..	,, ,, ,,	१३	७
मव ..	,, प० ,,	९	१६	मिवि ..	,, प० ,,	९	१४
मश ..	,, ,, ,,	१०	२५	मिल ..	तु० ,, ,,	२४	६
मष ..	,, ,, ,,	१०	१९	मिल ..	,, उ० ,,	२५	१४
मसी ..	दि० ,, ,,	२१	१६	मिश ..	भ्वा० प० ,,	१०	१५
मस्क ..	भ्वा० आ० ,,	४	१३	मिश्र ..	चु० उ० ,,	३३	१४
मस्जो ..	तु० प० अ०	२५	८	मिष ..	तु० प० से०	२४	३
मह ..	भ्वा० ,, से०	११	१	मिषु ..	भ्वा० ,, ,,	१०	२०
मह ..	चु० उ० ,,	३२	२०	मिह ..	,, ,, अ०	१४	२३
महि ..	भ्वा० आ० ,,	१०	४	मी ..	चु० उ० से०	३२	७
महि ..	चु० उ० ,,	३१	२४	मीङ् ..	दि० आ० अ०	२०	४
महीङ् ..	कं० आ० ,,	३४	१३	मीञ् ..	क्र्या० उ० अ०	२७	१३
मा ..	अ० प० अ०	१७	१३	मीमृ ..	भ्वा० प० से०	८	१०
माचि ..	भ्वा० प० से०	१०	१५	मील ..	,, ,, ,,	८	२५
माङ् ..	जु० आ० अ०	१८	१६	मीव ..	,, ,, ,,	९	१०
माङ् ..	दि० ,, ,,	२०	६	मुच ..	,, आ० ,,	५	५
मान ..	भ्वा० ,, से	१४	१५	मुच ..	चु० उ० ,,	३१	१६
मान ..	चु० उ० ,,	३२	१२	मुचि ..	भ्वा० आ० ,,	५	५
मार्ग ..	,, ,, ,,	३२	१३	मुच्लृ ..	तु० उ० अ०	२५	१४
मार्ज ..	,, प० ,,	३०	११	मुज ..	भ्वा० प० से०	५	२४
माहृ ..	भ्वा० उ० ,,	१३	१५	मुजि ..	,, ,, ,,	५	२४
मिच्छ ..	तु० प० ,,	२३	१२	मुट ..	,, ,, ,,	६	२१
मिजि ..	चु० उ० ,,	३१	२१	मुट ..	तु० ,, ,,	२४	८
मिञ् ..	स्वा० ,, अ०	२२	३	मुट ..	चु० ,, ,,	३०	३
मिथृ ..	भ्वा० ,, से०	१३	७	मुठि ..	भ्वा० आ० ,,	६	५
मिदा ..	,, आ० ,,	११	५	मुडि ..	,, ,, ,,	६	८
मिदा ..	दि० प० ,,	२१	२१	मुड ..	,, प० ,,	६	२२
मिदि ..	चु० ,, ,,	२९	६	मुण ..	तु० ,, ,,	२३	२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकारादयः	गणादयः			पृ०	पं०
मुद ..	भ्वा०	आ०	से०	३	९
मुद ..	चु०	उ०	,,	३१	१५
मुर ..	तु०	प०	,,	२३	२३
मुर्च्छा ..	भ्वा०	,,	,,	५	१६
मुर्वी ..	,,	,,	,,	९	११
मुष ..	क्र्या०	,,	,,	२८	१८
मुस ..	दि०	,,	,,	२१	१६
मुस्त ..	चु०	,,	,,	३०	७
मुह ..	दि०	,,	,,	२१	७
मूङ् ..	भ्वा०	आ०	,,	१४	११
मूञ् ..	क्र्या०	उ०	,,	२७	१६
मूत्र ..	चु०	,,	,,	३२	७
मूल ..	भ्वा०	प०	,,	९	२
मूल ..	चु०	,,	,,	२९	२३
मूष ..	भ्वा०	,,	,,	१०	१६
मृक्ष ..	,,	,,	,,	१०	१३
मृग ..	चु०	आ०	,,	३३	४
मृङ् ..	तु०	,,	अ०	२४	२३
मृजू ..	चु०	,,	से०	३२	१४
मृजूष् ..	अ०	प०	अ०	१७	१५
मृड ..	तु०	,,	से०	२३	१९
मृड ..	क्र्या०	,,	,,	२८	१४
मृड ..	,,	,,	,,	२८	१४
मृण ..	तु०	,,	,,	२३	२०
मृद ..	क्र्या०	,,	,,	२८	१४
मृधु ..	भ्वा०	उ०	,,	१२	८
मृश ..	तु०	प०	अ०	२५	१०
मृष ..	भ्वा०	,,	से०	१०	२१
मृष ..	दि०	उ०	,,	२०	१८
मृष ..	चु०	उ०	से०	३२	१४
मृषु ..	भ्वा०	प०	,,	१०	२१
मॄ ..	क्र्या०	,,	,,	२८	४
मेङ् ..	भ्वा०	आ०	,,	१४	८
मेदृ ..	,,	प०	,,	६	१४
मेथृ ..	,,	उ०	,,	१२	७
मेदृ ..	,,	,,	,,	१२	६
मेधा ..	कं०	प०	,,	३४	५
मेधृ ..	भ्वा०	उ०	,,	१२	६
मेधृ ..	,,	,,	,,	१२	७
मेपृ ..	,,	आ०	,,	७	१०
मेहृ ..	,,	,,	,,	८	२०
म्रक्ष ..	,,	प०	,,	१०	१२
म्रक्ष ..	चु०	,,	,,	३०	१६
म्रच्छ ..	,,	,,	,,	३०	१५
म्रद ..	भ्वा०	आ०	,,	११	१४
म्ना ..	,,	प०	अ०	१२	२६
म्रुचु ..	,,	,,	से०	५	१२
म्रुञ्चु ..	,,	,,	,,	५	१२
म्रेडृ ..	,,	,,	,,	६	१४
म्लुचु ..	,,	,,	,,	५	१२
म्लुञ्चु ..	,,	,,	,,	५	१२
म्लेच्छ ..	,,	,,	,,	५	१४
म्लेच्छ ..	चु०	,,	,,	३०	१५
म्लेच्छ ..	,,	,,	,,	३०	१६
म्लेटृ ..	भ्वा०	,,	,,	६	१४
म्लेपृ ..	,,	आ०	,,	७	१०
म्लेहृ ..	,,	,,	,,	८	२०
म्लै ..	,,	प०	अ०	१२	२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	रेफारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
यक्ष ..	चु० आ० से०	३०	२६	रगि ..	भ्वा० प० से०	४	२२
यज ..	भ्वा० उ० अ०	१५	७	रघ ..	चु० उ० ,,	३१	१४
यत ..	चु० ,, से०	३१	१३	रघि ..	भ्वा० आ० ,,	४	१३
यती ..	भ्वा० आ० ,,	३	१३	रघि ..	चु० प० ,,	३१	२४
यभ ..	भ्वा० प० अ०	१४	२१	रङ्ग ..	,, उ० ,,	३२	१८
यम ..	भ्वा० प० ,,	१४	२१	रच ..	,, ,, ,,	३२	२०
यम ..	भ्वा० प० से०	१२	७	रञ्ज ..	दि० उ० अ०	२०	२०
यम ..	चु० ,, ,,	३०	५	रञ्ज ..	भ्वा० ,, ,,	१५	६
यसु ..	दि० ,, ,,	२१	१२	रट ..	,, प० से०	६	१५
यत्रि ..	चु० ,, ,,	२८	४	रठ ..	,, ,, ,,	६	२५
या ..	अ० ,, ,,	१७	१०	रण ..	,, ,, ,,	८	६
याचृ ..	भ्वा० उ० ,,	१३	५	रण ..	,, ,, ,,	११	२२
यु ..	अ० प० ,,	१६	१८	रणि: ..	,, ,, ,,	१२	४
यु ..	चु० आ० ,,	३१	५	रद ..	,, ,, ,,	३	२१
युगि ..	भ्वा० प० ,,	४	२४	रध ..	दि० ,, ,,	२१	५
युच्छ ..	,, ,, ,,	५	१७	रप ..	भ्वा० ,, ,,	७	१९
युज ..	दि० आ० अ०	२०	२३	रफ ..	,, ,, ,,	७	२१
युज ..	चु० उ० से०	३२	२	रफि :	,, ,, ,,	७	२१
युजिर् ..	रु० ,, अ०	२६	४	रबि ..	,, आ० ,,	७	१२
युञ् ..	क्र्या० ,, ,,	२७	१४	रवि ..	,, प० ,,	९	१५
युट ..	चु० प० से०	२९	११	रभ ..	,, आ० ,,	१४	१७
युत ..	भ्वा० आ० ,,	३	१३	रभि ..	,, ,, ,,	७	१४
युध ..	दि० ,, अ०	२०	२२	रमु ..	,, ,, अ०	१२	२१
युप ..	,, प० से०	२१	१९	रय ..	,, ,, से०	८	१४
यूष ..	भ्वा० आ० ,,	१०	१७	रस ..	,, प० ,,	१०	२२
रक्ष ..	,, प० ,,	१०	१२	रस ..	चु० उ० ,,	३३	१८
रख ..	,, ,, ,,	४	२१	रह ..	भ्वा० प० ,,	११	१
रखि ..	,, ,, ,,	४	२१	रह ..	चु० उ० ,,	३२	१८
रग ..	चु० ,, ,,	३१	१४	रह ..	चु० ,, ,,	३०	७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेफारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	रेफारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
रहि ..	भ्वा० प० से०	११	१	रुट ..	चु० उ० से०	३१	२३
रहि ..	चु० ,, ,,	३१	२४	रुटि ..	भ्वा० प० ,,	६	२२
रा ..	अ० ,, अ०	१७	१२	रुठ ..	,, ,, ,,	७	१
राखृ ..	भ्वा० ,, से०	४	१९	रुठि ..	,, ,, ,,	६	२३
राघृ ..	,, आ० ,,	४	१५	रुठि ..	,, ,, ,,	७	३
राजृ ..	,, उ० ,,	१२	९	रुड ..	चु० ,, ,,	३०	१९
राध ..	दि० प० अ०	२१	२	रुदिर् ..	अ० ,, ,,	१७	१५
राध ..	स्वा० ,, ,,	२२	१०	रुध ..	दि० आ० अ०	२०	२३
रासृ ..	भ्वा० आ० से०	१०	२	रुधिर् ..	रु० उ० ,,	२६	३
रि ..	तु० प० अ०	२५	१	रुपु ..	दि० प० से०	२१	१९
रि ..	स्वा० ,, ,,	२२	१७	रुश ..	तु० ,, अ०	२५	९
रिख ..	भ्वा० ,, से०	४	२३	रुष ..	भ्वा० ,, से०	१०	१९
रिगि ..	,, ,, ,,	४	२३	रुष ..	,, ,, ,,	१०	१७
रिच ..	चु० उ० ,,	३२	४	रुष ..	दि० ,, ,,	२१	१८
रिचिर् ..	रु० उ० अ०	२६	४	रुष ..	चु० ,, ,,	३०	१८
रिफ ..	तु० प० से०	२३	१४	रुषि ..	,, ,, ,,	३१	२३
रिवि ..	भ्वा० ,, ,,	९	१५	रुह ..	भ्वा० ,, अ०	१३	१
रिश ..	तु० ,, अ०	२५	९	रूक्ष ..	चु० उ० से०	३३	७
रिष ..	भ्वा० ,, से०	१०	१९	रूप ..	चु० ,, ,,	३२	१९
रिष ..	दि० ,, ,,	२१	१८	रेकृ ..	भ्वा० आ० ,,	४	९
रिह ..	तु० ,, ,,	२३	१५	रेखा ..	कं० प० ,,	३४	१२
री ..	क्र्या० ,, अ०	२८	६	रेटृ ..	भ्वा० उ० ,,	१२	५
रीङ् ..	दि० आ० से०	२०	५	रेपृ ..	,, आ० ,,	७	११
रु ..	अ० प० ,,	१६	१८	रेभृ ..	,, ,, ,,	७	१२
रुङ् ..	भ्वा० आ० अ०	१४	७	रेवृ ..	,, ,, ,,	८	२०
रुच ..	,, ,, से०	११	६	रेषृ ..	,, ,, ,,	१०	१
रुज ..	चु० उ० ,,	३१	२५	रै ..	भ्वा० प० अ०	१३	२२
रुजो ..	तु० प० ,,	२५	८	रोडृ :	,, ,, से०	७	५
रुट ..	भ्वा० आ० ,,	११	७	रौडृ ..	,, ,, ,,	७	५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	लकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
लुट ..	तु० प० से०	२४	१०	लोट ..	कं० प० से०	३४	३
लुट ..	चु० उ० „	३१	२०	लोड़ ..	भ्वा० „ „	७	५
लुटि ..	भ्वा० प० „	६	२३	लोष्ट ..	„ आ० „	६	४
लुठ ..	„ „ „	७	१	वञ्च ..	„ प० „	१०	१३
लुठ ..	„ आ० „	११	७	वकि ..	„ आ० „	४	१०
लुठ ..	तु० प० „	२४	१०	वकि ..	„ „ „	४	१२
लुठ ..	दि० „ „	२१	१६	वख ..	„ प० „	४	२०
लुठि ..	भ्वा० „ „	६	२३	वखि ..	„ „ „	४	२०
लुठि ..	„ „ „	७	२	वगि ..	„ „ „	४	२२
लुठि ..	„ „ „	७	३	वघि ..	„ आ० „	४	१४
लुण्ठ ..	चु० „ „	२९	१२	वच ..	अ० प० अ०	१७	१३
लुथि ..	भ्वा० „ „	३	१८	वच ..	चु० उ० से०	३२	१२
लुप ..	दि० „ „	२१	१९	वज ..	„ प० „	३०	३
लुप्लृ ..	तु० उ० अ०	२५	१४	वञ्च ..	भ्वा० „ „	५	११
लुबि ..	भ्वा० प० से०	७	२३	वञ्चु ..	चु० आ० „	३१	३
लुबि ..	चु० „ „	३०	१४	वट ..	भ्वा० प० „	६	१६
लुभ ..	दि० „ „	२१	२०	वट ..	चु० उ० „	३२	१८
लुभ ..	तु० „ „	२३	१४	वट ..	„ „ „	३३	१४
लूञ् ..	क्र्या० उ० „	२७	१७	वटि ..	„ प० „	२९	१९
लूष ..	भ्वा० प० „	१०	१७	वटि ..	„ उ० „	३३	१४
लूष ..	चु० „ „	३०	१	वडि ..	„ प० „	२९	१९
लेट ..	कं० „ „	३४	३	वण ..	भ्वा० „ „	८	६
लेपृ ..	भ्वा० आ० „	७	११	वद ..	„ „ „	१५	१६
लेला ..	कं० प० „	३४	४	वद ..	चु० उ० „	३२	१२
लोकृ ..	भ्वा० आ० „	४	८	वदि ..	भ्वा० आ० „	३	७
लोकृ ..	चु० उ० „	३१	२२	वध ..	चु० प० „	२९	८
लोचृ ..	भ्वा० आ० „	५	३	वन ..	भ्वा० „ „	८	९
लोचृ ..	चु० उ० „	३१	२२	वन ..	„ प० „	८	९
				वनु ..	„ „ „	११	२४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकारादयः		गणादयः			पृ०	पं०	अकारादयः		गणादयः			पृ०	पं०
शुठि	..	भ्वा०	प०	से०	७	२	शौटृ	..	भ्वा०	प०	से०	६	१४
शुठि	..	चु०	„	„	३०	११	श्रकि	..	„	आ०	„	४	९
शुध	..	दि०	„	अ०	२१	५	श्रगि	..	„	प०	„	४	२२
शुन्ध	..	भ्वा०	„	से०	४	५	श्रण	..	„	„	„	११	२३
शुन्ध	..	चु०	उ०	„	३२	९	श्रण	..	चु०	„	„	२७	१७
शुन	..	तु०	प०	„	२३	२२	श्रथ	..	क्र्या०	„	„	११	२४
शुभ	..	भ्वा०	आ०	„	११	७	श्रथ	:	चु०	„	„	२९	७
शुभ	..	„	प०	„	७	२४	श्रथ	..	„	उ०	„	३२	६
शुभ	..	तु०	„	„	२३	१८	श्रथ	..	„	„	„	३२	२१
शुम्भ	..	भ्वा०	„	„	७	२४	श्रथि	..	भ्वा०	आ०	„	३	१४
शुम्भ	..	तु०	„	„	२३	१८	श्रन्थ	..	क्र्या०	प०	„	२८	१३
शुल्क	..	चु०	„	„	३०	३	श्रन्थ	..	चु०	उ०	„	३२	१०
शुल्व	..	„	„	„	३०	१	श्रमु	..	दि०	प०	„	२१	१०
शुष	..	दि०	„	अ०	२१	२	श्रम्भु	..	भ्वा०	आ०	„	७	१५
शूर	..	चु०	आ०	से०	३३	५	श्लकि	..	„	„	„	४	१०
शूरी	..	दि०	„	„	२०	१४	श्लगि	..	„	प०	„	४	२२
शूर्प	..	चु०	प०	„	३०	२	श्लथ	..	„	„	„	११	२४
शूल	..	भ्वा०	„	„	९	१	श्वकि	..	„	आ०	„	४	१२
शूष	..	„	„	„	१०	१७	श्वच	..	„	„	„	५	४
शृधु	..	भ्वा०	आ०	„	११	१०	श्वचि	..	„	„	„	५	४
शृधु	..	„	उ०	„	१३	८	श्वठ	..	चु०	„	„	२९	१२
शृधु	..	चु०	„	„	३१	१३	श्वठ	..	„	उ०	„	३२	१८
शॄ	..	क्र्या०	प०	„	२८	२	श्वठि	..	„	प०	„	२९	१२
शेला	..	कं०	„	„	३४	११	श्वभ्र	..	„	„	„	३०	५
शेलृ	..	भ्वा०	„	„	९	५	श्वर्त	..	„	„	„	३०	४
शेवृ	..	„	आ०	„	८	२०	श्वल	..	भ्वा०	„	„	९	६
शै	..	„	प०	अ०	१३	२२	श्वल्क	..	चु०	„	„	२९	१४
शो	:	दि०	„	„	२०	९	श्वल्ल	..	भ्वा०	„	„	९	६
शोणृ	..	भ्वा०	„	से०	८	७	श्वस	..	अ०	„	„	१७	२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	षकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
षाध ..	भ्वा० प० अ०	२२	१०	षूद ..	चु० उ० से०	३१	९
षान्त्व ..	चु० ,, से०	२९	१४	षूर्क्ष ..	भ्वा० आ० ,,	१०	१४
षाम ..	,, उ० ,,	३२	२३	षूर्क्ष्य ..	,, प० ,,	८	२३
षाम्ब ..	,, प० ,,	२९	१०	सृ ..	,, ,, अ०	१४	१
षार ..	,, उ० ,,	३२	२१	सृ ..	जु० ,, ,,	१९	५
षिच ..	तु० ,, ,,	२५	१५	सृज ..	दि० आ० ,,	२०	२४
षिञ् ..	स्वा० ,, अ०	२२	३	सृज ..	तु० प० से०	२५	८
षिञ् ..	क्र्या० ,, ,,	२७	१२	सृप्लृ ..	भ्वा० ,, ,,	१४	२१
षिट ..	भ्वा० प० से०	६	१७	षृभु ..	,, ,, ,,	७	२३
षिधु ..	,, ,, ,,	३	१९	षृम्भु ..	,, ,, ,,	७	२४
षिधु ..	दि० ,, ,,	२१	५	सेकृ ..	,, आ० ,,	४	९
षिधू ..	भ्वा० ,, ,,	३	१९	षेलृ ..	,, प० ,,	९	५
षिभु ..	,, ,, ,,	७	२४	षेवृ ..	,, आ० ,,	८	१९
षिम्भु ..	,, ,, ,,	७	२४	षै ..	,, प० अ०	१३	२३
षिल ..	तु० ,, ,,	२४	५	षो ..	दि० ,, ,,	२०	९
षिवु ..	दि० ,, ,,	१९	१४	ष्कन्दिर् ..	भ्वा० प० ,,	१४	२०
षु ..	भ्वा० ,, अ०	१४	२	ष्कभि ..	,, आ० से०	७	१४
षु ..	अ० ,, ,,	१७	४	स्खद ..	,, ,, ,,	११	१४
षुञ् ..	स्वा० उ० ,,	२२	३	स्खल ..	,, प० ,,	९	५
सुख ..	चु० ,, से०	३३	१७	स्खलिः ..	,, ,, ,,	१२	४
सुख ..	कं० प० ,,	३४	७	ष्टक ..	,, ,, ,,	११	२०
षुर ..	तु० ,, ,,	२३	२२	ष्टगे ..	,, ,, ,,	११	२१
षुह ..	दि० ,, ,,	१९	२०	ष्टन ..	,, ,, ,,	८	९
षू ..	तु० ,, ,,	२५	३	ष्टभि ..	,, आ० ,,	७	१४
षूङ् ..	अ० आ० ,,	१६	१६	ष्टम ..	,, प० ,,	१२	१३
षूङ् ..	दि० ,, ,,	२०	२	ष्ठल ..	,, ,, ,,	१२	१४
सूच ..	चु० उ० ,,	३२	२२	स्तन ..	चु० उ० ,,	३२	१९
सूत्र ..	,, ,, ,,	३३	६	स्नसु ..	दि० प० ,,	१९	१६
षूद ..	भ्वा० आ० ,,	३	११	स्पर्द्ध ..	भ्वा० आ० ,,	३	५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	हकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
स्थूल ..	चु० उ० से०	२३	५	हय ..	भ्वा० प० से०	८	२३
स्फूर्जा ..	भ्वा० प० ,,	५	२१	हर्य ..	,, ,, ,,	८	२४
स्तृक्ष ..	,, ,, ,,	१०	१२	हल ..	,, ,, ,,	१२	१५
स्तृह् ..	तु० ,, ,,	२४	२	हसे ..	,, ,, ,,	१०	२४
स्तृञ् ..	स्वा० उ० अ०	२२	४	हाक् ..	जु० ,, अ०	१८	१८
स्पृ ..	,, प० ,,	२२	८	हाङ् ..	,, आ० ,,	१८	१६
स्पृश ..	तु० ,, ,,	२५	९	हि ..	स्वा० प० ,,	२२	८
स्पृश ..	चु० आ० से०	३०	२२	हिक्क ..	भ्वा० उ० से०	१३	४
स्पृह ..	,, उ० ,,	३२	२१	हिट ..	,, प० ,,	६	२०
स्मृ ..	भ्वा० प० अ०	१२	१	हिठ ..	क्र्या० ,, ,,	२८	१८
स्मृ ..	,, ,, ,,	१४	१	हिडि ..	भ्वा० आ० ,,	६	६
स्मृ ..	स्वा० ,, ,,	२२	९	हिल ..	तु० प० ,,	२४	५
स्तृ ..	स्वा० ,, ,,	१३	२६	हिवि ..	भ्वा० ,, ,,	९	१४
स्तॄ ..	क्र्या० ,, से०	२८	२	हिष्क ..	चु० उ० ,,	३०	२४
स्तॄञ् ..	,, उ० ,,	२७	१७	हिसि ..	रु० प० ,,	२६	१५
स्टेपृ ..	भ्वा० आ० ,,	७	९	हु ..	जु० ,, अ०	१९	९
स्तेन ..	चु० उ० ,,	३२	२	हुडि ..	भ्वा० आ० से०	६	६
स्तेक ..	भ्वा० आ० ,,	४	९	हुडि ..	,, ,, ,,	६	८
स्त्यै ..	,, प० अ०	१२	२२	हुडृ ..	,, प० ,,	७	५
ष्टै ..	,, ,, ,,	१२	२२	ह्नुङ् ..	अ० आ० अ०	१८	५
ष्ट्यै ..	,, ,, ,,	१३	२२	हुर्च्छा ..	भ्वा० प० से०	५	१६
स्त्यौ ..	,, ,, ,,	१३	२४	हुल ..	,, ,, ,,	१२	१७
स्तोम ..	चु० उ० से०	३२	१५	हूडृ ..	,, ,, ,,	७	५
हट ..	भ्वा० प० ,,	६	१९	होडृ ..	,, ,, ,,	६	१०
हठ ..	,, ,, ,,	६	२५	हृ ..	,, ,, अ०	१४	१
हद् ..	,, आ० अ०	१४	१७	ह्री ..	जु० ,, ,,	१९	५
हन ..	अ० प० ,,	१६	३	हृञ् ..	भ्वा० उ० ,,	१३	१८
हम्म ..	भ्वा० ,, से०	८	१०	हृणीङ् ..	कं० आ० से०	३४	१३
				हृष ..	दि० प० ,,	२१	१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०	हकारादयः	गणादयः	पृ०	पं०
हृषु ..	भ्वा० प० से०	१०	२२	ह्लगी ..	भ्वा० प० से०	११	२१
हेठ ..	,, आ० ,,	६	६	ह्लस ..	,, ,, ,,	१०	२३
हेड ..	,, प० ,,	११	१९	ह्वल ..	,, ,, ,,	१२	१
हेड़ृ ..	,, आ० ,,	६	१०	ह्मल ..	,, ,, ,,	१२	६
हेषृ ..	,, ,, ,,	७	११	ह्राद ..	,, आ० ,,	३	१२
हेषृ ..	,, ,, ,,	१०	१	ह्लादी ..	,, ,, ,,	३	१२
होड़ृ ..	,, प० ,,	७	५	ह्री ..	जु० प० अ०	१८	८
ह्मल ..	,, ,, ,,	१२	१	ह्रीच्छ ..	भ्वा० ,, से	५	१५
ह्मल ..	,, ,, ,,	१२	६	ह्नुङ् ..	अ० आ० अ०	१८	५
ह्लप ..	चु० ,, ,,	३०	१४	ह्वृ ..	भ्वा०प० से०	१३	२६
ह्रगी ..	भ्वा० ,, ,,	११	२१	ह्रेषृ ..	,, आ० ,,	१०	१
ह्रस ..	,, ,, ,,	१०	२२	ह्वेञ् ..	,, उ० ,,	१५	१३

इति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्धिपत्रम् ॥

पृ०	पं०	अशुद्धम्	शुद्धम्
१	१३	अनिठ्	अनिट्
५	५	धारर्ण	धारणो
५	१०	कुच	कुच्च
५	२२	भर्ज्ञने	भर्ज्जने
६	१२	द्वाशीतिः	द्वाशीतिः
८	६	वण	वण
८	२२	०	मव्यबन्धमी
८	२३	यर्याप्ति	पर्याप्ति
१०	१२	ःटच्च	ष्टृच्च
११	२४	वनच	चनच
१६	८	दात्तेतो	दात्तो
१८	९	हृ	ह्रौ
१८	१६	०	अनुदात्तौ
१९	७	भर्त्स सन	भर्त्सन
२०	६	पौङू	पौङ्
२१	१३	०	व्युषविभागे
२१	१४	व्युषविभागे	०
२२	१८	द	दृ
२३	२०	मृड	मृण

पृ०	पं०	अशुद्धम्	शुद्धम्
२४	१०	श्लेषे	श्लेषणे
२८	१८	ह्वठ	ह्रेठ
३०	१	तूष	लूष
३१	२५	आम्ला	आस्वा
३२	३	च्चये	त्तेपे
३२	२६	समाज	सभाज
३५	६	४ २१	४ २२
३७	३५	२४ १३	२२ १३
३७	४५	८ २४	२८ ४
४०	३९	०	चमूष् दि० प० से०
४२	३६	भल्भ	गल्भ
४३	१८	९ २९	९ २६
४४	२३	,, ,, ,,	,, उ० ,,
४६	२६	४ २२	४ २४
४६	२७	जुङ्	जुड
४६	३७	जृ	जॄ
४७	११	टूल	टूल
४९	२२	तूषत्तु० ,, ,, २१-१	०
५४	२५	पूड	पूङ्

इति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ गणानां सूचीपत्रम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका ।

—0—

इस पुस्तक का नाम गणपाठ इस लिये है कि एकत्र मिला के बहुत २ शब्दों का समुदाय पठित हैं । यह पुस्तक पाणिनि मुनि जी का बनाया है इस के कार्य्यकर अष्टाध्यायी के सूत्र हैं यद्यपि काशिकादि पुस्तकों में तत्तत् सूत्र पर गणपाठ भी छप गया है तथापि बीच २ सूत्रों के दूर २ होने से गण भी दूर २ हैं इस से कण्ठस्थ करना विचारना वा अनुवृत्ति करना कठिन होता था इस लिये उस २ गणकार्य विधायक सूत्र को सार्थक लिख कर एक दो उदाहरण देके जहां २ एक ऐसा (:--)चिन्ह बना के लिखा है वहां २ से गण पाठ का आरम्भ समझना चाहिये और जिस २ शब्द को विशेष व्याख्या अपेक्षित थी उस २ पर एक आदि अङ्क लिख और रेखा देकर नीचे विवरण (जिस को नोट कहते हैं) लिखा है । उस को भी यथायोग्य समझ लेना चाहिये इन के अर्थ अष्टाध्यायी निरुक्त निघंटु और उणादिकोष तथा प्रकृति प्रत्ययादि को जहां से समझ लेना योग्य हैं । यद्यपि भ्वादि और उणादि भी एक२ सूत्र पर गण हैं तो भी उन के बड़े और विलक्षण (१) होने से पृथक् श्रीपाणिनि मुनि जी ने लिखे हैं और सूत्र के समान वार्त्तिक गण है उन को भी वार्त्तिक के आगे लिख दिया है जो साधारणता से व्याकरण के बोध युक्त हैं वे भी इन का रूप और अर्थ पढ़ पढ़ा सकते हैं ॥

अलमतिविस्तरेण विपश्चिद्वरशिरोमणिषु ॥

स्थान महाराणा जी का उदयपुर
मिति माघ शुक्ला १० सं० १९३९

दयानन्द सरस्वती

(१) भ्वादि धातु अनुबंधसहित और उणादि में प्रकृतिप्रत्ययसाधुत्व पूर्वक लेख है और सर्वादि में सिद्ध शब्दों का पाठ अनुक्रम से है इसी लिये उन दोनों गणों से यह और इस से वे पृथक् २ रक्खे हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओम्

अथ गणपाठः ।

---*---

१—सर्वादीनि सर्वनामानि ॥ अ० ॥ १ । १ । २७ ॥

सर्वादीनि प्रातिपदिकानि सर्वनामसंज्ञानि भवन्ति । सर्वे । सर्वस्मै । सर्वेषां नामानि सर्वनामानीति समासेनान्वर्थसंज्ञा विज्ञानात् सर्वो नाम कश्चिन् मनुष्यविशेषस्तस्मै सर्वाय देहीति सर्वनामसंज्ञा न भवति । अत एव विशेषणवाचकानि सर्वादीनि प्रातिपदिकानि विज्ञेयानि :—

सर्व । विश्व । उभ । उभय । डतर । डतम । इतर । अन्य । अन्यतर । त्व । त्वत् । नेम । सम (१) सिम (२) पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम् ॥ स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ॥ अन्तरम्बहिर्योगोपसंव्यानयोः ॥ त्यद् । तद् । यद् । एतद् । इदम् । अदस् । एक । द्वि । युष्मद् । अस्मद् । भवतु । किम् । इति सर्वादिर्गणः ॥

२—स्वरादिनिपातमव्ययम् ॥ अ० ॥ १ । १ । ३७ ॥

स्वरादयश्च निपाताश्चैषां समाहारः । स्वरादिनिपातमव्ययसंज्ञं भवति । निपाताश्चादयो वक्ष्यन्ते :—

स्वर् । अन्तर् । प्रातर् । एते अन्तोदात्ताः । पुनर् । आद्युदात्तः । सनुतर् । उच्चैस् । नीचैस् । शनैस् । ऋधक् । आरात् । ऋते । युगपत् । पृथक् । अन्तोदात्ताः । ह्यस् । श्वस् । दिवा । रात्रौ । सायम् । चिरम् । मनाक् । ईषत् । जोषम् । तूष्णीम् । बहिस् । आविस् । अवस् । अधस् । समया । निकषा । स्वयम् । मृषा । नक्तम् । नञ् । हेतौ । अद्धा । इद्धा । सामि । ह्यस्प्रभृतयोऽप्यन्तोदात्ताः । वत् (३) सन् ।

---

(१) सूत्रान्तरे समानामिति निर्देशात्सर्वपर्यायस्यैव समशब्दस्य सर्वनामसंज्ञेष्यते तेन तुल्यवाचकस्य न भवति ॥

(२) इमानि त्रीणि सूत्राण्यष्टाध्याय्यामपि पठ्यन्ते । तत्र जसि विभाषा सर्वनामसंज्ञा । अत्र तु सामान्येन ॥

(३) वदिति तदन्तस्य वतिप्रत्ययान्तस्य ग्रहणम् । ब्राह्मणवत् । क्षत्रियवत् । स्थानिवत् । इत्यादि ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनात् । सनत् । तिरस् । एत आद्युदात्ताः । अन्तरा । अयमन्तोदात्तः । अन्तरेण । ज्योक् । कम् । शम् । सना । सहसा । विना । नाना । स्वस्ति । स्वधा । अलम् । वषट् । अन्यत् । अस्ति । उपांशु । क्षमा । विहायसा । दोषा । मुधा । मिथ्या । (१) क्त्वातोसुन्कसुनः । कृन्मेजन्तः । कृन्मकारान्तः सन्ध्यक्षरान्तोऽव्ययीभावश्च ॥ पुरा । मिथो । मिथस् । प्रबाहुकम् । आर्यहलम् । अभीक्ष्णम् । साकम् । सार्द्धम् । समम् । नमस् । हिरुक् । (२) तसिलादयः प्राक्पाशपः । शस्प्रभृतयः प्राक् समासान्तेभ्यः । मान्तः । कृत्वोर्थाः । तसिः । आच्थालौ । प्रतान् । प्रशान् । इति स्वरादिर्गणः ॥

३—चादयोऽसत्त्वे ॥ अ० ॥ १ । ४ । ५७ ॥

अद्रव्यवाचकाश्चादयो निपातसंज्ञा भवन्ति । असत्त्व इति किम् । पशुर्वै पुरुषः । अत्र पशुशब्दस्य द्रव्यवाचकत्वादव्ययसंज्ञा न भवति :—

च । वा । ह । अह । एव । एवम् । नूनम् । शश्वत् । युगपत् । सूपत् । कूपत् । कुवित् । नेत् । चेत् । चण् । कच्चित् । यत्र । नह । हन्त । माकिम् । नकिम् । माङ् । नञ् । यावत् । तावत् । त्वा । त्वै । द्वै । रै । श्रौषट् । वौषट् । स्वाहा । वषट् । स्वधा । ओम् । किल । तथा । अथ । सु । स्म । अस्मि । अ । इ । उ । ऋ । लृ । ए । ऐ । ओ । औ । अम् । तक । उञ् । उकञ् । वेलायाम् । मात्रायाम् । यथा । यत् । यम् । तत् । किम् । पुरा । अद्धा । धिक् । हाहा । हे । है । प्याट् । पाट् । थाट् । अहो । उताहो । हो । तुम् । तथाहि । खलु । आम् । आहो । अथो । ननु । मन्ये । मिथ्या । असि । ब्रूहि । तु । नु । इति । इव । वत् । चन । बत । इह । शाम् । शम् । कम् । अनुकम् । नहिकम् । हिकम् । सुकम् । सत्यम् । ऋतम् । वाकिर् । नकिर् । आङ् । अ । मा । नो । ना । वाकिरादयः । प्रतिषेधे । उत । दह । अद्धा । इद्धा । मुधा । नोचेत् । नचेत् । नहि । जातु । कथम् । कुतः । कुत्र । अव । अनु । हाहो । हैहा । ईहा । आहोस्वित् । छम्बट् । खम् । दिष्ट्या । पशु । वट् । सह । आनुषक् । अङ्ग । फट् । ताजक् । अये । अरे । चटु । बाट् । कुम् । खुम् । घुम् । हुम् । आईम् । शीम् । सम् । वै । त्वे । नुवै । न्वै । नुव । अध । अधम् । स्मि । अच्छ । अदल् । दह । हेहे । हैहै । नौ । म ।

(१) क्त्वादीनामष्टाध्याय्यां सूत्रपाठे ग्रहणमस्ति । तेषामेवात्र स्वरादिषु परिगणनं कृतम् । न कश्चिद्विशेषः ॥

(२) तद्धितश्चाऽसर्वविभक्तिरिति सूत्रेण येषामव्ययसंज्ञा तेषामेव तद्धितप्रत्ययानामत्र विस्पष्टार्थं परिगणनम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आम् । शस् । शुकम् । शम् । वव° । वात् । डिकम् । हिनुक । वशम् । शिकम् । खकम् । सनुकम् । नुकम् । अन्त । द्यौ । सुक् । भाजक् । अले । वट् । वाट् । किम् । उपसर्गविभक्तिस्वरप्रतिरूपकाश्च निपाताः (१) इति चादिर्गणः ॥

४—प्रादयः ॥ अ० ॥ १ । ४ । ५८ ॥

असत्त्ववाचकाः प्रादयो निपातसंज्ञा भवति । पराभ्यति । पराजयते इत्यादि । असत्त्व इति किम् । परा जयति सेना । अत्रोपसर्गसंज्ञयात्मनेपदं माभूत् :—
प्र । परा । अप । सम् । अनु । अव । निस् । निर् । दुस् । दुर् । वि । आङ् । नि । अधि । अपि । अति । सु । उत् । अभि । प्रति । परि । उप । इति प्रादयः ॥

५—ऊर्य्यादिच्विडाचश्च ॥ अ० ॥ १ । ४ । ६१ ॥

ऊर्य्यादयः शब्दाश्च्व्यन्ताडाजन्ताश्च क्रियायोगे गतिसंज्ञा भवन्ति । च्वि । शुक्लीकृत्य । शुक्लीकृतम् । डाच् । पटपटाकृत्य । पटपटाकृतम् । ऊरीकृत्य । शुक्लीकरोति । पटपटाकरोति ऊरीकरोति । इत्यादि :—
ऊरी उररी । पापी । ताली । आताली । वेताली । धूसी । शकला । संशकला । ध्वंसकला । भ्रंशकला ॥शकलादयो हिंसायाम्॥ गुलुगुधा पीड़ार्थे ॥ सजूः सहार्थे ॥ फलू, फली, विक्ली, आक्ली । इति विकारे ॥ आलोष्टी । कराली । केवाली । शेवाली । वर्षाली । मस्मसा । मसमसा । एतेहिंसायाम् । वषट् । वौषट् । श्रौषट् । स्वाहा । स्वधा । बन्धा । प्रादुस् । श्रत् । आवित् । इत्यूर्यादयः ॥

६—साक्षात्प्रभृतीनि च ॥ अ० ॥ १ । ४ । ७४ ॥

साक्षादादीनि प्रातिपदिकानि कृञ्योगे विभाषा गतिसंज्ञानि भवन्ति । असाक्षात् साक्षात्कृत्वा । साक्षात्कृत्य । साक्षात्कृत्वा । इत्यादि :—
साक्षात् । मिथ्या । चिन्ता । भद्रा । लोचना । विभाषा । सम्पत्का । आस्था । अमा । अद्धा । प्राजर्या । प्राजरुहा । वीजर्या । वीजरुहा । संसर्या । अर्थे । लवणम् । उष्णम् । शीतम् । उदकम् । आर्द्रम् (२) अग्नौ । वशे । विकम्पने । विहसने । प्रहसने । प्रतपने । प्रादुस् । नमस् । आविस् । इति साक्षात्प्रभृतयः ॥

(१)उपसर्गप्रतिरूपकाः । अवदत्तम् । विदत्तम् । प्रदत्तम् । अत्राच उपसर्गादिति तत्वं न भवति । विभक्ति प्रतिरूपकाः । चिरेण । चिरात् । चिराय । इत्यादयः । स्वरप्रतिरूपकाः:— अ । इ । उ । ऋ । ए । ओ । इत्येवमादयः ॥

(२) लवणादय आर्द्रपर्यन्ताः शब्दा गतिसंज्ञासम्बन्धेन मकारान्ता निपात्यन्ते नतु सर्वत्र ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७—तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च ॥ अ० ॥ २ । १ । १७ ॥

तिष्ठद्ग्वादयः समुदायाः कृतसमासा अव्ययीभावसंज्ञका विभाषया निपात्यन्ते। तिष्ठन्ति गावो यस्मिन् काले दोहनाय स तिष्ठद्गु कालविशेषः । खलेयवादीनि प्रथमान्तानि विभक्त्यन्तरेण नैव संबध्यन्ते । अन्यपदार्थे च काले वर्त्तन्ते ।

तिष्ठद्गु । वहद्गु । आयतीगवम् । खलेयवम् । खलेबुसम् । लूनयवम् । लूयमानयवम् । पूतयवम् । पूयमानयवम् । संहृतयवम् । संह्रियमाणयवम् । संहृतबुसम् । संह्रियमाणबुसम् । एते कालशब्दाः । समभूमि । समपदाति । सुषमम् । विषमम् । निष्षमम् । दुष्षमम् । अपरसमम् । आयतीसमम् । प्राह्णम् । प्ररथम् । प्रमृगम् । प्रदक्षिणम् । अपरदक्षिणम् । सम्प्रति । असम्प्रति । पापसमम् । पुण्यसमम् । इच्कर्मव्यतिहारे (१) इति तिष्ठद्गुप्रभृतयः ॥

८—सप्तमी शौण्डैः ॥ अ० ॥ २ । १ । ४० ॥

शौण्डैरिति बहुवचनादेव गणनिर्देशः । सप्तम्यन्तं सुबन्तं शौण्डादिभिः सह विभाषा समस्यते सप्तमी तत्पुरुषश्च स समासो भवति । अक्षेषु धूर्त्तोऽक्षधूर्त्तः । अक्षकितवः । इत्यादि :—

शौण्ड । धूर्त्त । कितव । व्याड । प्रवीण । संवीत । अन्तर् । अधिपटु । पण्डित । कुशल । चपल । निपुण । संव्याड । मत्य । समीर । इति शौण्डादयः ॥

९—पात्रेसंमितादयश्च ॥ अ० ॥ २ । १ । ४८ ॥

पात्रे संमितादयः समुदायाः क्षेपे गम्यमाने सप्तमीतत्पुरुषसंज्ञा निपात्यन्ते:— (२) पात्रेसम्मिताः । पात्रेबहुलाः । उदरक्रिमिः । कूपकच्छपः । कूपचूर्णकः । अवटकच्छपः । कूपमण्डूकः । कुम्भमण्डूकः । उदपानमण्डूकः । नगरकाकः । नगरवायसः । मातरिपुरुषः । पिण्डीशूरः । गेहेशूरः । गेहेनर्दी । गेहेक्ष्वेडी । गेहेविजिती । गेहेव्याडः । गेहेतृप्तः । गेहेधृष्टः । गर्भेतृप्तः । आखनिकबकः । गोष्ठेशूरः । गोष्ठेविजिता । गोष्ठेक्ष्वेडी । गेहेमेही । गोष्ठेपटुः । गोष्ठेपण्डितः । गोष्ठेप्रगल्भः । कर्णेटिट्टिभः । कर्णेचुरचुरा । आकृतिगणोऽयम् ॥

(१) कर्मव्यतिहारेऽर्थे समासान्तो इच्प्रत्ययान्ता अपि शब्दा अव्ययीभावसंज्ञा भवन्ति । दण्डादण्डि । मुसलामुसलि । नखानखि । केशाकेशि । इत्यादि ॥

(२) येऽत्र गणे क्तान्तास्तत्र क्षेप इति पूर्वसूत्रेणैव सिद्धे पुनः पाठो युक्तारोह्याद्यन्तर्गत पात्रेसम्मितादीनां पूर्वपदाद्युदात्तार्थः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०—उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे ॥ अ० ॥ २।१।५६॥

सामान्यधर्मस्याप्रयोगे सत्युपमेयवाची सुबन्तमुपमानवचनैर्व्याघ्रादिभिः सह विभाषा समस्यते स समानाधिकरणतत्पुरुषः समासो भवति व्याघ्र इव पुरुषः पुरुषव्याघ्रः। पुरुषसिंहः। इत्यादि। सामान्याप्रयोग इति किम्। पुरुषो व्याघ्र इव शूरः। उपमानोपमेयप्रधानो धर्मः शूरत्वमत्र प्रयुज्यतेऽतः समासनिषेधः :—

व्याघ्र। सिंह। ऋक्ष। ऋषभ। चन्दन। वृक। वृष। वराह। हस्तिन्। कुञ्जर। रुरु। पृषत्। पुण्डरीक। बलाहक (१) आकृतिगणोऽयम्। इति व्याघ्रादयः॥

११—श्रेण्यादयः कृतादिभिः ॥ अ० ॥ २। १। ५९ ॥

श्रेण्यादयः सुबन्ताः कृतादिभिः समानाधिकरणैः सह विभाषा समस्यन्ते। अश्रेणयः श्रेणयः कृताः श्रेणिकृताः (२) एककृतावसन्ति वणिजः। इत्यादि :—

श्रेणि। एक। पूग। कुण्ड। राशि। विशिख। निचय। निधान। इन्द्र। देव। मुण्ड। भूत। श्रवण। वदान्य। अध्यापक। ब्राह्मण। क्षत्रिय। पटु। पण्डित। कुशल। चपल। निपुण। कृपण। इतिश्रेण्यादयः। कृत। मित। मत। भूत। उक्त। समाज्ञात। समाम्नात। समाख्यात। सम्भावित। अवधारित। निराकृत। अवकल्पित। उपकृत। उपाकृत। आकृतिगणोऽयम्। इति कृतादयः॥

१२—वा०-कृतापकृतादीनामुपसंख्यानम् (३) ॥ २। १। ६० ॥

कृतापकृतम्। भुक्तविभुक्तम्। पीतविपीतम्। गतप्रत्यागतम्। यातानुयातम्। क्रयाक्रयिका। पुटापुटिका। फलाफलिका। मानोन्मानिका। इतिकृतापकृतादयः।

(१) अत्राकृतिगणेनेदमपि सिद्धं भवति। मुखं पद्ममिव, मुखपद्मम्। मुखकमलम्। करकिसलयम्। पार्थिवचन्द्रः॥

(२) अत्र श्रेण्यादिषु च्व्यर्थवचनमिति वार्त्तिकेन च्व्यर्थलाभः। यदा च च्व्यन्ताः श्रेण्यादयस्तदा च्विप्रत्ययान्तानां गतिसंज्ञत्वात्कुगतिप्रादय इति नित्यसमासः श्रेणीकृताः। इत्यादि॥

(३) अनञ्विशिष्टकान्तेनापि समासो यथा स्यादिति वार्त्तिकम्। कृतंचापकृतं च कृतापकृतं। वार्त्तिकोपरि तत्सूत्रसंख्या सर्वत्र धरिष्यते। यस्योपरि महाभाष्ये वार्त्तिकमस्ति॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३—वा०—समानाधिकरणाधिकारे शाकपार्थिवादीनामुपसंख्यानमुत्तरपदलोपश्च (१) २।१।६९॥

शाकभोजी पार्थिवः शाकपार्थिवः। कुतपसौश्रुतः। अजातौल्वलिः। यष्टिमौद्गल्यः। इत्यादि॥

१४—मयूरव्यंसकादयश्च॥ अ०॥ २।१।७२॥

मयूरव्यंसकाः समुदायाः कृतसमासाः समानाधिकरण तत्पुरुषसंज्ञका निपात्यन्ते। चकारो निश्चयार्थः। परममयूरव्यंसकइतिसमासान्तरं न भवति :—

मयूरव्यंसकः। छात्रव्यंसकः (२)। काम्बोजमुण्डः। यवनमुण्डः। (३) छन्दसि। हस्तेगृह्य। पादेगृह्य। लाङ्गूलेगृह्य। पुनर्दाय॥ (४) एह्रीडादयोऽन्यपदार्थे॥ एह्रीडम्। एहियवं वर्त्तते। एहिवाणिजाक्रिया। अपेहिवाणिजा। प्रेहिवाणिजा। एहिस्वागता। अपेहिस्वागता। प्रेहिस्वागता। एहिद्वितीया। अपेहिद्वितीया। प्रोहकटा। अपोहकटा। प्रोहकर्दमा। अपोहकर्दमा। उद्धरचूडा। आहरचेला। आहरवसना। आहरवनिता। कृन्तविचक्षणा। उद्धरोत्सृजा। उद्यमविधमा। उत्पचविपचा। उत्पतनिपता। उच्चावचम्। उच्चनीचम्। अपचितोपचितम्। अवचितपराचितम्। निश्चप्रचम्। अकिंचनम्। स्नात्वाकालकः। पीत्वास्थिरकः। भुक्त्वा सुहितः। प्रोष्य पापीयान्। उत्पत्यव्याकुला। निपत्यरोहिणी। निषण्णश्यामा। अपेहिप्रघसा। इहपञ्चमी। इहद्वितीया। जहिकर्मणा। बहुलमाभीक्ष्ण्ये कर्त्तारंचाभिदधाति (५)।

---

(१) शाकपार्थिवादिषु समानाधिकरणतत्पुरुषः समासो यथा स्यात्। पूर्वसमासे यदुत्तरपदं तस्य च लोपः। यथा दृष्टं विज्ञेयम्॥

(२) मयूर इव व्यंसको धूर्त्तो मयूरव्यंसकः। छात्र इव व्यंसकः। कम्बोज इव मुण्डः। इत्युपमानसमासापवादोऽयं समासः॥

(३) अतोऽग्रे चत्वारः शब्दाश्छन्दसि वेदविषये निपात्यन्ते॥

(४) त्वं यस्यैडामन्नंस्तुतिं वा—एहि प्राप्नुहि तत्, एह्रीडम्। एवमेहियवादिषु यथाप्रयोगमर्थानुकूलः समासोऽज्ञेयः॥

(५) जहिक्रियाऽऽभीक्ष्ण्येऽर्थे स्वेनैव कर्मणा सह बहुलंसमस्यते समाससमुदायश्च कर्तृवाचको भवति। त्वंजोड़ंजहि, इति जहिजोड़स्त्वम्। उज्जहिजोडः। जहिस्तम्बः। इत्यादि। आख्यातः क्रियाशब्द आख्यातेनैव सहसमस्यते। अश्नीत च पिबति च, इति समासेकृते प्रातिपदिकसंज्ञायक्रियाविशेषणे टाप्। अश्नीतपिबता। इत्यादि॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहिजोडः । उज्जहिजोडः । जहिस्तम्बः । उज्जहिस्तम्बः । (आख्यातमाख्यातेन क्रियासातत्ये) ॥ अश्नीतपिबता । पचतभृज्जता । खादतमोदता । खादताचमता आहरनिवपा । आवपनिष्किरा । उत्पचविपचा । भिन्द्विलवणा । छिन्द्विविचक्षणा । पचलवणा । पचप्रकूटा । (१) इतिमयूरव्यंसकादयः ॥

१५—याजकादिभिश्च ॥ अ० ॥ २ । २ । ९ ॥

षष्ठ्यन्तं सुबन्तं याजकादिभिः सुबन्तैः सह समस्यते स षष्ठीतत्पुरुषः समासो भवति । ब्राह्मणयाजकः । क्षत्रिययाजकः । प्रतिषेधबाधकमिदं सूत्रम् :—

याजक । पूजक । परिचारक । परिषेचक । परिवेषक । स्नातक । अध्यापक । उत्सादक । उद्वर्त्तक । हर्तृ । दत्तक । होतृ । पोतृ । भर्तृ । रथगणक । पतिगणक । इति याजकादयः ॥

१६—राजदन्तादिषु परम् ॥ अ० । २ । २ । ३१ ॥

राजदन्तादिषु परमुपसर्जनं प्रयोक्तव्यम् । पूर्वनिपातापवादः । दन्तानां राजा, राजदन्तः । अनेन दन्तशब्दस्य पूर्वनिपातो बाध्यते । :—

राजदन्तः । अग्रेवणम् । लिप्तवासितम् । नग्नमुषितम् । सिक्तसंमृष्टम् । मृष्टलुञ्चितम् । अवक्लिन्नपक्वम् । अर्पितोप्तम् । उप्तगाढम् । उलूखलमुसलम् । तण्डुलकिण्वम् । दृषदुपलम् । आरग्वायनबन्धकी । चित्ररथबाह्लीकम् । आवन्त्यश्मकम् । शूद्रार्यम् । स्नातकराजानौ । विष्वक्सेनार्जुनौ । अक्षिभ्रुवम् । दारगवम् । धर्मार्थौ । अर्थधर्मौ । कामार्थौ । अर्थकामौ । शब्दार्थौ (२) । अर्थशब्दौ । वैकारिमतम् । गजवाजम् । गोपालधानीपूलासम् । पूलासककरण्डम् । स्थूलपूलासम् । उशीरबीजम् । सिञ्जास्थम् । चित्रास्वाती । भार्य्यापती । जायापती (३) । जम्पती । दम्पती । पुत्रपती । पुत्रपशू । केशश्मश्रू । श्मश्रुकेशौ । शिरोबीजम् । सर्पिर्मधुनी । मधुसर्पिषी । आद्यन्तौ । अन्तादी । गुणवृद्धी । वृद्धिगुणौ । इति राजदन्तादयः ॥

---

(१) अविहितलक्षणस्तत्पुरुषो मयूरव्यंसकादिषु द्रष्टव्यः ॥

(२) धर्मादिषूभयमिति वार्त्तिकेन कृतद्वन्द्वयोर्द्वयोरपि पर्य्यायेण पूर्वनिपातः । अत्र गणान्तेऽपि केशादयो धर्म्मादिषु द्रष्टव्याः ॥

(३) अत्र जायाशब्दस्य जम्भावो दम्भावश्च निपात्यते । अस्मिन् गणे सर्वेषु समासेषूपसर्जनमनुपसर्जनं वा निपात्यते । सर्वेषां च यथाप्राप्तानामपवादः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७—वाऽऽहिताग्न्यादिषु ॥ अ० ॥ २ । २ । ३७ ॥

आहिताग्न्यादिषु निष्ठान्तस्य विभाषा पूर्वनिपातो भवति पक्षे च परनिपातः। आहितोऽग्निर्येन सः—

आहिताग्निः। अग्न्याहितः। जातपुत्रः। पुत्रजातः। जातदन्तः। जातश्मश्रुः। तैलपीतः। घृतपीतः। ऊढभार्यः। गतार्थः। आकृतिगणोऽयम् (१)। इत्याहिताग्न्यादयः ॥

१८—कडाराः कर्मधारये ॥ अ० ॥ २ । २ । ३८ ॥

कर्म्मधारये समासे कडारादयः शब्दा विभाषा पूर्वं प्रयोक्तव्याः। कडारश्चासौ जैमिनिश्च कडारजैमिनिः। जैमिनिकडारः। इत्यादि। कडारादीनां गुणवाचकाद्विशेषणस्य पूर्वनिपातः प्राप्तः स बाध्यते :—

कडार। गडुल। काण। खञ्ज। कुण्ठ। खञ्जर। खलति। गौर। वृद्ध। भिक्षुक। पिङ्गल। तनु। बटर। इति कडारादयः। कर्म्मधारय इति किम्। कडारपुरुषो ग्रामः। अत्र बहुव्रीहौ माभूत् ॥

१९—वा०—तृतीयाविधाने प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् (२) ॥२।३।१८॥

प्रकृति। प्राय। गोत्र। सम। विषम। द्विद्रोण। पञ्चक। साहस्र। आकृतिगणोऽयम्। इति प्रकृत्यादयः ॥

२०—गवाश्वप्रभृतीनि च ॥ अ० ॥ २ । ४ । ११ ॥

गवाश्वप्रभृतीनि कृतैकवद्भावानि द्वन्द्वरूपाणि सिद्धानि प्रातिपदिकानि निपात्यन्ते। गौश्चाश्वश्च :—

गवाश्वम्। गवाविकम्। गवैडकम्। अजाविकम्। अजैडकम्। कुब्जवामनम्। कुब्जकैरातम्। पुत्रपौत्रम्। श्वचण्डालम्। स्त्रीकुमारम्। दासीमाणवकम्। शाटीपिच्छकम्। उष्ट्रखरम्। उष्ट्रशशम्। मूत्रशकृत्। मूत्रपुरीषम्। यकृन्मेदः। मांसशोणितम्। दर्भशरम्। दर्भपूतीकम्। अर्जुनशिरीषम्। तृणोलपम्। दासीदासम्। कुटीकुटम्। भागवतीभागवतम् (३)। इति गवाश्वप्रभृतयः ॥

---

(१) अत्राकृतिगणेन गडुकण्ठादयोऽपि द्रष्टव्याः। कण्ठेगडुः। गडुकण्ठः। गडुशिराः। इत्यादि ॥

(२) प्रकृत्यादिभ्यस्तृतीयाविभक्तिर्यथा स्यात्। कर्त्तृकरणाभावादप्राप्ता विधीयते। प्रकृत्याऽभिरूपः। प्रकृत्या दर्शनीयः। इत्यादि ॥

(३) अत्र गणे यथोच्चारित एव द्वन्द्वो द्रष्टव्यः। तेन रूपान्तरे न भवति। गोश्वम्। गोश्वौ। अत्र पशुद्वन्द्वो विभाषैकवद् भवति ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१—न दधिपयआदीनि ॥ अ० ॥ २ । ४ । १४ ॥

दधिपयआदीनि शब्दरूपाणि द्वन्द्वे नैकवद्भवन्ति :—

दधिपयसी । सर्पिर्मधुनी । मधुसर्पिषी । ब्रह्मप्रजापती । शिववैश्रवणौ । स्कन्दविशाखौ । परिव्राट्कौशिकौ । परिव्राजककौशिकौ । प्रवर्ग्योपसदौ । शुक्लकृष्णौ । इध्माबर्हिषी । दीक्षातपसी । श्रद्धातपसी । मेधातपसी । अध्ययनतपसी । उलूखलमुसले । आद्यावसाने । श्रद्धामेधे । ऋक्सामे । वाङ्मनसे । इति दधिपयआदयः ॥

२२—अर्द्धर्चाः पुंसि च ॥ अ० ॥ २ । ४ । ३१ ॥

अर्द्धर्चादयः शब्दाः पुंसि चान्नपुंसके च भाष्यन्ते :—

अर्द्धर्च । गोमय । कषाय । कार्षापण । कुतप । कपाट । शङ्ख । चक्र । गूथ । यूथ । ध्वज । कबन्ध । पद्म । गृह । सरक । कंस । दिवस । यूप । अन्धकार । दण्ड । कमण्डलु । मण्ड । भूत । द्वीप । द्यूत । चक्र । धर्म । कर्मन् । मोदक । शतमान । यान । नख । नखर । चरण । पुच्छ । दाडिम । हिम । रजत । सक्तु । पिधान । सार । पात्र । घृत । सैन्धव । औषध । आढक । चषक । द्रोण । खलीन । पात्रीव । षष्टिक । वार । बाण । प्रोथ । कपित्थ । शुष्क । शील । शुल्व । सीधु । कवच । रेणु । कपट । सीकर । मुसल । सुवर्ण । यूप । चमस । वर्ण । क्षीर । कर्ष । आकाश । अष्टापद । मङ्गल । निधन । निर्यास । जृम्भ । वृत्त । पुस्त । क्ष्वेडित । शृङ्ग । शृङ्खल । मधु । मूल । मूलक । शराव । शाल । वप्र । विमान । मुख । प्रग्रीव । शूल । वज्र । कर्पट । शिखर । कल्क । नाट । मस्तक । वलय । कुसुम । तृण । पङ्क । कुण्डल । किरीट । अर्बुद । अङ्कुश । तिमिर । आश्रम । भूषण । इल्कस । मुकुल । वसन्त । तडाग । पिटक । विटङ्क । माष । कोश । फलक । दिन । दैवत । पिनाक । समर । स्थाणु । अनीक । उपवास । शाक । कर्पास । चषाल । खण्ड । दर । विटप । रण । बल । मल । मृणाल । हस्त । सूत्र । ताण्डव । गाण्डीव । मण्डप । पटह । सौध । पार्श्व । शरीर । फल । छल । पुर । राष्ट्र । विश्व । अम्बर । कुट्टिम । मण्डल । ककुद । तोमर । तोरण । मञ्चक । पुङ्ख । मध्य । बाल । वल्मीक । वर्ष । वस्त्र । देह । उद्यान । उद्योग । स्नेह । स्वर । सङ्गम । निष्क । क्षेम । शूक । छत्र । पवित्र । यौवन । पानक । मूषिक । वल्कल । कुञ्ज । विहार । लोहित । विषाण । भवन । अरण्य । पुलिन । दृढ । आसन । ऐरावत । शूर्प । तीर्थ । लोमश । तमाल । लोह । दण्डक । शपथ । प्रतिसर । दारु । धनुस् । मान । तङ्क । वितङ्क । मव । सहस्र । ओदन । प्रवाल । शकट । अपराह्ण । नीड । शकल । कुणप । मुण्ड । पूत । मरु । लोमन । लिङ्ग । सीर । चत । ऋण । कडार । पूर्ण । प्रणव । विशाल ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुस्त । पुस्तक । पल्लव । निगड । खल । स्थूल । प्राप्त । नाल । प्रदर । कटक । कण्टक । कोल । कुमुद । पुराण । जाल । स्कन्ध । ललाट । कुङ्कुम । कुम्भल । विडङ्ग । पिण्याक । आर्द्र । हल । योध । बिम्ब । कुक्कुट । कडप । खण्डल । पञ्चक । वसु । उद्यम । स्तन । स्तेन । चत्र । कलह । पालक । वर्चस्क । कूर्च । तण्डक । तण्डुल । इत्यर्धर्चादयः ॥

२३—पैलादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ २ । ४ । ५९ ॥

पैलादिप्रातिपदिकेभ्यो युवप्रत्ययस्य लुग्भवति । पीलाया अपत्यं पैलः । तस्य युवापत्यमिति फिञ् तस्य लुक् । पैलः पिता । पैलः पुत्रः । एवं शालङ्किः। इत्यादि।

पैल । शालङ्कि । सात्यकि । सात्यकामि । देवि । औदमज्जि । औदव्रजि । औदमेघि । औदबुद्धि । दैवस्थानि । पैङ्गलायनि । राणायनि । रौहचिति । भौलिङ्गि । औद्गाहमानि । औज्जिहानि । रागचति । राणि । सौमनि । जहमानि । तद्राजाचाणः (१) आकृतिगणोऽयम् इतिपैलादयः ॥

२४—न तौल्वलिभ्यः ॥ अ० ॥ २ । ४ । ६१ ॥

तौल्वल्यादिभ्यः परस्य युवप्रत्ययस्य लुङ् न भवति तुल्वलस्य गोत्रापत्यं तौल्वलिः । तस्ययुवापत्यं तौल्वलायनः :—

तौल्वलि । धारणि । रावणि । पारणि । दैलीपि । देवलि । दैवमति । दैवयज्ञि । प्रावाहणि । मान्धातकि । आनुहारति । श्वाफल्कि । आनुमति । आहिंसि । आसुरि । आयुधि । नैमिषि । आसिबन्धकि । बैकि । पौष्करसादि । वैरकि । वैलकि । वैहति । वैकर्णि । कारेणुपालि । कामलि । रान्धकि । आसुराहति । प्राणाहति । पौष्कि । कान्दकि । दौषकगति । आन्तराहति । इति तौल्वल्यादयः ॥

२५—यस्कादिभ्यो गोत्रे ॥ अ० ॥ २ । ४ । ६३ ॥

यस्कादिभ्यः प्रातिपदिकेभ्यः परस्यास्त्रीलिङ्गस्य बहुवचनेवर्त्तमानस्य गोत्रप्रत्ययस्य लुग्भवति यदि तेनैव गोत्रप्रत्ययेन कृतं बहुत्वं भवेत्तदा । यस्कस्य गोत्रापत्यं यास्कः । यास्कौ । यस्काः । लभ्याः । तेनेवेति किम् । प्रियो यास्को येषां ते प्रिययास्काः अस्त्रियामिति किम् । यास्क्यः स्त्रियः । गोत्र इति किम् । यास्काश्छात्राः । :—

यस्क । लभ्य । दुह्य । अयःस्थूण । तृणकर्ण (२) । सदामत्त । कम्बलभार । अहियोग । कर्णाटक । पर्णाडक । पिण्डीजङ्घ । बकसक्थ (३) ।

(१) वङ्गानांराजा वाङ्गः। तस्ययुवापत्यम् वाङ्गः। अंगस्यापत्यमांगः पिता पुत्रो वा॥

(२) यस्कादिपंचभ्यः शिवादित्वादण् ॥

(३) सदामत्तादिसप्तभ्य इञ् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्ति । कद्रु । विश्रि । कद्रु । अजबस्ति । मित्रयु (१) । रक्षामुख । जङ्घारथ । मन्थक । उत्कासकटुकमन्थक । पुष्करसद् । विषपुट । उपरिमेखल । क्रोष्टुमान । क्रोष्टुपाद । शीर्षमाय (२) । खरप (३) । पदक । वर्मक (४) भन्दन (५) । भडिल । भण्डिल । भडित । भण्डित (६) । इतियस्कादयः ॥

२६—नगोपवनादिभ्यः ॥ अ० ॥ २ । ४ । ६७ ॥

गोपवनादिप्रातिपदिकेभ्यः परस्य गोत्रप्रत्ययस्य बहुवचनविभक्तौ लुङ्न भवति यञञोश्चे ति प्राप्तो लुक् प्रतिषिध्यते । गोपवनस्य गोत्रापत्यं गौपवनः । गौपनौ । गौपवनाः । :—

गोपवन । शिग्रु । बिन्दु । भाजन । अश्व । अवतान । श्यामाक । श्वापर्ण । इत्यष्टौ बिदाद्यन्तर्गता गोपवनादयः ॥

२७—तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे ॥ अ० ॥ २ । ४ । ६८ ॥

तिकादिभ्यः कितवादिभ्यश्च परस्य गोत्रप्रत्ययस्य द्वन्द्वसमासे बहुवचनविभक्तौ लुग्भवति । तैकायनयश्च कैतवायनयश्चेत्यत्र तिकादिभ्यः फिञ् तस्य लुक् :—

तिककितवाः । वङ्खरभण्डीरथाः (७) उपकलमकाः (८) पफकनरकाः । बकनखश्वगुदपरिणद्धाः (९) । उब्जककुभाः (१०) । लङ्कशान्तमुखाः (११)

(१) बस्त्यादिषड्भ्यो गृष्ट्यादित्वाड् ढञ् ॥

(२) रक्षामुखाद्येकादशभ्य इञ् ॥

(३) खरपशब्दान्नडादित्वात्फक् ॥

(४) पदकवर्मकाभ्यामिञ् ॥

(५) भन्दनशब्दाच्छिवादित्वादण् ॥

(६) भडिलादिचतुर्भ्योऽश्वादित्वात् फञ् ॥

(७) वाङ्खरयश्च भांडीरथयश्चे तीञ् ॥

(८) औपकायनश्च लामकायनश्चे ति नड़ादित्वात् फक् ।

(९) पाफकयश्च नारकयश्च, बाकनखयश्च, श्वागुदपारिणद्धयश्च सर्वेभ्योऽत इञ् तस्य लुक् ॥

(१०) औब्जयश्च, इञ् । काकुभाश्च, शिवादित्वादण् । तयोर्लुक् ॥

(११) लाङ्कयश्च शान्तमुखयश्च, इञ् तस्य लुक् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उरसलङ्कटाः (१)। भ्राष्टककपिष्ठलाः । कृष्णाजिनकृष्णसुन्दराः (२)। अग्निवेशदासेरकाः (३) ॥ इतितिककितवादयः ॥

२८—उपकादिभ्योऽन्यतरस्यामद्वन्द्वे ॥ अ० ॥ २ । ४ । ६९ ॥

उपकादिप्रातिपदिकेभ्यः परस्य गोत्रप्रत्ययस्य बहुवचनविभक्तौ द्वन्द्वे चाद्वन्द्वे च विभाषा लुग्भवति । अद्वन्द्वग्रहणं द्वन्द्वाधिकारनिवृत्त्यर्थम् । एतेषां मध्ये त्रयो द्वन्द्वास्तिककितवादिषु पठिताः । उपकलमकाः । भ्राष्टककपिष्ठलाः । कृष्णाजिनकृष्णसुन्दराः । तेभ्यः पूर्वसूत्रेणैव नित्यलुग्भवति । अद्वन्द्वेत्वनेन विकल्पः । उपकाः । औपकायनाः । लमकाः । लामकायनाः । शेषाणां द्वन्द्वेऽद्वन्द्वे च विकल्पः :–

उपक । लमक । भ्रष्टक । कपिष्ठल । कृष्णाजिन । कृष्णसुन्दर । पण्डारक । अण्डारक । गड्डुक । सुपर्यक । सुपिष्ठ । मयूरकर्ण । खारीजङ्घ । शलावल । पतञ्जल । कठेरणि । कुषीतक । काशकृत्स्न । निदाघ । कलशीकण्ठ । दामकण्ठ । कृष्णपिङ्गल । कर्णक । पर्णक । जटिलक । बधिरक । जन्तुक । अनुलोम । अर्द्धपिङ्गलक । प्रतिलोम । प्रतान । अनभित । चूडारक । उदङ्क । सुधायुक । अबन्धक । पदच्चलपाणुपद । अजबध । कमक । लेखाभ्र । कमन्दक । पिञ्जल । मसूरकर्ण । मदाघ । कदामत्त । इत्युपकादयः ॥

२९—भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः ॥ अ० ॥ ३ । १ । १२ ॥

अच्व्यन्तेभ्यो भृशादिप्रातिपदिकेभ्यो भवत्यर्थे क्यङ् प्रत्ययो भवति हलन्तानां चान्त्यलोपः । अभृशो भृशो भवतीति भृशायते । सुमनायते । अच्वेरिति किम् । भृशीभवति । अत्र मा भूत् :–

भृश । शीघ्र । मन्द । चपल । पण्डित । उत्सुक । उन्मनस् । अभिमनस् । सुमनस् । दुर्मनस् । रहस् । रेहस् । शश्वत् । बृहत् । वेहत् । नृषत् । शुधि । अधर । ओजस् । वर्चस् । विमनस् । तमन् । हन् । रोहत् । शुचिस् । अजरस् । इति भृशादिः ॥

---

(१) औरसायनश्च, तिकादित्वात् फिञ् । लाङ्कटयश्च, इञ् तयोर्लुक् ॥

(२) भ्राष्टकयश्च, कापिष्ठलयश्च । कार्ष्णाजिनयश्च कार्ष्णसुन्दरयश्च । अत इञ् तस्यलुक् ॥

(३) आग्निवेश्याश्च, गर्गादित्वाद् यञ् । दासेरकयश्च, अत इञ् तयोर्लुक् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३०—लोहितादिडाज्भ्यः क्यष् ॥ अ० ॥ ३ । १ । १३ ॥

अच्व्यन्तेभ्यो लोहिताभ्यो डाजन्तेभ्यश्च भवत्यर्थे क्यष् प्रत्ययो भवति। अलोहितो लोहितो भवति लोहितायते । लोहितायति । अपटपटा पटपटा भवति पटायति। पटपटायते :–

लोहित । नील । हरित । पीत । मद्र । फेन । मन्द । आकृतिगणत्वात् । वर्मन । निद्रा । करुणा । कृपा । इति लोहितादयः ॥

३१—भविष्यति गम्यादयः ॥ अ० ॥ ३ । ३ । ३ ॥

गम्यादयः शब्दा भविष्यति काले साधवो भवन्ति। ग्रामंगमी :–

गमी । आगामी । प्रस्थायी । प्रतिरोधी । प्रतिबोधी । प्रतियोधी । प्रतियोगी ॥ प्रतियायी । आयायी । भावी । इति गम्यादयः ॥

३२—षिद्भिदादिभ्योऽङ् ॥ अ० ॥ ३ । ३ । १०४ ॥

षिद्भ्यो भिदादिभ्यश्च धातुभ्यः स्त्रियामङ् प्रत्ययो भवति। जृष्–जरा । त्रपा । भिदादयः पठ्यन्ते :—

भिदा (१)। छिदा । विदा । चिपा ॥ गुहा गिर्य्योषध्योः ॥ श्रद्धा । मेधा । गोधा । आरा । हारा । कारा । चिया । भारा । धारा । रेखा । लेखा । चूडा । पीडा । वपा । वसा । सृजा ॥ कृपेः संप्रसारणं च ॥ कृपा ॥ भिदा, विदारणे ॥ छिदा, द्वैधीकरणे ॥ आरा, शस्त्राम् ॥ धारा प्रपाते । इति भिदादयः ॥

३३—वा०—संपदादिभ्यः क्विप् (२) ॥ अ० ॥ ३ । ३ । १०८॥

संपत् । विपत् । प्रतिपत् । आपत् । परिषत् । इति संपदादयः ॥

३४—भीमादयोऽपादाने ॥ अ० ॥ ३ । ४ । ७४ ॥

भीमादयः शब्दा उणादिस्था अपादानकारके निपात्यन्ते :–

भीमः । भीष्मः । भयानकः । वरुः । चरुः । भूमिः । रजः । संस्कारः । संक्रन्दनः । प्रपतनः । समुद्रः । स्रुचः । स्रुक् । खलतिः ॥ इति भीमादयः ॥

---

(१) भिदादिगणेऽयं ष्वर्थ नियमः स महाभाष्यकारेणैव कृतोऽस्ति । विदारणादन्यार्थे भित्तिरिति सर्वत्रार्थान्तरे क्तिन् ॥

(२) संपदादिगणपठितेभ्य एव स्त्रियां क्विप् प्रत्ययो भवति । संपदादिश्चाकृतिगणो विज्ञेयः । कृत्ल्युटो बहुलमिति बहुलवचनात् क्तिन्नपि भवति । संपत्तिः। विपत्तिः । इत्यादि ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५—अजाद्यतष्टाप् ॥ अ० ॥ ४ । १ । ४ ॥

अजादिभ्यः प्रातिपदिकेभ्योऽकारान्ताच्च स्त्रियां टाप् प्रत्ययो भवति । अजा । देवदत्ता । अदिति तपरकरणं तत्कालार्थम् । कीलालपाः, ब्राह्मणी । अत्र टाप् न भवति अजादिग्रहणं तु जात्यादिलक्षणस्य ङीषादेर्बाधनार्थम् :—

अजा । एडका । चटका । अश्वा । मूषिका (१) । बाला । होढ़ा । पाका । वत्सा । मन्दा । विलाता । पूर्वापहरणा । अपरापहरणा (२) ॥ संभस्त्राजिनशणपिण्डेभ्यः फलात् ॥ संफला । (३) भस्त्रफला । अजिनफला । शणफला । पिण्डफला । सदच्काण्डप्रान्तशतैकेभ्यः पुष्पात् ॥ (४) सत्पुष्पा । प्राक्पुष्पा । प्रत्यक्पुष्पा । काण्डपुष्पा । प्रान्तपुष्पा । शतपुष्पा । एकपुष्पा ॥ शूद्राचामहत्पूर्वा जातिः ॥ (५) क्रुञ्चा । उष्णिहा । देवविशा (६) ज्येष्ठा । कनिष्ठा । मध्यमा । (७) कोकिला । (८) मूलान्नञः । (९) अमूला । इत्यजादयः ॥

३६—न षट्स्वस्रादिभ्यः ॥ अ० ॥ ४ । १ । १० ॥

षट्संज्ञकेभ्यः स्वस्रादिभ्यश्च प्रातिपदिकेभ्यः स्त्रीप्रत्ययो न भवति । सप्त । अष्ट :— स्वसा । दुहिता । ननान्दा । याता । माता । तिस्रः । चतस्रः । इति स्वस्रादयः ।

३७—षिद्गौरादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ४ । १ । ४१ ॥

षिद्भ्यो गौरादिभ्यश्च । प्रातिपदिकेभ्यः स्त्रियां ङीष् प्रत्ययो भवति नर्तकी खनकी । रजकी । गौरादिभ्यः । गौरी मत्सी :—

गौर । मत्स्य । मनुष्य । शृङ्ग । हय । गवय । मुकय । ऋष्य । पुट । द्रुण । द्रोण । हरिण । कण । पटर । उकण । आमलक । कुवल । बदर । बिम्ब । तर्कार । शर्कार । पुष्कर ।

(१) अजादिभ्यः पंचभ्यो जातिलक्षणो यो ङीष् प्राप्तः स बाध्यते ॥

(२) बालादिभ्यः षड्भ्यो वयसि ङीप् प्राप्तः ॥

(३) आभ्यां टिल्लक्षणो ङीप् प्राप्तः ॥

(४) समादिभ्यः फलात् सदादिभ्यश्च पुष्पाद् बहुव्रीहौ यः पाककर्णेति सूत्रेण ङीष् प्राप्तः स बाध्यते ॥

(५) अमहत्पूर्वाच्छूद्रशब्दाज्जातौ टाप् । शूद्रा । पुंयोगे तु ङीषेव शूद्रस्य स्त्री शूद्री । अमहदिति किम् । महाशूद्री ॥

(६) क्रुञ्चादिविभ्योऽप्राप्तष्टाब् विधिः ॥

(७) ज्येष्ठादिभ्यस्त्रिभ्यः पुंयोगे ङीष् प्राप्तोऽनेन बाध्यते ज्येष्ठस्य भार्या ज्येष्ठा ।

(८) कोकिलशब्दाज्जातिलक्षणो ङीष् प्राप्तः ॥

(९) मूलशब्दाद् बहुव्रीहौ पाककर्णेति ङीष् प्राप्तः । नास्ति मूलमस्या सा अमूला ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिखण्ड। सुषम। सलन्द। गडुज। आनन्द। सृपाट। सृगेठ। आढक। शष्कुल। सूर्म। सुव। सूर्य। पूष। मूष। घातक। सकलूक। सल्लक। मालक। मालत। साल्वक। वेतस। अतस। पृस। मह। मठ। छेद। श्वन्। तक्षन्। अनडुही। अनड्वाही। एषण,करणे। देह। काकादन। गवादन। तेजन। रजन। लवण। पान। मेध। गौतम। आप। स्थूण। भौरि। भौलिक। भौलिङ्गि।औद्गाहमानि। आलिङ्गि। आपिच्छिक। आरट। टोट। नट। नाट। मूलाट। शातन। पातन। पावन। आस्तरण। अधिकरण। एत। अधिकार। आग्रहायणी। प्रत्यवरोहिणी। सेवन। सुमङ्गलात्संज्ञायाम्। सुन्दर। मण्डल। पट। पिण्ड। विटक। कुर्द। गूर्द। पाण्ट। लोफाण्ट। कन्दर। कन्दल। तरुण। तलुन। बृहत्। महत्। सौधर्म। रोहिणी,नक्षत्रे रेवती,नक्षत्रे। विकल। निष्कल। पुष्कल॥ कटाच्छ्रोणिवचने॥ पिङ्गल। भट्ट। दहन। कन्द। काकण। पिप्पल्यादयश्च। पिप्पली। हरीतकी। कोशातकी। शमी। करीरी। पृथिवी। क्रोष्टी। मातामह (१)। पितामह। इति गौरादयः॥

३८—बह्वादिभ्यश्च॥ अ०॥४।१।४५॥

बह्वादिप्रातिपदिकेभ्यः स्त्रियां वा ङीष् प्रत्ययो भवति। बह्वी। बहुः।

बहु। पद्धति। अङ्कति। अञ्चति। अंहति। वंहति। शकटि॥ शक्तिः शस्त्रे॥ शारि। वारि। गति। अहि। कपि। मुनि। यष्टि॥ इतः प्राण्यङ्गात्॥ क्तिकारादक्तिनः॥ सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके (२)॥ चण्ड। अराल। कमल। कृपाण। विकट। विशाल। विशंकट। भरुज। ध्वज॥ चन्द्रभागान्नद्याम्॥ चन्द्रभागी। कल्याण। उदार। पुराण। अहन्॥ इति बह्वादयः॥

३९—न क्रोडादिबह्वचः॥ अ०॥४।१।५६॥

क्रोडाद्यन्ताद् बह्वजन्ताच्च प्रातिपदिकात् स्त्रियां ङीष्प्रत्ययो न भवति। स्वाङ्गादिति प्राप्तः प्रतिषिध्यते। शोभनक्रोडा। शोभनखुरा। पृथुजघनाः—

क्रोड। खुर। बाल। शफ। गुद। घोण। नख। मुख। भग। गल। आकृतिगणोऽयम्। इति क्रोडादयः॥

(१) अत्र डामहच् प्रत्ययस्य षित्वादेव ङीषि सिद्धे पुनः पाठेन षिल्लक्षणस्यङीषोऽनित्यत्वं ज्ञाप्यते तेन दंष्ट्रा, इति सिद्धं भवति। पृथिवीशब्दे औणादिकः षिवन् प्रत्ययस्य षित्वान् ङीषि सिद्धे उणादीनामव्युत्पन्नत्वज्ञापनार्थः पाठः॥

(२) इकारान्तात् प्राण्यङ्गवाचकान् ङीष् भवति। अङ्गुली। इकारान्तात् कृदन्तात् स्त्रियां ङीष्। कृषी। भूमी। वापी। केषांचिन्मते क्तिन्नधिकारस्थादि कारान्तमात्रादेव ङीष् न भवति। तदा कृषिः। वापिः। इत्येव॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४०—शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्॥ अ० ॥ ४ । १ । ७३ ॥

शार्ङ्गरवादिभ्योऽञन्तेभ्यश्च प्रातिपदिकेभ्यः स्त्रियां ङीन् प्रत्ययो भवति। शार्ङ्गरवी। वैदी। जातिग्रहणमत्रानुवर्त्तते तेन जातिलक्षणो ङीषऽनेन बाध्यते न पुंयोगलक्षणः :—

शार्ङ्गरव। कापटव। गौगुलव। ब्राह्मण। गौतम। कामण्डलेय। ब्राह्मकृतेय। आनिचेय। आनिधेय। आशोकेय। वात्स्यायन। मौञ्जायन। कैकसेय। काव्य। शैव्य। एहि। पर्य्येहि। आश्मरथ्य। औदपान। अराल। चण्डाल। वतण्ड। भोगवद्गौरिमतोः संज्ञायाम्॥ भोगवती। गौरिमती॥ नृनरयोर्वृद्धिश्च॥ नारी। इति शार्ङ्गरवादयः॥

४१-क्रौड्यादिभ्यश्च॥ अ०॥ ४। १। ८०॥

क्रौड्यादिप्रातिपदिकेभ्यः स्त्रियां ष्यङ् प्रत्ययो भवति। अगुरूपोत्तमार्थं आरम्भः। क्रौड्या। लाड्या :—

क्रौडि। लाडि। व्याडि। आपिशलि। आपक्षिति। चौपयत। चैटयत। शैकयत। वैल्वयत। वैकल्पयत। सौधातकि॥ सूतात् युवत्याम्॥ सूत्या, युवतिः॥ भोज, क्षत्रिये॥ भोज्या, क्षत्रिया। भौरिकि। भौलिकि। शाल्मलि। शालास्थलि। कापिष्ठलि। गौकक्ष्य॥ इति क्रौड्यादयः॥

४२—अश्वपत्यादिभ्यश्च॥ अ०॥ ४। १। ८४॥

अश्वपत्यादिप्रातिपदिकेभ्यः प्राग्दीव्यतीयेष्वर्थेष्वण् प्रत्ययो भवति। पत्युत्तरपदात् प्राप्तस्य ण्यस्यापवादः। आश्वपतम्। शातपतम् :—

अश्वपति। शतपति। धनपति। गणपति। राष्ट्रपति। कुलपति। गृहपति। धान्यपति। पशुपति। धर्मपति। सभापति। प्राणपति। क्षेत्रपति। स्थानपति। यज्ञपति। धन्वपति। अधिपति। बन्धुपति। इत्यश्वपत्यादयः॥

४३-उत्सादिभ्योऽञ्॥ अ०॥ ४। १। ८६॥

उत्सादिभ्यः प्राग्दीव्यतीयेष्वर्थेष्वञ् प्रत्ययो भवति। औत्सः। औदपानः। अणस्तदपवादानां च बाधकः :—

उत्स। उदपान। विकर। विनोद। महानद। महानस। महाप्राण। तरुण। तलुन। वष्कयासे (१)॥ धेनु। पृथिवी। पंक्ति। जगती। त्रिष्टुप्। अनुष्टुप्।

(१) वष्कयशब्दादसे ऽर्थात् केवलादेवाञ्। तदन्तात्त्वणेव भवति॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनपद । भरत । उशीनर । ग्रीष्म । पीलु । कुल । उदस्थान, देशे ॥ पृष, दंशे (१) ॥ भल्लकीय । रथन्तर । मध्यन्दिन । बृहत् । महत् । सत्वन्तु (२) । कुरु । पञ्चाल । इन्द्रावसान । उष्णिक् । ककुप् । सुवर्ण । सुपर्ण । देव । ग्रीष्मादच्छन्दसि (३) ॥ इत्युत्सादयः ॥

४४—बाह्वादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ४ । १ । ९६ ॥

बाह्वादिशब्देभ्योऽपत्यसामान्ये इञ् प्रत्ययो भवति । बाहोरपत्यं बाहविः । सौमित्रिः । इत्यादि :—

बाहु । उपबाहु । विवाकु । शिवाकु । वटाकु । उपविन्दु । वृक । चूडाला । मूषिका । बलाका । भगला । छगला । ध्रुवका । धुवका । सुमित्रा । दुर्मित्रा । पुष्करसत् । अनुहरत् । देवशर्मन् । अग्निशर्मन् । कुनामन् । सुनामन् । पञ्चन् । सप्तन् । अष्टन् ॥ अमितौजसः सलोपश्च (४) ॥ उदञ्चु । शिरस् । शराविन् । क्षेमवृद्धिन् । शृङ्खलातोदिन् । खरनादिन् । नगरमर्दिन् । प्राकारमर्दिन् । लोमन् । अजीगर्त्त । कृष्ण । सलक । युधिष्ठिर । अर्जुन । साम्ब । गद । प्रद्युम्न । राम । उदङ्कः संज्ञायाम् ॥ सम्भूयोम्भसोः सलोपश्च ॥ (५) ॥ आकृतिगणोऽयम् (६) ॥ इति बाह्वादयः ॥

४५—गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्च्फञ् ॥ अ० ॥ ४ । १ । ९८ ॥

गोत्रसंज्ञकेऽपत्ये वाच्ये कुञ्जादिभ्यश्च्फञ् प्रत्ययो भवति । इञोऽपवादः । कुञ्जस्य गोत्रापत्यं कौञ्जायन्यः । कौञ्जायन्यौ । कौञ्जायनाः । स्वार्थे ञ्यस्तस्य तद्राजत्वाद्बहुषु लुक् । गोत्र इति किम् । कुञ्जस्यानन्तरापत्यं कौञ्जिः :—

कुञ्ज । ब्रध्न । शङ्ख । भस्मन् । गण । लोमन् । शठ । शाक । शाकट । शुण्डा । शुभ । विपाश । स्कन्द । स्कम्भ । शुम्भा । शिव । शुभंया । इति कुञ्जादयः ॥

---

(१) उदस्थानशब्दादेशार्थं एवाञ् । अन्यार्थेऽणेव भवति । एवमन्यत्रापि ॥

(२) अत्र सत् शब्दान्मतुप्—सत्वन्, तु, अव्ययम् । सत्वतोऽपत्यं सात्वताः ॥

(३) अत्र छन्दःशब्देन वृत्तं गृह्यते न तु वेदः । ततोऽन्यत्राञ् ॥

(४) अमितौजसोऽपत्यमामितौजिः ॥

(५) सम्भूयसोऽपत्यं साम्भूयिः । आम्भिः ॥

(६) सूत्रस्थचकारेणास्याकृतिगणत्वं बोध्यते । तेन । जाम्बिः । ऐन्द्रशर्म्मिः । आजधेनविः । आजबन्धविः । औडुलोमिः । इत्यादिष्विञ् सिद्धो भवति ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४६—नडादिभ्यः फक् ॥ अ० ॥ ४ । १ । ६६ ॥

नडादिप्रातिपदिकेभ्यो गोत्रापत्ये फक् प्रत्ययो भवति । नडस्य गोत्रापत्यं नाडायनः । चारायणः :—

नड । चर । बक । मुञ्ज । इतिक । इतिश । उपक । लमक ॥ शलङ्कु शलङ्कञ्च (१) ॥ सप्तल । वाजप्य । तिक । अग्निशर्मन् वृषगणे । प्राण । नर । सायक । दास । मित्र । द्वीप । पिङ्गर । पिङ्गल । किङ्कर । किङ्कल । कातर । कातल । काश्य । काश्यप । काव्य । अज । अमुष्य ॥ कृष्णरणौ ब्राह्मणवासिष्ठयोः (२) ॥ अमित्र । लिगु । चित्र । कुमार ॥ क्रोष्टु क्रोष्टञ्च (३) ॥ लोह । दुर्ग । स्तम्भ । शिंशपा । अग्र । तृण । शकट । सुमनस् । सुमत । मिमत । ऋच् । जत् । युगन्धर । हंसक । दण्डिन् । हस्तिन् । पंचाल । चमसिन् । सुकृत्य । स्थिरक । ब्राह्मण । चटक । बदर । अश्वक । खरप । कामुक । ब्रह्मदत्त । उदुम्बर । शोण । अलोह । दण्ड । एक । वानव्य । शावक । नाव्य । अन्वजत् । अन्तजन । इलरा । अंशक । अश्वला । अध्वरादण्डय । इति नडादयः ॥

४७—अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ् ॥ अ० ॥ ४ । १ । १०४॥

बिदादिप्रातिपदिकेभ्यो गोत्रापत्येऽञ् प्रत्ययो भवति । येऽत्र गणेऽनृषिवाचकास्तेभ्यस्त्वनन्तरापत्य एव । बिदस्य गोत्रापत्यं बैदः । पुत्रस्यानन्तरापत्यं पौत्रः । दौहित्रः :—

बिद । उर्व । कश्यप । कुशिक । भरद्वाज । उपमन्यु । किलालप । किदर्भ । विश्वानर । ऋष्टिषेण । ऋतभाग । हर्य्यश्व । प्रियक । आपस्तम्ब । कूचवार । शरद्वत् । शुनक । धेनु । गोपवन । शिग्रु । बिन्दु । भाजन । अश्वावतान । श्यामाक । श्यमाक । श्यापर्ण । हरित । किन्दास । वह्यस्क । अर्कलूष । वध्योष । विष्णुवृद्ध । प्रतिबोध । रथन्तर । रथीतर । गविष्ठिर । निषाद । मठर । मृद । पुनर्भू । पुत्र । दुहितृ । ननान्दृ । परस्त्री, परशुं च (४) ॥ किता । सम्बक । शावली । श्यायक । अलस । इति बिदादयः ॥

---

(१) शलङ्कु शब्दस्य शलङ्कादेशः । शलङ्कोऽपत्यं शालङ्कायनः ॥

(२) कृष्णस्यापत्यं कार्ष्णायनो ब्राह्मणः । राणायनो वासिष्ठः ॥

(३) क्रोष्टोरपत्यं क्रौष्टः ॥

(४) परस्त्रिया अपत्यं पारशवः

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४८—गर्गादिभ्यो यञ् ॥ अ० ॥ ४ । १ । १०५ ॥

गर्गादिभ्योऽन्तरे गोत्रापत्ये यञ् प्रत्ययो भवति । गार्ग्यः। अनन्तरापत्ये तु गार्गिरित्येव :—

गर्ग । वत्स । वाजाऽसे (१) संकृति । अज । व्याघ्रपात् । विदभृत् । प्राचीनयोग । अगस्ति । पुलस्ति । रेभ । अग्निवेश । शङ्ख । शठ । धूम । अवट । चमस । धनञ्जय । मनस । वृक्ष । विश्वावसु । जनमान । लोहित । संशित । बभ्रु । मण्डु । मक्षु । अलिगु । शङ्कु । लिगु । गुलु । मन्तु । जिगीषु । मनु । तन्तु । मनायी । भूत । कथक । कष । तण्ड । वतण्ड । कपि । कत । कुरुकत । अनडुह् । कण्व । शकल । गोकक्ष । अगस्त्य । कुण्डिन । यज्ञवल्क । उभय । जात । विरोहित । वृषगण । रहूगण । शण्डिल । वण । कचुलुक । मुद्गल । मुसल । पराशर । जतूकर्ण । मन्त्रित । संहित । अश्मरथ । शर्कराक्ष । पूतिमाष । स्थूण । अररक । पिङ्गल । कृष्ण । गोलुन्द । उलूक । तितिक्ष । भिषज् । भडित । भण्डित । दल्भ । चिकित । देवहू । इन्द्रहू । एकलू । पिप्पलू । वृदग्नि । जमदग्नि । सुलोभिन् । उकत्थ । कुटीगु ॥ इतिगर्गादयः ॥

४९—अश्वादिभ्यः फञ् ॥ अ० ॥ ४ । १ । ११० ॥

अश्वादिभ्यो गोत्रापत्ये फञ् प्रत्ययो भवति । आश्वायनः । आश्मायनः । येऽस्मिन् गणेऽपत्यैकप्रत्ययान्ताः पठ्यन्ते तेषु सामर्थ्याद्युनिप्रत्ययो विज्ञायते :—

अश्व । अश्मन् । शङ्ख । विद । पुट । रोहिण । खर्जूर । । खर्जूल । पिञ्जूर । भडिल । भण्डिल । भडित । भण्डित । भण्डिक । प्रहृत । रामोद । क्षत्र । ग्रीवा । काश । गोलाङ्क्य । अर्क । स्वन । ध्वन । पाद । चक्र । कुल । पवित्र । गोमिन् । श्याम । धूम । धूम्र । वाग्मिन् । विश्वानर । कुट । वेश । आत्रेय । नक्त । तड । नड । ग्रीष्म । अर्ह । विशम्य । विशाला । गिरि । चपल । चुनम । दासक । वैल्य । धर्म । आनडुह्य । पुंसिजात । अर्जुन । शूद्रक । सुमनस् । दुर्मनस् । क्षान्त । प्राच्य । कित । काण । चुम्प । श्रविष्ठा । वीक्ष्य । पविन्दा । कुलि । आतव । कितव । शिव । खदिर ॥ आत्रेय, भारद्वाजे । भरद्वाज, आत्रेये (२) ॥ पथ । कन्थु । शुभ । सूनु । कर्कटक । रुक्ष । तरुक्ष । तलुक्ष । प्रतुल । विलम्ब । विष्णुज । इत्यश्वादयः ॥

---

(१) असेऽसमासे वाजशब्दाद्यञ् । सुवाजस्यापत्यं सौवाजिः । अत्र यञ् न भवति ॥

(२) आत्रेयशब्दाद् भारद्वाजगोत्रे फञ् । आत्रेयायणो भारद्वाजः । भारद्वाजशब्दादात्रेयगोत्रे फञ् । भारद्वाजायन आत्रेयः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५०—शिवादिभ्योऽण् ॥ अ० ॥ ४ । १ । ११२ ॥

शिवादिभ्यः सामान्यापत्येऽण् प्रत्ययो भवति । यथाप्राप्तानामिञादीनामपवादानां च बाधकः । शिवस्यापत्यं शैवः :—

शिव । प्रोष्ठ । प्रोष्ठिक । चण्ड । भण्ड । जम्भ । मुनि । सन्धि । भूरि । कुठार । अनभिम्लान । अनभिग्लान । ककुत्स्थ । कहोड । लेख । रोध । खञ्जन । कोहड । पिष्ट । हैहय । खञ्जार । खञ्जाल । सुरोहिका । पर्ण । कहूष । परिल । वतण्ड । तृण । कर्ण । क्षीरह्रद । जलह्रद । परिषिक । जटिलिक । गोफिलिक । बधिरिका । मञ्जीरक । वृष्णिक । रेख । आलेखन । विश्रवण । रवण । वर्त्तनाक्ष । पिटक । पिटाक । तृक्षाक । नभाक । ऊर्णनाभ । जरत्कारु । उत्क्षिपा । रोहितिक । आर्य्यश्वेत । सुपिष्ट । खर्जूरकर्ण । मसूरकर्ण । तूणकर्ण । मयूरकर्ण । खडरक । तक्षन् । ऋष्टिषेण । गङ्गा । विपाशा । यस्क । लह्य । द्रुघ । अयःस्थूण । भलन्दन । विरूपाक्ष । भूमि । इला । सपत्नी ॥ द्व्यचो नद्याः ॥ त्रिवेणी, त्रिवणं च (१) । कह्वय । कबोध । परल । ग्रीवाक्ष । गोभिलिक । राजल । तडाक । वडाक । इति शिवादयः ॥

५१ – शुभ्रादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ४ । १ । १२३ ॥

शुभ्रादिप्रातिपदिकेभ्योऽपत्ये ढक् प्रत्ययो भवति । यथा प्राप्तमिञादीनामपवादः ॥ शुभ्रस्यापत्यं शौभ्रेयः :—

शुभ्र । विष्टपुर । ब्रह्मकृत । शतद्वार । शतावर । शलाका । शालाचल । शलाकाभ्रू । लेखाभ्रू । विमातृ । विधवा । कृकसा । रोहिणी । रुक्मिणी । दिशा । शालूक । अजबस्ति । शकन्धि । लक्षणश्यामयोर्वसिष्ठे (२) ॥ गोधा । कृकलास । अणीव । प्रवाहण । भरत । भारत । भारम । मृकण्डु । मघष्टु । मकष्टु । कर्पूर । इतर । अन्यतर । आलीढ । सुदत्त । सुचक्षस् । सुनामन् । कद्रु । तुद । अकशाप । कुमारिका । किशोरिका । कुवेणिका । जिह्माशिन । परिधि । वायुदत्त । ककल । खट्वर । अम्बिका । अशोका । शुद्धपिङ्गला । खडोन्मत्ता । अनुदृष्टि । जरतिन् । बलिवर्दिन् । विग्रज । वीज । श्वन् । अश्मन् । अश्व । अजिर । स्थूल । सृकण्डू । मकथु । यमष्टु । कष्टु । सृकण्ड । मृकण्ड । गुद । रुद । कुशीरिका । शकल । शबल । उग्र । अजिन ॥ इतिशुभ्रादयः ॥

(१) स्त्रीवाचकाद् द्व्यच इति सूत्रेण ढक् प्राप्तः स नदीवाचकान्नाभूत् । रेवाया अपत्यं रैवः । त्रिवेण्यास्त्रिवणादेशो विशेषः । त्रिवेण्या अपत्यं त्रैवणः ॥

(२) लक्षणस्यापत्यं लाक्षणेयो वसिष्ठः । श्यामाया अपत्यं श्यामेयो वसिष्ठः । मानुषो वाचकात् श्यामाशब्दादण् प्राप्तः सोऽनेन बाध्यते ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५२—कल्याण्यादीनामिनङ् ॥ अ० ॥ ४ । १ । १२६ ॥

कल्याणादिप्रातिपदिकेभ्योऽपत्ये ढक् प्रत्ययो भवति तस्मिन् सति इनङादेशः। कल्याण्या अपत्यं काल्याणिनेयः । सौभागिनेयः (१) । :–

कल्याणी । सुभगा । दुर्भगा । बन्धकी । अनुदृष्टि । अनुसृष्टि । जरती । बलीवर्दी । ज्येष्ठा । कनिष्ठा । मध्यमा । परस्त्री । इति कल्याण्यादयः ॥

५३—गृष्ट्यादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ४ । १ । १३६ ॥

गृष्ट्यादिप्रातिपदिकेभ्योऽपत्ये ढञ् प्रत्ययो भवति । अणादीनामपवादः। गृष्टेरपत्यं गार्ष्टेयः । :–

गृष्टि । हृष्टि । हलि । बलि । विश्रि । ुद्रि । अजबस्ति । मित्रयु । फलि । अलि । दृष्टि । इति गृष्ट्यादयः ॥

५४—रेवत्यादिभ्यष्ठक् ॥ अ० ॥ ४ । १ । १४६ ॥

रेवत्यादिभ्योऽपत्ये ठक् प्रत्ययो भवति। ढगादीनामपवादः। रेवत्या अपत्यं रैवतिकः :–

रेवती । अश्वपाली । मणिपाली । द्वारपाली । वृकवञ्चिन् । वृकग्राह । कर्णग्राह । दण्डग्राह । कुक्कुटाक्ष । वृकबन्धु । चामरग्राह । ककुदाक्ष ॥ इति रेवत्यादयः ॥

५५—कुर्वादिभ्यो ण्यः ॥ अ० ॥ ४ । १ । १५१ ॥

कुर्वादिप्रातिपदिकेभ्योऽपत्ये ण्यः प्रत्ययो भवति। कुरोरपत्यं कौरव्यः ।काव्यः:–

कुरु । गर्ग । मङ्गुष । अजमारक । रथकार । वावदूक । सम्राजः क्षत्रिये (२) कवि । मति । वाक् । पितृमत् । इन्द्रजालि । दामोष्णीषि । गणकारि । कैशोरि । कापिञ्जलादि । कुट । शलाका । मुर । एरक । अभ्र । दर्भ । केशिनी । वेनाच्छन्दसि ॥ शूर्पणाय । श्यावनाय । श्यावरथ । श्यावपुत्र । सत्यंकार । वडभीकार । शङ्कु । शाक । पथिकारिन् । मूढ । शकन्धु । कर्तृ । हर्तृ । शाकिन् । इनपिण्डी । विस्फोटक । काक । स्फाण्टक । शाकिन् । घातकि । धेनुजि । बुधिकार । वामरथस्य कण्वादिवत् स्वरवर्जम् (३ । इतिकुर्वादयः ।।

---

(१) कल्याण्यादिभ्यो ढक् तु सिद्ध आदेशार्थं वचनम् । हृद्भगसिन्ध्वन्त इत्युभयपदवृद्धिः ॥

(२) सम्राट्शब्दात् क्षत्रिये वाच्येऽण् भवति सम्राजोऽपत्यं साम्राज्यः क्षत्रियः ॥

(३) वामरथशब्दाण् ण्य प्रत्ययो भवति कण्वादिवच्च स्वरवर्जंकार्यमतिदिश्यते । कण्वादयो गर्गाद्यन्तर्गतास्तेभ्यः शैषिकोऽण् । यथा काण्वस्येमे छात्राः काण्वाः । एवं वामरथादपि शैषिकोऽण् वामरथ्यस्य छात्रा वामरथाः । बहुवचने यञ्‌वण्णोऽपि लुक् । वामरथाः । यजश्चेति ङीप् । वामरथी । इत्यादि स्वरस्त्वन्तोदात्त एव ॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५६—तिकादिभ्यः फिञ् ॥ अ० ॥ ४ ॥ १ । १५४ ॥

तिकादिप्रातिपदिकेभ्योऽपत्ये फिञ् प्रत्ययो भवति । तिकस्यापत्यं तैकायनिः । कैतवायनिः :—

तिक । कितव । संज्ञा । बाल। शिखा । उरस् । शाठ्य । सैन्धव । यमुन्द । रूप्य । ग्राम्य । नील । अमित्र । गौकक्ष्य । कुरु । देवरथ । तैतिल । औरस । कौरव्य । भौरिकि । भौलिकि । चौपयत । चैटयत । शैकयत। चैतयत ध्वाजवत । चन्द्रमस् । शुभ । गङ्गा । वरेण्य । सुयामन् । आरद्ध । वह्यका । खल्य । वृष (१) । लोमक । उदन्य । यज्ञ । ऋथ । भौत । जाजल । रस । लावक । ध्वजवद् । वसु । बसु । आबन्धका । सुपामन् ॥ इति तिकादयः ॥

५७—वाकिनादीनां कुक् च ॥ अ० ॥ ४ । १ । १५८ ॥

वाकिनादिशब्देभ्योऽपत्ये फिञ् प्रत्ययो भवति । तत्सन्नियोगेन चैषां कुगागमः वाकिनस्यापत्यं वाकिनकायनिः :—

वाकिन । गारेध । कार्कटय । काक । लङ्का ॥ चर्मिवर्मिणोर्नलोपश्च (२) । इति वाकिनादयः ॥

५८—वा०-कम्बोजादिभ्यो लुग्वचनम् ॥ ४ । १ । १७५ ॥

कम्बोजादिशब्देभ्योऽपत्ये तद्राजनि विहितस्य लुग्भवति । कम्बोजस्यापत्यं तद्राजो वा कम्बोजः :—

कम्बोज । चोल । केरल । शक । यवन । इति कम्बोजादयः ॥

५९—न प्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः ॥ अ० ॥ ४ । १ । १७८ ॥

प्राच्यक्षत्रियवाचकेभ्यो भर्गादिभ्यो यौधेयादिभ्यश्चोत्पन्नस्य तद्राजप्रत्ययस्य लुङ् न भवति । अतश्चेति प्राप्तः प्रतिषिध्यते । प्राच्य । पञ्चालानां राज्ञी पाञ्चाली । वैदेही । भार्गी । यौधेयी - :—

भर्ग । करूष । केकय । कश्मीर । साल्व । सुस्थाल । उरश । कौरव्य । इति भर्गादयः ॥ यौधेय । शौभ्रेय । शौक्रेय । ग्रावाणेय । वार्त्तेय । धार्त्तेय । त्रिगर्त्त । भरत । उशीनर । इतियौधेयादयः ॥

---

(१) फिञ् प्रत्ययसम्बंधे वृषशब्दस्य यकारान्तत्वं महाभाष्ये कृतम् । वृषस्यापत्यं वार्ष्यायणिः ॥

(२) चार्मिकायणिः वार्मिकायणिः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६०—भिक्षादिभ्योऽण् ॥ अ० ॥ ४ । २ । ३८ ॥

षष्ठी समर्थभिक्षादिशब्देभ्यः समूहार्थेऽण् प्रत्ययो भवति । अञादिबाधनार्थमण्ग्रहणम् । भिक्षाणां समूहो भैक्षम् । गार्भिणम् :—

भिक्षा । गर्भिणी । क्षेत्र । करीष । अंगार । चर्मिन् । धर्मिन् । चर्मन् । धर्मन् । सहस्र । युवति । पदाति । पद्धति । अथर्वन् । अर्वन् । दक्षिणा । भूत । विषय । श्रोत्र ॥ वृक्षादिभ्यः खण्डः (१) ॥ वृक्षखण्डः । वृक्ष । तरु । पादप । इति भिक्षादयः ।

६१—खण्डिकादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ५ । २ । ४५ ॥

खण्डिकादिभ्यः समूहार्थेऽञ् प्रत्ययो भवति । खण्डिकानां समूहः खाण्डिकम् :—

खण्डिका । वडवा ॥ क्षुद्रकमालवात्सेनासंज्ञायाम् ॥ (२) भिक्षुक । शुक । उलूक । श्वन् । युग । अहन् । वरत्रा । हलबन्ध । इति खण्डिकादयः ॥

६२—पाशादिभ्यो यः ॥ अ० ॥ ४ । २ । ४९ ॥

षष्ठीसमर्थपाशादिभ्यः समूहार्थे यः प्रत्ययो भवति । पाशानां समूहः पाश्या रज्जुः । तृण्या :—

पाश । तृण । धूम । वात । अंगार । पोत । बालक । पिटक । पिटाक । शकट । हल । नड । वन । पाटलका । गल । इति पाशादयः ॥

६३—राजन्यादिभ्यो वुञ् ॥ अ० ॥ ४ । २ । ५३ ॥

राजन्यादिप्रातिपदिकेभ्यो विषयो देश इत्येतस्मिन्नर्थे वुञ् प्रत्ययो भवति । राजन्यानां विषयो देश, राजन्यकः :—

राजन्य । देवयान । शालङ्कायन । जालन्धरायण । आत्मकामेय । अम्बरीषपुत्र । वसाति । बैल्वान । शैलूष । उदुम्बर । बैल्वबल । आर्जुनायन । संप्रिय । दाक्षि । ऊर्णनाभ । आप्रीत । षन्नीड । वैतिल । बाभ्रव (३) । इति राजन्यादयः ॥

---

(१) खण्ड शब्दः पुस्तकान्तरपठितो न सर्वत्र क्वचित्तु वृक्षादिभ्यः षण्डः । इतिपाठः । वृक्षषण्डः ॥

(२) क्षुद्राश्च मालवाश्चेति क्षत्रियद्वन्द्वः । ततः पूर्वेणैवाञिसिद्धे गोत्रवुञ् बाधनार्थं वचनम् । क्षुद्रकमालवानां समूहः क्षौद्रकमालवी सेना । सेनासंज्ञेतिनियमार्थम् । अन्यत्राञ् न भवति । क्षौद्रकमालवकम् ॥

(३) अयमाकृतिगणस्तेन मालवानां विषयो देशः, मालवकः । वैराटकः । त्रैगर्त्तकः । इत्यादयः शब्दाः सिद्धा भवन्ति ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६३—भौरिक्याद्यैषुकार्यादिभ्यो विधल्भक्तलौ ॥ अ० ॥४।२।५४॥

विषयो देश इत्येतस्मिन् विषये षष्ठीसमर्थेभ्यो भौरिक्यादिभ्य ऐषुकार्यादिभ्यश्च यथासंख्यं विधल्भक्तलौ प्रत्ययौ भवतः। अणोऽपवादः। भौरिकीणां विषयो देशः, भौरिकिविधः। ऐषुकारिभक्तः॥

भौरिकि। भौलिकि। वैपेय। चैटयत। काणेय। वाणिजक। कालिज। वालिज्यक। शैकयत। वैकयत। इति भौरिक्यादयः॥ ऐषुकारि। सारस्यायन। चान्द्रायण। द्वयाचायण। त्र्यायण। औडायन। जौलायन। खाडायन। सौवीर। दासमित्रि। दासमित्रायण। शौद्रायण। दाक्षायण। शयण्ड। तार्क्ष्यायण। शौभ्रायण। सायण्डि। शौण्डि। वैश्वमाणव। वैश्वधेनव। नद। तुण्डदेव। अलायत। भौलालायत। शौण्ड। शयाण्ड। वैश्वदेव॥ इत्यैषुकार्यादयः॥

६५—क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट् ठक्॥ अ० ॥ ४ । २ । ६० ॥

तदधीते तद्वेदेत्यस्मिन् विषये क्रतुविशेषवाचिभ्य उक्थादिभ्यः सूत्रान्ताच्च प्रातिपदिकाट् ठक् प्रत्ययो भवति। अणोऽपवादः। अग्निष्टोममधीते वेद वा, आग्निष्टोमिकः। वाजपेयिकः। औक्थिकः। वार्त्तिकसूत्रमधीते, वार्त्तिकसूत्रिकः सांग्रहसूत्रिकः :—

उक्थ। लोकायत। न्याय। न्यास। निमित्त। पुनरुक्त। निरुक्त। यज्ञ। चर्चा। धर्म। क्रमेतर। श्लक्ष्ण। संहिता। पद। क्रम। संघात। वृत्ति। संग्रह। गुणागुण। आयुर्वेद॥ द्विपदी, ज्योतिषि (१)॥ अनुपद। अनुकल्प। अनुगुण। इत्युक्थादयः॥

६६—क्रमादिभ्यो वुन्॥ अ० ॥ ४ । २ । ६१ ॥

तदधीते तद्वेदेत्यर्थे क्रमादिभ्यो वुन् प्रत्ययो भवति। क्रममधीतेऽक्रमकः पदकः:—

क्रम। पद। शिक्षा। मीमांसा। सामन्। इति क्रमादयः॥

६७—वसन्तादिभ्यष्ठक्॥ अ० ॥ ४ । २ । ६३ ॥

तदधीते तद्वेदेत्यस्मिन् विषये वसन्तादिप्रातिपदिकेभ्यष्ठक् प्रत्ययो भवति। वसन्तसहचरितो ग्रन्थो वसन्तस्तमधीते वेद वा स वासन्तिकः।वार्षिकः।एवं सर्वत्र:—

वसन्त। वर्षा। शरद्। हेमन्त। शिशिर। प्रथम। गुण। चरम। अनुगुण। अपर्वन्। अथर्वन्॥ इतिवसन्तादयः॥

(१) द्विपदीं ज्योतिःशास्त्रमधीते जानाति वा स द्वैपदिकः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६८—संकलादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ४ । २ । ७५ ॥

संकलादिप्रातिपदिकेभ्यश्चातुर्थिकोऽञ् प्रत्ययो भवति । अणोऽपवादः । पुष्कला अस्मिन् सन्तीति पौष्कलो देशः । सिकताया अदूरभवो ग्रामः सैकतः । यथा सम्भवमर्थसंबन्धः :—

संकल । पुष्कल । उद्दय । उडुप । उत्पुट । कुम्भ । विधान । सुदक्ष । सुदत्त । सुभूत । सुनेत्र । सुपिङ्गल । सिकता । पूतीकी । पूलास । कूलास । पलाश । निवेश । गवेश । गम्भीर । इतर । शर्मन् । अहन् । लोमन् । वेमन् । वरुण । बहुल । सद्योज । अभिषिक्त । गोभृत् । राजभृत् । गृह । भृत । भल्ल । माल । (वृत्) इति संकलादयः ॥

६९—सुवास्त्वादिभ्योऽण् ॥ अ० ॥ ४ । २ । ७७ ॥

सुवास्त्वादिप्रातिपदिकेभ्यश्चातुरर्थिकोऽण् प्रत्ययो भवति । अञोपवादः । सुवास्तोरदूरं नगरं, सौवास्तवम् । सौवास्तवी । नदी :—

सुवास्तु । वर्णु । भण्डु । खण्डु । कण्डु । सेचालिन् । कर्पूरिन् । शिखण्डिन् । गर्त्त । कर्कश । शटीकर्ण । कृष्ण । कर्क । कर्कन्धूमती । गोह्य । गाहि । अहिसक्थ । (वृत्) इति सुवास्त्वादयः ॥

७०—वुञ्छण्कठजिलसेनिरढञ्ण्ययफक्फिञिञ्ञ्यकक्ठकोऽरीहणकृशाश्वर्श्यकुमुदकाशतृणप्रेक्षाश्मसखिसंकाशबलपक्षकर्णसुतङ्गमप्रगदिन्वराहकुमुदादिभ्यः ॥ अ० ॥ ४ । २ । ८० ॥

अरीहणादिसप्तदशगणस्थप्रातिपदिकेभ्यश्चातुरर्थिका वुञादयः सप्तदशैव प्रत्यया यथासंख्येन भवन्ति । आदिशब्दः प्रत्येकमभिसंबध्यते । यथासम्भवमर्थसम्बन्धः । अरीहणादिभ्यो वुञ् । शिरीषाणामदूरभवो ग्रामः शैरीषकः । अरीहणानां निवासो देश आरीहणकः :—

अरीहण । द्रुघण । खदिर । सार । भगल । उलन्द । सांपरायण । क्रौष्ट्रायण । भास्त्रायण । मैत्रायण । त्रैगर्त्तायन । रायस्पोष । विपथ । उद्दण्ड । उदञ्चन । खाडायन । खण्ड । वीरण । काशकृत्स्न । जाम्बवन्त । शिंशपा । किरण । रैवत । बैल्व । वैमतायन । सैमतायण । सौसायन । शाण्डिल्यायन । शिरीष । बधिर । वैगर्त्तायण । गोमतायण । सौमतायण । खाण्डायण । विपाश । सुयज्ञ । जम्बु । सुशर्म्म । इत्यरीहणादयः ॥ कृशाश्वादिभ्यश्छण् । कार्शाश्वीयः । अरिष्टेन निर्वृत्तमारिष्टीयम् :—

कृशाश्व । अरिष्ट । अरीश्व । वेश्मन् । विशाल । रोमक । शबल । कूट । रोमन् । वर्वर । सुकर । सूकर । प्रतर । सदृश । पुरग । सुख । धूम । अजिन ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनता । वनिता । अवनत । विकुघास । अरुस् । अवयास । अयावस् । मौद्गल्य । इति अश्मादयः ॥ ऋश्यादिभ्यः कः ॥ न्यग्रोधानामदूरभवं वनं न्यग्रोधकम् :–

ऋश्य । न्यग्रोध । शिरा । निलीन । निवास । निधान । निवात । निबद्ध । विबद्ध । परिगूढ । उपगूढ । उत्तराश्मन् । स्थूलबाहु । खदिर । शर्करा । अनडुह् । परिवंश । वेणु । वीरण । खण्ड । परिवृत्त । कर्दम । अंशु । इति ऋश्यादयः ॥ कुमुदादिभ्यष्ठच् ॥ बल्वजाः सन्त्यस्मिन् स बल्वजिको देशः :—

कुमुद । शर्करा । न्यग्रोध । उत्कट । इत्कट । गर्त्त । बीज । अश्वत्थ । बल्वज । परिवाप । शिरीष । यवाष । कूप । विकङ्कत । कण्टक । कङ्कट । संकट । पलाश । त्रिक । कत । दशग्राम । इति कुमुदादयः ॥ काशादिभ्य इलः । काशाः सन्ति यत्र स काशिलो देशः :–

काश । वाश । अश्वत्थ । पलाश । पीयूष । विश । विस । तृण । नर । चरण । कर्द्दम । कर्पूर । कण्टक । गुह । आवास । नड । वन । बधूल । बर्बर । इति काशादयः ॥ तृणादिभ्यः शः ॥ तृणानि यत्र सन्ति स तृणशो देशः :—

तृण । नड । बुस । पर्ण । वर्ण । चरण । अर्ण । जन । बल । लव । वन । इति तृणादयः ॥ प्रेक्षादिभ्यः इनिः । प्रेक्षयानिर्वृत्तः प्रेक्षी :—

प्रेक्षा । हलका । फलका । बन्धुका । ध्रुवका । क्षिपका । न्यग्रोध । इर्कुट । बुधका । संकट । कूपका । कर्कटा । सुकटा । मङ्कट । सुक । महा । इति प्रेक्षादयः॥ अश्मादिभ्योरः । अश्मना निर्वृत्तः, अश्मरः :–

अश्मन् । यूष । रूष । मीन । दर्भ । वृन्द । गुड । खण्ड । नग । शिखा । यूथ । रुष । नद । नख । काट । पाम । इत्यश्मादयः ॥ सख्यादिभ्यो ढञ् । सखायः सन्त्यत्र साखेयो देशः :–

सखि । सखिदत्त । वायुदत्त । गोहित । गोहिल । भल्ल । पाल । चक्रपाल । चक्रवाल । छगल । अशोक । करवीर । सीकर । सकर । सरस । समल । चर्क । वक्रपाल । उशीर । सुरस । रोह । तमाल । कदल । सप्तल । इति सख्यादयः ॥

संकाशादिभ्यो ण्यः । सांकाश्यम् । काम्पिल्यस्यादूरभवो ग्रामः काम्पिल्यः :–

संकाश । काम्पिल्य । समीर । कश्मर । शूरसेन । सुपथिन् । सक्थच । यूप । अंश । राग । अश्मन् । कूट । मलिन । तीर्थ । अगस्ति । विरत । चिकार । विरह । नासिका । इति संकाशादयः ॥ बलादिभ्यो यः प्रत्ययः । बलेन निर्वृत्तो बल्यः :–

बल । वुल । तुल । डल । डुल । कवल । वन । कुल । इति बलादयः ॥ पक्षादिभ्यः फक् प्रत्ययः । पक्षेण निर्वृत्तः पाक्षायणः :–

पक्ष । तुष । अण्ड । कम्बलिक । चित्र । अश्मन् । अतिस्वन् ॥ पथिन्, पन्थच (१) ॥ कुम्भ । सीरज । सीरक । सरक । सलक । सरस । समल । रोमन् ।

(१) पथोऽदूरभवं वनं पान्थायतनम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोमन् । हंसका । लोमक । सकण्टक । अस्तिबल । यमल । हस्त । सिंहक । इति पक्षादयः ॥ कर्णादिभ्यः फिञ् प्रत्ययः । कर्णस्य निवासः कार्णायनिः :—

कर्ण । वसिष्ठ । अलुश । शल । द्रुपद । अनडुह्य । पाञ्चजन्य । स्थिरा । कुलिश । कुम्भी । जीवन्ती । जित्व । आण्डीवत् । अर्क । लूष । स्फिक् । ग्रावत् । इतिकर्णादयः ॥ सुतङ्गमादिभ्य इञ् प्रत्ययो भवति । सुतङ्गमेन निर्वृत्तः सौतङ्गमिः

सुतङ्गम । मुनिचित्त । विप्रचित्त । महापुत्र । श्वेत । गडिक । शुक्र । विग्र । बीजवापिन् । श्वन् । अर्जुन । अजिर । जीव । इति सुतङ्गमादयः ॥ प्रगदिन्नादिभ्यो ञ्यः प्रत्ययो भवति । प्रगदिनो यत्र सन्ति स प्रागद्यो देशः :—

प्रगदिन् । मगदिन् । शरदिन् । कलिव । खडिव । गडिव । चूडार । मार्जार कोविदार ॥ इति प्रगदिन्नादयः ॥ वराहादिभ्यः कक् प्रत्ययः । वराहाः सन्ति-यत्र स वाराहको देशः । पालाशकः :—

वराह । पलाश । शिरीष । पिनद्ध । स्थूण । विदग्ध । विजग्ध । विभग्न । बाहु । खदिर । शर्करा । विनद्ध । निबद्ध । विरुद्ध । मूल । इतिवराहादयः॥ कुमुदादिभ्यष्ठक् प्रत्ययो भवति । कुमुदाः सन्ति यस्मिन् देशे स कौमुदिको देशः :—

कुमुद । गोमथ । रथकार । दशग्राम । अश्वत्थ । शाल्मली । कुण्डल । मुनिस्थूल । कूट । मुचुकर्ण । कुन्द । मधुकर्ण । शुचिकर्ण । शिरीष । इति कुमुदादयः ॥

७१—वरणादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ४ । २ । ८२ ॥

वरणादिप्रातिपदिकेभ्य उत्पन्नस्य चातुरर्थिकप्रत्ययस्य लुप् भवति वरणानाम-दूरभवं नगरं वरणाः :—

वरणाः । पूर्वागोदौ । पूर्वेणगोदौ । अपरेणगोदौ । आलिङ्ग्यायन । पर्णी । शृङ्गी । शल्मलयः । सदाण्वी । वणिकि । वणिक् । जालपद । मथुरा । उज्जयिनी । गया । तक्षशिला । उरशा । आक्रत्या (१) । इति वरणादयः ॥

७२—मध्वादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ४ । २ । ८६ ॥

मध्वादिशब्देभ्यश्चातुरर्थिको मतुप्प्रत्ययो भवति । मध्वस्मिन्नस्तीतिमधुमान् :—

मधु । बिस । स्थाणु । मुष्टि । इष्टि । इक्षु । वेणु । रम्य । ऋक्ष । कर्कन्धुशमी । किरीर । हिम । किशरा । शर्पणा । मरुत् । मरुव । दार्वाघाट । शर । इष्टका । तक्षशि-ला । शक्ति । आसन्दी । आसुति । शलाका । आमिधी । खडा । वेटा । इति मध्वादयः ॥

(१) अत्र सूत्रस्थचकारेणाकृतिगणत्वं बुध्यते । तेन कटुकबदर्या अदूरभवो ग्रामः कटुकबदरी । शिरीषाः । काञ्ची इत्यादिषु लुप् सिद्धो भवति ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७३—उत्करादिभ्यश्छः ॥ अ० ॥ ४ । २ । ९० ॥

उत्करादिप्रातिपदिकेभ्यश्चातुरर्थिकश्छः प्रत्ययो भवति । यथासंभवमर्थसंबन्धः ॥ अर्काणामदूरभवो ग्रामः, अर्कीयः :-

उत्कर । संफल । शंकर । शफर । पिप्पल । पिप्पलीमूल । अश्मन् । अर्क । पर्ण । सुपर्ण । खलाजिन । इडा । अग्नि । तिक । कितव । आतप । अनेक । पलाश । तृणव । पिचुक । अश्वत्थ । शकाचुद्र । भस्त्रा । विशाला । अवरोहित । गर्त्त । शाल । अन्य । जन्या । अजिन । मञ्च । चर्मन् । उत्क्रोश । शान्त । खदिर । शूर्पणाय । श्यावनाय । नैव । बक । नितान्त । वृच । इन्द्रवृच । आर्द्रवृच । अर्जुनवृच । इत्युत्करादयः ॥

७४—नडादीनां कुक् च ॥ अ० ॥ ४ । २ । ९१ ॥

नडादिप्रातिपदिकेभ्यश्चातुरर्थिकश्छः प्रत्ययो भवति तस्मिन् सति कुगागमश्च । यथासंभवमर्थसंबंधः । नडाः सन्ति यत्र तन्नडकीयं वनम् :-

नड । प्लच । बिल्व । वेणु । वेत्र । वेतस । तृण । इच्चु । काष्ठ । कपोत । क्रुञ्चाया ह्रस्वत्वं च (१) ॥ तक्षन्नलोपश्च ॥ इति नडादयः ॥

७५—कत्त्र्यादिभ्यो ढकञ् ॥ अ० ॥ ४ । २ । ९५ ॥

कत्त्र्यादिशब्देभ्यः शेषार्थे ढकञ् प्रत्ययो भवति । कत्त्रौ भवः कात्त्रेयकः :-

कत्त्रि । उम्भि । पुष्कर । पुष्कल । मोदन । कुम्भी । कुण्डिन । नगर । वञ्जी । भक्ति । माहिष्मती । चर्मण्वती । वर्मती । ग्राम । उख्या । कुल्याया यलोपश्च (२) ॥ इति कत्त्र्यादयः ॥

७६—नद्यादिभ्यो ढक् ॥ अ० ॥ ४ । २ । ९७ ॥

नद्यादिभ्यः प्रातिपदिकेभ्यः शैषिको ढक् प्रत्ययो भवति । नद्यां भवं नादेयम् :-

नदी । मही । वाराणसी । श्रावस्ती । कौशाम्बी । नवकौशाम्बी । काशफरी । खादिरी । पूर्वनगरी (३) । पावा । मावा । साल्वा । दार्वा । दाल्वा । वासेनकी । वडवाया वृषे ॥ इति नद्यादयः ॥

---

(१) क्रुञ्चाः सन्त्यस्मिन् तत् क्रुञ्चकीयं वनम् । तक्षकीयो ग्रामः ॥

(२) कुल्यां भवः कौलेयकः । यकारलोपः ॥

(३) पूर्वनगर्यां भवः पौर्वनगरेयः । अत्र—पूः । वन । गिरि । इतिपाठान्तरम् । तदा—पौरेयम् । वानेयम् । गैरेयमिति विभक्तं रूपत्रयं सिध्यति ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७७—प्रस्थोत्तरपदपलद्यादिकोपधादण् ॥ अ० ॥ ४ ।२।११० ॥

प्रस्थोत्तरपदात् पलद्यादिभ्यः कोपधाच्च प्रातिपदिकादण् प्रत्ययो भवति शैषिकः। मद्रीप्रस्थे भवो माद्रीप्रस्थः । माहकीप्रस्थः । पलद्यां भवः पालदः । पारिषदः । कोपधात् । नैलीनकः । :-

पलदी । परिषत् । यकृल्लोमन् । रोमक । कालकूट । पटच्चर । वाहीक । कलकीट । मलकीट । कमलकीट । कमलभिदा । कमलकीर । बाहुकीट । नैतकी । परिखा । शूरसेन । गोमती । उदपान । पच्च । कललकीट । कललकीकटा । गोष्ठी । नैधिकी । नैकेती । सकृल्लोमन् । इति पलद्यादयः ॥

७८-कण्वादिभ्यो गोत्रे ॥ अ० ॥ ४ । २ । १११ ॥

गोत्रप्रत्ययान्तकण्वादिप्रातिपदिकेभ्यः शैषिकोऽण् प्रत्ययो भवति । काण्व्यस्येमे काण्वाश्छात्राः । गर्गाद्यन्तर्गताः कण्वादयः । अतएवात्र न लिख्यन्ते ॥

७९—काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ ॥ अ० ॥ ४ । २ । ११६ ॥

काश्यादिप्रातिपदिकेभ्यः शैषिकौ ठञ्ञिठौ प्रत्ययौ भवतः। प्रत्यययोर्ञकारविपर्ययभेदात् स्त्रीप्रत्यये विशेषः । ठञन्तान् ङीप् ञिठान्तात् तु टावेव भवति । काश्यां भवः काशिकः । काशिकी । काशिका :—

काशि । चेदि । वैदि । संज्ञा। संवाह। अच्युत । मोहमान । शकुलाद । हस्तिकर्षू । कुदामन् । कुनामन् । हिरण्य। करण। गोधाशन । भौरिकि । भौलिङ्गि । अरिन्दम । सर्वमित्र । देवदत्त । साधुमित्र । दासमित्र । दासग्राम । सौधावतान । युवराज । उपराज । सिन्धुमित्र । देवराज । आपदादिपूर्वपदान्तात् कालान्तात्॥ आपत्कालिकी । आपत्कालिका । और्ध्वकालिकी । और्ध्वकालिका । तात्कालिकी । तात्कालिका । इति काश्यादयः ॥

८०—धूमादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ४ । २ । १२७ ॥

देशवाचिभ्यो धूमादिप्रातिपदिकेभ्यः शैषिको वुञ् प्रत्ययो भवति । अणोऽपवादः धूमे भवो धौमकः :-

धूम । खण्ड । खडण्ड । शशादन। आर्जुनाद । दाण्डायनस्थली । माहकस्थली घोषस्थली । माषस्थली । राजस्थली । राजगृह । सत्रासाह। भक्षास्थली । मद्रकूल गर्त्तकूल । आञ्जीकूल । द्वग्राहाव । त्रग्राहाव । संहीय । वर्वर । वर्चगर्त्त । विदेह। आनर्त्त । माठर । पाथेय । घोष । शिष्य । मित्र । वल । आराज्ञी । धार्त्तराज्ञी ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवयात । तीर्थ । कूलात्सौवीरेषु ॥ समुद्रान्नावि मनुष्ये च (१) ॥ कुक्षि । अन्तरीप । द्वीप । अरुण । उज्जयिनी । दक्षिणापथ । साकेत । मानवल्ली । वल्ली । सुराष्ट्री । इति धूमादयः ॥

८१—कच्छादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ४ । २ । १३३ ॥

कच्छादिदेशवाचिप्रातिपदिकेभ्यः शैषिकोऽण् प्रत्ययो भवति । वुञादेरपवादः । कच्छे भवः काच्छः :—

कच्छ । सिन्धु । वर्णु । गन्धार । मधुमत् । कम्बोज । कश्मीर । साल्व । कुरु । रङ्कु । अणु । अण्ड । खण्ड । द्वीप । अनूप । अजवाह । विजापक । कुलून । इति कच्छादयः ॥

८२—गहादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ४ । २ । १३८ ॥

गहादिप्रातिपदिकेभ्यः शैषिकश्छः प्रत्ययो भवति अणञोरपवादः । अन्तःस्थे भव अन्तःस्थीयः :—

गह । अन्तःस्थ । सम । विषम । मध्यमध्यमं चाण् चरणे (२) उत्तम । अङ्ग । वङ्ग । मगध । पूर्वपक्ष । अपरपक्ष । अधमशाख । उत्तमशाख । समानशाख । एकग्राम । एकवृक्ष । एकपलाश । इष्वग्र । इष्वनीक । अवस्यन्दी । अवस्कन्द । कामप्रस्थ । खाडायनि । खाण्डायनी । कावेरणि । कामवेरणि । शैशिरि । शौङ्गि । आसुरि । आहिंसि । आमिचि । व्याडि । वैदजि । भौजि । आढ्यश्वि । आनृशंसि । सौवि । पारकि । अग्निशर्मन् । देवशर्मन् । श्रौति । आरटकि । वाल्मीकि । क्षेमवृद्धिन् । उत्तर । अन्तर ॥ मुखपार्श्वतसोर्लोपः ॥ जनपरयोः कुक् च ॥ देवस्य च ॥ वेणुकादिभ्यश्छण् (३) ॥ इति गहादयः ॥

---

(१) समुद्रशब्दान्नावि मनुष्ये च वाच्ये वुञ् । समुद्रे भवा सामुद्रिका नौः । सामुद्रको मनुष्यः । अन्यत्र सामुद्रं जलम् ॥

(२) अस्यैव सूत्रस्य शेषवार्त्तिकप्रमाणेन पृथिवीमध्यशब्दस्य मध्यमादेशश्चरणेऽभिधेये निवासलक्षणोऽण् प्रत्ययः । अन्यत्र तु छ एव । पृथिवीमध्ये निवास एषां ते माध्यमाश्चरणाः । चरणादन्यत्र । मध्ये भवो मध्यमीयः ॥

(३) मुखपार्श्वयोस्तसन्तयोरन्त्यलोपः । मुखतो भवं मुखतीयम् । पार्श्वतीयम् । जने भवो जनकीयः । परकीयः । देवो भक्तिरस्य देवकीयः । वेणुकादिराकृतिगणः । वेणुकदेशे भवो वेणुकीयः । वैरणकीयः । पालाशकीयः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८३—सन्धिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण् ॥ अ० ॥ ४ । ३ । १६ ॥

सन्धिवेलादिभ्य ऋतुभ्यो नक्षत्रेभ्यश्च कालवाचिभ्यः प्रातिपदिकेभ्यः शैषिकोऽण् प्रत्ययो भवति । ठञोऽपवादः । अण्ग्रहणं वृद्धाच्छस्य बाधनार्थम् । सन्धिवेलायां जातः सान्धिवेलः । ग्रैष्मः । तैषः । पौषः :—

सन्धिवेला । सन्ध्या । अमावास्या । त्रयोदशी । चतुर्दशी । पंचदशी । पौर्णमासी । प्रतिपत् ॥ संवत्सरात् फलपर्वणोः ॥ सांवत्सरं फलम् । सांवत्सरं पर्व ॥ इति सन्धिवेलादयः ॥

८४—दिगादिभ्यो यत् ॥ अ० ॥ ४ । ३ । ५४ ॥

सप्तमीसमर्थदिगादिप्रातिपदिकेभ्यो भवार्थे यत् प्रत्ययो भवति । अणश्छस्य चापवादः । दिशि भवं दिश्यम् :—

दिश । वर्ग । पूग । गण । पक्ष । धाय्या । मित्र । मेधा । अन्तर । पथिन् । रहस् । अलीक । उखा । साक्षिन् । आदि । अन्त । मुख । जघन (१) । मेघ । यूथ । उदकात्संज्ञायाम् (२) न्याय । वंश । अनुवंश । विश । काल । अप् । आकाश । इति दिगादयः ॥

८५—वा०—ञ्यप्रकरणे परिमुखादिभ्य उपसंख्यानम् ॥४।३।५८॥

अव्ययीभावसंज्ञकेभ्यः परिमुखादिप्रातिपदिकेभ्यो ञ्यप्रत्ययो भवति । नियमार्थं वार्त्तिकमिदम् । सूत्रेण सामान्याव्ययीभावाद् ञ्यः प्राप्तो नियम्यते । परिमुखं भवं पारिमुख्यम् । पारिहनव्यम् । नियमादिह न भवति । उपकूलं भवमौपकूलम् :—

परिमुख । परिहनु । पर्योष्ठ । पर्युलू । औपमूल । खल । परिसीर । अनुसीर । उपसीर । उपस्थल । उपकलाप । अनुपथ । अनुखड्ग । अनुतिल । अनुशीत । अनुमाष । अनुयव । अनुयूप । अनुवंश । अनुखड्ग । इति परिमुखादयः ॥

८६—वा०—अध्यात्मादिभ्यश्च ॥ ४ । ३ । ६० ॥

अध्यात्मादिभ्यो भवार्थे ठञ् प्रत्ययो भवति । अध्यात्मं भवमाध्यात्मिकम् :—

अध्यात्म । अधिदेव । अधिभूत । आकृतिगणोऽयम् । इत्यध्यात्मादयः ॥

---

(१) मुखजघनशब्दाभ्यां शरीरावयवत्वादेव यति सिद्धे पुनरत्र दिगादिषु पाठोऽशरीरावयवार्थः । सेनामुखे भवः सेनामुख्यम् । सेनाजघन्यम् । सेनाया अग्रपश्चाद्भागौ गृह्येते । तदन्तविधिना यत् ॥

(२) उदके भवा उदक्या रजस्वला । संज्ञाग्रहणादिह न भवति । उदके भव औदको मत्स्यः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८७—अण् ऋगयनादिभ्यः ॥ अ० ॥ ४ । ३ । ७३ ॥

षष्ठीसप्तमीसमर्थेभ्य ऋगयनादिप्रातिपदिकेभ्यो भवव्याख्यानयोरर्थयोरण् प्रत्ययो भवति। ऋगयने भवमार्गयनः। तस्य व्याख्यानो वा। अण्ग्रहणं बाधकबाधनार्थम् वास्तुविद्याया व्याख्यानो ग्रन्थो वास्तुविद्यः। अत्र ठक् प्रत्ययो माभूत् :—

ऋगयन। पदव्याख्यान। छन्दोमान। छन्दोभाषा। छन्दोविचिति। न्याय। पुनरुक्त। व्याकरण। निगम। वास्तुविद्या। अङ्गविद्या। क्षत्रविद्या। उत्पात। उत्पाद। संवत्सर। मुहूर्त्त। निमित्त। उपनिषद्। शिक्षा। छन्दोविजिनी। व्याय। निरुक्त। विद्या। उद्याव। भिक्षा। इति, ऋगयनादयः॥

८८—शुण्डिकादिभ्योऽण् ॥ अ० ॥ ४ । ३ । ७६ ॥

पंचमीसमर्थशुण्डिकादिप्रातिपदिकेभ्य आगतार्थेऽण् प्रत्ययो भवति। शुण्डिकादागतः शौण्डिकः :—

शुण्डिक। कृकण। स्थण्डिल। उदपान। उपल। तीर्थ। भूमि। तृण। पर्ण। इति शुण्डिकादयः॥

८९—शण्डिकादिभ्यो ञ्यः ॥ अ० ॥ ४ । ३ । ९२ ॥

प्रथमासमर्थशण्डिकादिप्रातिपदिकेभ्योऽभिजन ऽभिधेये ञ्यः प्रत्ययो भवति शण्डिकोऽभिजनोऽस्य स शाण्डिक्यः :—

शण्डिक। सर्वकेश। सर्वसेन। शक। सट। रक। शङ्ख। बोध। इति शण्डिकादयः॥

९०—सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ ॥ अ० ॥ ४ । ३ । ९३ ॥

प्रथमासमानाधिकरणेभ्यः सिन्ध्वादिभ्यस्तक्षशिलादिभ्यश्चाभिजनेऽर्थे यथासंख्यमणञौ प्रत्ययौ भवतः। सिन्धुरभिजनोऽस्य स सैन्धवः। तक्षशिलाऽभिजनोऽस्य स ताक्षशिलः। प्रत्ययभेदः स्वरभेदार्थः :—

सिन्धु। वर्णु। गन्धार। मधुमत्। कम्बोज। कश्मीर। साल्व। किष्किन्धा। गब्दिका। उरस। दरत्। कुलून। दिरसा। इति सिन्ध्वादयः॥

तक्षशिला। वत्सोद्धरण। कौमेदुर। काण्डवारण। ग्रामणी। सरालक। कंस। किन्नर। संकुचित। सिंहकोष्ठ। कर्णकोष्ठ। बर्बर। अवसान। इतितक्षशिलादयः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९१—शौनकादिभ्यश्छन्दसि ॥ अ० ॥ ४ । ३ । १०६ ॥

तृतीयासमर्थशौनकादिप्रातिपदिकेभ्यश्छन्दसि वेदे प्रोक्तार्थे णिनिः प्रत्ययो भवति। छाणोरपवादः । शौनकेन प्रोक्तमधीयते, शौनकिनः । वाजसनेयिनः । छन्दसीति किम् । शौनकीया शिक्षा । अथ छन्द एव भवति :—

शौनक । वाजसनेय । साङ्गरव । शाङ्गरव । सांपेय । शाखेय । खाडायन । स्कन्द । स्कन्ध । देवदत्तशठ । रज्जुकण्ठ । रज्जुभार । कठशाड । कशाय । तलवकार । पुरुषासक । अश्वपेय । स्कम्भ । इति शौनकादयः ॥

९२—कुलालादिभ्यो वुञ् ॥ अ० ॥ ४ । ३ । ११८ ॥

तृतीयासमर्थकुलालादिप्रातिपदिकेभ्यो वुञ् प्रत्ययो भवति। कृतमित्येतस्मिन्नर्थे संज्ञायां गम्यमानायाम् । कुलालेन कृतं कौलालकम् । वारुडकम् :—

कुलाल । वरुड । चण्डाल । निषाद । कर्मार । सेना । सिरिध्र । सैन्द्रिय । देवराज । परिषत् । वधू । रुरु । ध्रुव । रुद्र । अनडुह् । ब्रह्मन् । कुम्भकार । श्वपाक । इति कुलालादयः ॥

९३—बिल्वादिभ्योऽण् ॥ अ० ॥ ४ । ३ । ११६ ॥

षष्ठीसमर्थबिल्वादिप्रातिपदिकेभ्यो विकारावयवयोरर्थयोरण् प्रत्ययो भवति बिल्वस्य विकारोऽवयवो वा बैल्वः :—

बिल्व । व्रीहि । काण्ड । मुद्ग । मसूर । गोधूम । इक्षु । वेणु । गवेधुका (१) कर्पासी । पाटली । कर्कन्धू । कुटीर ॥ इति बिल्वादयः ॥

९४—पलाशादिभ्यो वा ॥ अ० ॥ ४ । ३ । १४१ ॥

पलाशादिप्रातिपदिकेभ्यो विकारावयवयोरञ् प्रत्ययो भवति । पलाशस्य विकारः पालाशम् । खादिरम् :—

पलाश । खदिर । शिंशपा । स्यन्दन । करीर । शिरीष । यवास । विकङ्कत । इति पलाशादयः ॥

९५—नित्यं वृद्धशरादिभ्यः ॥ अ० ॥ ४ । ३ । १४४ ॥

वृद्धेभ्यः शरादिभ्यश्च प्रादिपदिकेभ्यो भक्ष्याच्छादनयोर्विकारावयवयोर्भाषायां विषये नित्यं मयट् प्रत्ययो भवति। वृद्ध—आम्रमयम् । शालमयम् । शरमयम् । दर्भमयम् :—

शर । दर्भ । मृत् । कुटी । तृण । सोम । बल्वज । इति शरादयः ॥

(१) अस्माल्लोपधाच्चेत्यपि सिद्धे पुनःपाठो मयड्बाधनार्थः एतस्मिन् पक्षेऽपि मयण् माभूदिति ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९६—तालादिभ्योऽण् ॥ अ० ॥ ४।३।१५२ ॥

तालादिप्रातिपदिकेभ्यो विकारावयवयोरण् प्रत्ययो भवति। तालस्य विकारः तालं धनुः। अन्यत्र तालमयम्। इत्थन्त्वात्मयट् :—

तालाद्धनुषि। बार्हिण। इन्द्रालिश। इन्द्रादृश। इन्द्रायुध। चाप। श्यामाक। पीयुक्षा॥ इति तालादयः॥

९७—प्राणिरजतादिभ्योऽञ् ॥ अ० ॥ ४।३।१५४ ॥

प्राणिवाचिभ्यो रजतादिभ्यश्च प्रातिपदिकेभ्यो विकारावयवयोरञ् प्रत्ययो भवति। कपोतस्य विकारः कापोतम्। राजतम् :—

रजत। सीस। लोह। उदुम्बर। नीच। नील। दारु। रोहितक। बिभीतक। कपीत। दारु। तीव्रदारु। त्रिकण्टक। कण्टकार। इति रजतादयः॥

९८—प्लक्षादिभ्योऽण् ॥ अ० ॥ ४।३।१६४ ॥

प्लक्षादिप्रातिपदिकेभ्यो विकारावयवत्वेन विवक्षिते फलेऽभिधेयेऽण् प्रत्ययो भवति। प्लक्षस्य विकारः प्लाक्षम् नैयग्रोधम् :—

प्लक्ष। न्यग्रोध। अश्वत्थ। इङ्गुदी। शिग्रु। कर्कन्धु। कर्कन्तु। रुरुक। बृहती। काच। तुरुक॥ इति प्लक्षादयः॥

९९—हरीतक्यादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ४।३।१६७ ॥

हरीतक्यादिप्रातिपदिकेभ्यः फलेऽभिधेये प्रत्ययस्य लुब् भवति। लुकि प्राप्ते लुपो विधानं युक्तवद्भावार्थम्। हरीतक्याः फलं हरीतकी। हरीतक्याः फलानि हरीतक्यः (१) :—

हरीतकी। कोशातकी। नखरजनी। नखरजनी। शष्कण्डी। शाकण्डी। दाडी। दोडी। दडी। श्वेतपाकी। अर्जुनपाकी। काला। द्राक्षा। ध्वाङ्क्षा। गर्गरिका। कण्टकारिका। शेफालिका॥ इति हरीतक्यादयः॥

१००—पर्पादिभ्यः ष्ठन् ॥ अ० ॥ ४।४।१० ॥

पर्पादिभ्यश्चरतीत्यर्थे ष्ठन् प्रत्ययो भवति। षकारो ङीषर्थः। पर्पेण चरति, पर्पिकः। पर्पिकी :—

पर्प। अश्व। अश्वत्थ। रथ। जाल। न्यास। व्याल॥ पादः पच्च॥ पदिकः॥ इति पर्पादयः॥

(१) हरीतक्यादिषु व्यक्तिर्भवति युक्तवद्भावेनेति वार्त्तिकेन लिङ्गस्यैव युक्तवद्भावो न तु वचनस्य॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०१—वेतनादिभ्यो जीवति ॥ अ० ॥ ४ । ४ । १२ ॥

तृतीयासमर्थवेतनादिप्रातिपदिकेभ्यो जीवतीत्यर्थे ठक् प्रत्ययो भवति । वेतनेन जीवति, वैतनिकः :—

वेतन । वाह । अर्द्धवाह । धनुर्दण्ड (१) । जाल । वेस । उपवेस । प्रेषण । उपस्ति । सुख । शय्या । शक्ति । उपनिषत् । उपवेष । स्रक् । पाद । उपस्थान । इति वेतनादयः ॥

१०२—हरत्युत्सङ्गादिभ्यः ॥ अ० ॥ ४ । ४ । १५ ॥

तृतीयासमर्थोत्सङ्गादिप्रातिपदिकेभ्यो हरतीत्यर्थे ठक् प्रत्ययो भवति । उत्सङ्गेन हरति, औत्सुङ्गिकः :—

उत्सङ्ग । उडुप । उत्पत । पिटक । उडप । पिटाक । इत्युत्सङ्गादयः ॥

१०३—भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् ॥ अ० ॥ ४ । ४ । १६ ॥

भस्त्रादितृतीयासमर्थप्रातिपदिकेभ्यो हरतीत्यर्थे ष्ठन् प्रत्ययो भवति । भस्त्रया हरति, भस्त्रिकः । भस्त्रिकी :—

भस्त्रा । भरट । भरण । भारण । शीर्षभार । शीर्षेभार । अंसभार । अंसेभार । इति भस्त्रादयः ॥

१०४—निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः ॥ अ० ॥ ४ । ४ । १९ ॥

अक्षद्यूतादितृतीयासमर्थप्रातिपदिकेभ्यो निर्वृत्तेऽर्थे ठक् प्रत्ययो भवति । अक्षद्यूतेन निर्वृत्तम्, आक्षद्यूतिकं वैरम् :—

अक्षद्यूत । जानुप्रहृत । जङ्घाप्रहृत । पादस्वेदन । कण्टकमर्दन । गतागत । यातोपयात । अनुगत । इत्यक्षद्यूतादयः ॥

१०५—अण् महिष्यादिभ्यः ॥ अ० ॥ ४ । ४ । ४८ ॥

षष्ठीसमर्थमहिष्यादिप्रातिपदिकेभ्यो धर्म्यमित्यर्थेऽण् प्रत्ययो भवति । महिष्या धर्म्यं माहिषम् :—

महिषी । प्रजावती । प्रलेपिका । विलेपिका । अनुलेपिका । पुरोहित । मणिपाली । अनुचारक । होतृ । यजमान । इति महिष्यादयः ॥

(१) अत्र संघातविगृहीतयोर्ग्रहणं भवति । धनुर्दण्डेन जीवति धानुर्दण्डिकः । धनुषा जीवति धानुष्कः । दाण्डिकः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०६—किशरादिभ्यः ष्ठन् ॥ अ० ॥ ४ । ४ । ५३ ॥

प्रथमासमानाधिकरणकिशरादिप्रातिपदिकेभ्यः पण्यमित्यर्थे ष्ठन् प्रत्ययो भवति। गन्धविशेषवाचकाः किशरादयः। किशराः पण्यमस्य, किशरिकः। किशरिकी :-

किशर। नरद। नलद। सुमङ्गल। तगर। गुग्गुलु। उशीर। हरिद्रा। हरिद्रायणी॥ इति किशरादयः॥

१०७—छत्रादिभ्यो णः ॥ अ० ॥ ४ । ४ । ६२॥

प्रथमासमानाधिकरणछत्रादिप्रातिपदिकेभ्यः शीलमित्यर्थे णः प्रत्ययो भवति। इव शब्दस्यात्र लोपो द्रष्टव्यः। छत्रमिव शीलमस्य सच्छात्रः शिष्यः। छत्रवद्गुरुरच्चक :-

छत्र। बुभुक्षा। शिक्षा। पुरोह। स्था (१)। चुरा। उपस्थान। ऋषि। कर्मन्। विश्वधा। तपस्। सत्य। अनृत। शिबिका। इति छत्रादयः॥

१०८—प्रतिजनादिभ्यः खञ् ॥ अ० ॥ ४ । ४ । ६६ ॥

सप्तमीसमर्थप्रतिजनादिप्रातिपदिकेभ्यः साधुरित्यस्मिन्नर्थे खञ् प्रत्ययो भवति। प्रतिजने साधुः, प्रातिजनीनः। जने जने साधुरित्यर्थः :-

प्रतिजन। इदंयुग। संयुग। समयुग। परयुग। परकुल। परस्य कुल। अमुष्यकुल। सर्वजन। विश्वजन। पञ्चजन। महाजन। इति प्रतिजनादयः॥

१०६—कथादिभ्यष्ठक् ॥ अ० ॥ ४ । ४ । १०२ ॥

सप्तमीसमर्थकथादिप्रातिपदिकेभ्यः साधुरित्यर्थे ठक् प्रत्ययो भवति। कथायां साधुः काथिकः :-

कथा। विकथा। वितण्डा। कुष्टचित्। जनवाद। जनेवाद। वृत्ति। सद्गृह। गुण। गण। आयुर्वेद। इति कथादयः॥

११०—गुडादिभ्यष्ठञ् ॥ अ० ॥ ४ । ४ । १०३ ॥

सप्तमीसमर्थगुडादिप्रातिपदिकेभ्यः साधुरित्यर्थे ठञ् प्रत्ययो भवति। गुडे साधुः, गौडिक इक्षुः :-

गुड। कुल्माष। सक्तु। अपूप। मांसौदन। इक्षु। वेणु। संग्राम। संघात। प्रवास। निवास। उपवास। इति गुडादयः॥

(१) अत्र स्थाग्रहणेन सोपसर्गस्य ग्रहणमिष्यते। आस्था शीलमस्य स, आस्थः। संस्थः। आवस्थः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१११—उगवादिभ्यो यत् ॥ अ० ॥ ५ । १ । २ ॥

उवर्णान्ताद् गवादिभ्यश्च प्रातिपदिकेभ्यः प्राक्क्रीतीयेष्वर्थेषु यत् प्रत्ययो भवति। शङ्कवे हितं शाङ्कव्यम् दारु । गवे हितं गव्यम् :—

गो । हविस् । बर्हिस् । खट । अष्टका । युग । मेधा । स्रक् ॥ नाभि नभं च ॥ शुनः संप्रसारणं वा च दीर्घत्वं तत्सन्नियोगेन चान्तोदात्तत्वम् (१) ॥ शुन्यम् । शून्यम्॥ ऊधसोऽनङ् च ॥ ऊधन्यः । कूपः । उदर । खर । खद । अचर । विष । स्कन्द । अष्वा । इति गवादयः ॥

११२—विभाषा हविरपूपादिभ्यः ॥ अ० ॥ ५ । १ । ४ ॥

हविर्विशेषवाचिभ्योऽपूपादिभ्यश्च प्रातिपदिकेभ्यः प्राक्क्रीतीयेष्वर्थेषुविभाषा यत् प्रत्ययो भवति । पक्षे छः । पुरोडाशाय हिताः पुरोडाश्याः पुरोडाशीया वा तण्डुलाः। अपूपेभ्यो हितं, अपूप्यम् । अपूपीयम् :—

अपूप । तण्डुल । अभ्यूष । अभ्योष । पृथुक । अभ्येष । अर्गल । मुसल । सूप। कटक । कर्णवेष्टक । किण्व ॥ अन्नविकारेभ्यश्च (२) ॥ पूप । स्थूणा । पीप । अश्व। पत्र । कट । अयःस्थूण । ओदन । अवोष । प्रदीप । इत्यपूपादयः ॥

११३—असमासे निष्कादिभ्यः ॥ अ० ॥ ५ । १ । २० ॥

असमस्तेभ्यो निष्कादिप्रातिपदिकेभ्य आर्हीयेष्वर्थेषु ठक् प्रत्ययो भवति। निष्कं परिमाणमस्य तन्नैष्किकम्। असमासे किम्। परमनैष्किकम् । अत्र ठञ्स्वरभेदः :—

निष्क । पण । पाद । माष । वाहद्रोण । षष्टि । इति निष्कादयः ॥

११४—गोद्व्यचोऽसंख्यापरिमाणाश्वादेर्यत् ॥ अ० ॥ ५ । १ । ३९ ॥

संख्यापरिमाणाश्वादिविवर्जिताद् गोशब्दाद् द्व्यचश्च प्रातिपदिकाद्यत् प्रत्ययो भवति । तस्य निमित्तं संयोगोत्पातावित्यर्थे । गोर्निमित्तं संयोग उत्पातो वा गव्यः। द्व्यच्—धनस्य निमित्तं संयोग उत्पातो वा । धन्यम् । स्वर्ग्यम् । यशस्यम् । आयुष्यम्। संख्या— पञ्चानां निमित्तं पञ्चकम् । परिमाण—प्रास्थिकम् । अश्वादिः—आश्विकम्। सर्वत्र यत् न् भवति :—

अश्व । अश्मन् । गण । ऊर्णा । उमा । वसु । वर्ष । भङ्ग । इत्यश्वादयः ॥

---

(१) नाभये हितो नभ्योऽक्षः । नभ्यमञ्जनम् । यस्तु शरीरावयववाची नाभि शब्दस्ततः शरीरावयवादिति यति कृते नाभये हितं नाभ्यम् तैलमिति भवति। चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थत्वात्तद्धित इति लोपो न भवति ॥

(२) अन्नविकारवाचिभ्यो यत् प्रत्ययो भवति । शष्कुलीभ्यो हितं शष्कुल्यम् । सूप्यम् । ओदन्यम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११५—तद्धरतिवहत्यावहतिभाराद्वंशादिभ्यः ॥ अ० ॥ ५ । १ । ५० ॥

द्वितीयासमर्थाद् वंशादिभ्यः परस्माद् भारशब्दाद्धरत्यादिषु यथाविहितं प्रत्ययो भवति । वंशभारं हरति वहत्यावहति वा, वांशभारिकः । कौटजभारिकः । भारादिति किम् । वंशं हरति । वंशादिभ्य इति किम् । व्रीहिभारं हरति । अत्र मा भूत् :-

वंश । कुटज । बल्वज । मूल । अक्ष । स्थूणा । अश्मन् । अश्व । इक्षु । खट्वा । इति वंशादयः ॥

११६—छेदादिभ्यो नित्यम् ॥ अ० ॥ ५ । १ । ६४ ॥

द्वितीयासमर्थछेदादिप्रातिपदिकेभ्यो नित्यमर्हतीत्यर्थे यथाविहितं प्रत्ययो भवति छेदनं नित्यमर्हति । छैदिकः :—

छेद । भेद । द्रोह । दोह । वर्त । कर्ष । संप्रयोग । विप्रयोग । प्रेषण । संप्रश्न । विप्रकर्ष । विराग विरंगं च । वैरङ्गिकः । इति छेदादयः ॥

११७—दण्डादिभ्यो यः ॥ अ० ॥ ५ । १ । ६६ ॥

द्वितीयासमर्थदण्डादिप्रातिपदिकेभ्योऽर्हतीत्यर्थे यः प्रत्ययो भवति । दण्डमर्हति, दण्ड्यः :-

दण्ड । मुसल । मधुपर्क । कशा । अर्घ । मेधा । मेघ । युग । उदक । वध । गुहा । भाग । इभ । इति दण्डादयः ॥

११८—व्युष्टादिभ्योऽण् ॥ अ० ॥ ५ । १ । ९७ ॥

सप्तमीसमर्थव्युष्टादिप्रातिपदिकेभ्यो दीयते कार्यमित्येतयोरर्थयोरण् प्रत्ययो भवति । व्युष्टे दीयते कार्यं वा वैयुष्टम् :-

व्युष्ट । नित्य । निष्क्रमण । प्रवेशन । तीर्थ । संभ्रम । आस्तरण । संग्राम । संघात । अग्निपद । पीलुमूल । प्रवास । उपसंक्रमण । दीर्घ । उपवास । इति व्युष्टादयः ॥

११९—तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः ॥ अ० ॥ ५ । १ । १०१ ॥

चतुर्थीसमर्थसन्तापादिप्रादिपदिकेभ्यः प्रभवतीत्यर्थे ठञ् प्रत्ययो भवति । सन्तापाय प्रभवति, सान्तापिकः :-

सन्ताप । संनाह । संग्राम । संयोग । संपराय । संपेष । निष्पेष । निसर्ग । असर्ग । विसर्ग । उपसर्ग । उपवास । प्रवास । संघात । संमोदन । सक्तु ॥ मांसौदनादिगृहीतादपि । मांसौदनिकः । मांसिकः । औदनिकः ॥ निर्घोष । सर्ग । संपात । संवाद । संवेशन । इति संतापादयः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२०—अनुप्रवचनादिभ्यश्छः ॥ अ० ॥ ५ । १ । १११ ॥

प्रथमासमानाधिकरणानुप्रवचनादिप्रातिपदिकेभ्यः प्रयोजनमित्यर्थे छः प्रत्ययो भवति अनुप्रवचनं प्रयोजनमस्य, अनुप्रवचनीयम् :—

अनुप्रवचन । उत्थापन । प्रवेशन । अनुप्रवेशन । उपस्थापन । संवेशन । अनुवेशन । अनुवचन । अनुवादन । अनुवासन । आरम्भण । आरोहण । प्ररोहण । अन्वारोहण । इत्यनुप्रवचनादयः ॥

१२१—पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा ॥ अ० ॥ ५ । १ । १२२ ॥

षष्ठीसमर्थपृथ्वादिप्रातिपदिकेभ्यो भावेऽर्थे इमनिच् प्रत्ययो वा भवति । वावचनमणादेः समावेशार्थम् । पृथोर्भावः प्रथिमा । पार्थवम् । पृथुत्वम् । पृथुता :—

पृथु । मृदु । महत् । पटु । तनु । लघु । बहु । साधु । वेणु । आशु । बहुल । गुरु । दण्ड । ऊरु । खण्ड । चण्ड । बाल । अकिंचन । होड । पाक । वत्स । मन्द । स्वादु । ह्रस्व । दीर्घ । प्रिय । वृष । ऋजु । क्षिप्र । क्षुद्र । इति पृथ्वादयः ॥

१२२—वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ् च ॥ अ० ॥ ५ । १ । १२३ ॥

वर्णविशेषवाचिभ्यो दृढादिभ्यश्च प्रातिपदिकेभ्यो भावे ष्यञ् चादिमनिच् प्रत्ययो भवति । शुक्लस्य भावः शौक्ल्यम् । शुक्लिमा । शुक्लत्वम् । शुक्लता । दार्ढ्यम् । द्रढिमा । दृढत्वम् । दृढता :—

दृढ । परिवृढ । भृश । कृश । वक्र । आम्र । लवण । ताम्र । अम्ल । शीत । उष्ण । जड । बधिर । पण्डित । मधुर । मूर्ख । मूक । वेर्यातलाभमतिमनःशारदानाम् ॥ समो मतिमनसोर्जवने (१) ॥ बाल । तरुण । मन्द । स्थिर । बहुल । दीर्घ । मूढ । आकृष्ट । इति दृढादयः ॥

१२३—गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च ॥ अ० ॥ ५ । १ । १२४ ॥

गुणवचनेभ्यो ब्राह्मणादिभ्यश्च प्रातिपदिकेभ्यो भावे कर्मणि चाभिधेये ष्यञ् प्रत्ययो भवति । जडस्य भावः कर्म्म वा जाड्यम् । ब्राह्मणस्य भावः कर्म्म वा ब्राह्मण्यम् :—

ब्राह्मण । वाडव । माणव । चोर । मूक । आराधय । विराधय । अपराधय । उपराधय । एकभाव । द्विभाव । त्रिभाव । अन्यभाव । समस्थ । विषमस्थ । परमस्थ ।

---

(१) वेः परेभ्यो यातादिभ्यः ष्यञ् । वैयात्यम् । वैलाभ्यम् । वैमत्यम् । वैमनस्यम् । वैशारद्यम् । समः पराभ्यां मतिमनोभ्यां वेगेऽर्थे ष्यञ् । साम्मत्यम् । साम्मनस्यम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यमस्थ । अनीश्वर । कुशल । कपि । चपल । अचिक्षत्र । निपुण ।अर्हतो नुम् च॥ आर्हन्त्यम् । संवादिन् । संवेशिन् । बहुभाषिन् । बालिश । दुष्पुरुष । कापुरुष। दायाद । विशसि । धूर्त्त । राजन् । संभाषिन् । शीर्षपातिन् । अधिपति । अलस। पिशाच । पिशुन । विशाल ।गणपति ।धनपति ।नरपति ।गडुल।निव । निधान। विष । सर्ववेदादिभ्यः स्वार्थे (२) ॥ चतुर्वेदस्योभयपदवृद्धिश्च ॥ चातुर्वैद्यम् ।स्वभाव। निघातिन् । विघातिन् । राजपुरुष । विशस्ति । विशाय । विशात । विजात। नयात । सुहित । दीन । विदग्ध । उचित । समग्र । शली । तत्पर । इदम्पर। यथातथा । पुरस् । पुनः । पुनर् । अभीक्ष्ण । तरतम । प्रकाम । यथाकाम। निष्कुल ।स्वराज । महाराज । युवराज । सम्राज् । अविदूर । अपिशुन । अनृशंस। अयथातथ । अयथापुर । स्वधर्म्म । अनुकूल । परिमाण्डल । विश्वरूप । ऋत्विज्। उदासीन । ईश्वर । प्रतिभू । साक्षि । मानुष । आस्तिक । नास्तिक । युगपत्। पूर्वापर । उत्तराधर । इति ब्राह्मणादयः ॥

१२४–वा०–चातुर्वर्ण्यादीनां स्वार्थ उपसंख्यानम्॥ अ०॥५।१।१२४

चत्वार एव वर्णाश्चातुर्वर्ण्यम् । चातुराश्रमम् :—

चतुर्वर्ण । चतुराश्रम । त्रिलोक । त्रिस्वर । षड्गुण । सेना । सन्निधि । समीप। उपमा । सुख । इति चतुर्वर्णादयः ॥

१२५—पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् ॥अ०॥ ५ । १ । १२८॥

षष्ठीसमर्थेभ्यः पत्यन्तेभ्यः पुरोहितादिभ्यश्च प्रातिपदिकेभ्यो भावकर्मणोर्यक् प्रत्ययो भवति सेनापतेर्भावः कर्म,वा सैन्यापत्यम् । प्राजापत्यम् । पुरोहितस्य भावः कर्म वा, पौरोहित्यम् :—

पुरोहित । राजन् । संग्रामिक । एषिक ।वर्मित ।खण्डिक ।दण्डिक । छत्रिक। मिलिक । पिण्डिक । बाल ।मन्द । स्तनिक ।चडितिक । कृषिक ।पूतिक ।पत्तिक। प्रतिक ।अजानिक ।सलनिक ।सूचिक।राकर। सूचक ।पक्षिक। सारथिक। जलिक। सूतिक । अञ्जलिक । शर्मिक । चर्मिक ।कर्मिक ।शौलिक । मूलिक । तिलिक। तिष्यिक । अञ्जतिका । ऋषिक । पुत्रक । पथिका । प्रचिक । प्रविक । परिचक पूजनिक ॥ राजाऽसे (१) । मूचिक । स्वरिक । चडिक ॥ इति पुरोहितादयः॥

(१) सर्वे एव वेदाः सार्ववेद्यम् । सार्वलौक्यम् । सार्वराज्यम् । सार्वगुण्यम्। आकृतिगणोऽयम् ॥

(२) राज्ञो भावः कर्म वा राज्यम् । समासेतु ब्राह्मणादित्वात्ष्यञ् सौराज्यम्॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२६—प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ् ॥ अ० ॥ ५ । १ । १२६ ॥

प्राणभृज्जातिभ्यो वयोवचनेभ्य उद्गात्रादिभ्यश्च प्रातिपदिकेभ्यो भावकर्मणोरञ् प्रत्ययो भवति । अश्वस्य भावः कर्म वा, आश्वम् । औष्ट्रम् । कौमारम् । कैशोरम् । औद्गात्रम् :—

उद्गातृ । उन्नेतृ । प्रतिहर्त्तृ । रथगणक । पक्षिगणक । पत्तिगणक । सुष्ठु । दुष्ठु । अध्वर्यु । वधू ॥ सुभग मंत्रे (१) ॥ प्रशास्तृ । होतृ । पोतृ । कर्त्तृ । इत्युद्गात्रादयः ॥

१२७—हायनान्तयुवादिभ्योऽण् ॥ अ० ॥ ५ । १ । १३० ॥

हायनान्तेभ्यो युवादिभ्यश्च षष्ठीसमर्थप्रातिपदिकेभ्यो भावकर्मणोरर्थयोरण् प्रत्ययो भवति। द्विहायनस्य भावः कर्म वा, द्वैहायनम्। यूनो भावः कर्म वा, यौवनम् :—

युवन् । स्थविर । होतृ । यजमान । कमण्डलु ॥ पुरुषाऽसे (२)॥ सुहृत् । यातृ । श्रवण । कुस्त्री । सुस्त्री । सुहृदय । सुभ्रातृ । वृषल । दुर्भ्रातृ ॥ हृदयाऽसे (३) ॥ क्षेत्रज्ञ । कृतक । परिव्राजक । कुशल । चपल । निपुण । पिशुन । सब्रह्मचारिन् । कुतूहल । अनृशंस । भ्रातृ । कुचुक । कन्दुक । दुःस्त्री । दुर्हृदय । दुर्हृत् । मिथुन । कुलली । महस् । कतक । कितव । पीत ॥ इति युवादयः ॥

१२८—द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ५ । १ । १३३ ॥

द्वन्द्वसंज्ञकेभ्यो मनोज्ञादिभ्यश्च षष्ठीसमर्थप्रातिपदिकेभ्यो भावकर्मणोरर्थयोर्वुञ् प्रत्ययो भवति । गोपालपशुपालानां भावः कर्म वा, गौपालपशुपालिका । शैष्योपाध्यायिका । मनोज्ञस्य भावः कर्म वा, मानोज्ञकम् :—

मनोज्ञ । कल्याण । प्रियरूप । छान्दस । छात्र । मेधाविन् । अभिरूप । आढ्य । कुलपुत्र । श्रोत्रिय । चोर । धूर्त । वैश्वदेव । युवन् । ग्रामपुत्र । ग्रामखण्ड । ग्रामकुमार अमुष्यपुत्र । अमुष्यकुल । शतपुत्र । कुशल । बहुल । अवश्य । अहोपुरुष ॥ इति, मनोज्ञादयः ॥

---

(१) सुभगस्य भावः सौभगो मंत्रः ॥
(२) पुरुषस्य भावः कर्म पौरुषम्, सुपुरुषत्वमिति समासे ॥
(३) हार्दयम् । समासेतु परमहृदयत्वमित्येव ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२९—तस्य पाकमूले पील्वादिकर्णादिभ्यः कुणब्जाहचौ ॥ अ० ॥ ५ । २ । २४ ॥

पील्वादिभ्यः कर्णादिभ्यश्च षष्ठीसमर्थप्रातिपदिकेभ्यो यथासंख्यं पाकमूलयोरर्थयोः कुणब्जाहचौ प्रत्ययौ भवतः । पीलूनां पाकः पीलुकुणः । कर्णस्य मूलं, कर्णजाहम् :-

पील । कर्कन्धु । शमी । करीर । कुवल । बदर । अश्वत्थ । खदिर । इति पील्वादयः ॥

कर्ण । अक्षि । नख । मुख । मख । केश । पाद । गुल्फ । भ्रूभङ्ग । दन्त । ओष्ठ । पृष्ठ । अङ्गुष्ठ ॥ इति कर्णादयः ॥

१३०—तदस्य संजातं तारकादिभ्य इतच् ॥ अ० ॥ ५ । २ । ३६

प्रथमासमर्थेभ्यस्तारकादिप्रातिपदिकेभ्योऽस्येति षष्ठ्यर्थे इतच् प्रत्ययो भवति। तारकाः संजाता अस्य, तारकितं नभः। पुष्पितो वृक्षः संजातग्रहणप्रकृतिविशेषणम् :-

तारका । पुष्प । मुकुल । कण्टक । पिपासा । सुख । दुःख । ऋजीष । कुड्मल । सूचक । रोग । विचार । तन्द्रा । वेग । पुच्छ । श्रद्धा । उत्कण्ठ । भर । द्रोह । गर्भादप्राणिनि (१) ॥ फल । उच्चार । स्तबक । पल्लव । खण्ड । धेनुष्या । अभ्र । अङ्गारक । अङ्गार । वर्णक । पुलक । कुवलय । शैवल । गर्व । तरङ्ग । कल्लोल । पण्डा । चन्द्र । स्तवक । मुद्रा । राग । हस्त । कर । सीमन्त । कर्दम । कज्जल । कलङ्क । कुतूहल । कन्दल । आन्दोल । अन्धकार । कोरक । अङ्कुर । रोमाञ्च । हर्ष । उत्कर्ष । क्षुधा । ज्वर । गोर । द्रोह । शास्त्र । मुकुर । तिलक । बुभुक्षा । निद्रा । तारकादिराकृतिगणः ॥ इति तारकादयः ॥

१३१—विमुक्तादिभ्योऽण् ॥ अ० ॥ ५ । २ । ६१ ॥

अध्यायानुवाकयोरभिधेययोर्विमुक्तादिप्रातिपदिकेभ्यो मत्वर्थेऽण् प्रत्ययो भवति। विमुक्तं वर्त्तते ऽस्मिन् स वैमुक्तोऽध्यायो ऽनुवाको वा । दैवासुरः :-

विमुक्त । देवासुर । वसुमत् । सत्वत् । उपसत् । दशार्हपयस् । हविर्धान । मित्री । सोमापूषन् । अग्नाविष्णू । वृत्रहति । इडा । रक्षोऽसुर । सदसत् । परिषादक् । वसु । मरुत्वत् । पत्नीवत् । महीयल । सत्वत् (२) । दशार्ह । वयस् । पतत्रि । सोम । महित्री । हेतु । अस्यहत्य । दशार्ण । उर्वशी । सुपर्ण । इति विमुक्तादयः ॥

(१) गर्भिताः शालयः । अप्राणिनीतिवचनाद् गर्भिणी भार्या । इत्यत्रेतच् न भवति॥

(२) सत्वदिति शब्दोऽस्मिन् गणे द्विवारं पठ्यते । यद्येकस्तालव्यादिर्भवेत्तदा तु युक्त मन्यथा प्रामादिकः पाठः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३२—गोषदादिभ्यो वुन् ॥ अ० ॥ ५ । २ । ६२ ॥

अध्यायानुवाकयोरभिधेययोर्गोषदादिप्रातिपदिकेभ्यो मत्वर्थे वुन् प्रत्ययो भवति। गोषदशब्दोऽस्मिन्नस्ति, गोषदकोऽध्यायोऽनुवाको वा । इषेत्वकः :—

गोषद । इषे त्वा । मातरिश्वन् । देवस्य त्वा । देवीरापः । कृष्णोऽस्याखरेष्टः । देवीं धियम् । रक्षोहण । अञ्जन । प्रभूत । प्रतूर्त्त । कृशान । युञ्जान । सहस्रशीर्षा । वातस्वते । कृशाश्व । स्वाहाप्राण । प्रसुस्त ॥ इति गोषदादयः ॥

१३३—आकर्षादिभ्यः कन् ॥ अ० ॥ ५ । २ । ६४ ॥

आकर्षादिभ्यः सप्तमीसमर्थप्रातिपदिकेभ्यः कुशल इत्यर्थे कन् प्रत्ययो भवति । आकर्षे कुशल आकर्षकः :—

आकर्ष । त्सरु । पिपासा । पिचण्ड । अशनि । अश्मन् । विचय । चय । जय । आचय । अय । नय । निपाद । गद्गद । दीप । ह्रद । ह्राद । ह्लाद । शकुनि । पिशाच । पिण्ड ॥ इत्याकर्षादयः ॥

१३४—रसादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ५ । २ । ९५ ॥

प्रथमासमानाधिकरणरसादिप्रातिपदिकेभ्योऽस्यास्त्यस्मिन्नित्यर्थे मतुप् प्रत्ययो भवति । रसादिगुणवाचकेभ्योऽन्येमत्वर्थीयाः प्रत्यया माभूवन्निति सूत्रारम्भः।रूपिणी कन्येत्यत्र तु शोभापरत्वं रूपस्य । रसोऽस्मिन्नस्तीति,रसवान् । रूपवान् :—

रस । रूप । गन्ध । स्पर्श । शब्द । स्नेह । गुणात् । एकाचः (१) ॥ इतिरसादयः ॥

१३५—सिध्मादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ५ । २ । ९७ ॥

सिध्मादिप्राति पदिकेभ्यो मत्वर्थे विकल्पेन लच् प्रत्ययो भवति । सिध्मोऽस्यास्तीति सिध्मलः । सिध्मवान् । अत्र पक्षे मतुबिष्यते नत्वत इनिठनौ :—

सिध्म । गडु । मणि । नाभि । जीव । निष्पाव । पांसु । सक्तु । हनु । मांस । परशु ॥ पार्ष्णिधमन्योर्दीर्घश्च ॥ पार्ष्णीलः। धमनीलः । पर्ण । उदक । प्रज्ञा । मण्ड । पार्श्व । गण्ड । ग्रन्थि । वातदन्तबलललाटगलानामूङ् च ॥ वातूलः । दन्तूलः । बलूलः । ललाटूलः । गलूलः ॥ जटाघटाकालाः क्षेपे ॥ जटालः । घटालः । कालालः । सक्थि । कर्ण । स्नेह । शीत । श्याम । पिङ्ग । पित्त । शुष्क । पृथु । मृदु । मञ्जु । पत्र । चटु । कपि । कण्डु । संज्ञा । क्षुद्रजन्तूपतापाच्चेष्यते । क्षुद्रजन्तुः । यूकालः । मक्षिकालः । उपताप—विचर्चिकालः । विपादिकालः। मूर्च्छालः । इति सिध्मादयः ॥

(१) अत्र गुणशब्दो रसादीनां विशेषणम् । एकाच् शब्दादपि मतुब् भवति नत्वतइनिठनौ । स्ववान् । खवान् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३६—लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः ॥ अ० ॥ ५ । २ । १०० ॥

लोमादिभ्यः पामादिभ्यः पिच्छादिभ्यश्च प्रातिपदिकेभ्यो मत्वर्थे यथासंख्यं श, न, इलच् इत्येते प्रत्यया भवन्ति । लोमान्यस्य सन्तीति लोमशः । लोमवान् । पाम विद्यतेऽस्य स पामनः । पामवान । पिच्छमस्यास्तीति पिच्छिलः । पिच्छवान् :-

लोमन् । रोमन् । वल्गु । बभ्रु । हरि । कपि । शुनि । तरु । इति लोमादयः पामन् । वामन् । हेमन् । श्लेष्मन् । कद्रु । वलि । श्रेष्ठ । पलल । सामन् । अङ्गात्कल्याणे ॥ शाकीपलालीदद्रवा ह्रस्वत्वं च ॥ विष्वगित्युत्तरपदलोपश्चाकृतसन्धेः ॥ लक्ष्म्या अच (१) ॥ इति पामादयः ॥ पिच्छ । उरस् । ध्रुवका । चुवका । जराघटाकालात् क्षेपे (२) ॥ वर्ण । उदक । पङ्क । प्रज्ञा । इति पिच्छादयः ॥

१३७—व्रीह्यादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ५ । २ । ११६ ॥

प्रथमासमानाधिकरणव्रीह्यादिप्रातिपदिकेभ्यो मत्वर्थे इनिठनौ प्रत्ययौ भवतः व्रीहयोऽस्य सन्तीति व्रीही । व्रीहिकः । व्रीहिमान् :-

व्रीहि । माया । शिखा । मेखला । संज्ञा । बलाका । माला । वीणा । वडवा । अष्टका । पताका । कर्मन् । चर्मन् । हंसा (३) । यवखद । कुमारी । नौ (४) । शीर्षान्नञः ॥ अशीर्षी । अशीर्षिका । इति व्रीह्यादयः ॥

१३८—तुन्दादिभ्य इलच्च ॥ अ० ॥ ५ । २ । ११७ ॥

तुन्दादिप्रातिपदिकेभ्यो मत्वर्थे इलच् चकारादिनिठनौ मतुप् च प्रत्यया भवन्ति तुन्दोऽस्यास्तीति तुन्दिलः । तुन्दी । तुन्दिकः । तुन्दवान् :—

तुन्द । उदर । पिचण्ड । घट । यव । व्रीहि । स्वाङ्गाद्विवृद्धौ च (५) ॥ इति०

---

(१) अङ्ग शब्दात्कल्याणे नः प्रत्ययः । कल्याणकरमंगं शरीरमस्याः सा, अङ्गना । शाकिनः । पलालिनः । दद्रुणः । विषु—अच् इत्यवस्थायां नः प्रत्ययस्तदेवोत्तरपदस्याज् भागस्य लोपः। विष्वगस्यास्तीति विषुणः। लक्ष्मी अस्यास्तीति लक्ष्मणः।

(२) कुत्सिता जटा अस्य सन्तीति जटिलः । एवं घटिलः । कालिलः ॥

(३) शिखादिभ्य इनिरेवेष्यते नतु ठक् ॥

(४) यवखदादिभ्यष्ठगेवेष्यते शेषादुभयम् ॥

(५) विवृद्ध्युपाधिभूतात् स्वाङ्गवाचिनः प्रातिपदिकादिलच् । दीर्घा नासिकाऽस्यास्तीति नासिकिलः । लम्बौ कर्णौ यस्य स कर्णिलः । ओष्ठिलः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३९—अर्श आदिभ्योऽच् ॥ अ० ॥ ५ । २ । १२७ ॥

अर्श आदिप्रातिपदिकेभ्योमत्वर्थेऽच् प्रत्ययो भवति । अर्शांस्यस्य विद्यन्ते स,अर्शसः:—

अर्शस् । उरस् । तुन्द । चतुर । पलित । जटा । घटा । अभ्र । कर्दम । आम। लवण । स्वाङ्गाद्धीनात् ॥ वर्णात् (१) ॥ आकृतिगणोयम् । इत्यर्श आदयः ॥

१४०—सुखादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ५ । २ । १३१ ॥

सुखादिप्रातिपदिकेभ्यो मत्वर्थे इनिः प्रत्ययो भवति । मतुबादीनामपवादः । सुखमस्यास्तीति सुखी । दुःखी :—

सुख । दुःख । तृप्र । कृच्छ्र । आस्र । अलीक । करुणा ।कृपण ।सोढ । प्रमीप। शील । हल ॥ माला चेपे (२) ॥ प्रणय । इति सुखादयः ॥

१४१—पुष्करादिभ्यो देशे ॥ अ० ॥ ५ । २ । १३५ ॥

पुष्करादिप्रातिपदिकेभ्यो मत्वर्थे देशेऽभिधेये इनिः प्रत्ययो भवति पुष्करोऽस्मिन्नीति पुष्करी देशः । पद्मी वा । देश इति किम् । पुष्करवान् हस्ती :—

पुष्कर । पद्म । उत्पल । तमाल । कुमुद । नड । कपित्थ । बिस । मृणाल । कर्दम । शालूक । विगर्ह । करीष । शिरीष । यवास । प्रवास । हिरण्य । कौरव । कल्लोल । तरङ्ग । वयस । इति पुष्करादयः ॥

१४२—बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम् ॥ अ० ॥ ५ । २ । १३६ ॥

बलादिप्रातिपादिकेभ्यो मत्वर्थे विकल्पेन मतुप् पच इनिः ठक् तु न भवति । बलमस्यास्तीति बलवान् । बली :—

बल । उत्साह । उद्भाव । उद्दास । उद्दाम । शिखाबल । वृगमूल । दंश । कुल आयाम। व्यायाम । उपयाम। आरोह । अवरोह । परिणाह । युद्ध ॥ इति बलादयः ॥

१४३—देवपथादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ५ । ३ । १०० ॥

देवपथादिप्रातिपदिभ्यो इवार्थे प्रतिकृतौ संज्ञायां च विहितस्य कन् प्रत्ययस्य लुब् भवति । देवपथस्येव प्रतिकृतिः, देवपथः । हंसपथः :—

देवपथ । हंसपथ । वारिपथ । जलपथ । राजपथ । शतपथ । सिंहगति । उष्ट्रग्रीवा । चामरज्जु । रज्जु । हस्त । इन्द्र । दण्ड । पुष्प । मत्स्य । रथपथ । शङ्कुपथ । सिंहपथ । आकृतिगणोऽयम् । इति देवपथादयः ॥

---

(१) हीनशब्दात्परस्मात् स्वाङ्गादजेव स्यान्नतु मतुबादिः । अक्षिभ्यां हीनो हीनाक्षः । हीनहस्तः । हीनबाहवः । वर्णादिति श्वेतादेर्ग्रहणंनत्वकारादेः । श्वेतो वर्णोऽस्यास्तीति श्वेतः । नीलः । कालः । पीतः । हरितः । इत्यादि ॥

(२) कुत्सिता मालाऽस्यास्तीति माली । मतुम्माभूत् । प्रणयी ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४४—शाखादिभ्यो यत् ॥ अ० ॥ ५ । ३ । १०३ ॥

शाखादिप्रातिपदिकेभ्यो इवार्थे यत् प्रत्ययो भवति। शाखेव शाख्यः। मुख्यः :- शाखा। मुख। जघन। शृङ्ग। मेघ। चरण। स्कन्ध। शिरस्। उरस्। अग्र। शरण। इति शाखादयः॥

१४५—शर्करादिभ्योऽण् ॥ अ० ॥ ५ । ३ । १०७ ॥

शर्करादिप्रातिपदिकेभ्यो इवार्थेऽण् प्रत्ययो भवति। शर्करेव, शार्करम् :- शर्करा। कपालिका। पिष्टिका। कनिष्ठिक। कपिष्ठिक। पुण्डरीक। शतपत्र। गोलोमन्। गोपुच्छ। नरालि। नकुल। सिकता। इति शर्करादयः॥

१४६—अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक् ॥ अ० ॥ ५ । ३ । १०८ ॥

अङ्गुल्यादिप्रातिपदिकेभ्यः इवार्थे ठक् प्रत्ययो भवति। अङ्गुलिरिवाङ्गुलिकः :-

अङ्गुलि। भरुज। बभ्रु। वल्गु। मण्डर। मण्डल। शष्कुल। कपि। उदश्वित्। गाणी। उरस्। शिखा। कुलिश। इत्यङ्गुल्यादयः॥

१४७—दामन्यादित्रिगर्त्तषष्ठाच्छः ॥ अ० ॥ ५ । ३ । ११६ ॥

दामन्यादिभ्यस्त्रिगर्त्तषष्ठेभ्यश्चायुधजीवि संघवाचिभ्यः प्रातिपदिकेभ्यः स्वार्थे छः प्रत्ययो भवति। त्रिगर्त्तः षष्ठो येषां ते त्रिगर्त्तषष्ठाः। दामन्येवदानीयः। दामनीयौ। दामन्यः। तद्राजत्वाद् बहुवचने लुक्। त्रिगर्त्तषष्ठाः। कौण्डोपरथएव, कौण्डोपरथीयः। अन्यत्पूर्ववत्। दाण्डकि। कौष्टकि। जालमानि। ब्रह्मगुप्त। जानकि। इति त्रिगर्त्तषष्ठाः। अत्र जानकिरित्यस्यैव त्रिगर्त्त इति नामान्तरम् :-

दामनी। औलपि। आकिदन्ती। काकरन्ति। काकदन्ति। शत्रुन्तपि। सार्वसेनि। बिन्दू। मौञ्जायन। उलभ। सावित्रीपुत्र। अच्युतन्ति। कोकतन्ती। तुलभ। देववापि। औतकी। अपच्युतकी। कर्की। पिण्ड॥ इति दामन्यादयः॥

१४८—पर्श्वादियौधेयादिभ्यामणञौ ॥ अ० ॥ ५ । ३ । ११७ ॥

पर्श्वादिभ्यो यौधेयादिभ्यश्चायुधजीविसंघवाचिभ्यः प्रातिपदिकेभ्यः स्वार्थेऽणञौ प्रत्ययो यथासंख्यं भवतः। पर्शुरेव, पार्शवः। यौधेयः :-

पर्शु। असुर। रक्षस्। वाल्हीक। वयस्। मरुत्। दशार्ह। पिशाच। विशाल। अशनि। कार्षापण। सत्वत्। वसु। इति पर्श्वादयः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौधेय । कौशेय । क्रौशेय । शौक्रेय । शौभ्रेय । धार्त्तेय । वार्त्तेय । जावालेय । त्रिगर्त्त । भरत । उशीनर । इति यौधेयादयः ॥

१४९—स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन् ॥ अ० ॥ ५ । ४ ३ ॥

स्थूलादिप्रातिपदिकेभ्यःप्रकारवचनेद्योत्येकन् प्रत्ययोभवति।स्थूलप्रकारः,स्थूलकः :—

स्थूल । अणु । माष । इषु ॥ कृष्णतिलेषु ॥ यवव्रीहिषु ॥ इक्षुतिलपाद्यकालावदाताः सुरायाम् ॥ गोमूत्र आच्छादने ॥ सुराया अहौ ॥ जीर्णशालिषु । पत्रमूले समस्तव्यस्ते (१) कुमारी पुत्र । कुमार । श्वशुर । मणि ॥ इति स्थूलादयः ॥

१५०—यावादिभ्यः कन् ॥ अ० ॥ ५ । ४ । २९ ॥

यावादिप्रातिपदिकेभ्यः स्वार्थे कन् प्रत्ययो भवति । याव एव, यावकः :—

याव । मणि । अस्थि । चण्ड । पीतस्तम्ब । ऋतावुष्णशीते । पशौ लूनवियाते । अणुनिपुणे । पुत्रकृत्रिमे ॥ स्नात वेदसमाप्तौ ॥ शून्यरिक्ते । दानकुत्सिते ॥ तनुसूत्रे॥ (२) । ईयसश्च ॥ श्रेयस्कः । ज्ञात । कुमारीक्रीडनकानिच । इति यावादयः ॥

१५१—विनयादिभ्यष्ठक् ॥ अ० ॥ ५ । ४ । ३४ ॥

विनयादिप्रातिपदिकेभ्यः स्वार्थे ठक् प्रत्ययो भवति । विनयएव,वैनयिकः ;—

विनय । समय । उपायाद् ध्रस्वत्वं च । औपयिकः । संगति । कथंचित् । अकस्मात् । समयाचार । उपचार । समाचार । व्यवहार ।सम्प्रदान । समुत्कर्ष । समूह । विशेष । अत्यय । अस्थि । कण्डु । इति विनयादयः ॥

१५२—प्रज्ञादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ५ । ४ । ३८ ॥

प्रजानातीति प्रज्ञः । प्रज्ञादिप्रातिपदिकेभ्यः स्वार्थेऽण् प्रत्ययो भवति । प्रज्ञ एव प्राज्ञः । प्राज्ञी स्त्री । यस्यास्तु प्रज्ञा विद्यते सा प्राज्ञा भवति :—

प्रज्ञ । वणिक् । उशिक् । उष्णिक् । प्रत्यच । विद्वस् । विदन् । षोडन् । षोडश । विद्या । मनस् । श्रोत्र शरीरे । श्रोत्रम् । जुह्वत् । कृष्ण मृगे । कार्ष्णः । चिकीर्षत् । चोर । शक । योध । वचस् । चक्षुस् । धूर्त्त । वस् । एत् । मरुत् । क्रुङ् । राजा । सत्वन्तु । दशार्हं । वयस् । आतुर । असुर । रक्षस् । पिशाच । अशनि । कार्षापण । देवता । बन्धु ॥ इति प्रज्ञादयः ॥

(१) कृष्ण प्रकाराः कृष्णकारितलाः । यवका व्रीहयः । इक्षुका । तिलका । पाद्यका । कालका । अवदातका वासुरा । मूत्रकमाच्छादनम् । सुराकः सर्पः । जीर्णकाः शालयः । पत्रकंसमस्तम् । मूलकं व्यस्तम् ॥

(२) उष्णकः,शीतको वा ऋतुः । लूनकः,वियातको वा पशुः ।अणुको निपुणः। पुत्रकः कृत्रिमः।स्नातको वेदपारगः।शून्यकं रिक्तम्।कुत्सितं दानं दानकम् ।तनुकंसूत्रम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५३—द्विदण्ड्यादिभ्यश्च ॥ अ० ॥ ५ । ४ । १२८ ॥

द्विदण्ड्यादिशब्देषु बहुव्रीहिसमासे समासान्त इच् प्रत्ययो निपात्यते । द्वाभ्यां दण्डाभ्यां हन्यतेऽसौ द्विदण्डि । अव्ययीभावसमासे परिगणनमतोऽव्ययत्वम् । एवं द्विमुसलि :–

द्विदण्डि । द्विमुसलि । उभाञ्जलि । उभयाञ्जलि । उभाकर्णि । उभयाकर्णि । उभादन्ति । उभयादन्ति । उभाहस्ति । उभयाहस्ति । उभापाणि । उभयापाणि । उभाबाहु । उभयाबाहु (१) । एकपदि । प्रोष्ठपदि । आढ्यपदि । सपदि । निकुच्यकर्णि । संहतपुच्छि ॥ इति द्विदण्ड्यादयः ॥

१५४—पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः ॥ अ० ॥ ५ । ४ । १३८ ॥

हस्त्यादिवर्जितादुपमानात्परस्य पादशब्दस्य लोपो बहुव्रीहौ । व्याघ्रपादाविव पादावस्य, स व्याघ्रपात् । अहस्त्यादिभ्य इति किम् । हस्तिपादः :–

हस्तिन् । कटोल । गण्डोल । गण्डोलक । महिला । दासी । गणिका । कुसूल । इति०

१५५—कुम्भपदीषु च ॥ अ० ॥ ५ । ४ । १३९ ॥

कुम्भपदीप्रभृतयः कृतपादसमासान्तलोपाः समुदाया बहुव्रीहौ समासे निपात्यन्तः–

कुम्भपदी । शतपदी । अष्टापदी । जालपदी । एकपदी । मालापदी । मुनिपदी । गोधापदी । गोपदी । कलशीपदी । घृतपदी । दासीपदी । निष्पदी । आर्द्रपदी । कुणपदी । कृष्णपदी । द्रोणपदी । द्रुपदी । शकृत्पदी । सूपपदी । पञ्चपदी । अर्वपदी । स्तनपदी । स्थूलपदी । सूत्रपदी । कलहंसपदी । द्विपदी । विष्णुपदी । सुपदी । सूकरपदी । सूचीपदी । इति कुम्भपदीप्रभृतयः ॥

१५६—उरः प्रभृतिभ्यः कप् ॥ अ० ॥ ५ । ४ । १५१ ॥

उरः प्रभृत्यन्ताद्बहुव्रीहेः समासान्तः कप् प्रत्ययो भवति । व्यूढमुरोऽस्य स व्यूढोरस्कः । प्रियसर्पिष्कः :–

उरस् । सर्पिस् । उपानह् । पुमान् । अनड्वान् । नौः । पयः । लक्ष्मीः । दधि । मधु । शालिः ॥ अर्थान्नञः ॥ अनर्थकः । इत्युरःप्रभृतयः ॥

१५७—उञ्छादीनाञ्च ॥ अ० ॥ ६ । १ । १६० ॥

उञ्छादीनां शब्दानामन्त उदात्तः स्वरो भवति :–

उञ्छ । म्लेच्छ । जञ्ज । जल्प । जप । व्यध । वध ॥ युगकालविशेषे रथाद्यु-

(१) अत्रोभयत्र निपातनादिच्प्रत्ययस्य लोपः । प्रत्ययलक्षणेन चाव्ययीभावसंज्ञा भवत्येव । अत्रापि केचित्कृच्छ्रात्तत्पुरुषसमासान्ता निपात्यन्ते । तेऽर्थसंगत्या ज्ञेयाः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकरणे च ॥ गरो दूष्येऽब्रन्तः ॥ वेगवेदचेष्टबन्धाः करणे ॥स्तुयुद्रुवश्छन्दसि । परिष्टुत् । संयुत् । परिद्रुत् ॥ वर्त्तनिः स्तोत्रे ॥ श्वभ्रे दरः ॥ साम्बतापौ भावगर्हायाम् ॥ उत्तमशश्वत्तमौ सर्वत्र ॥ भक्षमन्थभोगदेहाः ॥ इत्युञ्छादयः ॥

१५८—वृषादीनाञ्च ॥ अ० ॥ ६ । १ । २०३ ॥

वृषादीनामादिरुदात्तो भवति :—

वृषः । जनः । ज्वरः । ग्रहः । हयः । गयः । नयः । तयः । पयः । वेदः । अंशः । दवः । सूदः । गुहा ॥ शमरणौ संज्ञायां संमतौ भावकर्मणोः ॥ मंत्रः । शान्तिः । कामः । यामः । आरा । धारा । कारा । वहः । कल्पः । पादः ॥ आकृतिगणोऽयम् । अविहितलक्षणमाद्युदात्तत्वं वृषादिषु द्रष्टव्यम् ॥ इति वृषादयः ॥

१५९—कार्तकौजपादयश्च ॥ अ० ॥ ६ । २ । ३७ ॥

कृतद्वन्द्वसमासाः कार्तकौजपादयः शब्दाः पूर्वपदप्रकृतिस्वरा भवन्ति ।कृतस्यापत्यं कार्त्तः । कुजपस्यापत्यम् कौजपः । कार्तश्च कौजपश्च :—

कार्तकौजपौ । सावर्णिमाण्डूकेयौ । आवन्त्यश्मकाः । पैलश्यापर्णेयाः ।पैलश्यापर्णेयौ।कपिश्यापर्णेयाः । शैतिकाक्षपांचालेयाः । कटुकवार्चालेयौ । शाकलशुनकाः । शाकलसणकाः ।शुनकधात्रेयाः ।सणकबाभ्रवाः ।आर्चाभिमौद्गलाः । कुन्तिसुराष्ट्राः। चिन्तिसुराष्ट्राः । तण्डवतण्डाः । गर्गवत्साः । अविमत्तकामविद्धाः । बाभ्रवशालङ्कायनाः । बाभ्रवदानच्युताः । कठकालापाः । कठकौथुमाः । कौथुमलौकाक्षाः । स्त्रीकुमारम् । मौदपैप्पलादाः । मौदपैप्पलादाः । द्विःपाठः समासान्तोदात्तार्थः । वत्सजरत् । सौश्रुतपार्थवाः । जरामृत्यू । याज्यानुवाक्ये ॥ इति कार्त्तकौजपादयः ॥

१६०—कुरुगार्हपतरिक्तगुर्वसूतजरत्यश्लीलदृढरूपापारेवडवातैतिलकद्रूःपण्यकम्बलोदासीभाराणाञ्च ॥अ०॥ ६ । २ । ४२ ॥

कुरुगार्हपत, रिक्तगुरु, असूतजरती, अश्लीलदृढरूपा, पारेवडवा, तैतिलकद्रू, पण्यकम्बल इत्येषां समासानां दासीभारादीनां च पूर्वपदं प्रकृतिस्वरं भवति । कुरूणां गार्हपतं कुरुगार्हपतम् । रिक्तो गुरुः रिक्तगुरुः । असूता जरती, असूतजरती । अश्लीला दृढरूपा अश्लीलादृढरूपा । दास्या भारो दासीभारः :—

दासीभारः । देवहूतिः । देवजूतिः । देवसूतिः । देवनीतिः । वसुनीतिः । ओषधिः । चन्द्रमाः । अविहितलक्षणः पूर्वपदप्रकृतिस्वरो दासीभारादिषु द्रष्टव्यः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६१—युक्तारोह्यादयश्च ॥ अ० ॥ ६ । २ । ८१ ॥

युक्ता रोह्यादिषु पूर्वपदमाद्युदात्तं निपात्यते :—

युक्तारोही। आगतरोही। आगतयोधी। आगतवञ्ची। आगतनर्दी। आगतप्रहारी। आगतमत्स्या। क्षीरहोता। भगिनीभर्त्ता। ग्रामगोधुक्। अश्वत्रिरात्रः। गर्गत्रिरात्रः। व्युष्टत्रिरात्रः। शणपादः। समपादः। एकशितिपात् ॥ पात्रेसम्मितादयश्च ॥ इति०

१६२—घोषादिषु च ॥ अ० ॥ ६ । २ । ८५ ॥

घोषादिषु चोत्तरपदेषु परेषु पूर्वपदमाद्युदात्तं भवति :—

दाक्षिघोषः। दाक्षिकटः। दाक्षिपल्वलः। दाक्षिवल्लभः। दाक्षिह्रदः। दाक्षिबदरी। दाक्षिपिङ्गलः। दाक्षिपिशङ्गः। दाक्षिशालः। दाक्षिरक्षः। दाक्षिशिल्पी। दाक्ष्यश्वत्थः। कुन्दतृणम्। दाक्षिशाल्मली। आश्रममुनिः। शाल्मलिमुनिः। दाक्षिपुंसा। दाक्षिकूटः। इति घोषादयः ॥

१६३—प्रस्थेऽवृद्धमकर्क्यादीनाम् ॥ अ० ॥ ६ । २ । ८७ ॥

प्रस्थ उत्तरपदेकर्क्यादिरहितमवृद्धं पूर्वपदमाद्युदात्तं भवति। इन्द्रप्रस्थः। कुण्डप्रस्थः। अवृद्धमिति किम्। दाक्षिप्रस्थः। अकर्क्यादीनामिति किम्। कर्कीप्रस्थः :—

कर्की। मघी। मकरी। कर्कन्धू। शमी। करीर। कटुक। कुरल। कवल। बदर। इति०

१६४—मालादीनां च ॥ अ० ॥ ६ । २ । ८८ ॥

प्रस्थ उत्तरपदे मालादय आद्युदात्ता भवन्ति। मालाप्रस्थः। शालाप्रस्थः :—

माला। शाला। शोणा। द्राक्षा। क्षौमा। क्षामा। काञ्ची। एक। काम। इति०

१६५—क्रत्वादयश्च ॥ अ० ॥ ६ । २ । ११८ ॥

सोरुत्तरपदस्थाः क्रत्वादयो बहुव्रीहौ समासे आद्युदात्ता भवन्ति। सुक्रतुः :—

क्रतु। दृशीक। प्रतीक। प्रपूर्त्ति। हव्य। भग। इति क्रत्वादयः ॥

१६६—आदिश्चिहणादीनाम् ॥ अ० ॥ ६ । २ । १२५ ॥

कन्थान्ते नपुंसकेतत्पुरुषेचिहणादिपूर्वपदानामादिरुदात्तोभवतिचिहणकन्थम् :—

चिहण। मडर। मडुर। वैतुल। पटत्क। वैडालिकर्णिः। वैतालिकर्णिः। कुक्कुट। चिक्कण। चित्कण ॥ इति चिहणादयः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६७—चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः ॥ अ० ॥ ६ । २ । १३४ ॥

तत्पुरुषसमासेऽप्राणिवाचिनः षष्ठ्यन्तात्पराणि चूर्णादीन्युत्तरपदानि आद्युदात्तानि भवन्ति । मुद्गस्य चूर्णं मुद्गचूर्णम् :—

चूर्ण । करिप । करिव । शाकिन । शाकट । द्राक्षा । तूस्त । कुन्दम । दलप चमसी । चक्कन । चक्कन । चौल ॥ इति चूर्णादीनि ॥

१६८—उभे वनस्पत्यादिषु युगपत् ॥ अ० ॥ ६ । २ । १४० ॥

वनस्पत्यादिषु समासेषूभे पूर्वोत्तरपदे युगपत्प्रकृतिस्वरे भवतः :—

वनस्पतिः । बृहस्पतिः । शचीपतिः । तनूनपात् । नराशंसः । शुनःशेपः । शण्डामर्कौ तृष्णावरूत्री । बम्बाविश्ववयसौ । मर्मृत्युः । इति वनस्पत्यादयः ॥

१६९—संज्ञायामनाचितादीनाम् ॥ अ० ॥ ६ । २ । १४६ ॥

संज्ञायां विषये गतिकारकोपपदात्परं क्तान्तमुत्तरपदमन्तोदात्तं भवति । आचितादीन् वर्जयित्वा । संभूतः । धनुष्खाता । अनाचितादीनामिति किम् :—

आचितम् । पर्याचितम् । आस्थापितम् । परिगृहीतम् । निरुक्तम् । प्रतिपन्नम् प्रश्लिष्टम् । उपहतम् । उपस्थितम् । संहितागवि ॥ इत्याचितादयः ॥

१७०—प्रवृद्धादीनां च ॥ अ० ॥ ६ । २ । १४७ ॥

प्रवृद्धादिशब्दानां क्तान्तमुत्तरपदमन्तोदात्तं भवति । प्रवृद्धंयानम् :—

प्रवृद्धो वृषलः । प्रयुक्ताः सक्तवः । आकर्षेऽवहितः । अवहितो भोगेषु । खट्वारूढः । कविशस्तः । आकृतिगणत्वात् पुनरुत्स्यूतं वासोदेयम् । पुनर्निष्कृतो रथः । इति०

१७१—निरुदकादीनि च ॥ अ० ॥ ६ ॥ २ । १८४ ॥

निरुदकादीनि च शब्दरूपाण्यन्तोदात्तानि निपात्यन्ते :—

निरुदकम् । निरुलपम् । निरुपलम् । निर्मशकम् । निर्मक्षिकम् । निष्कालकः । निष्कालिकः । निष्पेषः । दुस्तरीपः । निस्तरीपः । निस्तरीकः । निरजिनम् । उदजिनम् । उपाजिनम् ॥ परेर्हस्तपादकेशकर्षाः । परिहस्तः । परिपादः । परिकेशः । परिकर्षः । आकृतिगणोऽयम् ॥ इति निरुदकादयः ॥

१७२—प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे ॥ अ० ॥ ६ । २ । १९३ ॥

तत्पुरुषसमासे प्रतेरुत्तरा अंश्वादयोऽन्तोदात्ता भवन्ति । प्रतिगतोंशुः प्रत्यंशुः । :—

अंशु । जन । राजन् । उष्ट्र । खेटक । अजिर । आर्द्रा । श्रवण । कृत्तिका । अर्ध । पुर ॥ इत्यंश्वादयः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७३—उपाद् द्व्यजजिनमगौरादयः ॥ अ० ॥ ६ । २ । १९४ ॥

उपादुत्तरं द्व्यच्कमजिनं च तत्पुरुषसमासे गौरादिवर्जितमन्तोदात्तं भवति। उपगतो देवमुपदेवः । उपसोमः । उपाजिनम् ।अगौरादय इति किम् ।उपगौरः :-

गौर।तैष।तैल ।लेट।लोट।जिह्वा।कृष्णा।कन्या।गुड।कल्प।पाद । इति गौरादयः॥

१७४—स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु ॥ अ० ॥ ६ । ३ । ३४ ॥

भाषितपुंस्कशब्दात्परस्य समानाधिकरणस्त्रीलिङ्गे पूरणीप्रियादिवर्जिते उत्तरपदे परतः पुंशब्दस्येवरूपं भवति । दर्शनीया भार्या यस्य स दर्शनीयभार्यः। दीर्घजङ्घः । अप्रियादिष्विति किम् । कल्याणीप्रियः :-

प्रिया । मनोज्ञा । कल्याणी । सुभगा । दुर्भगा ।'भक्तिः । सचिवा । अम्बा । कान्ता ।क्षान्ता ।समा । चपला । दुहिता । वामा ॥ इति प्रियादयः ॥

१७५—वनगिर्योःसंज्ञायांकोटरकिंशुलकादीनाम्॥अ०॥६।३।११७॥

वन, गिरि, इत्येतयोरुत्तरपदयोः परयोर्यथासंख्यं कोटरादीनां किंशुलादीनां च संज्ञायां विषये दीर्घो भवति । कोटरावणम् । किंशुलकागिरिः :—

कोटर । मिश्रक । पुरक । सिध्रक । सारिक । इति कोटरादयः ॥ किंशुलक । सात्वक । अञ्जन । लोहित । कुक्कुट । इति किंशुलकादयः ॥

१७६—मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम् ॥ अ० ॥ ६ । ३ । ११९ ॥

मतौ प्रत्यये परतोऽजिरादिवर्जितस्य बह्वचो दीर्घो भवति संज्ञायां विषये ।उदुम्बरावती । मशकावती । अमरावती । अनजिरादीनामिति किम् :-

अजिरवती।खदिरवती।पुलिनवती।हंसकारण्डवती।चक्रवाकवती।इत्यजिरादयः॥

१७७—शरादीनां च ॥ अ० ॥ ६ । ३ । १२० ॥

संज्ञायां विषये मतौ परतः शरादीनां च दीर्घो भवति । शरावती । वंशावती:-

शर । वंश । धूम । अहि । कपि । मणि । मुनि । शुचि । हनु । इति शरादयः॥

१७८— द्वारादीनां च ॥ अ० ॥ ७ । ३ । ४ ॥

द्वारादीनां य्वाभ्यामुत्तरस्याचामादेरचः स्थाने वृद्धिर्न भवति ।किन्तु ताभ्यां पूर्वावैजागमौ भवतः । द्वारेनियुक्तः,दौवारिकः।स्वरमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः,सौवरः :-

द्वार । स्वर । व्यल्कश । स्वस्ति । स्फ्यकृत । स्वादुमृदु । श्वन् स्व ।इति द्वारादयः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७९—स्वागतादीनां च ॥ अ० ॥ ७ । ३ । ७ ॥

स्वागतादीनां शब्दानां य्वाभ्यां पूर्वौ ञित् णित् कित् तद्धिते परत ऐजागमौ न भवतः । वृद्धिस्तुभवत्येव । स्वागतमित्याह स्वागतिकः । स्वध्वरेण चरति, स्वाध्वरिकः :—

स्वागत । स्वध्वर । स्वङ्ग । व्यङ्ग । व्यड । व्यवहार । स्वपति । इतिस्वागतादयः॥

१८०—अनुशतिकादीनां च ॥ अ० ॥ ७ । ३ । २० ॥

ञिति णिति किति च तद्धिते परतोऽनुशतिकादिशब्दानां पूर्वपदस्योत्तरपदस्याचामादेरचः स्थाने वृद्धिर्भवति। अनुशतिकस्येदमानुशातिकम् :—

अनुशतिक । अनुहोड । अनुसंवत्सर । अङ्गारवेणु । असिहत्य । वध्योग । पुष्करसत् । अनुहरत् । कुरुकत । कुरुपञ्चाल । उदकशुद्ध । इहलोक । परलोक । सर्वलोक । सर्वपुरुष । सर्वभूमि । प्रयोग । परस्त्री । राजपुरुषात् ष्यञि ॥सूत्रनड॥ आकृतिगणोऽयम् (१) ॥ इत्यनुशतिकादयः ॥

१८१—न्यङ्क्वादीनां च ॥ अ० ॥ ७ । ३ । ५३ ॥

न्यङ्क्वादिषु कुत्वं निपात्यते । नितरामञ्चतीति :—

न्यङ्कुः । मद्गुः । भृगुः । दूरेपाकः । फलेपाकः । क्षणेपाकः । फलेपाका । दूरेपाकुः । फलेपाकुः । तक्रम् । वक्रम् । व्यतिषङ्गः । अनुषङ्गः । अवसर्गः । उपसर्गः । मेघः । श्वपाकः । मांसपाकः । कपोतपाकः । उलूकपाकः । संज्ञायामर्घः । अवदाघः । निदाघः (२) । न्यग्रोधः ॥ इति न्यङ्क्वादयः ॥

१८२—पूजनात्पूजितमनुदात्तं काष्ठादिभ्यः ॥ अ० ॥ ८ । १ । ६७ ॥

पूजनवाचिभ्यः काष्ठादिभ्यः परं पूजितमुत्तरपद मनुदात्तं भवति। काष्ठश्चासावध्यापकः काष्ठाऽध्यापकः :—

काष्ठ । दारुण । अमातापुत्र । अयुत । अद्भुत । अनुक्त । भृश । घोर । परम । सु । अति । अनुज्ञात । कल्याण । वेश ॥ इति काष्ठादयः ॥

१८३—मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः ॥ अ० ॥ ८ । २ । ९ ॥

मकारान्तान्मकारोपधादवर्णान्तादवर्णोपधाच्च परस्य मतुपो मकारस्य वकारादेशो भवति मतु यवादिभ्यः परस्य मस्य वो भवति । मान्तात् किंवान् । शंवान् ।

(१) अत्राकृतिगणेनेदमपि सिद्धं भवति । अभिगममर्हति, अभिगामिकः । अधिदेवेभवमाधिदैविकम् । आधिभौतिकम् । आध्यात्मिकम् । चतस्र एव विद्याः, चातुर्वैद्यम् । स्वार्थे ष्यञ् ।

(२) अर्घ, अवदाघ, निदाघ, इति त्रिषु शब्देषु संज्ञायामेव कुत्वम् । अन्यत्र । अर्हः । अवदाहः । निदाहः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकारोपधात् । शमीवान् । दाडिमीवान् । अवर्णान्तात् । वृक्षवान् । खट्वावान् । अवर्णोपधात् । यशस्वान् । भास्वान् । मादुपधाश्चेति किम् । अग्निमान् । अयवादिभ्य इति किम् । यवमान् :–

यव । दल्मि । ऊर्मि । भूमि । कृमि । क्रुञ्चा । वशा । द्राक्षा । ध्रजा । वेशा । ध्रजि । ध्वजि । सञ्जि । वजि । व्रजि । शञ्जि । सिञ्जि । हरित् । ककुत् । गरुत् । इक्षु । मधु । द्रुम । मण्ड । धूम । आकृतिगणोऽयम् ॥

१८४—कस्कादिषु च ॥ अ० ॥ ८ । ३ । ४८ ॥

कस्कादिशब्देषु विसर्जनीयस्य सः षो वा कवर्गपवर्गयोः परतः :–

कस्कः । कौतस्कुतः । भ्रातुष्पुत्रः । शुनस्कर्णः । सद्यस्कालः । सद्यस्क्रीः । साद्यस्कः । कांस्कान् । सर्पिष्कुण्डिका । धनुष्कपालम् । बर्हिष्पूलम् । यजुष्पात्रम् । अयस्काण्डः । मेदस्पिण्डः । आकृतिगणोऽयम् । इति कस्कादयः ॥

१८५—सुषामादिषु च ॥ अ० ॥ ८ । ३ । ९८ ॥

सुषामादिषु सकारस्य मूर्द्धन्यादेशो निपात्यते । शोभनं सामयस्यासौ सुषामा ब्राह्मणः :-

सुषामा । निःषामा । दुष्षेधः । सुषन्धिः । दुःषन्धिः । निषन्धिः । सुष्ठु । दुष्ठु । गौरिषक्थः संज्ञायाम् ॥ प्रतिष्णिका । जलाषाहम् । नौषेचनम् । दुन्दुभिषेवनम् ॥ अविहितलक्षणो मूर्द्धन्यः सुषामादिषु द्रष्टव्यः । इति सुषामादयः ॥

१८६—नरपरसृपिसृजिस्पृशिस्पृहिसवनादीनाम् ॥ अ० ॥ ८ । ३ । ११० ॥

रेफपरस्य सकारस्य सृपिसृजिस्पृशिस्पृहि सवनादशीनां सस्य मूर्द्धन्यादेशो न भवति । रपर, विस्रंसिका । विस्रब्धः । विसृपः । विसर्जनम् । सुस्पृशम् । निस्पृहम् :-

सवने सवने । सूते सूते । सामे सामे । सवनमुखे सवनमुखे । अनुसवनमनुसवनम् । बृहस्पतिसवः । शकुनिसवनम् । संवत्सरे संवत्सरे । मुसलं मुसलम् । गोसनिम् । अश्वसनिम् । इति सवनादयः ॥

१८७—क्षुभ्नादिषु च ॥ अ० ॥ ८ । ४ । ३९ ॥

क्षुभ्ना इत्यादि शब्देषु नस्य णकारादेशो न भवति । यथाप्राप्तिनिषेध :–

क्षुभ्नाति । क्षुभ्नीतः । क्षुभ्नन्ति । नृनमन । नन्दिन् नन्दिन् । नगर । नरीनृत्यते । तृप्नु । नर्त्तन । गहन । नन्दन । निवेश निवाश । अग्नि । अनूप ॥ आचर्यादणत्वं च ॥ आचार्यभोगीनः । आचार्यानी ॥ हायन ॥ इरिकादिभ्यः वनोत्तरपदेभ्यः संज्ञायाम् ॥

इरिका । तिमिर । समीर । कुबेर । हरि । कर्मार । क्षुभ्नादिराकृतिगणः ॥ इति क्षुभ्नादयः ॥

समाप्तश्चायं ग्रंथः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ भूमिका ॥

अत्र उणादिगणस्थ शब्द इस वक्ष्यमाण एक सूत्र की विशेष व्याख्या में हैं ॥

उणादयो बहुलम् ॥ अ० ॥ ३ । ३ । १ ॥

वर्त्तमान काल में विहित धातुओं से उणादि प्रत्यय बहुल करके होते हैं ॥

भूतेऽपि दृश्यन्ते ॥ अ० ॥ ३ । ३ । २ ॥

और कहीं २ भूतकाल में भी इन का विधान दीख पड़ता है ॥

भविष्यति गम्यादयः ॥ अ० ॥ ३ । ३ । ३ ॥

और गमी आदि गणपठित वक्ष्यमाण शब्द भविष्यत्काल में ही होते हैं। उणादि प्रत्ययों के होने के लिये यह तीनों काल का नियम है। गम्यादि शब्द। गमी। आगामी। प्रस्थायी। प्रतिरोधी। प्रतिबोधी। प्रतियोधी। प्रतियोगी। प्रतियायी। आयायी। भावी। इन से अन्य शब्द भूत और वर्त्तमान अर्थों के बोधक होते हैं। अब जितनी प्रकृतियों से जितने उणादि प्रत्यय कहे हैं उतने ही जानना चाहिये वा कुछ विशेष। इस लिये—

बाहुलकं प्रकृतेस्तनुदृष्टेः प्रायसमुच्चयनादपि तेषाम् ।
कार्यसशेषविधेश्च तदुक्तं नैगमरूढिभवं हि सुसाधु ॥ १ ॥
नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम् ।
यन्न पदार्थविशेषसमुत्थं प्रत्ययतः प्रकृतेश्च तदूह्यम् ॥ २ ॥
संज्ञासु धातुरूपाणि प्रत्ययाश्च ततः परे ।
कार्याद्विद्यादनुबन्धमेतच्छास्त्रमुणादिषु ॥ ३ ॥ महाभाष्ये

इसी सूत्र की व्याख्या में महाभाष्यकार पतञ्जलिमुनि उणादि पाठ की व्यवस्था बांधते हैं कि (बाहुलकम्) उणादि पाठ में थोड़े से धातुओं से प्रत्यय विधान किया है सो बहुल के होने से वे प्रत्यय अन्य धातुओं से भी होते हैं। इसी प्रकार प्रत्यय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी थोड़े से संकेतमात्र पढ़े हैं। सत्प्रयोगों में देख के इन से अन्य भी नवीनप्रत्ययों की कल्पना कर लेनी चाहिये। जैसे (ऋफिडः) इस शब्द में ऋधातु से फिड प्रत्यय समझा जाता है। इसी प्रकार अन्यत्र भी जानना चाहिये। तथा जितने शब्द उणादिगण से सिद्ध होते हैं उन में जितने कार्य सूत्रों से प्राप्त हैं वे सब नहीं होते यह भी बहुलग्रहण का ही प्रताप है। इस में यदि कोई ऐसा प्रश्न करे कि उणादिपाठ में जितने धातुओं से जितने प्रत्यय विधान किये और शब्दों की सिद्धि में जितने कार्य सूत्रों से हो सकते हैं उन से अधिक वा न्यून क्यों होते हैं। तो इस का उत्तर यह है कि (नैगम०) वैदिक शब्द और लौकिक संज्ञा शब्द ये सब अच्छे प्रकार सिद्ध नहीं हो सकते। इस लिये पूर्वोक्त तीन प्रकार के कार्य उणादिगण में बहुल वचन से होते हैं इस बहुल के होने से अनेक प्रकार के सहस्रों शब्द सिद्ध होते हैं ॥ १ ॥

संज्ञा शब्द वे ही कहाते हैं जो किसी निज वाच्य के साथ संबन्ध रक्खें फिर उन की सिद्ध करने से क्या प्रयोजन है क्योंकि वे संज्ञाशब्द जिस निज अर्थ के बोधक हैं उस का बोध तो प्रकृति प्रत्ययार्थ सम्बन्ध के विना भी कराते ही हैं वही पश्चात् होगा इस लिये (नामच०) इस विषय में निरुक्तकारों और वैयाकरणों में शाकटायन ऋषि का ऐसा मत है कि सब संज्ञा (रूढि) शब्द प्रकृति प्रत्ययार्थ के संबन्ध से यौगिक तथा योगरूढता से अर्थों के बोधक होते हैं। इन से भिन्न अन्य ऋषियों के मतानुसार सब संज्ञा शब्द रूढि अर्थात् अव्युत्पन्न होते हैं। अब जहां शब्दों में प्रकृतिप्रत्यय कुछ भी नहीं जान पड़ता वहां(प्रत्ययतः०)यदि प्रत्यय जान पड़े तो धातु की कल्पना और धातु जान पड़े तो नवीन प्रत्यय की कल्पना कर लेनी चाहिये। इस प्रकार उन शब्दों का अर्थज्ञान कर लेना चाहिये ॥ २ ॥ संज्ञा शब्दों में धातुओं का रूप पूर्व भाग में और शब्द के पर भाग में धातु से परे प्रत्यय की कल्पना करनी चाहिये। और जिस शब्द में जिस अनुबन्ध का कार्य दीख पड़े वैसे ही सानुबन्धक धातु वा प्रत्ययों की ऊहा करनी चाहिये। अर्थात् आत्मनेपद दीख पड़े तो अनुदात्तेत् वा ङित् धातु जानना और जो आद्युदात्त स्वर हो तो ञित् वा नित् प्रत्यय की कल्पना करनी चाहिये। यह कल्पना सर्वत्र नहीं करनी किन्तु वैदिक वा लौकिक सत्प्रयुक्त शब्दों के अर्थ जानने के लिये शब्द की पूर्व भाग में धात्वर्थ की और पर भाग में प्रत्ययार्थ की कल्पना करनी चाहिये। यह सब संबन्ध ऋषि लोगों ने इस लिये बांधा है कि अगाध शब्दसागर की थाह व्याकरण से भी नहीं मिल सकती। जो कहें कि ऐसा व्याकरण क्यों नहीं बनाया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि जिस से शब्दसागर के पार पहुंच जाते तो यह समझना चाहिये कि कितने ही पोथा बनाते और जन्म जन्मान्तरों भर पढ़ते तो भी पार होना दुर्लभ ही था इस लिये यह पूर्वोक्त व्याकरण से सब प्रबन्ध जताया है ॥ २ ॥ उणादिगण में कारक व्यवस्था का यह नियम है कि –

दाशगोघ्नौ संप्रदाने ॥ अ० ॥ ३ । ४ । ७३ ॥

यह सूत्र सामान्य कृदन्त का नियामक है कि दाश और गोघ्न शब्द औणादिक हो वा अष्टाध्यायी से सिद्ध हों परन्तु प्रत्यय संप्रदान कारक में हो हों। इस नियम से ये दोही शब्द संप्रदान में होते हैं अन्य नहीं ॥

भीमादयोऽपादाने ॥ अ० ॥ ३ । ४ । ७४ ॥

भीमादि शब्दों में अपादान कारक में हो प्रत्यय होते हैं।भीमादि शब्द औणादिक हैं जैसे–भीमः । भीष्मः ।भयानकः । वरुः ।चरुः । भूमिः । रजः । संस्कारः । संक्रन्दनः । प्रपतनः । समुद्रः । स्रुचः । स्रुक् । खलतिः । इति भीमादिगणः ॥

ताभ्यामन्यत्रोणादयः ॥ अ० ॥ ३ । ४ । ७५ ॥

उन संप्रदान और अपादान दोनों कारकों से भिन्न अन्य कारकों में उणादि प्रत्यय होते हैं । व्युत्पन्न पक्ष में उणादि प्रत्ययान्त शब्दों के यौगिक होने से प्रत्ययों को कृत्संज्ञक मान के कर्त्ता में प्राप्त हैं इस लिये यह कारक नियम है । और भाव में भो उणादि प्रत्यय होते हैं । संप्रदान और अपादान को छोड़ के अन्य कारकों में तो उणादि प्रत्ययों का यथेष्ट विधान है परन्तु बहुलवचन से कहीं संप्रदान में भी कोई प्रत्यय कर दिये हों तो चिन्ता नहीं । इस उणादिगण की एक वृत्ति छपी भी है परन्तु वही पोपलीला आदि का जगड्वाल बहुत और प्रयोजन थोड़ा सिद्ध होता है । इस लिये यह कोष बनाना पड़ा । इस ग्रंथ में सूत्रों का पाठ तथा अर्थ बहुधा सुगम है इसी लिये प्रति सूत्र का अर्थ वृत्ति में नहीं किया और जहां कुछ कठिन जान पड़ा वहां खोल दिया है । अनुवृत्ति भी बहुधा जनादी है । इस का मूल ऊपर २ पृथक् इस लिये छप वाया है कि अध्येता लोगों को पाठ करने और घोषण से कण्ठस्थ करने में सुगमता रहेगी । जो अंक सूत्र के अन्त में लिखा है वही नीचे वृत्ति के आदि में डाल दिया है । इस से बड़ी सुगमता होगी । इस में विशेष करके लौकिक शब्द और सामान्य से वैदिक लौकिक दोनों ही सिद्ध किये हैं । निघण्टु में जित ने वैदिक शब्द हैं उन में से बहुतों का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वचन वृत्ति में मिले गा । सो दोनों की अकारादि सूची को देख के खोज लेना चाहिये । निर्वचन तो सब शब्दों का कर दिया है परन्तु वे धातुगण,नुबंध और अर्थ के सहित यहां नहीं लिखे हैं क्यों कि ग्रंथ बहुत बढ़ जाता इस लिये धातु के प्रयोग से गण अनुबंध तथा उस के पर्य्याय शब्द से धातु के अर्थ का बोध कर लेना चाहिये । संस्कृत में वृत्ति बना ने का यही प्रयोजन है कि जो लोग पठन पाठन व्यवस्था के पहिले पुस्तकों को पढेंगे उन के लिये संस्कृत कुछ कठिन नहीं होगा । और संस्कृत भी सरल ही बनाया है । कई शब्दों के अर्थ इति शब्द लगा कर भाषा में भी खोल दिये हैं ॥

इति भूमिका

स्थान महाराणा जी का उदयपुर
माघकृष्ण १ संवत् १९३९

दयानन्दसरस्वती

———*———

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म् ॥

अथोणादिकोषः ॥

—ॐ*ॐ—

कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण् ॥१॥ कारुः। वायुः। पायुः। जायुः। मायुः। स्वादुः। साधुः। आशु। आशुः ॥ १॥

छन्दसीणः ॥ २ ॥ आयुः ॥ २ ॥

दृसनिजनिचरिचटिरहिभ्यो ञुण् ॥३॥ दारु। सानु। जानु। चारु। चाटु। राहुः ॥ ३ ॥

(१) करोतीति कारुः कर्त्ता शिल्पी वा। वाति गच्छति जानाति वेति वायुः पवनः परमेश्वरो वा। पाति रक्षति स पायू रक्षकः गुदेन्द्रियं वा। जयत्यभिभवति तिरस्करोति शत्रूनिति जायुः शूरः। जयति रोगानिति जायुरौषधं वैद्यो वा। यो मिनोति प्रक्षिपति स मायुः। अथवा मिनोति प्रक्षिपत्यूष्माणमिति मायुः पित्तम्। गां विकृतां वाचं मिनोतीति गोमायुः शृगालः। स्वद्यते भोक्तुमभीप्स्यते तत्स्वादु भोज्यमन्नं वा। साध्नोति धर्म्यं कर्मेति साधुः सज्जनः। अश्नुते व्याप्नोति तदाशु शीघ्रम्। अश्नुते सद्योऽध्वानमित्याशुरश्वः। वाऽश्यते भुज्यते शीघ्रमित्याशुर्धान्यं ब्रीहिः बहुलवचनात्–स्नाति शोधयत्यङ्गानीति स्नायुर्नाड़ी वा। कक्यते लोलश्चञ्चलो भवति येनेति काकुः। भयादिः ध्वनेर्विकारो वा। हल्यते छिद्यतेऽन्नमनेनेति हालुः। दन्तो वा। वसति जगदस्मिन् वा सर्वस्मिन् यो वसति स वासुरीश्वरः। इत्यादि।

(२) वेद इण् धातोरुण्। एति प्राप्नोति सर्वानित्यायुर्जीवनकालः। सान्तस्तु द्वितीयपादे वक्ष्यते ॥

(३) दीर्यते भिद्यत इति दारु काष्ठं वा। सनति संभजति सनोति ददाति वा स सानुः। पर्वतैकदेशशृङ्गबुधमार्गवात्यापर्णवनानि च सानूनि वा। जायन्तेऽस्मात्तज्जानु जङ्घाया उपरिभागो वा। जनिवध्योश्चेति प्रतिषेधाऽप्यनुबन्धद्वय-सामर्थ्याद्वृद्धिर्भवति। चरति चक्षुरादिर्विंति चारु शोभनम्। चटति भिनत्तीति चाटु प्रियं वचो वा। रहति त्यजति दोषानिति राहुः। ग्रहविशेषो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंजरयोः श्रिणः ॥ ४ ॥ किंशारुः । जरायुः ॥४ ॥

त्रोरश्च लः ॥ ५ ॥ तालु ॥ ५ ॥

कृके वचः कश्च ॥ ६ ॥ कृकवाकुः ॥ ६ ॥

भृमृशीङ्तृचरित्सरितनिधनिमिमस्जिभ्य उः ॥ ७ ॥ भरुः । मरुः । शयुः । तरुः । चरुः । त्सरुः । तनुः । धनुः । मयुः । मद्गुः ॥७॥

अणश्च ॥ ८ ॥ अणुः ॥ ८ ॥

धान्ये नित् ॥ ६ ॥ अणवः ॥ ६ ॥

(४) किं श्रूयतेऽनेनेति किंशारुः धान्यविशेषो वा । जरां जीर्णतामेति जरायुः । गर्भाशयो गर्भावरणं वा ॥

(५) तृधातोर्ञुण् रेफस्य लत्वम् । तरन्ति निःसरन्ति वर्णा यत इति तालु मुखैकदेशः । बाहुलकात् । अर्यते प्राप्यत इत्यालु भक्ष्यं कन्दं वा । भृणाति स्वतापेन छेदयति पदार्थानिति भालुः सूर्यः । शृणाति चित्तं हिनस्तीति शालुः । कषायद्रव्यं वा । इत्यादि ॥

(६) कृकोपपदाद्वचधातोर्ञुण् । कृकेन कण्ठेन वक्तीति कृकवाकुर्ध्वनादिर्मयूरो वा

(७) भरति बिभर्त्ति वेति भरुः । स्वामी । म्रियन्ते भूतान्यस्मिन्निति मरुर्निर्जलो देशो वा । शेतेऽसौ शयुः शयनशीलः । यस्तरति येन वा स तरुः वृक्षो वा । चरति चर्यतेऽग्निना भक्ष्यत इति चरुः । यज्ञपाको वा । त्सरति कुटिलं गच्छतीति त्सरुः । खड्गमुष्टिर्वा । तन्यन्ते कर्माण्यनेनेति तनुः शरीरं स्वल्पं वा । धन्यते धर्मं प्राप्यतेऽनेनेति धनुः शास्त्रं शस्त्रं वा । मिनोति सुशब्दं प्रक्षिपतीति मयुः वानरो वा । मज्जति शुद्धो भवतीति मद्गुः जलप्लवी पक्षी वा । न्यङ्क्वादित्वात्कुत्वम् । बाहुलकात्—गण्डति स गण्डुः वदनैकदेशः । उपधानम्—तकिया इतिप्रसिद्धं तैलं वा

(८) अणति शब्दयतीत्यणुः । अतिसूक्ष्मं वा । अत्र चकारग्रहणाद्वा—कटति जिह्वां विकारयतीति कटू रसः । बटति गुणकर्माणि विभजतीति बटुः । द्विजसुतो वा

(६) अणन्ति शब्दायन्ते यैस्तेऽणवोऽन्नविशेषा वा निलकरणमाद्युदात्तस्वरार्थम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शॄस्वृस्निहित्रप्यसिवसिहनिक्लिदिबन्धिमनिभ्यश्च ॥ १० ॥ शरुः । स्वरुः । स्नेहुः । त्रपु । असुः । वसुः । हनुः । क्लेदुः । बन्धुः । मनुः ॥ १० ॥

स्यन्देः सम्प्रसारणं धश्च ॥ ११ ॥ सिन्धुः ॥ ११ ॥

उन्देरिच्चादेः ॥ १२ ॥ इन्दुः ॥ १२ ॥

ईषेः किच्च ॥ १३ ॥ इषुः ॥ १३ ॥

स्कन्देः सलोपश्च ॥ १४ ॥ कन्दुः ॥ १४ ॥

सृजेरसुम् च ॥ १५ ॥ रज्जुः ॥ १५ ॥

(१०) अत्र चादुप्रत्ययोनिर्दितिसंबन्धः । एवमर्थं एव पृथक्पाठः । शृणाति-हिनस्ति येनेति शरुरायुधं क्रोधो वा । स्वर्यन्त उपतप्यन्ते प्राणिनोऽनेनेति स्वरुर्वज्रम् । स्निह्यति यस्मिन् स स्नेहुर्व्याधिर्वा । अग्निं प्राप्य यत्त्रपते लज्जितमिव भवतीति तत् त्रपु सीसकं रंगं वा । अस्यति प्रक्षिपति वायुमित्यसुः प्राणः । असुं प्राणं राति ददातीत्यसुरो मेघः । वस्त आच्छादयति दुःखं येन तद्वसु धनं वा । वसन्ति प्राणिनो येषु ते वसवोऽग्न्यादयोऽष्टौ । हन्यतेऽनेनेति हनुः कपोलावयवः प्रहरणं मृत्युर्वा । क्लिद्यत्यार्द्रीकरोति चित्तमिति क्लेदुश्चन्द्रमा । वा प्रेम्णा बध्नातीति बन्धुः सज्जनो वा । मन्यते चराचरं जगज्जानातीति मनुरीश्वरः मनुतेऽवबुध्यते शास्त्रमिति मनुर्विद्वान् राजर्षिः। बहुलवचनात् । बिन्दत्यवयवी भवतीति बिंदुः परिमाणं जलादिकणो वा ।

(११) स्यन्दन्ते प्रस्रवन्त्युदकान्यस्मिन्निति सिन्धुः ॥

(१२) उन्दधातोरुः प्रत्यय आदिवर्णस्येकारादेशश्च । उनत्त्यार्द्रीकरोति पदार्था-नितीन्दुश्चन्द्रमा वा ॥

(१३) अत्र चकारादिच्चेत्यनुवर्त्तते तेन दीर्घस्य ह्रस्वो भवति ईषति गच्छति हिनस्ति वा शत्रूनिति, इषुर्बाणो वीरो वा । कित्वाद् गुणाऽभावः ॥

(१४) स्कन्दति गच्छति शुष्यति वा येन स कन्दुः कुमाराणां क्रीडार्थे गेंद-इति प्रसिद्धं वा ॥

(१५) अत्र पूर्वसूत्रात्सलोप इत्यनुवर्त्तते । धातोरसुमागम आदिसकारलोपश्च । पुनर्ऋकारस्य यणादेश आगमसकारस्य जश्त्वं च । सृजन्त्युदकनिस्सारणायेति रज्जुर्जलोद्धरणं वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृतेराद्यन्तविपर्ययश्च ॥ १६ ॥ तर्कुः ॥ १६ ॥

नावञ्चेः ॥ १७ ॥ न्यङ्कुः ॥ १७ ॥

फलिपाटिनमिमनिजनां गुक्पटिनाकिधतश्च ॥ १८ ॥ फल्गुः । पटुः । नाकुः । मधुः । जतुः ॥ १८ ॥

बलेर्गुक्च ॥ १९ ॥ बल्गुः ॥ १९ ॥

शः कित्सन्वच्च ॥ २० ॥ शिशुः ॥ २० ॥

यो द्वे च ॥ २१ ॥ ययुः ॥ २१ ॥

कुर्भश्च ॥ २२ ॥ बभ्रुः ॥ २२ ॥

(१६) आद्यन्तविपर्यययोर्श्चादादौ तकारोऽन्ते ककारः । उश्च प्रत्ययः कृन्तति छिनत्ति वस्त्रादिकमनेन स तर्कुः । कर्त्तनी वा ॥

(१७) ये नितरामञ्चन्ति गच्छन्ति ते न्यङ्कवो जातिविशेषाः पशवो वा ॥

(१८) उप्रत्यये फलधातोर्गुगागमः फलति निष्पद्यते स फल्गुः असारो वा नपुंसके फल्गु फलम् । पाटिधातोः पटिरादेशः । पाटयति ज्ञापयति सदसत्पदार्थान् स पटुर्वाग्मी विशारदो वा । नमधातोर्नाकिरादेशः नमतीति नाकुः । वल्मीको वा मनधातोर्धकारादेशः । मन्यन्ते विशेषेण जानन्ति यस्मिन् स मधुश्चैत्रो मासः । मधूकी मद्यं क्षौद्रं पुष्परसो वा । जनधातोस्तकारादेशः । जायते प्रादुर्भूयतेऽनेनेति जतु लाक्षा वा ॥

(१९) बलते प्राणयतीति बल्गुः । नपुंसके बल्गु शोभनम् ॥

(२०) सन्वद्भावाद् द्वित्वादिकम् । श्यति तनूकरोति पित्रोः शरीरमिति शिशुर्बालकं वा ॥

(२१) अत्र सन्वदित्यनुवर्तमानेपि द्वे ग्रहणमभ्यासेत्वनिवृत्त्यर्थम् । यान्ति प्राप्नुवन्ति देशान्तरमनेनेति ययुरश्वो वा ॥

(२२) अत्र द्वे इत्यनुवर्त्तते भृधातोः कुः प्रत्ययो द्वित्वं च । बिभर्त्ति सर्वमिति बभ्रुः नकुलः पिंगलो वा । सूत्रे चकारग्रहणादन्यधातुभ्योऽपि कुःप्रत्ययस्तेषां द्वित्वं च भवति । तद्यथा । करोतीति चक्रुः कर्त्ता । हन्तीति जघ्नुर्हन्ता । पाति रक्षतीति पपुः पालकः । इत्यादि ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृभिदिव्यधिगृधिधृषिहृषिभ्यः ॥ २३ ॥ पुरुः । भिदुः । विधुः । गृधुः । धृषुः । हृषुः ॥ २३ ॥

कृग्रोरुच्च ॥ २४ ॥ कुरुः । गुरुः ॥ २४ ॥

अपदुःसुषु स्थः ॥ २५ ॥ अपष्ठुः । दुष्ठुः । सुष्ठुः ॥ २५ ॥

रपेरिच्चोपधायाः ॥ २६ ॥ रिपुः ॥ २६ ॥

अर्जिदृशिकम्यमिपंसिबाधामृजिपशितुक्धुक्दीर्घहकाराश्च॥२७॥ ऋजुः । पशुः । कन्तुः । अन्धुः । पांसुः। बाहुः ॥ २७ ॥

(२३) एभ्यः कुः । पिपर्त्ति पालयति पूरयति वा स पुरुः । बहुरिन्द्रियं वा भिनत्तीति भिदुर्वज्रं वा। विध्यति दुर्गन्धं दिवसं वेति विधुः कर्पूरं चन्द्रमा वा। व्यधेर्ग्रहिज्येति सम्प्रसारणम् । गृध्नोत्यभिकाङ्क्षते येन स गृधुः कामो वा। धृष्णोति प्रगल्भो भवतीति धृषुदक्षः । हृष्यति स हृषुर्हर्षकः। दृशीति पाठान्तरे दृशुर्दर्शकः ॥

(२४) यः करोति येन वा स कुरुः। कुरवो राजानो वा । गृणात्युपदिशति वेद-शास्त्रविद्यामाचारं च स गुरुः सर्वेषां गुरुत्वादीश्वरः । आचार्यः पिता वा ॥

(२५) अप, दुः, सु, इत्येतेषूपपदेषु स्थाधातोः कुः । अपतिष्ठतीत्यपष्ठुर्वामभागः प्रतिकूलः पदार्थो वा निन्दितस्तिष्ठतीति दुष्ठुरविनीतः। सुतिष्ठतीति सुष्ठु शोभ-नम् । सर्वत्र सुषामादित्वात् षत्वम् ॥

(२६) अनिष्टं रपति वदतीति रिपुः शत्रुः । चकारग्रहणात्कुप्रत्यये परे इका-रादेश एव समुच्चीयते ॥

(२७) कुप्रत्यये सति—अर्ज्यादिप्रकृतीनामृज्यादय आदेशा भवन्ति अर्जयति संचिनोति गुणानिति, ऋजुः कोमलो वा। पश्यति सर्वमिति पशुः पश्यन्ति येन वा स पशुरग्निः।पश्यति जानाति स्वार्थमिति पशुर्गवादिः। कमधातोस्तुक् । कामयते यं स कन्तुः कामी वा । अमधातोर्धुक् । अमति रजति गच्छति वेत्यन्धुः कूपो वा। अस्मिन् सूत्रे चकारग्रहणाद्बहुलवचनाद्वा अमधातोर्बुगागमोऽपि भवति अमन्ति गच्छन्ति चेष्टन्ते प्राणिनो येन तदम्बु जलम् । पंसयति नष्टमिव भवतीति पांसुर्धूलिर्वा पंसधातोर्दीर्घः नेत्रार्थं चिरकालात्संचितं गोमयं वा। इत्याद्येष्वर्थेषु पांशुरिति तालव्यान्तोऽपि शब्दो दृश्यते । बाध्यन्ते विलोड्यन्ते पदार्था याभ्यां तौ बाहू भुजौ । प्रायेणायं द्विवचनान्तः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथिम्रदिभ्रस्जां संप्रसारणं सलोपश्च ॥ २८ ॥ पृथुः । मृदुः । भृगुः ॥ २८ ॥

लंघिबंह्योर्नलोपश्च ॥ २९ ॥ लघुः । बहुः ॥ २९ ॥

ऊर्णोतेर्नुलोपश्च ॥ ३० ॥ ऊरुः ॥ ३० ॥

महति ह्रस्वश्च ॥ ३१ ॥ उरु ॥ ३१ ॥

श्लिषेः कश्च ॥ ३२ ॥ श्लिकुः ॥ ३२ ॥

आङ्परयो खनिशृभ्यां डिच्च ॥ ३३ ॥ आखुः । परशुः ॥ ३३ ॥

हरिमितयोर्द्रुवः ॥ ३४ ॥ हरिद्रुः । मितद्रुः ॥ ३४ ॥

(२८) प्रथ्यादिभ्यः कुः प्रत्ययस्तस्मिन् सति प्रथिस्रद्योः संप्रसारणं सलोपश्च प्रथते कीर्त्तिः वा विस्तारयति स पृथूराजविशेषो विस्तीर्णः पदार्थो वा । म्रदते म्रदितुं शक्यते स मृदुर्मार्दकः । कोमलं वा । भृज्जति तपसा शरीरमिति भृगुर्ऋषिः प्रतापो वा । न्यङ्क्वादित्वात्कुत्वम् ॥

(२९) लंघिवंहिभ्यां कुरनयोर्नलोपश्च । लङ्घति गन्तुं शक्नोतीति लघुः स्वल्पो वा । अस्यैव, बालमूललघ्वसुरालमङ्गुलीनां वालोरत्वमापद्यत इति वार्त्तिकेन रेफः । रघू राजविशेषः । बंहतेवर्धतेऽन्येभ्य इति बहुः । प्रचुरः संख्या वा ॥

(३०) ऊर्णोत्याच्छादयति यां सा ऊरुर्जङ्घा । कुप्रत्यये नुभागलोपः ॥

(३१) ऊर्णुधातोः कुप्रत्ययस्तस्मिन् नुभागलोप ऊकारस्य ह्रस्वत्वं च ऊर्णोत्याच्छादयत्यल्पानित्युरु महत् ॥

(३२) श्लिष्यति पदार्थैः सह संबध्यते स श्लिकुः । परवशो ज्योतिषं वा ॥

(३३) आसमन्तात्खनति भूमिमित्याखुर्मूषको वराहो वा परान् शत्रून् शृणाति हिनस्ति येन स परशुः । शस्त्रभेदः कुठारो वा पृषोदरादित्वादकारलोपे पूर्वार्थ एव पर्शुरपि दृश्यते ॥

(३४) हरिणाऽश्वेन वा द्रवति गच्छतीति हरिद्रुः । दारु हरिद्रा वा । मितं परिमितं द्रवतीति मितद्रुः शोभनगमनो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शते च ॥ ३५ ॥ शतद्रुः ॥ ३५ ॥
खरुशङ्कुपीयुनीलङ्गुलिगु ॥ ३६ ॥
मृगय्वादयश्च ॥ ३७ ॥ मृगयुः । देवयुः । मित्रयुः ॥ ३७ ॥
मन्दिवाशिमथिचतिचङ्क्यङ्किभ्य उरच् ॥ ३८ ॥ मन्दुरा । वाशुरा । मथुरा । चतुरः । चङ्कुरः । अङ्कुरः ॥ ३८ ॥

(३५) शतधा बहुप्रकारैर्द्रवति गच्छतीति शतद्रुः । नदीभेदो गङ्गा वा । अत्र बाहुलकात्केवलादपि द्रुधातोः कुप्रत्ययो दृश्यते । यं द्रवन्ति कार्यार्थं प्राणिनः प्राप्नुवन्तीति स द्रुर्वृक्षः शाखा वा । द्रवः शाखा अस्मिन् सन्तीति द्रुमो वृक्षः (द्युद्रुभ्यां मः) इति सूत्रेण मत्वर्थीयो मः प्रत्ययः ॥

(३६) खरु इत्येवमादयश्शब्दाः कुप्रत्ययान्ता निपात्यन्त । खनधातोः कुर्नस्य रः । खनति शरीरमिति खरुः कामः । दन्तः संहर्त्ता दर्पोऽश्वो वा । श्वेतार्थे तु वाच्यवत् यथा खरुरियं ब्राह्मणी । खरु कुलम् खरुः पुमान् । यं दृष्ट्वा शङ्कते सन्दिग्धो भवतीति तत् शंकु विषम् । कीलं शस्त्रं संख्या वृक्षभेदो जलभेदः पापं स्थाणुर्वा । पिबति पाति वा स पीयुः कालः काको वा । कुप्रत्यये धातोरीकारादेशो युगागमश्च । नितरां लङ्गति गच्छतीति नीलङ्गुः । क्रिमिजातिर्भ्रमरः पुष्पं वा । कुप्रत्यये उपसर्गस्य दीर्घत्वम् । सर्वत्र लगति संगच्छते तत् लिगु चित्तं वा लगी धातोरुपधाया इत्वम् । बाहुलकात् खंजति गमने विकलो भवतीति पङ्गुः । गतिहीनो वा कुप्रत्यये खञ्जधातोः पङ्गादेशः । स्वगन्धेनान्यगन्धान् हन्तीति हिङ्गुर्वणिग्द्रव्यम् ॥

(३७) मृगयुप्रभृतयः कुप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते मृग, देव, मित्र, कुमार, अध्वर इत्येतेषूपपदेषु या प्रापण इत्यस्मात् कुप्रत्ययो भवति । मृगान् याति प्राप्नोतीति मृगयुर्व्याधः देवान् विदुषो याति स देवयुर्धार्मिकः । मित्रान् यातीति मित्रयुर्लोकव्यवहारवित् । कुमारावस्थां यातीति कुमारयुः राजपुत्रो वा । अध्वरं यज्ञं यातीत्यध्वर्युर्याजकः । अध्वरस्यान्त्यलोपश्च बहुलवचनात् कोहयति विस्मापयतीति कुहुः । यस्यां चन्द्रो न दृश्यते साऽमावास्या वा कुहूः पण्डति गच्छतीति पाण्डुः रङ्गविशेषो राजविशेषो वा । पीलति प्रतिष्टम्भनोति निरुणद्धि जीवानिति पीलुर्हस्ती । वृक्षः काण्डः परमाणवः पुष्पाणि वा । मंजिः सौत्रो धातुस्तस्मात्कुः । मंजति चित्तं प्रसादयतीति मंजु शोभनम् । एवं निघण्टु पलाण्डु कर्कण्टु करेटु डमरु प्रभृतयः शब्दा अन्यत्रैव द्रष्टव्या आकृतिगणत्वादस्य ॥

(३८) मन्दते स्तौति माद्यति वा यस्यां सा मन्दुरा । अश्वशाला वा । वाश्यते शब्दं करोतीति वाशुरा रात्रिर्वा । मथति विलोडयतीति मथुरा नगरीवा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यथेः सम्प्रसारणं धः किच्च ॥ ३८ ॥ विधुरः ॥ ३८ ॥

मकुरदर्दुरौ ॥ ४० ॥

मद्गुरादयश्च ॥ ४१ ॥ मद्गुरः । कर्बुरः । बन्धुरः । कुक्कुरः । कुकुरः ॥ ४१ ॥

असेरुरन् ॥ ४२ ॥ असुरः ॥ ४२ ॥

चतति याचते स चतुरो दक्षः कुशलो वा । चक्क इति सौत्रो धातुः । चक्कति सर्वतो भ्रमति येन स चक्कुरो रथो वा । अङ्क्यते । लक्ष्यते निःसृतं दृश्यते सोऽङ्कुरो बीजोत्पादो वा । अत्र खर्जूरादिवक्ष्यमाणगणेन, । ऊर प्रत्ययेऽङ्कूर इत्यपि । अर्थः स एव ॥

(३८) व्यथति बिभेति यस्मात् स विधुरोऽत्यन्तवियोगः शरीरत्यागो वा । संप्रसारणे सति गुणनिषेधाय किल्लम् । बाहुलकात्थकारस्य धकारो न तेन विथुर इत्यपि सिद्धं भवति । विथुरश्चौरो दुष्टो वा ॥

(४०) मकुरदर्दुरावुरच्प्रत्ययान्तौ निपात्येते । मङ्कतेऽलङ्करोति येन स मकुरो दर्पणो वा । मङ्कधातोर्नलोपः । बाहुलकाद्धातोरकारस्योकारे कृते दर्पणार्थ एव मुकुर इत्यपि सिद्धम् । दृणाति विदारयत्युष्णमिति दर्दुरो मेघो मण्डूको वाद्यभेदः पर्वतभेदो वा.उरचि दृधातोर्द्विर्वचनमभ्यासस्य रुगागमो धातोष्टिलोपश्च निपात्यते॥

(४१) मद्गुरप्रभृतयः शब्दा उरजन्ता निपात्यन्ते । माद्यति हृष्यतीति मद्गुरो मत्स्यभेदो वा धातोर्गुगागमः कबतेवर्णविशेषो भवतीति स कर्बुरः श्वेतो दुष्टो वा धातोरुमागमः । बध्नाति मार्दवेन स बन्धुरो नम्रः सुन्दरो वा । खर्जूरादित्वादूर प्रत्ययेपि बन्धूर उक्तार्थ एव । चिन्वन्त्येकीकुर्वन्ति याँस्ते चिकुराः । अत्र धातोः कुगागमः । कोकत आदत्ते परपदार्थमिति कुक्कुरः कुकुरः श्वा । एकार्थौ । विकल्पेनात्र कुगागमो निपातनम् अतति निरन्तरं गच्छतीति, आतुरोऽशान्तः । धातोरादेर्दीर्घः । वान्ति मृगान् प्राप्नुवन्ति यया सा वागुरा मृगबन्धनी मृगबन्धनार्थंजालम् अत्र धातोर्गुगागमो निपातनम्।शक्नोति तरितुमिति शकुलोमत्स्यः।वङ्कतेकुटिलो भवतीति वकुलो वृक्षभेदो वा । अत्रोभयत्र प्रत्ययरेफस्य लत्वम् । वङ्केर्नलोपश्च ॥

(४२) अस्यति प्रक्षिपति धर्मं शुभगुणांश्च सोऽसुरः । मेघोदुर्जनादिर्वा । नित्करणमाद्युदात्तस्वरार्थम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसेरुरच ॥ ४३ ॥ मसुरा ॥ ४३ ॥

शावशेराप्तौ ॥ ४४ ॥ श्वशुरः ॥ ४४ ॥

अविमह्योष्टिषच् ॥ ४५ ॥ अविषः । महिषः ॥ ४५ ॥

अमेर्दीर्घश्च ॥ ४६ ॥ आमिषम् ॥ ४६ ॥

रुहेर्वृद्धिश्च ॥ ४७ ॥ रौहिषम् ॥ ४७ ॥

तवेर्णिद्वा ॥ ४८ ॥ ताविषी । तविषी ॥ ४८ ॥

नञि व्यथेः ॥ ४९ ॥ अव्यथिषः ॥ ४९ ॥

किलेर्बुक्च ॥ ५० ॥ किल्बिषम् ॥५० ॥

(४३) मस्यन्ति सुष्ठु तथा परिणमन्ते ते मसुरा द्विदलविशेषाः । अत्रैव पंचमपादे मसधातोरूरन् प्रत्यये मसूर इत्यपि सिद्धम् । एकार्थाविमौ द्विदलान्नेषु मसूर इति प्रसिद्धम् ॥

(४४) शु इति शीघ्रार्थवाचिन्युपपदे आप्तौ गम्यमानायां शूङ् धातोररन् शु शीघ्रमश्नुत आप्नोति जामाता यं स श्वशुरः । दम्पत्योः पिता ॥

(४५) अवन्ति नद्यो गच्छन्ति स अविसः समुद्रः, महति पूजयति स्वपुरुषार्थेन इति महिषो महान् राजा वा तद्योगान्महिषी राज्ञी पशुविशेषो वा । अवति प्रीणाति प्राणिन इत्यविषी नदी वा ॥

(४६) टिषच् । अमन्ति गच्छन्ति येन तदामिषं मांसं वा। अथवाऽमन्ति रोगिणो भवन्ति येन भक्षितेन तदामिषम् । इत्येकार्थः ॥

(४७) टिषच् रुहन्त्युत्पद्यन्ते यानि तानि रौहिषाणि तृणानि । रौहिषो मृगादी वा ॥

(४८) तव इति सौत्रो धातुस्तस्माट्टिषच् णिद्विकल्पेन भवति तवतीति ताविषी तविषी नदी बलं सेना भूमिर्वा ॥

(४९) न व्यथत इत्यव्यथिषः समुद्रः सूर्यो वा । अव्यथिषी पृथिवी रात्रिर्वा ॥

(५०) किलति क्रीडति विचारशून्यतया कार्येषु प्रवर्तते यत् तत् किल्बिषं पापम्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इषिमदिमुदिखिदिछिदिभिदिमन्दिचन्दितिमिमिहिमुहिमुचिरुचिरुधिबन्धिशुषिभ्यः किरच् ॥ ५१ ॥ इषिरः । मदिरा । मुदिरः । खिदिरः । छिदिरः । भिदिरम् । मन्दिरम् । चन्दिरम् । तिमिरम् । मिहिरः । मुहिरः । मुचिरः । रुचिरम् । रुधिरम् । बधिरः । शुषिरम् ॥ ५१ ॥

अशेर्नित् ॥ ५२ ॥ अशिरः ॥ ५२ ॥

अजिरशिशिरशिथिलस्थिरस्फिरस्थविरखदिराः ॥ ५३ ॥

(५१) इष्यादि षोडश धातुभ्यः किरच् । इच्छन्तीष्टं साध्नुवन्त्यनेनेति, इषिरोऽग्निः । माद्यति मत्तो भवति यया सा मदिरा सुरा मद्यम् । मोदतेऽसौ मुदिरः कामुको वा । मोदन्तेऽनेनेति मुदिरो मेघः । खिद्यति येन स खिदिरः । चन्द्रमा वा छिनत्ति येन स छिदिरोऽसिः । कुठारो वा । भिनत्ति येनेति भिदिरं वज्रम् । मदन्ते स्तुवन्ति स्वपन्ति वा यस्मिंस्तन्मन्दिरं गृहं नगरं वा । चन्दन्त्याह्लादयन्ति येन स चन्दिरश्चन्द्रमा हस्ती वा । तेमत्यार्द्रीभवत्यस्मिन् तत्तिमिरम् । नेत्ररोगो वा । यो मेहयति सेचयति पृथिवीं मेघजलेन स मिहिरः । सूर्यो वा । मुह्यति यस्मै वा यो मुह्यति स मुहिरः । काम्यः । पदार्थोऽसभ्यो जनो वा । यो मुंचति स्वपदार्थमन्येभ्यो ददाति स मुचिरो दानशीलो वा । यद्रोचते प्रीतिकरं भवति तद्रुचिरं शोभनम् । रुचिरं वस्त्रं रुचिरः पुत्रो रुचिरा कन्या वा । रुध्यते चर्म्मणा यत्तद्रुधिरं शोणितम् । बध्यते शब्दश्रवणान्निरुध्यते स बधिरोऽश्रोत्रविकलः । किलच् प्रत्ययस्य कित्त्वादनिदितामिति नलोपः । शुष्यन्ति पदार्था येन तच्छुषिरं छिद्रमाकाशो वा ॥

(५२) अश्नाति यः पदार्थान् सोऽशिरोऽग्निः। धृष्टतयाऽश्नाति वाऽशिरो दुर्जनः ॥

(५३) अजिरादयः सप्त किरच् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । अजन्ति गच्छन्ति यत्र तदजिरमङ्गनम् । गृहाग्रभागः । आंगन इति प्रसिद्धम् । शशति दिनाल्पत्वाच्छीघ्रं गच्छति तच्छिशिरमृतुर्हिमं शीतलं वस्तु वा। श्रथति विमुंचति पुरुषार्थमिति शिथिलः पुरुषः । शिथिला कन्या । शिथिलानि तृणानि मृदूनीत्यर्थः । धातोरुपधाया इत्वं रेफस्य लोपः प्रत्ययस्थस्य रेफस्य लत्वं च निपात्यते । गमनागमनं निहत्य तिष्ठतीति स्थिरं निश्चलम् । धातोराकारलोपः । स्फायति प्रवर्द्धते स स्फिरः । प्रभावो वा । आद्यभागस्य लोपो निपातनम् । गमनेऽसमर्थत्वात्तिष्ठतीति स्थविरः । वृद्धो भिक्षुको वा । धातोर्वुक् ह्रस्वत्वञ्च । खदति हिनस्तीति खदिरः । वृक्षभेदो वा । बाहुलकात् । यः शेते स शिविरः । शेरते यस्मिन् तत् शिविरं स्थानं वा । शीङ् धातोर्वुक् ह्रस्वत्वञ्च ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलिकल्यनिमहिभडिभण्डिशण्डिपिण्डितुण्डिकुकिभूभ्य इलच् ॥ ५४ ॥ सलिलम् । कलिलम् । अनिलः । महिलः । भडिलः । भण्डिलः । शण्डिलः । पिण्डिलः । तुण्डिलः । कोकिलः । भविलः ॥ ५४ ॥

कमेः पश्च ॥ ५५ ॥ कपिलः ॥ ५५ ॥

गुपादिभ्यः कित् ॥ ५६ ॥ गुपिलः । तिजिलः । गुहिलः॥

मिथिलादयश्च ॥ ५७ ॥ मिथिला ॥ ५७ ॥

(५४) सल्यादिभ्य इलच् । सलति गच्छतीति सलिलम् । जलं वा । कलति संख्याति तत् कलिलम् । मिश्रं दुःखेन साध्यं गहनमिति वा । अनिति जीवति जीवयति वा स अनिलः । वायुर्वा । यो महयति यं महयन्ति येन वा मह्यते पूज्यते स महिलः पुमान् । महिलं स्थानम् । महिला स्त्री वा । बाहुलकादिलच् इकारस्यैकारे सति महेला स्त्री इत्यपि सिद्धं भवति भड इति सौत्रो धातुः । भडति हिनस्तीति भडिलः शूरो वा । भडति परिचरति स्वामिनमिति भडिलः सेवकः । इत्यादि । भण्डयति परिहसन्ति येन स भण्डिलः । कल्याणं वा । शण्डति रोगयुक्तो भवतीति शण्डिलः । ऋषिविशेषो वा यस्य गोत्रापत्यं शाण्डिल्य इति प्रसिद्धम् । पिण्डति सङ्घातं करोति स पिण्डिलः गणको वा । तुण्डति तोड़ति पृथक् करोति स तुण्डिलः । उन्नताभिर्जनो वा । कौकत आदत्तेऽसौ कोकिलः । पक्षिविशेषो वा । यो भवति स भविलः । भवितुं योग्यो वा । बाहुलकात् कुटति कौटिल्यं करोति स कुटिलः क्रूरकर्मा वा ॥

(५५) कमेरिलच् मस्य पः कामयतेऽसौ कपिलः । वर्णभेदो मुनिविशेषो वा ॥

(५६) इलचः कित्वं गुणनिषेधार्थम् । गोपायति रक्षति प्रजा इति गुपिलः । राजा वा । तेजते तीक्ष्णीकरोति वा तिज्यते सह्यते सर्वैः स तिजिलः । चन्द्रमा वा । पूजितुमर्हतु योग्यः पूजिलो विद्वान् । शोषयति सर्वमिति शुषिलो वायुः । देवते प्रकाशयति धर्ममिति देविलो धार्मिको वा गूहते वृक्षैराच्छादितो भवतीति गुहिलं वनं वा ॥

(५७) मिथिलादय इलच् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते मथ्यते या सा मिथिला मथ्यन्ते शत्रवो यत्र सा मिथिला विदेहानां राज्ञां नगरी वा । अकारस्यैत्वं निपात्यते । गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति यां सा गतिला वेत्रलता वा । गमेस्तकारान्तादेशः । या तङ्कति कृच्छ्रेण जीवति सा तकिला । नलोपः । ओषधिर्वा । चमति भक्षयतीति चण्डिला काचिन्नदी वा । धातोर्डुगागमः । यः पथति निरन्तरं गच्छति स पथिलः पथिको वा । इत्यादि ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतिकठिकुठिगडिगुडिदंशिभ्य एरक् ॥ ५८ ॥ पतेरः । कठेरः । कुठेरः । गडेरः । गुडेरः । दशेरः ॥

कुम्बेर्नलोपश्च ॥ ५९ ॥ कुबेरः ॥

शदेस्तश्च ॥ ६० ॥ शतेरः ॥

मूलेरादयः ॥ ६१ ॥ मूलेरः । गुहेरः । मुहेरः ॥

कवेरोतच् पश्च ॥ ६२ ॥ कपोतः ॥

भातेर्डवतुप् ॥ ६३ ॥ भवान् ॥

कठिचकिभ्यामोरन् ॥ ६४ ॥ कठोरः । चकोरः ॥

(५८) पतति गच्छतीति पतेरो गन्ता पक्षी वा कठति कृच्छ्रेण जीवतीति कठेरः। कारागारिको वा कठेरोऽपि कृच्छ्रजीवी पर्यासो वा । कटहर इति प्रसिद्धम्। गडति सिंचतीति गडेरः मेघो वा गुडति रक्षति स गुडेरो रक्षकः । दशति दंष्ट्राभ्यामिति दशेरः । हिंसको जीवो वा । अनुनासिकलोपः ॥

(५९) कुम्बत्यन्यानाऽऽच्छादयति कुबेरः । धनाढ्यश्चो विद्वान् वा इदित्वात्प्राप्तो नलोपः एरक् विधीयते॥

(६०) शीयते शातयति दुःखाकरोतीति शतेरः शत्रुर्वा धातोर्दकारस्य तकारादेशः॥

(६१) मूलेरादय एरक्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । यो मूलति सर्वोपरि तिष्ठति स मूलेरः । भूपतिर्वा । गुधति सर्वतो वेष्टयतीति । गुधेरः । रक्षको वा । गूहते येन स गुहेरः लोहघातनो वा मुह्यति विक्षिप्त इव भवतीति मुहेरः मूर्खः। मुह्यत्यनेन वृषभादिरितिवा मुहेरःकणमर्दनादौ वृषभमुखबन्धनमृमुहेरइत्येव भाषायां प्रसिद्धम्॥

(६२) ओतच् प्रत्ययो वकारस्य पकारः कवते विचित्रवर्णो भवतीति कपोतः । पक्षिभेदो वा ॥

(६३) भाति दीप्तो भवति दीपयति वा स भवान् । सर्वनामवाचकः सर्वनामसंज्ञकश्चाऽयं शब्दः ॥

(६४) कठति कृच्छ्रेण जीवति येन स कठोरः कठिनः पूर्णो वा चकते तृप्यति स चकोरः पक्षिविशेषो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोरादयश्च ॥ ६५ ॥ किशोरः । सहोरः ॥ ६५ ॥

कपिगडिगण्डिकटिपटिभ्य ओलच् ॥६६॥ कपोलः। गडोलः गण्डोलः । कटोलः । पटोलः ॥ ६६ ॥

मीनातेरूरन् ॥ ६७ ॥ मयूरः ॥ ६७ ॥

स्यन्देः संप्रसारणं च ॥ ६८ ॥ सिन्दूरम् ॥ ६८ ॥

सितनिगमिमसिसच्यविधाञ्क्रुशिभ्यस्तुन् ॥ ६९ ॥ सेतुः। तन्तुः । गन्तुः । मस्तुः । सक्तुः । ओतुः । धातुः । क्रोष्टुः ॥ ६९ ॥

(६५) किशोरादय ओरन् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते। किंशृणाति हिनस्तीति किशोरः! अश्वशावको वा । किमो मलोपः शृधातोष्टिलोपश्च निपातनम्। सोढुंशीलः सहोरः साधुर्वा । गायति शब्दं करोतीति गौरः। अरुणे श्वेते पीते निर्मले च वाच्यलिङ्गः । गौरः कुमारः । गौरी कन्या। गौरं कुलम् । गौरं कमलम्।गौरःसर्षपः । इत्यादि । गैधातोराकारादेशे कृत ओरना सह वृद्ध्येकादेशः। ओयादेशस्त्वात्वात्प्राप्तो भवति ।

(६६) कम्पते चलति स कपोलः। वदनैकदेशो वा। सूत्रे निर्देशादेव नलोपः। गडति सिंचति स गडोलः। गण्डति स गण्डोलः। वदनैकदेशो वा। गडोलगण्डोलौ गुडकपर्यायौ वा। कटति वर्षत्यावृणोति वा स कटोलः कटुशालो वा। पटति गच्छति स पटोलः। फलविशेषो वस्त्रविशेषो वा। बाहुलकात् कण्डति माद्यतीति कण्डोलः। चाण्डालो वा ॥

(६७) मीनाति हन्तीति मयूरः। पक्षिविशेषो वा। धातोर्गुणादेशः। बहुलवचनात् मीनातेरात्वनिषेधः ॥

(६८) स्यन्दते प्रस्रवति तत् सिन्दूरम्। रक्तचूर्णं वृक्षभेदो वा। इत्यादि। ऊरन् प्रत्यये यकारस्य संप्रसारणम् ॥

(६९) सिनोति बध्नातीति सेतुः। समुद्रो वा। (तितुत्रतथ०) इतीट्निषेधः। तनोति विस्तृणोतीति तन्तुः। सूत्रं वा। वरामुत्तमां विद्यां तनोति स वरतन्तुर्मुनिः। वरतन्तुना प्रोक्तो वारतन्तवीयो ग्रन्थः। गच्छतीति गन्तुः। पथिको वा। समन्ताद्गच्छति भ्रमतीति, आगन्तुरभ्यागतो वा।मस्यति परिणमतीति मस्तुः। दधनि निस्सृतमुदकं वा। सच्यन्ते समवेताः क्रियन्ते ते सक्तवः। पक्वयवादिचूर्णं वा। अवति रक्षणादिकं करोति स ओतुः। बिडालो वा। अव धातोर्ज्वरत्वर इति सूत्रेणोपधावकारयोरूठ्। दधाति धरति पोषति वा स धातुः।अश्मनो विकारः। सुवर्णादिः शरीरस्थवातादिर्वा। क्रोशत्याह्वयति रोदिति वा स क्रोष्टुः क्रोष्टा शृगालो वा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसेरगारे णिच्च ॥ ७० ॥ वास्तु ॥ ७० ॥

पः कित्च ॥ ७१ ॥ पीतुः ॥ ७१ ॥

ऋतेश्च तुः ॥ ७२ ॥ ऋतुः ॥ ७२ ॥

कमिमनिजनिगाभायाहिभ्यश्च ॥ ७३ ॥ कन्तुः । मन्तुः । जन्तुः । गातुः । भातुः । यातुः । हेतुः ॥ ७३ ॥

चायः की ॥ ७४ ॥ केतुः ॥ ७४ ॥

आप्नोतेर्ह्रस्वश्च ॥ ७५ ॥ अप्तुः ॥ ७५ ॥

कृञः क्तुः ॥ ७६ ॥ क्रतुः ॥ ७६ ॥

एधिवह्योश्च तुः ॥ ७७ ॥ एधतुः । वहतुः ॥ ७७ ॥

(७०) वसन्ति प्राणिनो यत्र तद्वास्तु गृहं वा । अगारादन्यत्र णित्त्वाभावः । वसन्ति येन तद्वस्तु द्रव्यं वा ॥

(७१) पिबत्युदकादिकं, पाति प्राणिनो रक्षति वा स पीतुः । अग्निः सूर्यो वा । कित्त्वादीत्वम् ॥

(७२) चकारात्तुः किद्भवति पुनः पुनर्ऋच्छति गच्छत्यागच्छतीति ऋतुः । वसन्तादिः स्त्रीणां रजःपतनकालो वा ॥

(७३) कामयते येन स कन्तुः कामश्चित्तं वा मन्यते जानाति वा येन स मन्तुः । अपराधो वा । जन्यते शरीरादिधारणेन प्रादुर्भवति स जन्तुर्जीवः । गायति षड्जादिस्वरानाऽऽलापयति स गातुर्गायकः । गाते गच्छतीति गातुः पथिको वा । भृङ्गन्धर्वो वा । भाति प्रकाशयतीति भातुः सूर्यो वा । याति प्रापयतीति यातुः । अध्वगः कालो वा । हिनोति येन यो वा कार्यरूपेण वर्धतेऽसौ हेतुः कारणम् ॥

(७४) चायते पूजयति निशामयति श्रावयति वा स केतुः । ग्रहः पताका वा धूमकेतुरुत्पातः ॥

(७५) आप्नोति व्याप्नोति सर्वान् पदार्थानिति, अप्तुः । शरीरं वा तुप्रत्यये आप्लृ धातोर्ह्रस्वत्वम् ॥

(७६) कृञ् धातोः क्तुः प्रत्ययो भवति यः क्रियते यया करोति वेति क्रतुः । प्रज्ञा यज्ञो वा कित्वाद् यण् गुणाऽभावश्च ॥

(७७) एधते वर्धतेऽसावेधतुः । पुरुषो वा । वहति भारमिति वहतुः । अनड्वान् वा । चिल्करणमन्तोदात्तार्थम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवेरातुः ॥ ७८ ॥ जीवातुः ॥ ७८ ॥

आतृकन् वृद्धिश्च ॥ ७९ ॥ जैवातृकः ॥ ७९ ॥

कृषिचमितनिधनिसर्जिखर्जिभ्य ऊः स्त्रियाम् ॥८०॥ कर्षूः। चमूः। तनूः। धनूः। सर्जूः। खर्जूः॥ ८० ॥

मृजेर्गुणश्च ॥ ८१ ॥ मर्जूः ॥ ८१ ॥

खडेर्डुर्डा ॥ ८२ ॥ खड्डूः। खडूः ॥ ८२ ॥

वहेर्धश्च ॥ ८३ ॥ वधूः। ८३ ॥

कषेश्छश्च ॥ ८४ ॥ कच्छूः ॥ ८४ ॥

णित्कशिपद्यर्त्तेः ॥ ८५ ॥ काशूः। पादूः। आरूः ॥ ८५ ॥

अणो डश्च ॥ ८६ ॥ आडूः ॥ ८६ ॥

(७८) जीव्यते येन यो वा जीवति स जीवातुः। जीवनमौषधं वा ॥

(७९) जीवधातोरातृकन् प्रत्ययस्तस्मिन् सति वृद्धिश्च भवति। यो जीवति पूर्णावस्थापर्य्यन्तं स जैवातृक आयुष्मान् निशाकरो वा ॥

(८०) कृषादिभ्य ऊः प्रत्ययः कर्षत्याकर्षति पदार्थानिति कर्षूः शुष्कगोमयोऽग्निर्नदी वा। चमति भक्षयतीति चमूः। शत्रुभक्षिणी सेना वा। तनोति कार्याणि येन सा तनूः शरीरं वा दिधति धनमर्जयति स तनूः शस्त्रं वा। सर्जति, उपार्जति कार्याणीति सर्जूः वैश्यो वा। खर्जति पीड़यतीति खर्जूः। कंडूर्वा ॥

(८१) मार्ष्टि शोधयतीति मर्जूः। शुद्धिर्वा। ऊप्रत्ययस्याकित्त्वान्नित्यापि प्राप्ता वृद्धि गुणेन बाध्यते ॥

(८२) खडति भिनत्तीति खड्डूः। खडूः। बाहुभूषणं मृतशय्या वा।

(८३) वहति सुखानि प्रापयतीति वधूः। नवोढा स्त्री वा ॥

(८४) कषति हिनस्ति दुःखयतीति कच्छूः पामा वा। खाज इति प्रसिद्धा। षकारस्य छकारः ॥

(८५) कश्यादिभ्य ऊ णिद्भवति। कष्टे गच्छति शास्ति वेति काशूः। विकलधातुर्जनः शक्तिर्वा पद्यन्ते गच्छन्ति यया सा पादूः। उपानद्वो वा ऋच्छति प्राप्नोति स आरूः पिङ्गलो वा ॥

(८६) अणति शब्दयतीति, आडूः। णस्य डः। जलगामि द्रव्यं वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लम्बेर्नलोपश्च ॥ ८७ ॥ अलाबूः ॥ ८७ ॥

के श्र एरङ् चास्य ॥ ८८ ॥ कशेरूः ॥ ८८ ॥

त्रो दुट् च ॥ ८९ ॥ तर्दूः ॥ ८९ ॥

दरिद्रातेर्यालोपश्च ॥ ९० ॥ दर्द्रूः ॥ ९० ॥

नृतिशृध्योः कूः ॥ ९१ ॥ नृतूः । शृधूः ॥ ९१ ॥

ऋतेरम् च ॥ ९२ ॥ रतूः ॥ ९२ ॥

अन्दूदृम्भूजम्बूकम्बूकफेलूकर्कन्धूदिधिषू ॥ ९३ ॥

(८७) ऊप्रत्यये लम्बधातोर्नलोपो भवति । न लम्बतेऽधो न स्रवति गच्छति सा अलाबूः । तुम्बी वा ॥

(८८) ककारोपपदात् शॄ धातोरूप्रत्ययस्तस्मिन् प्रकृतेरङादेशः । कष्टे शास्ति स कशेरूः । तृणकन्दं वा । बहुलवचनादूप्रत्ययस्य ह्रस्वे कृते कशेरुरिति ह्रस्वान्तोऽपि दृश्यते ॥

(८९) तरति येन यया वा स तर्दूः दारुहस्तः पुरुषो यष्टिर्वा । तॄधातोर्दुगागमः

(९०) दरिद्राधातोरूप्रत्यये (इ, आ) इत्येतयोर्वर्णयोर्लोपः । दरिद्राति दुर्गतिं करोतीति दर्द्रूः कुष्ठभेदो वा । मृगय्वादित्वात् (रि, आ) इत्यनयोर्लोपे दद्रुरित्यपि सिद्धम् । अत्र सूत्रेऽपि (रि आ) इत्येतयोर्लोपे दद्रूरिति भवति ॥

(९१) नृत्यतीति नृतूर्नर्तकः शर्धते कुत्सितं शब्दयतीति शृधूः अपानवायुर्वा । प्रत्ययस्य कित्वाद् गुणनिषेधः ॥

(९२) ऋत इति सौत्रो धातुः ऋतीयते घृणां करोतीति रतूः सत्यं दिव्यनदी वा । धातोरमागमः ॥

(९३) अन्दूप्रभृतयः शब्दाः कूप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । अन्दति बध्नाति येन यया वा सा अन्दूः हस्तिबन्धनी शृङ्खला वा । जंजीर इति प्रसिद्धा । दृम्फ उत्कृष्टं क्लेशं ददातीति दृम्फूः सर्पजातिर्वा । जमन्ति भक्षयन्ति या सा जम्बूः वृक्षविशेषजातिर्वा । धातोर्बुगागमः । बाहुलकादूप्रत्ययस्य ह्रस्वे कृते जम्बुरित्यपि दृश्यते । कामयते स कम्बूः परद्रव्यापहारी वा । धातोर्बुक् । कफं श्लेष्माणं लात्याददातीति कफेलूः । ओषधिविशेषो वा । एकारान्तत्वं कफशब्दस्य निपातनम् कर्कं कण्टकं दधाति धरतीति कर्कन्धूः । वदरीफलं वा । कित्वादाकारलोपः । उपपदस्य नुगागमो निपातनम् । दिधिं धैर्यमिन्द्रियदौर्बल्यात्स्यति त्यजतीति दिधिषूः पुनर्भूर्वा निपातनात् षत्वम्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृग्रोरुतिः ९४ ॥ मरुत् । गरुत् ॥ ९४ ॥

ग्रो मुट्च ॥ ९५ ॥ गरुत् ॥ ९५ ॥

हृषेरुलच् ॥ ९६ ॥ हर्षुलः ॥ ९६ ॥

हृसृरुहियुषिभ्य इतिः ॥ ९७ ॥ हरित् । सरित् । रोहित् । योषित् ॥ ९७ ॥

ताडेर्णिलुक् च ॥ ९८ ॥ तडित् ॥ ९८ ॥

शमेर्ढः ॥ ९९ ॥ शण्ढः ॥ ९९ ॥

कमेरठः ॥ १०० ॥ कमठः ॥ १०० ॥

रमेर्वृद्धिश्च ॥ १०१ रामठम् ॥ १०१ ॥

शमेः खः ॥ १०२ ॥ शङ्खः ॥ १०२ ॥

(९४) म्रियते मारयति वा स मरुत् मनुष्यजातिः पवनो वा । गिरति निगलतीति गरुत् पक्षो वा ॥

(९५) गिरति येन तत् गरुत् सुवर्णं तृणजातिभेदो वा ॥

(९६) हृष्यति तुष्टो भवतीति हर्षुलः । मृगः कामी वा । बाहुलकात् चटति वर्षत्यावृणोति वा स चटुलः शोभनो वा ॥

(९७) आहरति गृह्णाति द्रव्यमिति हरित् दिक् वर्णस्तृणमश्वविशेषो वा । सरति गच्छतीति सरित् नदी वा । रोहति प्रादुर्भवतीति रोहित् लताविशिष्टा हरिणी वा । युष इति सौत्रो धातुः अथवा जुष इत्यस्य वर्णविकारेण पाठः । जुष्यते सेव्यते प्रीणयति वा सा योषित् स्त्री वा ॥

(९८) ताडयति पीडयतीति तडित् । विद्युद्वा । प्रत्ययलक्षणेन णिलोपेऽपि वृद्धिः स्यादिति लुग्विधीयते ॥

(९९) शाम्यति शान्तो भवतीति शण्ढः स्वतंत्रो वृषभः । सांड इति प्रसिद्धः । नपुंसकं वा ॥ ॥

(१००) कामयतेऽसौ कमठः कच्छपो वा । कमठमिति भाण्डभेदो वा । बाहुलकात् । जीर्यत्यवस्थाहीनो भवतीति जरठः पाण्डुरङ्गो वा । शमठः। शान्तो वा

(१०१) रमतेऽसौ रामठं हिंगु वा अठ प्रत्यये रमधातोर्वृद्धिः ॥

(१०२) शाम्यतीति शङ्खः । निधिभेदः । नलजं ललाटास्थि वा । बहुलवचनात् खकारस्येत्संज्ञा न भवति ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कणेष्ठः ॥ १०३ ॥ कण्ठः ॥ १०३ ॥
कलस्तृपश्च ॥ १०४ ॥ तृपला ॥ १०४ ॥
शमेर्वश्च ॥ १०५ ॥ शवलः ॥ १०५ ॥
वृषादिभ्यश्चित् ॥ १०६ ॥ वृषलः ॥ १०६ ॥
कमेर्बुक् ॥ १०७ ॥ कम्बलः ॥ १०७ ॥
लङ्गेर्वृद्धिश्च ॥ १०८ ॥ लाङ्गलम् ॥ १०८ ॥

(१०३) कणति येन शब्दं करोतीति कण्ठः । गलो ध्वनि र्वा ॥

(१०४) तृपधातोः कलप्रत्ययः । तृप्यति यया सा तृपला लता वा । अत्र सूत्रे चकारग्रहणात् तृफधातोरपि कलप्रत्ययस्तेन तृफला इत्यपि सिद्धम् । तृफला त्रिफला इत्योषधिविशेषपर्य्यायौ । बाहुलकात् काम्यतेऽसौ कमलः । कमलं पद्मं वा । उदकं ताम्रमौषधं च । मृगभेदः कमलः । कमला श्रीपतिप्रिया वा । मण्डति भूषयति प्रतिपादयति वा स मण्डलः । मण्डलं चक्राकारं देशभेदो बिम्बं कदम्बः कुष्ठं यन्त्रभेदः श्वा च । कुण्डति दहतीति कुण्डलम् । वलयं पाशं कर्णभूषणं वा । पटति गच्छतीति पटलः । अक्षिरोगस्तिलकं वा । इत्यादि । छ्यति छिनत्ति पराऽभिप्रायमिति छलम् ॥

(१०५) शपत्याक्रोशति स शवलः वर्णभेदो वा ॥

(१०६) वृषादिधातुभ्यः कलप्रत्ययश्चिद्भवति । वर्षति सिञ्चतीति वृषलः शूद्रो वा । तस्य स्त्री वृषली । कोशति श्लिष्यति कोशति व्यवहर्त्तुं जानातीति वा कुशली निपुणः कुशलं क्षेममितिवा । बाहुलकाद् गुणे कोशल इति देशभेदो वा । पलति गच्छति येन तत् पललम् । तिलचूर्णं पङ्कं मांसं वा । दीव्यत्यधर्मिणो विजिगीषतीति देवलो धार्मिकः । सरति सर्वत्र गच्छतीति सरलः । अकुटिल उदारो वा । धावति गच्छति शुद्धो भवति वा स धवलः । श्वेतः शुद्धो वा । धावुधातोर्बाहुलकाद्धवलम् । वृषादेराकृतिगणत्वात् केवलकबलतरलानलजम्भलपेशलमर्द्दलादयोऽपि शब्दाद्रष्टव्याः मुस्यति खण्डयति मोषयति चोरयति वा स मुसलः । मुषलो वा । मुशलं मुसलमिति लोहाग्रभागि कुट्टनसाधनम् । मुषलश्चौरो वा ॥

(१०७) काम्यतेऽभीप्स्यते यः स कम्बलः । ऊर्णाविकार उदकं वा । कमधातोः कलप्रत्यये बुक् ॥

(१०८) लङ्गन्ति प्राप्नुवन्ति, अन्नादिकं येन तल् लांगलम् । हलं वा । बहुलवचनात् कन्दत्याह्वयति सा कदली । वृक्षभेदः केला इति प्रसिद्धा वा । बाहुलकान्नान्तोर्नलोपः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुटिकशिकौतिभ्यो मुट् च ॥ १०९ ॥ कुट्मलम् । कश्मलम् । कोमलम् ॥ १०९ ॥

मृजेष्टिलोपश्च ॥ ११० ॥ मलम् ॥ ११० ॥

चुपेरच्चोपधायाः ॥ १११ ॥ चपलम् ॥ १११ ॥

शकिशम्योर्नित् ॥ ११२ ॥ शकलम् । शमलम् ॥ ११२ ॥

छो गुग्घ्रस्वश्च ॥ ११३ ॥ छगलः ॥ ११३ ॥

ञमन्ताड् डः ॥ ११४ ॥ दण्डः । रण्डा । खण्डः । मण्डः । बण्डः । । अण्डः । षण्डः । गण्डः । चण्डः । पण्डः । पण्डा ॥ १०४ ॥

(१०९) कुटादिभ्यो विहितस्य कलप्रत्ययस्य मुट् । कुटतीति कुट्मलः । बाहुलकात् । कुण्डति दहतीति कुड्मलः । किंचद्विकसितपुष्पनाम्नो वा । कष्टे गच्छति शास्ति वा स कश्मलः कश्मलं कल्मषं पापं वा । कौति शब्दयतीति कोमलः । कोमलं मृदु जलं वा । बाहुलकात् । पिङ्क्ते वर्णयतीति पिंगलः । वर्णभेदो वा ।

(११०) यन् मृज्यते शोध्यते तन्मलम् । पुरीषं पापम् । कृपणः पुरुषो वा । मृजधातोष्टिलोपः ॥

(१११) चोपति मन्दं मन्दं गच्छति स चपलः । चणिकं शीघ्रं वा । चपला पिप्पली विद्युद्वा । धातोरुकारस्याकारादेशः ॥

(११२) शक्नोतीति शकलः । खण्डो मत्स्यभेदो वा । शाम्यतीति शमलः । अशुद्धं वा ॥

(११३) च्छ्यति छिनत्तीति छगलः । छागो बर्करो वा । धातोर्गुगागमो ह्रस्वश्च ॥

(११४) ञमिति प्रत्याहारग्रहणम् । ञ, म, ङ, ण, न इत्येते वर्णा अन्तेऽस्य तस्माड् डः प्रत्ययो भवति बहुलवचनादित्संज्ञानिषेधः । दाम्यन्त्युपशाम्यन्त्यनेन स दण्डः । यष्टिभेदो वा । रमतेऽसौ रण्डा विधवा नारी वा । खण्डतेऽवदीर्यतेऽसौ खण्डः । विभागो मिष्टभेदो वा । खांड इति प्रसिद्धः भिन्नः पदार्थो वा । मन्यते जानातीति मण्डः । मण्डा धात्री समाख्याता मण्डं पक्वौदनोदकम् । बनति शब्दयति संभजति वा । स वण्डः । छिन्नहस्तको वा । अमन्ति संप्रयोगं प्राप्नुवन्ति येन सोऽण्डः प्राण्यङ्गावयवो वा । सनोति ददातीति षण्डः । नपुंसको बनं गोपः सङ्घातो वा गच्छतीति गण्डः । कपोलव्याधिविशेषो वा । चणति ददातीति चण्डः हिंसकस्तीव्रो वा । कोपना स्त्री चण्डी । चडिकोप इत्यस्य घञन्तोपि चण्डः क्रोधी । पणयति व्यवहरति स्तौति वा स पण्डः । नपुंसकः पण्डा बुद्धिर्वा । फणति गच्छत्यनेनेति फण्डः । पन्था फण्डमुदरं वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्वादिभ्यः कित् ॥११५॥ कुण्डम् । काण्डम् । गुडः । घुण्डः ॥११५॥

स्थाचतिमृजेरालज्वालजालीयचः ॥ ११६ ॥ स्थालम् । चात्वालः मार्जालीयः ॥ ११६ ॥

पतिचण्डिभ्यामालञ् ॥११७॥ पातालम् । चण्डालः ॥११७॥

तमिविशिविडिमृणिकुलिकपिपलिपञ्चिभ्यः कालन् ॥११८॥

तमालः । विशालः । विडालः । मृणालम् । कुलालः । कपालम् । पलालम् । पञ्चलाः ॥ ११८ ॥

(११५) कवर्गादिधातुभ्यो डः किद् भवति । कुणति शब्दयत्युपकरोति वा स कुण्डः । पत्यौ जीवति पुरुषान्तरादुत्पन्नः पुत्रो जलाधारविशेषो वा । कुण्डा कुण्डिका वा । गवतेऽव्यक्तशब्दं करोतीति गुडः । गोल इक्षुपाको वा । घोणते भ्राम्यतीति घुण्डः । भ्रमरो वा । काम्यते जनैस्तत्काण्डम् । ग्रंथैकदेशः । परिमाणविशेषो बाणोऽवसरो वा ॥

(११६) तिष्ठन्त्यस्मिन् तत्स्थालम् । पात्रभेदो वा थाल इति प्रसिद्धम् । स्थाली सूपादिपचनी । गौरादित्वान् ङीष् । चतधातोर्वालच् । चतते याचतेऽसौ चात्वालः । चात्वालं यज्ञकुण्डं दर्भो वा । मृजेरालीयच् । मार्ष्टीति मार्जालीयः । विडालो वा ॥

(११७) पतन्ति गच्छन्ति यत्र स पातालो देशः पादस्य तले वर्त्तत इति वा । पातालः पृषोदरादित्वात् सिद्धः चण्डति कुप्यतीति चाण्डालः मातङ्गो वा । चण्डं कुपितमलं भूषणमस्येति समासेऽपि चण्डालः सिद्धः ॥

(११८) ताम्यन्ति काङ्क्षन्ति यं स तमालः वृक्षभेदो वा । विशति सर्वत्रेति विशालः । विशाला मानिनी भार्या विशालः सुन्दरः पुमान् । विशालोज्जयिनी प्रोक्ता विशालं च बृहद् गृहम् । विडत्याक्रोशतीति विडालः । मार्जारो वा । स्त्री विडाली मृणति हिनस्तीति मृणालः मृणालं पद्ममूलं वा । कोलति सङ्घातयतीति कुलालः । कुम्भकारो वा । कम्पते येन तत्कपालम् । नृशिरो घटखण्डो वा । पल्यते प्राप्यतेऽसौ पलालः । निष्फलानि व्रीहितृणानि वा । प्यार इति प्रसिद्धम् । पञ्चति व्यक्तं करोतीति पञ्चालः । देशविशेषो वा । बहुलवचनात् शोधातोरपि कालन् । श्यन्ति सूक्ष्माणि कार्याणि कुर्वन्त्यत्र सा शाला गृहम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतेरङ्गच् पक्षिणि ॥ ११९ ॥ पतङ्गः ॥ ११९ ॥

तरत्यादिभ्यश्च ॥ १२० ॥ तरङ्गः । लवङ्गः ॥ १२० ॥

विडादिभ्यः कित् ॥१२१॥ विडङ्गः। मृदङ्गः। कुरङ्गः ॥१२१॥

सृवृञोर्वृद्धिश्च ॥ १२२ ॥ सारङ्गः । वारङ्गः ॥ १२२ ॥

गन् गम्यद्योः ॥ १२३ ॥ गङ्गा । अद्गः ॥ १२३ ॥

छापूखडिभ्यः कित् ॥ १२४ ॥ छागः । पूगः । खड्गः ॥ १२४ ॥

भृञः किन्नुट् च ॥ १२५ ॥ भृङ्गः ॥ १२५ ॥

(११९) पक्षिण्यभिधेये पतधातोरङ्गच् प्रत्ययो भवति पतति गच्छतीति पतङ्गः पक्षी पक्षिणीत्युच्यमानेऽपि बाहुलकात् । पतङ्गः सूर्योऽग्निरश्वः शलभः शालिभेदो वा । इत्यादीनामपि नामानि भवन्ति ॥

(१२०) तरति प्लवत्यनेन स तरङ्गः । जलोर्मिर्वस्त्रं भङ्गा वा । लुनात्यनेन स लवङ्गः । ओषधिर्वा । तरत्याद्याकृतिगणः ॥

(१२१) विडत्याक्रोशतीति विडङ्गः । ओषधिविशेषो वा । मृद्नाति यं स मृदङ्गः । वाद्यभेदो वा । किरति विक्षिपतीति कुरङ्गः । हरिणो वा । कुरङ्गी हरिणी स्त्रियां गौरादित्वान् ङीष् । बाहुलकाद् ऋकारस्योत्वं रपरत्वं च ॥

(१२२) सृवृञ्भ्यामङ्गच् धातोर्वृद्धिश्च । सरति सर्वत्र गच्छतीति सारङ्गः । पक्षी हरिणो भृङ्गो वा । यो वृणोति गृह्णाति स वारङ्गः खड्गादिमुष्टिर्वा । बाहुलकात् । नृणाति नयति स नारङ्गः । रसः पिप्पली वृक्षफलभेदो वा ॥

(१२३) गच्छतीति गङ्गा । नदीभेदो वा । अत्ति वाऽद्यते भक्ष्यतेऽसावद्गः । पुरोडाशो वा । बाहुलकात् । अमगत्यादिष्वित्यस्मादपि गन् । गच्छति प्राप्नोति कर्माणि विषयान् वा येन तदङ्गम् । गात्रमुपायः प्रतीकमप्रधानं देशविशेषो वा ॥

(१२४) छादिभ्यो गन् किद् भवति छिनत्तीति छागः । बर्करो वा । पूयते सुखं येन स पूगः । क्रमुकः फलविशेषः सुपारीति प्रसिद्धः । समूहो वा । खडति भिनत्ति येन स खड्गः । शस्त्रं गण्डकः—गैंड़ा इति प्रसिद्धः । बाहुलकात् सेटत्यनाद्रियते स षिङ्गः । चंचलमनाः हारमध्यस्थो मणिर्वा । बहुलवचनादेव सत्वनिषेधः ॥

(१२५) भृञ् धातोर्गन् प्रत्ययः कित् तस्य च नुट् बिभर्त्ति धरति पुष्यति वा स भृङ्गः । भ्रमरो वा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शृणातेर्ह्रस्वश्च ॥ १२६ ॥ शृङ्गः ॥ १२६ ॥

गन्न् शकुनौ ॥ १२७ ॥ शार्ङ्गः ॥ १२७ ॥

मुदिग्रोर्गग्गौ ॥ १२८ ॥ मुद्गः । गर्गः ॥ १२८ ॥

अण्डन् कृसृभृवृञः ॥ १२९ ॥ करण्डः । सरण्डः । भरण्डः वरण्डः ॥ १२९ ॥

शृदृभसोऽदिः ॥ १३० ॥ शरत् । दरत् । भसत् ॥ १३० ॥

दृणातेः षुग्घ्रस्वश्च ॥ १३१ ॥ दृषत् ॥ १३१ ॥

(१२६) कित् नुट् चेत्यनुवर्त्तते शृणाति हिनस्ति येन तत् शृङ्गम् वृषभादि-विषाणं पर्वताग्रं मत्स्यभेद ओषधिभेदः सुवर्णभेदो वा ।

(१२७) गन्प्रत्ययस्य णित्त्वाद्धातोर्वृद्धिः पूर्ववन्नुट् च । शृणातीति शार्ङ्गः पक्षी बाहुलकात्प्रत्ययस्यादावकारागमेन शारङ्ग इत्यपि सिद्धं भवति ॥

(१२८) मुदधातोर्गक् । मोदतेऽसौ मुद्गः अन्नभेदो वा । मुद्गान् लाति गृह्णातीति मुद्गलो मुनिः । यस्य गोत्रापत्यं मौद्गल्य इति प्रसिद्धम् । गृणात्युपदिशतीति गर्गः । ऋषिविशेषो वा । गृधातोर्गः प्रत्ययः ॥

(१२९) कृञादिभ्योऽण्डन् प्रत्ययः । क्रियतेऽसौ करण्डः पुष्पभाण्डभेदः करण्डो वंशविकारपात्रम् । पिटारी इति प्रसिद्धा । सरति गच्छतीति सरण्डः पक्षी वा । बिभर्त्ति पुष्यतीति भरण्डः स्वामी।वृणोति स्वीकरोतीति वरण्डः। मुखरोगः सन्दोहो वा । बाहुलकात् तरति येन स तरण्डः । जलतरणसाधनं वा । वनति संभजति धर्ममिति वतण्डः । ऋषिविशेषो वा । धातोस्तकारान्तादेशः । छमति भक्षयतीति छमण्डः । मातापितृशून्यो वा । शेतेऽसौ शयण्डः । विषयो वा । इत्यादयः शब्दा बहुलवचनादेव सिद्धा भवन्ति ।

(१३०) शृदृभसधातुभ्योऽदिः प्रत्ययः शृणाति हिनस्त्यस्मिन्निति शरत् । कालविशेष ऋतुर्वा । दीर्यतेऽसौ दरत् हृदयं कूलं वा । बिभस्ति भर्त्सयति प्रकाशते वा । स भसत् जघनं वा । बाहुलकात् पर्षति स्निह्यति प्रीतिकरं प्रसन्नं भवति चित्तमस्यां सा पर्षत् । सभा समाजो वा ॥

(१३१) दीर्यतेऽसौ दृषत् । पाषाणो वा । अदिप्रत्यये धातोः षुक् ह्रस्वागमश्च भवति ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्यजितनियजिभ्यो डित् ॥ १३२ ॥ त्यद् । तद् । यद् ॥१३२॥
एतेस्तुट् च ॥ १३३ ॥ एतद् ॥ १३३ ॥
सर्त्तेरटिः ॥ १३४ ॥ सरट् ॥ १३४ ॥
लङ्घेर्नलोपश्च ॥ १३५ ॥ लघट् ॥ १३५ ॥
पारयतेरजिः ॥ १३६ । पारक् ॥ १३६ ॥
प्रथेः कित्सम्प्रसारणं च ॥ १३७ ॥ पृथक् । १३७ ॥
भियः षुग्ध्रस्वश्च ॥ १३८ ॥ भिषक् । १३८ ॥
युष्यसिभ्यां मदिक् ॥ १३९ ॥ युष्मद् । अस्मद् । १३९ ॥
अर्त्तिस्तुसुहुसृधृक्षिक्षुभायावापदियक्षिनीभ्यो मन् ॥ १४० ॥
अर्मः । स्तोमः । सोमः । होमः । सर्मः । धर्मः । क्षेमम् । क्षोमम् । भामः । यामः । वामः । पद्मम् । यक्ष्मः । नेमः । १४० ॥

(१३२) त्यजति क्लेशादिहीनो भवतीति त्यद् । तनुते विस्तृतो भवतीति तद् यजति सर्वैः पदार्थैः संगतो भवतीति यत् । ब्रह्मणो नामानि त्रयाणि । त्यदादीनां सर्वनामसंज्ञा भवति तेन सामान्यवाचकास्त्यदादयः ।

(१३३) इण्धातोरदिः प्रत्ययस्तस्य तुडागमश्च । एति प्राप्नोतीत्येतत् । अस्यापि सर्वनामसंज्ञा ।

(१३४) सरति गच्छतीति सरट् । वायुर्मेघो वा । सृधातोरटिः प्रत्ययः ॥

(१३५) लङ्घति शोषयतीति लघट् । वायुर्वा । धातोर्नलोपः ॥

(१३६) पारयति कर्म समापयतीति पारक् सुवर्णं वा । चौरादिकात्पारिधातोरजिः प्रत्ययः ॥

(१३७) प्रथयति संघाताद्विस्तृतो भवतीति पृथक् नानात्वं वा । स्वरादिपाठादव्ययत्वम् ॥

(१३८) बिभेत्यसौ भिषक् । वैद्यो वा सुमङ्गलभेषजाच्चेति निपातनाद्गुणे कृते भेषजम् । भेषजमेव भैषज्यम् ॥

(१३९) योषति सेवतेऽसौ युष्मद् । युषसौत्रो धातुः । अस्यति प्रक्षिपत्यन्यमित्यस्मद् । सर्वनामवाचकाविमौ ॥

(१४०) ऋच्छति प्राप्नोति सोऽर्मः । चक्षूरोगो वा । स्तौति येन स स्तोमः । सङ्घातो वा सवत्यैश्वर्यहेतुर्भवतीति सोमः । कर्पूरश्चन्द्रमा वा । हूयते दीयतेऽसौ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहातेः सन्वदाकारलोपश्च ॥ १४१ ॥ जिह्मः । १४१ ॥

अवतेष्टिलोपश्च ॥ १४२ ॥ ओम् । १४२ ॥

ग्रसेराच ॥ १४३ ॥ ग्रामः । १४३ ॥

अविसिविसिशुषिभ्यः कित् ॥ १४४ ॥ ऊमम् । स्यूमः । सिमः । शुष्मम् ॥ १४४ ॥

इषियुधीन्धिदसिश्याधूसूभ्यो मक् ॥ १४५ ॥ इष्मः । युध्मः इध्मः । दस्मः । श्यामः । धूमः । सूमः । १४५ ॥

होमः । यज्ञो वा । स्रियते गम्यते स सर्मो गमनम् । ध्रियते सुखप्राप्तये सेव्यते स धर्मः । पक्षपातरहितो न्यायः सत्याचारो वा । क्षयत्यज्ञानं नाशयतीति क्षेमम् । कुशलं वा क्षौति शब्दयतीति क्षौमम् । वस्त्रभेदो वा । दुकूलमतसीकुसुमं च । भाति प्रकाशतेऽसौ भामः । क्रोधः सूर्यो दीप्तिर्वा । यायते प्राप्यते स यामः । प्रहरो वा । वाति गच्छति ग्रन्थं वा गृह्णातीति वामः । शोभनः दुष्टः पार्श्वभेदो वा । पद्यते प्राप्नोतीति पद्मम् । कमलं निधिः शङ्खो वा । यक्षयते पूजयतीति यक्ष्मः । राजरोगो वा । नयतीति नेमः । प्रकारमूलं वा । अर्द्धवाचीतु सर्वनामसंज्ञकः ॥

(१४१) मनित्यनुवर्त्तते । जहाति त्यजतीति जिह्मः । कुटिलो मन्दो वा ॥

(१४२) मन् प्रत्ययस्य टिलोपो धातोरुपधावकारयोरूठ् । अवति रक्षादिकं करोतीति ओम् । प्रणव आरम्भोऽनुमतिर्वा । चादिषु पाठादस्याव्ययत्वम् ॥

(१४३) मन् । ग्रसतेऽत्ति यो वा ग्रस्यते स ग्रामः । शालासमुदायः प्राणिनिवासो वा । संग्रामो युद्धं वा । शालीनां ग्रामः समूहः शालिग्रामः । एवं शब्दग्रामः ग्रामो गानविद्यायां स्वरभेदश्च ॥

(१४४) मन्–कित् । अवति रक्षणादिकं भवति यत्र तत् ऊमम् । नगरं वा । टापि कृते बाहुलकाद्ध्रस्वे च । उमा । विशिष्टा स्त्री वा । सीव्यति तन्तून् संतनोतीति स्यूमः । रश्मिर्वा । सिनोति बध्नातीति सिमः । सर्वनामसंज्ञः सर्वपर्य्यायः । शुष्यति निस्सारं करोतीति शुष्मम् । अग्निर्वायुर्वा ॥

(१४५) य इच्छति य इष्यते स इष्मः । कामी वसन्त ऋतुर्वा । युध्यते यो येन वा स युध्मः । बाणो वा । य इन्धे दीप्यते वा येनेन्धे स इध्मः । समिद्धः । दस्यत्युपक्षयति दुःखयति वा स दस्मः । यजमानो वा । श्यायति गच्छति प्राप्नोति वा स

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युजिरुचितिजां कुश्च ॥ १४६ ॥ युग्मम् । रुक्मम् । तिग्मम् ।

हन्तेर्हि च ॥ १४७ ॥ हिमम् ॥ १४७ ॥

भियः षुग् वा ॥ १४८ ॥ भीमः । भीष्मः ॥ १४८ ॥

घर्मग्रीष्मौ ॥ १४९ ॥

प्रथेः षिवन्षवन्ष्वनः संप्रसारणं च ॥ १५० ॥ पृथिवी । पृथवी । पृथ्वी ॥ १५० ॥

अशूप्रुषिलटिकणिखटिविशिभ्यः क्वन् ॥ १५१ ॥ अश्वः । प्रुष्वः । लट्वा । कण्वम् । खट्वा । विश्वः ॥ १५१ ॥

श्यामः । हरितः कृष्णो वा । अप्रसूता स्त्री श्यामा लतौषधी वा । इत्यादि धूनोति कम्पयतीति धूमः । अग्निसम्भवो वा । सूते जनयति प्राणिगर्भं विमुञ्चतीति सूमोऽन्तरिक्षं वा । बाहुलकात् । ईर्त्ते गच्छति कम्पते वा तदीर्मम् । व्रणं वा । क्षौति शब्दयति सा क्षमा । अतसी वा । जजन्ति जायते स जन्मः । उत्पत्तिर्वा ॥

(१४६) मक् । युज्यते तद्युग्मम् । द्वयोरेककर्म्मणि संबन्धः । रोचते प्रदीप्तवर्णो भवति स रुक्मो वर्णभेदो वा । तद्वर्णयोगाद्रुक्मं सुवर्णम् । रुक्मो वर्णोऽस्यास्तीति रुक्मिणी स्त्री । तेजते छिनत्तीति तिग्मम् । तीक्ष्णम् । विशेष्यलिंगोऽयं शब्दः तिग्मांशुः । तिग्मस्तीव्रो वा ॥

(१४७) मक् । हन्त्युष्णं दुर्गन्धिं वा तद्धिमम् । हेमन्त ऋतुस्तुषारश्चन्दनं वा । महत् हिमं हिमानी । ङीष् आनुक् ॥

(१४८) बिभेति बिभ्यति वा यस्मात् यस्या वा स भीमः । भीमा वा । भीष्मः । भीष्मा वा । भीमो भयानकः । पाण्डुपुत्रो वा । भीमा भयानका सेना यस्य स भीमसेनः । एवं भीष्मसेनो वा ॥

(१४९) मक् प्रत्ययान्तौ निपात्येते जिघर्त्ति रक्षति नश्यति दीप्यते वा प्राणिनो जगद्वा येन स घर्म्मः । यद्वा आतपो ग्रीष्म ऋतुः स्वेदकं वा । ग्रसते शीतं रसादिकं वा स ग्रीष्मः । अत्युष्णकालो वा । ग्रसधातोर्ग्रीभावः । षुगागमश्च निपातनात् ॥

(१५०) प्रथते विस्तीर्णा भवतीति पृथिवी । पृथवी । पृथ्वी । इत्येकार्थास्त्रयः। भूमिरन्तरिक्षं वा ॥

(१५१) अश्नुते व्याप्नोतीत्यश्वः । तुरङ्गो वह्निर्वा । अजादिपाठात् स्त्रियामश्वा । यः प्रुष्णाति स्निह्यति सिञ्चति पूरयति वा स प्रुष्वः । ऋतुः सूर्यो वा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूणशीभ्यां वन् ॥ १५२ ॥ एवः । शेवः ॥ १५२ ॥
सर्वनिघृष्वरिष्वलष्वशिवपद्वप्रह्वेष्वा अतन्त्रे ॥ १५३ ॥
शेवायह्वजिह्वाग्रीवाऽप्वामीवाः ॥ १५४ ॥
कृगृशृदृभ्यो वः ॥ १५५ ॥ कर्वः । गर्वः । शर्वः । दर्वः ॥१५५॥

लटति बाल इव भवति सा लट्वा। नियतस्त्रीलिंगः । करञ्जभेदः । फलं वाद्यं पक्षि-भेदो वा । कणति निमीलति चेष्टतेऽसौ कण्वः । कण्वं पापं कण्वो मुनिर्वा । येनादा-वध्यापिता काराबी शाखेति प्रसिद्धा वा । खट्यते काङ्क्ष्यते या सा खट्वा । शय्यादि-र्वा । विशति सर्वत्र स विश्वः । विश्वं जगत् । विश्वाऽतिविषया वा । सर्वादि-पाठात्सर्वनामसंज्ञश्च ॥

(१५२) एति प्राप्नोतीत्येवः । बाहुलकात् एवेत्यवधारणेऽव्ययम् । शेतेऽसौ शेवः। सुखं मेढ्रं वा ॥

(१५३) सर्वादयो वन्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । सरतीति सर्वः । संपूर्णवाची सर्वनामसंज्ञो विशेषणम् । नितरां घर्षति पिनष्टीति निघृष्वः । गुणाभावः । खुरं वा । रेषति हिनस्तीति रिष्वो हिंसकः । लषति कामयतेऽसौ लष्वः । नर्त्तको वा । शेतेऽसौ शिवः । धातोर्ह्रस्वत्वम् । शिव ईश्वरः शिवं भद्रं सुखमुदकं च । शिवा हरीतकी पद्यन्ते गच्छन्त्यत्रेति पद्वः । भूलोको वा । प्रजहाति त्यजति स प्रह्वः । नम्रो वा । अकारलोपो निपातनम् । ईषते हिनस्त्यज्ञानमिति, ईष्वः । आचार्यो वा । अतन्त्र इति किम् सर्त्ता,सारक इत्यादिसूत्रेषु पठिताः सर्वादिशब्दा यौगिका माभूवन् । बाहुलकात् । ह्रसति शब्दयति ह्रस्वः । वामन एकमात्रो वर्णो वा ॥

(१५४) शेवादयो वन्नन्ता निपात्यन्ते । शेतेऽसौ शेवा । लिङ्गाकृतिर्वा । यजतीति यह्वः । यजमानो वा । जकारस्य हकारः जयति यया सा जिह्वा । इन्द्रियं वा । धातोर्हुक् । निगलति यया सा ग्रीवा । शरीराङ्गं वा । धातोर्ग्रीभावः । आप्नोति यया सा अप्वा । कण्ठस्थानं वा । मीनाति हिनस्तीति मीवः । उदर-कृमिर्वा ॥

(१५५) किरति विक्षिपति चित्तमिति कर्वः । कामो वा । गिरतीति गर्वः । अहङ्कारो वा । शृणाति दुःखमिति शर्वः परमेश्वरः सुखं वा । दृणाति विदारयति प्राणिन इति दर्वः हिंसको जनो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनिन् युवृषितक्षिराजिधन्विद्युप्रतिदिवः ॥ १५६ ॥ युवा। वृषा। तक्षा। राजा धन्वा। द्युवा। प्रतिदिवा ॥ १५६ ॥

सप्यशूभ्यां तुट् च ॥ १५७ ॥ सप्त। अष्ट ॥ १५७ ॥

नञि जहातेः ॥ १५८ ॥ अहः ॥ १५८ ॥

श्वन्नुक्षन्पूषन्प्लीहन्क्लेदन्स्नेहन्मज्जन्नर्यमन्विश्वप्सन्परिज्वन्मातरिश्वन्मघवन्निति ॥ १५९ ॥ श्वा। उक्षा। पूषा। प्लीहा। क्लेदा। स्नेहा। मूर्द्धा। मज्जा। अर्यमा। विश्वप्सा। परिज्वा। मातरिश्वा। मघवा ॥ १५९ ॥

इत्युणादिषु प्रथमः पादः ॥ १ ॥

(१५६) यौति मिश्रयत्यमिश्रयति वा स युवा मध्यावस्थस्तरुणो जनो वा। वर्षतीति वृषा सूर्यो वा। तक्षति तनूकरोति स तक्षा वर्धकिर्वा। राजते प्राप्तो भवतीति राजा भूपतिश्चन्द्रमा वा। धन्वति गच्छतीति धन्वा। बाणक्षेपणं वा। द्योत्यभिगच्छतीति द्युवा। सूर्यो वा। प्रतिदीव्यन्ति यस्मिन् स प्रतिदिवा। दिवसो वा बहुलवचनात् केवलादपि दिवधातोः कनिन् तेन। दिवा दिवानौ। इत्याद्यपि सिद्धम्। दशतीति दशन्। संख्याविशेषो वा। नौतीति नवन् संख्या वा। बाहुलकाद् गुणः॥

(१५७) सपति समवैतीति सप्तन् संख्याभेदो वा। अश्नुते व्याप्नोतीत्यष्टन्। संख्या वा बाहुलकात् पचति व्यक्तीकरोतीति पञ्चन् संख्यावाचको वा॥

(१५८) जहाति त्यजति पृथक्करोत्यन्धकारमित्यहः दिनम्।

(१५९) श्वनादयस्त्रयोदश शब्दाः कनिनन्ता निपात्यन्ते। श्वयति गच्छति वर्द्धतेऽसौ श्वा। कुक्कुरो वा। स्त्रियां ङीष्। शुनी। उक्षति सिञ्चतीति, उक्षा बलीवर्दो वा। पूषति वर्धतेऽसौ पूषा। सूर्यो वायुर्वा। प्लिह्यते प्राप्यतेऽन्तरिति प्लीहा। कुक्षिव्याधिर्वा। धातोरुपधादीर्घत्वम्। क्लिद्यत्यार्द्रीभवतीति क्लेदा चन्द्रमा वा। धातोर्गुणः। स्निह्यति प्रीतिं करोतीति स्नेहा। व्याधिर्वा। धातोर्गुणः। मूर्वति बध्नाति स मूर्द्धा शिरो वा। उकारस्य दीर्घो वकारस्य धकारश्च। मज्जति शुध्यतीति मज्जा अस्थिसारो वा। अर्यं स्वामिनं मिमीते मन्यते जानातीति, अर्यमा। आदित्यो वा। आकारलोपः। विश्वं प्साति भक्षयतीति विश्वप्सा अग्निर्वा। परितो जवति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृहृभ्यामेणुः ॥ १ करेणुः । हरेणुः ॥ १ ॥

हनिकुषिनीरमिकाशिभ्यः क्थन् ॥ २ ॥ हथः । कुष्ठः । नीथः । रथः । काष्ठम् ॥ २ ॥

अवे भृञः ॥ ३ ॥ अवभृथः ॥ ३ ॥

उषिकुषिगार्तिभ्यस्थन् ॥४॥ ओष्ठः।कोष्ठः । गाथा । अर्थः॥४॥

वेगवान् भवतीति परिज्वा । चन्द्रमाः । जु इति सौत्रो धातुस्तस्य यणादेशः मातरि अन्तरिक्षे श्वयति गच्छति वर्द्धते वा, अश्व वा मातरि श्वसिति जीवयति शेते वा, स मातरिश्वा वायुर्वा । मह्यते पूज्यतेऽसौ मघवा सूर्यो वा । महधातोर्हकारस्य घत्वमबुगागमश्च । मघवदिति तकारान्तोऽप्ययं शब्दो दृश्यते । तत्र मघं धनमस्यास्तीति मघवान् मघवन्तौ । मघवन्तः । इति मतुबन्तः । कनिनन्तस्तु । मघवा । मघवानौ । मघवानः । मघवन् । मघवानम् । मघवानौ । मघोनः । अस्मिन् सूत्र इति शब्दः प्रकारार्थे । एवंविधा अन्येऽपि कनिनन्ता शब्दा यथाप्रयोगं साध्याः । पादसमाप्त्यर्थो वेति शब्दः ॥

इत्युणादिव्याख्यायां वैदिकलौकिककोषे प्रथमः पादः ॥ १ ॥

---

(१) करोतीति करेणुः हस्ती हस्तिनी वा । हरति स हरेणुः । गन्धद्रव्यं कलापो वा । मटर इति प्रसिद्धः ॥

(२) यो हन्यते येन वा स हथः । दुःखितः शस्त्रविशेषो वा । कुष्णाति निरन्तरं कर्षतीति कुष्ठम् । व्याधिभेदः । कूट इत्याख्यौषधिर्वा । नीयते स नीथः । नयनं वा शोभनो नीथोऽस्यास्तीति सुनीथो धर्मशीलः । रमते यस्मिन् येन वा स रथः । यानं शरीरं पादौ वेतसो वा । काशते दीप्यते तत्काष्ठम् । इन्धनं स्थानं कालमानं वा । काष्ठा दिक्, दारु हरिद्रा वा ॥

(३) क्थन् । अव बिभर्त्तीति,अवभृथः । पच्छिदो यज्ञान्तस्नानं वा ।

(४) ओषति यो दहति येन वा स ओष्ठः । मुखावयवो वा । कुष्णाति निरन्तरं कर्षति स कोष्ठः । कोष्ठं कुक्षिः कुशूलमन्तर्गेहं वा । गीयते या सा गाथा वाग्भेदः श्लोको वा । अर्थते प्राप्यतेऽसावर्थः । शब्दानां वाच्यो धनं कारणं वस्तु प्रयोजनं निवृत्तिर्विषयो वा । बाहुलकात् श्यति तनूकरोतीति शोथः । रोगविशेषो वा । शोतनूकरण इत्यस्यात्वनिषेधः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्त्तेर्णित् ॥ ५ ॥ सार्थः ॥ ५ ॥

जॄवृञ्भ्यामूथन् ॥ ६ ॥ जरूथम् । वरूथः ॥ ६ ॥

पातॄतुदिवचिरिचिसिचिभ्यस्थक् ॥ ७ ॥ पीथः । तीर्थम् । तुत्थः । उक्थम् । रिक्थम् । सिक्थम् ॥ ७ ॥

अर्त्तेर्निरि ॥ ८ ॥ निर्ऋथः ॥ ८ ॥

निशीथगोपीथावगथाः ॥ ९ ॥

गश्चोदि ॥ १० ॥ उद्गीथः ॥ १० ॥

समीणः ॥ ११ ॥ समिथः ॥ ११ ॥

(५) सरति गच्छति स सार्थः समूहो वा थन्प्रत्ययस्य णित्वाद् वृद्धिः ॥

(६) जीर्यति वयोहीनो भवति स जरूथः मांसं वा । वृणोति येन स्वीकरोति स वरूथः । लोहेन रथावरणं वा ॥

(७) यः पिबति यं वा स पीथः। सूर्यो घृतं वा । तरन्ति येन यत्र वा तत्तीर्थम् । गुर्वर्थम्: पुरुषार्थो मंत्री जलाशयो वा । यो येन वा तुदति व्यथां प्राप्नोति स तुत्थः । अग्निरञ्जनं तुत्था नीली ओषधिर्गोविडवा वा । सूक्ष्मैला वा । छोटी इलाची इति प्रसिद्धा । उच्यते परितो भाष्यते यत्तदुक्थम् । सामवेदो वा । य उक्थमधीते वेत्ति वा स औक्थिकः। रिणक्ति पृथक् करोतीति यत्तद् रिक्थम्। दायादधनं सुवर्णं वा। बाहुलकात् । ऋचस्तुताविल्यस्मादपि थक् । ऋचति यदर्थं स्तौतीति ऋक्थम् । धनं वा । सिञ्चति प्रसादयति तत्सिक्थम् । मधूच्छिष्टम् । मोम इति प्रसिद्धम् । ओदनान्निसृतं मण्डं वा ॥

(८) निरन्तरमृच्छन्ति गच्छन्ति यस्मिन्नसौ निर्ऋथः । सामवेदो वा ॥

(९) नितरां शेतेऽस्मिन् स निशीथः । अर्द्धरात्रः । सर्वरात्रो वा । गां वाणीं पृथिवीं वा पातीति गोपीथः । पण्डितो राजा वा गावः पिबन्त्युदकमस्मिन् स नद्याजलाशयो वा । अवगातेऽवगच्छति जानीतेऽसाववगाथः । प्रातःस्नानं वा ॥

(१०) उदुपपदाद्गाधातोस्थक् । य उद्गीयत उच्चैः शब्द्यते स उद्गीथः । सामध्वनिः प्रणवो वा ॥

(११) समेति सम्यक् प्राप्नोति पदार्थानिति समिथः । अग्निर्वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिथपृष्ठगूथयूथप्रोथाः ॥ १२ ॥

स्फायितञ्चिवञ्चिशकिक्षिपिक्षुदिसृपितृपिदृपिवन्द्युन्दिश्वितिवृत्यजिनीपदिमदिमुदिखिदिछिदिभिदिमन्दिचन्दिदहिदसिदम्भिवसिवाशिशीङ्हसिसिधिशुभिभ्यो रक् ॥ १३ ॥ स्फारम् । तक्रम् । वक्रः । शक्रः । क्षिप्रम् । क्षुद्रः । सृप्रः । तृप्रः । दृप्रः । वन्द्रः । उन्द्रः । श्वित्रम् । वृत्रः । वीरः । नीरम् । पद्रः । मद्रः । मुद्रा । खिद्रः । छिद्रम् । भिद्रम् । मन्द्रः । चन्द्रः । दह्रः । दस्रः । दभ्रः । वस्रः । वाश्रः । शीरः । हस्रः । सिध्रः । शुभ्रम् ॥ १३ ॥

(१२) तिथादयस्थक्प्रत्ययान्ता निपाताः । तेजते सह्यतेऽसौ तिथः । अग्निः कामो वा । पर्षति सिञ्चति यो येन वा तत्पृष्ठम् । शरीरस्य पश्चाद्भागः स्तोत्रं वा । यो येन वा गवतेऽव्यक्तशब्दं करोति तद्गूथम् । अपानमार्गः पुरीषं वा । यौति मिश्रयत्यमिश्रयति वा स यूथः । समुदायो वा । यः प्रवते गच्छति येन वा स प्रोथः । तुरङ्गनासिका । प्रस्थितः पुरुषो वृक्षभेदः प्रियमुदकमन्नं स्त्रीगर्भश्च । प्रोथ उच्यते॥

(१३) यः स्फायते वर्द्धतेऽसौ स्फारः । सुवर्णादेर्विकारो बुद्बुदो वा । वलि रेफे यलोपः । तनक्ति संकोचयतीति तक्रम् । मथितं दधि वा । वञ्चति प्रलम्भते स वक्रः । कुटिलः । क्रूरो वा । शक्नोति यः स शक्रः । समर्थः कुटजो वृक्षविशेषो वा । क्षिप्यते प्रेर्य्यते तत् क्षिप्रम् । शीघ्रं वा । क्षुनत्ति संपिनष्टि यः स क्षुद्रः । अधमः क्रूरः कृपणो वा । अल्पे वाच्यलिङ्गः । क्षुद्रा वेश्या । कण्टकारिका (भटकटाई) तथा मधुमक्षिका च । सर्पति गच्छतीति सृप्रः । चन्द्रमा वा यस्तृप्यति येन वा स तृप्रः । पुरोडाशो वा । दृप्यति हृष्यति मुह्यति वा स दृप्रः । बलवान् वा । वन्दतेऽभिवदति स्तौति वा स वन्द्रः सत्कर्त्ता वा । उनत्ति क्लिद्यति स उन्द्रः । जलचरो वा । समुनत्तीति समुद्रः । अनिदितामिति नलोपः । श्वेतते वर्णविशिष्टो भवतीति श्वित्रम् । कुष्ठभेदो वा वर्त्तते सदैवाऽसौ वृत्रः । मेघः । शत्रुस्तमः । पर्वतश्चक्रं वा । अजति गच्छति शत्रून् वा प्रक्षिपति स वीरः । सुभटः श्रेष्ठस्तुल्पथं वा । वीरा क्षीरकाकोली, पतिपुत्रवती स्त्री मदिरा मधुपर्णिकौषधिर्वा नयति शरीरमिति नीरम् । जलम् वा । पद्यन्ते गच्छन्त्यस्मिन् वा स पद्रः । ग्रामः संवेशः स्थानं वा । माद्यतीति मद्रः । हर्षो देशभेदो वा । मोदन्ते हृष्यन्ति यया सा मुद्रा यंत्रिता सुवर्णादिधातुमया वा । यः खिद्यते येन वा दीनो भवतीति स खिद्रः । रोगो दरिद्रो वा । छिद्यते यत्तच्छिद्रम् । विवरं वा । भिनत्ति येन तद्भिद्रम् वज्रो वा । मन्दते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चकिरम्योरुच्चोपधायाः ॥ १४ ॥ चुक्रम् । रुम्रः । १४ ॥

वौ कसेः ॥ १५ ॥ विकुस्रः । १५ ॥

अमितम्योर्दीर्घश्च ॥ १६ ॥ आम्रम् । ताम्रम् । १६ ॥

निन्देर्नलोपश्च ॥ १७ ॥ निद्रा । १७ ॥

अर्देर्दीर्घश्च ॥ १८ ॥ आर्द्रम् । १८ ॥

शुचेर्दश्च ॥ १९ ॥ शूद्रः । १९ ॥

स्तौतीति मन्द्रः गम्भीरध्वनिर्वा । चन्दति हर्षयति दीपयति वा स चन्द्रः कर्पूरश्चन्द्रमा वा दहति भस्मीकरोतीति दक्रः दावाग्निर्वा । दस्यति रोगानुपक्षयतीति दस्रः । वैद्यश्चौरो वा यो दभ्नोति दम्भं करोति स दभ्रः । चुद्रो जनः समुद्रो वा । वसतीति, उस्रः । रश्मिर्वा । उस्रा गौः । वाश्यते शब्दयतीति वाश्रम् । पुरीषं दिवसो मन्दिरं चतुष्पथं वा । शेतेऽसौ शीरः । महासर्पो वा । हसतीति हस्रः । मूर्खो वा । सेधति गच्छति सिध्यति वा स सिध्रः । साधुर्वृक्षजातिर्वा । कुत्सिताः सिध्रा वृक्षाः सिध्रकास्तासां वनं सिध्रकावणम् । वनं पुरगामिश्रकासिध्रकेतिसूत्रेण णत्वम् शोभते दीप्यते तत् शुभ्रम् रुचिरं शुक्लं पाण्डुरं वा । बाहुलकात् मेशति शब्दयतीति मिश्रः संयोगी वा । पुण्डति खण्डयतीति पुण्ड्रः । दुष्टो वा । सिनोति बध्नाति मांसरुधिरादिकमिति सिरा । नाडी वा । मुस्यति खण्डयतीति मुस्रम् । नेत्रोदकं वा । असतीति, अस्रम् । रुधिरम् वा । अस्रम् पिबतीति, अस्रपो दंशः ॥

(१४) चकते तृप्यति प्रतिहन्यते वा । स चुक्रः । अम्लमम्लवेतसमित्यादि । रमन्तेऽस्मिन् स रुम्रः । अरुणः शोभनो वा ॥

(१५) विकसति विशेषतया गच्छतीति विकुस्रः । चन्द्रमा वा कस धातोरुपधाया उत्वम् ॥

(१६) अम्यते सम्भज्यते सेव्यते तदाम्रम् । चूतो वा । ताम्यति काङ्क्षतीति । ताम्रम् । धातुभेदो रक्तवर्णो वा ॥

(१७) या निन्दति यया वा सा निद्रा शयनं वा ॥

(१८) आर्दति गच्छति याचते वा तत्, आर्द्रम् । सरसद्रव्यमार्द्रा नक्षत्रं वा ॥

(१९) दीर्घत्वमनुवर्त्तते । शोचतीति शूद्रः सेवको वा । पुंयोगे शूद्रस्य स्त्री शूद्री शूद्रा तज्जातिर्वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुरीणो लोपश्च ॥ २० ॥ दूरम् । २० ॥
कृतेश्छः क्रू च ॥ २१ ॥ कृच्छ्रम् । क्रूरः । २१ ॥
रोदेर्णिलुक् च ॥ २२ ॥ रुद्रः । २२ ॥
जोरी च ॥ २३ ॥ जीरः । २३ ॥
सुसूधाञ्गृधिभ्यः क्रन् ॥ २४ ॥ सुरः । सूरः । धीरः । गृध्रः ॥ २४ ॥
शुसिचिमीनां दीर्घश्च ॥ २५ ॥ शूरः । सीरः । चीरम् । मीरः ॥ २५ ॥

(२०) दुरुपपदादिण्धातोरक् धातोश्च लोपः दुःखेनेयते प्राप्यते तद्दूरम् । विप्रकृष्टं वा ॥

(२१) कृतधातोरन्त्यस्य छः सर्वस्य च क्रू इत्येतावादेशौ रक् च । कृन्तति छिनत्तीति कृच्छ्रं क्रूरश्च कठिनं दुःखं खलो वा ॥

(२२) पापिनो रोदयतीति रुद्रः । ईश्वरः प्राणादिश्च रुद्रा जीवो वा । बाहुलकादन्यत्रापि धात्वन्तरे संज्ञाछन्दसोः सामान्यप्रत्ययादौ च णिलुक् पाशं बन्धनं धारयतीति पाशधरः । शूलधरः । चक्रधरः । वज्रधरः । शक्तिधरो वा कुमारः । उदकधरो मेघः । दण्डधरो राजा । अत्र सर्वत्राचि प्रत्यये धृधातोः परस्य णिलुक् । पर्णानि शोषयति मोचयति रोहयति वा स पर्णशुट् । पर्णमुट् । पर्णरुट् । इति ण्यन्तात् शुषधातोः क्विप् णिलुक् । जश्त्वकुत्वादिकार्यम् । वान्ति पर्णशुषो वाता वान्ति पर्णमुचोऽपरे । ततः पर्णरुहा वान्ति ततो देवः प्रवर्षति ॥ १ ॥

(२३) जुधातोरकि प्रत्यय ईकारादेशः । जवति सूक्ष्मो भवतीति जीरः । अणुः खड्गो वणिग्द्रव्यं वा । महाभाष्यकारसंमत्या, रकि ज्यः सम्प्रसारणम् । भा० १।१।४। ज्यावयोहानावित्यस्य रकि प्रत्यये सम्प्रसारणम् । जिनात्यवस्थां जहातीति जीरः । तथा महाभाष्यकारसंकत्या जीवधातोरदानुक् । जीवति प्राणान् धारयतीति जीरदानुः । वैदिकं रूपमेतत् । अत्र च जीवधातोर्वलि वलोपः । जठ्निषेधश्च बाहुलकादेव । इत्यादि ॥

(२४) सुनोति सवति उत्पादयत्यैश्वर्य्यवान् वा भवतीति सुरः । देवसंज्ञो विद्वान् स्त्रियां सुरा मद्यं वा । सूयते वा सुवति प्राणिनः समर्थयतीति सूरः । सूर्यो वा दधाति सर्वान् पोषयति वा स धीरः पण्डितो वा । गृध्यत्यभिकाङ्क्षतीति गृध्रः । पक्षिविशेषो वा ॥

(२५) शु इति सौत्रो धातुः । शवति गच्छतीति शूरः । विक्रमणशीलः पुरुषो वा । सिनोति बध्नातीति सीरः । हलं वा । चिनोतीति चीरम् । वल्कलं वा । मिनोति प्रक्षिपतीति मीरः । समुद्रो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वा विन्धेः ॥ २६ ॥ वीध्रम् ॥ २६ ॥

वृधिवपिभ्यां रन् ॥ २७ ॥ वर्ध्रम् । वप्रः ॥ २७ ॥

ऋज्रेन्द्राग्रवज्रविप्रकुब्रचुब्रक्षुरखुरभद्रोग्रभेरभेलशुक्रशुक्लगौरवन्रेरामालाः ॥ २८ ॥

समि कस उकन् ॥ २९ ॥ संकसुकः ॥ २९ ॥

(२६) विशिषेणेन्धते प्रदीप्यते तद्वीध्रम् । स्वभावशुद्धः ॥

(२७) वर्द्धते तद्वर्ध्रम् । चर्म्म वा । वपति बीजं छिनत्ति वा स वप्रः । पिता केदारः प्राकारो रोधो वा ॥

(२८) ऋज्राद्येकोनविंशतिः शब्दा निपात्यन्ते । अर्जति गच्छति तिष्ठति वा स ऋज्रः । नायको वा । गुणाभावः । इन्दति परमैश्वर्य्यवान् भवतीति इन्द्रः । समर्थोऽन्तराऽऽत्माऽऽदित्यो योगो वा । अङ्गति गच्छतीति अग्रम् । प्रधानमुपरिभागो वा । वजति प्राप्नोति प्राप्यते वा स वज्रः । हीरकं शस्त्रं वा वपति धर्म्ममिति विप्रः । मेधावी वा । कुम्बत्याच्छादयतीति कुब्रम् । अरण्यं वा । चुम्बति यो येन वा तच्चुब्रम् । मुखं वा । अत्रोभयत्रेदितोऽपि नलोपः । यः क्षुरति विलिखति येन वा । छिनत्तीति स क्षुरः । छेदनद्रव्यं कोकिलाक्षं गोक्षुरो लोमच्छेदकं नापितशस्त्रं वा । खुरति छिनत्ति यो येन वा स खुरः शफं वा । अत्रोभयत्र रकि रेफलोपो गुणाऽभावश्च । भन्दते कल्याणं करोतीति भद्रम् कल्याणम् । नकारलोपः । उच्यति समवैतीति, उग्रः । महेश्वर उत्कटः क्षत्रं वा । बिभेत्यस्मात्स भेरः । भेरी दुन्दुभिर्वा गौरादित्वान् ङीष् । पक्षे भेरशब्दस्य लत्वम् । भेलो जलतरणद्रव्यं ब्रह्मकायः कातरो वा । शुच्यते पवित्रोभवतीति शुक्रम् । ब्रह्माग्निराषाढः प्राणिबीजं नेत्ररोगो वा । अस्यैव व्यवस्थितविभाषया पक्षे लत्वम् शुक्लः श्वेतं रजतं वा । गवतेऽव्यक्तं शब्दयतीति गौरः । श्वेतो रक्तवर्णो वा । गौरी स्त्री । ङीष् । वनति सम्भजतीति वन्रः विभागी । एति गच्छति यया सा इरा । उदकं मद्यं वा । इरावान् समुद्रः ऐरावती नदी । इरया मद्येन माद्यतीति, इरम्मदः । माति मानहेतुर्भवतीति माला । पुष्पादिस्रक् । मालं क्षेत्रम् । माली जनः । बाहुलकात् । तितिक्षते येन तत्तीव्रम् । तीक्ष्णं वा । जस्य वो दीर्घत्वं च धातोः ॥

(२९) सम्यक् कसति गच्छतीति सङ्कसुकः संशयमापन्नश्चञ्चलो दुर्जनो वा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पचिनशोर्णुकन्कनुमौ च ॥ ३० ॥ पाकुकः । नंशुकः ॥ ३० ॥

भियः क्रुकन् ॥ ३१ ॥ भीरुकः ॥ ३१ ॥

क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोरपूर्वस्यापि ॥ ३२ ॥ रजकः । दृञ्चुकुट्टकः । तक्षकः । ध्रुवकः । अभ्रकम् । चरकः । चषकः । शुनकः । भषकः ॥ ३२ ॥

रमेरश्च लो वा ॥ ३३ ॥ रमकः । लमकः । ३३ ॥

जहातेर्द्वे च ॥ ३४ ॥ जहकः । ३४ ॥

ध्मो धम च ॥ ३५ ॥ धमकः । ३५ ॥

(३०) पचनशधातुभ्यां णुकन् प्रत्ययः पचधातोश्चस्य कः । नशधातोर्नुम् च पचतीति पाकुकः सूपकारो वा । नश्यतीति नंशुकः । अणुवाचको वा ॥

(३१) यो बिभेति यस्माद्वा स भीरुकः कातरो वा ॥

(३२) शिल्पिनि संज्ञायां च गम्यमानायां सोपपदादनुपपदाद्वा सामान्याद्धातोः क्वुन् भवति । रजतीति रजकः । वस्त्रशोधको वा । दृचं न् कुट्टयतीति, दृञ्चुकुट्टकः गौडिकस्येयं संज्ञा । तक्षति तनूकरोतीति तक्षको वर्धकिः शिल्पी । ध्रुवको गर्भमोचको जनः संज्ञा वा । अभ्रति गच्छति येन तदभ्रकमौषधं संज्ञा वा । चरतीति चरको वैद्यकशास्त्रं गन्ता वा । चषति भक्षयत्यस्मिन्निति चषकं पानपात्रं शालं वा मत्स्यभेदः प्राकारो वा । शालान् भञ्जन्ति यस्यां सा शालभञ्जिका क्रीडा । काष्ठं पुञ्चयति यस्यां सा काष्ठपुञ्चिका क्रीडा । पुष्पैः प्रचायन्ते पूजयन्ति यस्यां सा पुष्पप्रचायिका क्रीडा वा । शुनति गच्छतीति शुनकः श्वा । भषति भर्त्सयतीति भषकः श्वा वा । आमलते समन्ताद्धारयतीत्यामलको वृक्षभेदः । गौरादित्वान् ङीष् । आमलकी । कलामंशं पाति रक्षतीति कलापकश्चन्द्रमा वा । मल्लते गन्धं धरतीति मल्लिका पुष्पजातिर्वा । कन्यते दीप्यते काम्यतेऽभीप्स्यते वा तत्कनकं सुवर्णं वा । कटत्यावृणोत्यङ्गमिति कटकमाभूषणं वा । कड़ा इति प्रसिद्धं । शिखरं राजधानीनितम्बो वा । लटति बाल इव भवतीति लटको दुर्जनो वा । इत्यादिषु शिल्पिसंज्ञयोः क्वुन् बोध्यः ॥

(३३) रमतेऽसौ रमकः । रमणशीलो वा । लमकोऽपि स एव ॥

(३४) जहाति त्यजति हानिं करोतीति जहकः त्यागी कालो वा ॥

(३५) धमति शब्दं करोति अग्निं वा संयुनक्ति स धमकः कर्मकारो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनो वध च ॥ ३६ ॥ बधकः । ३६ ॥

बहुलमन्यत्रापि ॥ ३७ ॥ कुहकः । क्रतकम् । भिदकः । छिदकम् । रुचकम् । लङ्कः । उज्भकः । ३७ ॥

कृषेर्वृद्धिश्चोदीचाम् ॥ ३८ ॥ कार्षकः । कृषकः । ३८ ॥

उदकञ्च ॥ ३९ ॥

वृश्चिकृषोः किकन् ॥ ४० ॥ वृश्चिकः । कृषिकः । ४० ॥

प्राङि पणिकषः ॥ ४१ ॥ प्रापणिका । प्राकषिकः । ४१ ॥

मुषेर्दीर्घश्च ॥ ४२ ॥ मूषिकः । ४२ ॥

स्यमेः सम्प्रसारणं च ॥ ४३ ॥ सीमिकः । ४३ ॥

क्रिय इकन् ॥ ४४ ॥ क्रयिकः । ४४ ॥

(३६) हन्तीति बधको हिंसकः ॥

(३७) बहुलवचनादन्यत्रापि क्वुन् । कोहयति विस्मयं कारयतीति कुहकः । दाम्भिको नौहारी वा क्रन्तति छिनत्तीति क्रतकं मिथ्या वा भिनत्ति येन स भिदकः खड्गो वा । छिनत्ति येन तच्छिदकं वज्रो वा । रोचतेऽनेन तद्रुचकं मातुलुङ्गकं वा । बिजौरा नीबू इति प्रसिद्धं वा । लङ्गति गच्छतीति लङ्गकः । प्रियो वा । उज्झत्युत्सृजतीति, उज्झकः । योगी मेघो वा ॥

(३८) कृषतीति कार्षकः कृषको वा कृषीवलः ॥

(३९) उनत्ति क्लेदयतीत्युदकं जलं वा ॥

(४०) वृश्चति छिनत्तीति वृश्चिकः विषी जीवविशेषः शूककीटो वा । बिछुआ इति प्रसिद्धः । कृषति येन स कृषकः फाली वा ॥

(४१) प्रकर्षेण समन्तात्पणायत्यसौ प्रापणिकः । पण्यविक्रयी वा प्राकषति हिनस्तीति प्राकषिकः पारदारिको वा ॥

(४२) मुष्णाति पदार्थानिति मूषिकः । आखुर्वा स्त्रियां मूषिका । अजादित्वाट्टाप् ॥

(४३) स्यमति शब्दयतीति सीमिकः । हयभेदो वा ॥

(४४) क्रीणाति द्रव्येण पदार्थान्तरं ददाति गृह्णाति वा स क्रयिकः क्रेता । विक्रयिको विक्रेता ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आङि पणिपनिपतिखनिभ्यः ॥ ४५ ॥ आपणिकः । आपनिकः । आपतिकः । आखनिकः । ४५ ॥

श्यास्त्याहृञविभ्य इनच् ॥ ४६ ॥ श्येनः । स्त्येनः । हरिणः । अविनः ॥ ४६ ॥

वृजेः किच्च ॥ ४७ ॥ वृजिनम् ॥ ४७ ॥

अजेरज च ॥ ४८ ॥ अजिनम् ॥ ४८ ॥

बहुलमन्यत्रापि ॥ ४९ ॥

द्रुदक्षिभ्यामिनन् ॥ ५० ॥ द्रविणम् । दक्षिणः । दक्षिणा ॥

---

(४५) समन्तात्पणायति व्यवहरति स आपणिकः । वैश्यो वा । आपणेन व्यवहरतीति तद्धिते ठकि सिद्धे नित्स्वरार्थं वचनम् । आपनायतीति, आपनिकः । म्लेच्छजातिर्वा । समन्तात् पततीत्यापतिकः । श्येनो वा समन्तात् खनतीत्याखनिकः । मूषिको वराहो वा ॥

(४६) श्यायति गच्छतीति श्येनः । पक्षिभेदो वा स्त्यायति शब्दयति संघातयतीति स स्त्येनः । चौरो वा । हरतीति हरिणः । मृगः पाण्डुवर्णो वा । स्त्रियां हरिणी सुन्दरी छन्दोभेदो हरितवर्णा वा । अवति रक्षणादिकं करोतीति, अविनः । अध्वर्युर्वा ॥

(४७) इनच् कित् । वृक्तेर्वर्जयतीति वृजिनः केशः पापं वक्रो वा ॥

(४८) अजति गच्छति क्षिपति वा तत् अजिनम् । चर्म वा । अजादेशो वीभावनिवृत्त्यर्थः ।

(४९) कठति कृच्छ्रेण जीवतीति कठिनम् । कठोरं वा । कुण्डते दहतीति कुण्डिनः । ऋषिर्वा । यस्यापत्यं कौण्डिन्यः बर्हते प्रधानो भवतीति बर्हिणः । मयूरो वा । फलति विशीर्णो भवतीति फलिनः । फलवान् वृक्षो वा । नलति गन्धयुक्तो भवतीति नलिनम् । कमलं वा । मस्यति परिणमतीति मसिनम् । सुपिष्टं वा । मलते धरतीति मलिनः । मलयुक्तो वा । द्रुह्यति जिघांसतीति द्रुहिणः । ब्रह्मा वा । अन्धकारं द्यत्यवखण्डयतीति दिनम् । दिवसं वा । इनचः कित्वादाकारलोपः ॥

(५०) द्रवति गच्छति द्रूयते प्राप्यते वा तद् द्रव्यं सुवर्णं पराक्रमो वा । दक्षते वर्धते शीघ्रकारी भवति वा स दक्षिणः सरलो वामभागः परतंत्रोऽनुवर्त्तनं च स्त्रियां दक्षिणादानं प्रतिष्ठा वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्त्तेः किरिच्च ॥ ५१ ॥ इरिणम् ॥ ५१ ॥
वेपितुह्योर्ह्रस्वश्च ॥ ५२ ॥ विपिनम् । तुहिनम् ॥ ५२ ॥
तलिपुलिभ्यां च ॥ ५३ ॥ तलिनम् । पुलिनम् ॥ ५३ ॥
गर्वेरत उच्च ॥ ५४ ॥ गुर्विणी ॥ ५४ ॥
रुहेश्च ॥ ५५ ॥ रोहिणः ॥ ५५ ॥
महेरिनण् च ॥ ५६ ॥ माहिनम् । महिनम् ॥ ५६ ॥
क्विब् वचिप्रच्छिश्रिस्रुद्रुप्रुज्वां दीर्घोऽसंप्रसारणं च ॥ ५७ ॥
वाक् । प्राट् । श्रीः । स्रूः । द्रूः । कटप्रूः । जूः ॥ ५७ ॥
आप्नोतेर्ह्रस्वश्च ॥ ५८ ॥ आपः ॥ ५८ ॥

(५१) ऋच्छन्ति गच्छन्ति यत्र यस्माद्वा जनास्तत्, इरिणम् । शून्यमूषरभूमिर्वा
(५२) यो वेपते कम्पते यत्र वा तद्विपिनम् । गहनं वा । तोहति गच्छति याचते वा । तत्तुहिनं । हिमं वा । गुणे कृते ह्रस्वः ॥

(५३) तालयति प्रतितिष्ठतीति तलिनम् । विरलं पृथग्भूतं स्वल्पं स्वच्छं वा । पोलयति महान् भवतीति पुलिनम् । जलसामीप्यं वा ॥
(५४) गर्वति प्राप्नोति गर्वयति मुंचति वा सा गुर्विणी । गर्भिणी वा ॥
(५५) रोहति वीजेन जायते स रोहिणः । चन्दनवृक्षो वा । जातिवाचकात् स्त्रियां ङीष् रोहिणी गौर्वा । प्रज्ञादित्वादण् रौहिणः ॥
(५६) महति मह्यते पूज्यते वा तन्महिनम् । राज्यं वा । चादिनजनुवर्त्तते ॥
(५७) वक्ति शब्दानुच्चारयति यया सा वाक् । पृच्छतीति प्राट् शब्दं पृच्छतीति शब्दप्राट् शिष्यो वा । शब्दप्राशौ । शब्दप्राशः । छ्वोः शूडनुनासिके चेति छस्य शः । श्रयति श्रीयते वा सा श्रीः । ईश्वररचना शोभा वा । या स्रवति यस्या वा सा स्रूः यज्ञसाधनं वा । द्रूयते प्राप्यते दुःखमनया सा द्रूः । हिरण्यं वा । कटेन कटिभागेन प्रवते गच्छतीति कटप्रूः । कामुको जनः कीटो वा । जवति शीघ्रं गच्छतीति जूः शशोऽश्वो वृषभ आकाशं विद्या वा । बाहुलकात् । प्रवर्षन्ति मेघा यस्यां सा प्रावृट् । ऋतुः । द्वारयति संवृणोति यया सा द्वाः । द्वारौ । उदकेन श्वयति वर्धन्ते तत् उदश्वित् । तक्रं वा । ऋचन्ति स्तुवन्ति यया सा ऋक् ॥
(५८) आप्नुवन्ति शरीरमित्यापः । अस्य नित्यं बहुवचनत्वंस्त्रीत्वं च । अपः । अद्भिः । अद्भ्यः । इत्यादि ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परौ व्रजेः षश्च पदान्ते ॥ ५८ ॥ परिव्राट् ॥ ५८ ॥
ह्रुवः श्लुवच्च ॥ ६० ॥ जुहूः ॥ ६० ॥
स्रुव कः ॥ ६१ ॥ स्रुवः ॥ ६१ ॥
चिक् च ॥ ६२ ॥ स्रुक् ॥ ६२ ॥
तनोतेरनश्च वः ॥ ६३ ॥ त्वक् ॥ ६३ ॥
ग्लानुदिभ्यां डौः ॥ ६४ ॥ ग्लौः । नौः ॥ ६४ ॥
च्विरव्ययम् ॥ ६५ ॥
रातेर्डैः ॥ ६६ ॥ राः ॥
गमेर्डोः ॥ ६७ ॥ गौः ॥ ६७ ॥

(५८) क्विप् । परितः सर्वतो व्रजति स परिव्राट् । परिव्राजौ । परिव्राजः संन्यासी वा ॥

(६०) जुहोति ददात्यत्ति वा यया सा जुहूः । स्रुग्भेदो वा ॥

(६१) स्रवति घृतमस्मात् स स्रुवः । यज्ञसाधनं वा । बहुलवचनात् । ध्रवति स्थिरं भवतीति ध्रुवम् । निश्चलं वा ॥

(६२) स्रु धातोश्चिक् प्रत्ययोऽपि भवति । घृतमस्याः स्रवति सा स्रुक् । यज्ञोचितद्रव्यं वा ॥

(६३) तनोति विस्तृता भवतीति त्वक् । त्वचौ । त्वचः । शरीरावरणं चर्म्म वल्कलं वा ॥

(६४) ग्लायति हर्षक्षयं करोतीति ग्लौः । चन्द्रमाः वा । नुदति प्रेरयतीति नौः । जलतरणसाधनं वा ॥

(६५) अत्रस्थ एजन्तप्रत्ययान्तश्च्व्यन्त एवाव्ययसंज्ञो भवति । एतेन नियमेनोणादीनां व्युत्पन्नपक्षे कृन्मेजन्त इत्यनेनाच्व्यन्तानामव्ययसंज्ञा न भवति । अग्लौ ग्लौः संपद्यत इति ग्लौ करोति । ग्लौ भवति । ग्लौ स्यात् । नौ करोति । इत्यादि । ग्लौः । नौः । अत्र केवलानामव्ययसंज्ञाऽभावाद्विभक्तिलुङ् न भवति ॥

(६६) राति ददाति रायते दीयते वा सा राः । रायौ । रायः । धनं सुवर्णं वा । च्विप्रत्यये रैकरोति । इत्यादि ॥

(६७) गच्छति यो यत्र यया वा सा गौः । पशुरिन्द्रियं सुखं किरणो वज्रं चन्द्रमा भूमिर्वाणी जलं वा । गौरिवाऽयोगमनं प्राप्तिर्वाऽस्येति गवयो गोसदृशो वनपशुविशेषः । स्त्री गवयी । गौरादित्वान् ङीष् । च्विप्रत्यये गो करोतीत्यादि । द्योतन्ते लोका अस्यां वा यया द्योतते सा द्यौः । अन्तरिक्षं वा । द्यावौ । द्यावः । इत्यादि ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रमेश्च डूः ॥ ६८ ॥ भ्रूः । अग्रेगूः ॥ ६८ ॥
दमेर्डोसिः ॥ ६९ ॥ दोः ॥ ६९ ॥
पणेः रिज्यादेश्च वः ॥ ७० ॥ वणिक् ॥ ७० ॥
वशः कित् ॥ ७१ ॥ उशिक् ॥ ७१ ॥
भृञ उच्च ॥ ७२ ॥ भुरिक् ॥ ७२ ॥
जसिसहोरुरिन् ॥ ७३ ॥ जसुरिः । सहुरिः ॥ ७३ ॥
सुयुरुवृञो युच् ॥७४॥ सवनः । यवनः । रवणः । वरणः॥७४॥
अशेरशच् ॥ ७५ ॥ रशना ॥ ७५ ॥
उन्देर्नलोपश्च ॥ ७६ ॥ ओदनः ॥ ७६ ॥
गमेर्गश्च ॥ ७७ ॥ गगनम् ॥ ७७ ॥

(६८) चादुगमधातोर्डूः । भ्रमति चलतीति भ्रूः । नेत्रयोरुपरि रेखा वा । अग्रे गच्छतीत्यग्रेगूः । सेवको वा ॥

(६९) दाम्यत्युपशाम्यति यो येन वा स दोः । दोषौ । दोषः । बाहुर्वा ॥

(७०) पणायति व्यवहरतीति वणिक् । वणिजौ । वणिजः । वैश्यो वा । प्रज्ञादित्वात् स्वार्थेऽण् वाणिजः ॥

(७१) वष्टि यं कामयते यत्काम्यते वा स उशिक् । उशिजौ । उशिजः । अग्निर्घृतं वा ॥

(७२) डुजिः कित् । भरति सर्वं धरतीति भुरिक् । भूमिर्वा । भुरिजौ । भुरिजः ॥

(७३) जसयति मुञ्चति जासयति हिनस्ति वेति जसुरिः । वज्रं वा । सहते भारमिति सहुरिः । सूर्यो भूमिर्वा ॥

(७४) सवत्युत्पादयति सुनोति निस्सारयति रसान् वा स सवनः । चन्द्रमा वा । यौति मिश्रयत्यमिश्रयति वा स यवनः । म्लेच्छभेदो वा । रौति शब्दयतीति रवणः । कोकिलः पक्षी वा । वृणोति स्वीकरोतीति वरणः । उदकं वृक्षभेदो वा ॥

(७५) युच् धातोरशादेशश्च । अश्नुते व्याप्नोतीति रशना । स्त्रियाः कटिभूषणं वा । दन्त्यसकारवांस्तु रसना शब्दो नन्द्यादित्वाल्ल्युप्रत्ययान्तः । रसयत्यास्वादयति यया सा रसना जिह्वा । कृत्ल्युटो बहुलमिति करणे ल्युः ॥

(७६) उनत्यार्द्रीभवतीत्योदनः । भक्तं वा ॥

(७७) गमय गः गच्छन्त्यस्मिन्निति गगनम् । आकाशं वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुलमन्यत्रापि ॥ ७८ ॥

रञ्जेः क्युन् ॥ ७९ ॥ रजनम् ॥ ७९ ॥

भूसूधूभ्रस्जिभ्यश्छन्दसि ॥ ८० ॥ भुवनम् । सुवनम् । निधुवनम् । भृज्जनम् ॥ ८० ॥

कॄपॄवृजिमन्दिनिधाञः क्युः ॥ ८१ ॥ किरणः । पुरणः । वृजनम् । मन्दनम् । निधनम् ॥ ८१ ॥

धृषेर्धिषच् संज्ञायाम् ॥ ८२ ॥ धिषणा ॥ ८२ ॥

(७८) अन्यधातुभ्योऽपि बहुलं युच् प्रत्ययो भवति । द्योततेऽसौ द्योतनः प्रदीपो वा । स्यन्दते प्रस्रवति गच्छतीति स्यन्दनः । रथो वा । नयति प्राप्नोति रूपं येन तन्नयनम् । नेत्रं वा । चन्दत्याह्लादयतीति चन्दनम् । सुगन्धिर्वृक्षो वा । रोचतेऽसौ रोचना । गोरोचनमौषधं वा । अस्यति प्रक्षिपतीति, असनः । पीतवर्णः शालवृक्षो वा । राजानमततीति राजातनः । पुष्पं वा । शृणोत्यनया सा श्रवणा नक्षत्रं वा । एवमन्येऽपि यथाप्रयोग युच्प्रत्ययान्ताः शब्दाः साध्याः ॥

(७९) रजति वस्त्राण्यनेन तद्रजनम् । कुसुम्भं वा । स्त्रियां ङीष् । रजनी हरिद्रा । ल्युट्प्रत्यये सति रञ्जनमित्येव स्वरभेदश्च भवति । बाहुलकात् । कल्पतेऽसौ कृपणः । लोभयुक्तो वा ॥

(८०) क्युन् । भवतीति भुवनम् । लोको वा । बहुलवचनाद् भाषायामपि प्रयुज्यते । सूते सूयते वा स सुवनः । ईश्वरः सूर्यो वा । धूनोति कम्पयतीति धुवनः । अग्निर्वा । निधुवनम् । रतिक्रीड़ा वा यद् यस्मिन् वा भृज्जति परिपक्वं भवतीति भृज्जनम् । अन्नभर्जनकपालं वा ॥

(८१) किरति विक्षिपत्यन्धकारमिति किरणः । पिपर्त्ति पालयति पूरयति वा स पुरणः । जलैः पूर्णो भवतीति समुद्रो वा । वृक्ते वर्जयतीति वृजनम् । अन्तरिक्षं बलं वा । यो येन वा मन्दते स्तौति स्वपिति कामयते वा तन् मन्दनम् । स्तोत्रं वा । नितरां दधाति यत्तन्निधनम् । मरणं वा । बाहुलकात्केवलादपि धनम् ॥

(८२) धृष्णोति प्रागल्भ्यं ददाति स धिषणः गुरुः । धिषणा बुद्धिर्वा । अत्र संज्ञाग्रहणेन ज्ञायते । उणादयः सामान्यार्थे यौगिका भवन्तीति । संज्ञायास्त्विष्टार्थे रूढत्वात् । यदि च प्रकृतिप्रत्ययविभागेन उणादिभ्यो यौगिकोऽर्थो न निस्सरेत् तर्हि सर्वं उणादिस्थाः शब्दाः संज्ञावाचका एव स्युः । पुनः संज्ञाग्रहणमनर्थकं स्यात्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हन्तेर्घुरच् ॥ ८३ ॥ घुरणः ॥ ८३ ॥

वर्त्तमाने पृषद्बृहन्महज्जगच्छतृवच्च ॥ ८४ ॥

संश्चत्तृपद्वेहत् ॥ ८५ ॥

छन्दस्यसानच्शुजृभ्याम् ॥ ८६ ॥ शवसानः । जरसानः ॥ ८६ ॥

ऋञ्जिवृधिमन्दिसहिभ्यः कित् ॥ ८७ ॥ ऋञ्जसानः । वृधसानः । मन्दसानः । सहसानः ॥ ८७ ॥

(८३) हन्ति हननेन वा प्रादुर्भवति स घुरणः । शब्दो वा ॥

(८४) पृषदादयो वर्त्तमानार्थवाचका अतिप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । शतृवच्चैषां कार्यं भवतीति । पर्षति सिञ्चति छिनत्ति वा तत् पृषत् । मृगविशेषो विन्दुर्वा । पृषती । पृषन्ति । स्त्रियां पृषती । बर्हति वर्धतेऽसौ बृहत् । महत्यर्थे त्रिलिङ्गः । स्त्रियां बृहती छन्दोभेदो वा । महति पूजयति पूज्यते वा तन्महत् । महान् । महतो भावो महिमा । स्त्रियां ङीप् । महती । नारदस्य सप्ततंत्री वीणा वा । गच्छतीति जगत् । धातोर्जगादेशः । संसारे नपुंसकं वायुर्वा जगत् पुंसि । जङ्गमवाचिनि त्रिलिङ्गः । स्त्रियां जगती छन्दोभेदो जनी वा ॥

(८५) एतेऽप्यतिप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । संश्चीयतेऽसौ संश्चत् कुहको वा । प्रत्ययस्य सुट् धातोरिकारलोपश्च । संश्चदिवाचरति संश्चायते धूमः । भृशादित्वात् क्यङ् । तृप्नोति प्रीणयतीति तृपत् । छत्रं वा । विशेषेण हन्तीति वेहत् । विहन्ति गर्भमिति गर्भोपघातिनी गौर्वा । वेरुपसर्गस्यैकारादेशो धातोश्च टिलोपः । पूर्वसूत्रात् पृथक्करणं शतृवद्भावनिवृत्त्यर्थम् । तेन वेहती । वेहतः । संश्चती । इत्यादि सिद्धम् ॥

(८६) शवन्ति गच्छन्त्यस्मिन् स शवसानः । मार्गो वा । जीर्यति वयसा क्षीणो भवतीति जरसानः । वृद्धो जनो वा । बाहुलकाद् दृणाति तमो विदारयतीति दरसानः । प्रकाशो वा । तरयति येन स तरसानः । नौका वा । वृणोतीति वरसानः । क्षतदारो वा ॥

(८७) ऋञ्जत्योषध्यादिकं पाचयतीति, ऋञ्जसानः । मेघो वा । वर्धतेऽसौ वृधसानः । पुरुषो वा । मन्दते सुखादिकं करोतीति मन्दसानः । जीवोऽग्निर्वा । सहतेऽसौ सहसानः । मयूरो यज्ञो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्त्तेर्गुणः शुट् च ॥ ८८ ॥ अर्शसानः ॥ ८८ ॥

सम्यानच् स्तुवः ॥ ८९ ॥ संस्तवानः ॥ ८९ ॥

युधिबुधिदृशः किच्च ॥ ९० ॥ युधानः । बुधानः । दृशानः ॥ ९० ॥

हृच्छेः सनो लुक् छलोपश्च ॥ ९१ ॥ जुहुराणः ॥ ९१ ॥

श्वितेर्दश्च ॥ ९२ ॥ शिश्विदानः ॥ ९२ ॥

मुचियुधिभ्यां सन्वच्च ॥ ९३ ॥ मुमुचानः । युयुधानः ॥ ९३ ॥

तृन्तृचौ शंसिक्षदादिभ्यः संज्ञायां चानिटौ ॥ ९४ ॥ शंस्ता । शंस्तारौ । क्षत्ता । क्षत्तारौ ॥ ९४ ॥

नप्तृनेष्टृत्वष्टृहोतृपोतृभ्रातृजामातृमातृदुहितृ ॥ ९५ ॥

(८८) य ऋच्छति प्राप्नोति, सर्वान् स, अर्शसानः । अग्निर्वा । धातोर्गुणः प्रत्ययस्य शुडागमश्च ॥

(८९) सम्यक् स्तौतीति संस्तवानः । वाग्मी वा ॥

(९०) युध्यतेऽसौ युधानः । मनुर्वा । बुध्यते स बुधानः । आचार्यो वा । पश्यतीति दृशानः । लोकपालः सूर्यो वा । बाहुलकात् कल्पते समर्थो भवतीति कृपाणः खड्गो वा । पाषयति स्थूलो भवतीति पाषाणः । णित्त्वाद्वृद्धिः ॥

(९१) ह्वर्च्छति कुटिलो भवतीति जुहुराणः । चन्द्रमा वा ॥

(९२) सनो लुक् तकारस्य दकारः किदित्यनुवृत्तेर्गुणनिषेधः । श्वेततेऽसौ शिश्विदानः । पापकर्मा वा ॥

(९३) मुञ्चत्यसौ मुमुचानो मोचकः । युध्यतेऽसौ युयुधानो योद्धा ॥

(९४) शंस्यादिभ्यः क्षदादिभ्यश्च यथाक्रमं तृन्तृचौ तौ चानिटौ । शंसति स्तौतीति शंस्ता स्तोता । अप्तृन्तृजिति सूत्रे नप्तृप्रभृतेः पृथक् पाठादौणादिकयोस्तृन्तृचोर्ग्रहणं न भवति । तेन शंस्तारौ । शंस्तारः इत्यादिषु दीर्घो न भवति आशिष्यते धर्मादिकमिति आशास्ता । पण्डितो वा । प्रशास्ता राजा । प्रशास्तारौ । प्रशास्तारः । परिगणनाद्दीर्घः । क्षद संवृताविति सौत्रो धातुः । क्षदति संवृणोतीति क्षत्ता । सारथिर्द्वारपालो वैश्यायां शूद्राज्जातो वा । क्षुणत्ति संपिनष्टि येन स क्षोत्ता मुसलो वा । उन्नयति कार्याणीत्युन्नेता । ऋत्विग्वा । मन्यते जानात्यसौ मन्ता । विद्वान् । हन्तीति हन्ता चोरो वा । धाता । ईश्वरो वा । उपदेष्टा गुरुः । इत्यादि ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वावसिर्ऋन् ॥ ९६ ॥ स्वसा ॥ ९६ ॥

यतेर्वृद्धिश्च ॥ ९७ ॥ याता ॥ ९७

नञि च नन्देः ॥ ९८ ॥ ननन्दा । ननान्दा ॥ ९८ ॥

दिवेर्ऋ ॥ ९९ ॥ देवा ॥ ९९ ॥

नयतेर्डिच्च १०० ॥ ना ॥ १०० ॥

सव्येस्थश्छन्दसि ॥ १०१ ॥ सव्येष्ठा ॥ १०१ ॥

अर्त्तिसृधृधम्यम्यश्यवितृभ्योऽनिः ॥ १०२ ॥ अरणिः । सरणिः धरणिः । धमनिः । अमनिः । अशनिः । अवनिः । तरणिः ॥१०२॥

(९५) नप्त्रादयो द्श तृन्तृजन्ता निपात्यन्ते । नपतीति नप्ता । पौत्रो दौहित्रो वा । नप्तुः पुत्रः प्रनप्ता स्यात् । नप्त्री पौत्री । नञः प्रकृतिभावः । नयतेः षुक् । नयतीति नेष्टा । ऋत्विग्वा । दीप्यतेऽसौ त्वष्टा सूर्यो वा इकारस्योकारः । जुहोतीति होता यजमानो वा । व्यापकत्वेन सर्वं पुनातीति पोता विष्णुरीश्वरः । भ्राजते दीप्यतेऽसौ भ्राता । सोदर्यो वा । जकार लोपः । जायां कन्यां माति मिनोति मिमीते मार्जयति वा स जामाता दुहितुः पतिः । मृजधातोः सति रेफजकारलोपः । मानयति सत्करोतीति माता । उत्पादिका वा । स्वस्रादित्वाट्टाप्निषेधः पाति रक्षतीति पिता । जनको वा । दोग्धि कार्याणि प्रपूरयतीति दुहिता पुत्री वा । दुहितुरपत्यं दौहित्रः ॥

(९६) सुष्ठु स्यतीति स्वसा भगिनी वा ॥

(९७) यततेऽसौ याता । भ्रातृणां भार्याः परस्परं यातारो भवन्ति ॥

(९८) न नन्दति तुष्यतीति ननान्दा बाहुलकाद् वृद्ध्यभावे ननन्दा । पत्युर्भगिनी वा ॥

(९९) दीव्यति क्रीड़ादिकं करोतीति देवा । पत्युः कनीयान् भ्राता वा ॥

(१००) ऋप्रत्ययस्य डित्वाट्टिलोपः । कार्याणि नयतीति ना । नरौ । नरः । वहवीश्च वधूर्वा ॥

(१०१) डित्वादालोपः । सव्यं वामभागे तिष्ठतीति सव्येष्ठा । सारथिर्वा सप्तम्या अलुक् ॥

(१०२) ऋच्छति प्राप्नोति येन स, अरणिः । अग्न्युत्पत्तये मथनी हे दारुणी वा । सरन्ति गच्छन्त्यस्मिन् स सरणिः । मार्गो वा । ण्यन्तात्सृधातोरनिः सारणिः

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आङि शुषे सनश्छन्दसि ॥ १०३ ॥ आशुशुक्षणिः ॥ १०३ ॥

कृषेरादेश्च धः ॥ १०४ ॥ धर्षणिः ॥ १०४ ॥

अदेर्मुट् च ॥ १०५ ॥ अद्मनिः ॥ १०५ ॥

वृतेश्च ॥ १०६ ॥ वर्त्तनिः ॥ १०६ ॥

क्षिपेः किच्च ॥ १०७ ॥ क्षिपणिः ॥ १०७ ॥

अर्चिशुचिहुसृपिछादिछर्दिभ्य इसिः ॥१०८॥ अर्चिः।शोचिः। हविः। सर्पिः। छदिः। छर्दिः ॥ १०८ ॥

बृंहेर्नलोपश्च ॥ १०९ ॥ बर्हिः ॥ १०९ ॥

स्त्रियां सारणी। बाहुलकात्। शृणाति हिनस्तीति शरणिः धरति सवमिति धरणिः पृथिवी वा। धमिः सौत्रो धातुः धमति प्रापयति रसादिकमिति धमनिः नाड़ी वा अमतीत्यमनिः। गतिर्वा। येनाश्नाति योऽश्नुते व्याप्नोति वा। स, अशनिः। वज्रं वा। अवति रक्षणादिकं करोतीत्यवनिः। भूमिर्वा। तरति येन यया वा। स सा वा तरणिः। सूर्यः कुमारी नौकौषधिभेदो वा। बाहुलकात् रजतीति रजनिः रात्रिर्वा। नलोपः। स्त्रियां रजनी द्राक्षा हरिद्रा वा।

(१०३) समन्तादाङ्पूर्वादनिः प्रत्ययः। समन्तात् शुष्यन्ति पदार्था येन स आशुशुक्षणिः। अग्निर्वा॥

(१०४) कृषतीति धर्षणिः। पुंश्चली स्त्री वा ङीष् धर्षणी॥

(१०५) अत्तीत्यद्मनिः। अग्निर्वा॥

(१०६) वर्त्तते यस्मिन्निति वर्त्तनिः। मार्ग एकपदी वा॥

(१०७) क्षिपत्यनेन शत्रून् स क्षिपणिः। आयुधं वा॥

(१०८) अर्चति येन तदर्चिः। दीप्तिर्वा। शोचति शोचयतीति शोचिः। प्रकाशो वा। हूयते यत्तद्धविः। होमयोग्यं वस्तु वा। यो येन वा सर्पति तत् सर्पिः। घृतं वा। छादयति येन तच्छदिः। छादनं तृणादिछादनसाधनं वा। इस्मन्-त्रनिति ह्रस्वादेशः। छर्दति यत्तच्छर्दिः। वमनं व्याधिर्वा। बाहुलकात् समन्तादवतीति, आविः। प्राकट्यम्। अव्ययशब्दोयम्॥

(१०९) बृंहति वर्द्धते तद् बर्हिः। दर्भो वा॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्युतेरिसिन्नादेश्च जः ॥ ११० ॥ ज्योतिः ॥ ११० ॥
वसौ रुचेः संज्ञायाम् ॥ १११ ॥ वसुरोचिः ॥ १११ ॥
भुवः कित् ॥ ११२ ॥ भुविः ॥ ११२ ॥
सहो धश्च ॥ ११३ ॥ सधिः ॥ ११३ ॥
पिबतेस्थुक् ॥ ११४ ॥ पाथिः ॥ ११४ ॥
जनेरुसिः ॥ ११५ ॥ जनुः ॥ ११५ ॥
मनेर्धश्छन्दसि ॥ ११६ ॥ मधुः ॥ ११६ ॥
अर्त्तिपॄवपियजितनिधनितपिभ्यो नित् ॥ ११७ ॥ अरुः । परुः । वपुः । यजुः । तनुः । धनुः । तपुः ॥ ११७ ॥
एतेर्णिच्च ॥ ११८ ॥ आयुः ॥ ११८ ॥
चक्षेः शिच्च ॥ ११९ ॥ चक्षुः ॥ ११९ ॥

(११०) द्योतते प्रकाशते तज्ज्योतिः । अग्निः सूर्य्यादिकं वा । ज्योतिरधिकृत्य कृतो ग्रंथो ज्योतिषम् । संज्ञापूर्वकविधेरनित्यत्वाद् वृद्धिनिषेधः ॥

(१११) वसूनग्न्यादीन् रोचतेऽसौ वसुरोचिः । यज्ञो वा । बाहुलकात् केवलादपि रोचिः ज्वाला वा ॥

(११२) इसिन् कित् । यो भवति यस्मिन् वा स भुविः समुद्रो वा ॥

(११३) इसिन् । सहते भारमिति सधिः । अनड्वान् वा ॥

(११४) पिबति यो येन वा तत् पाथिः चक्षुः समुद्रो वा ॥

(११५) जायते यत्तज्जनुः । जनुषी । जननं वा । बाहुलकान्मनधातोरपि मन्यते जानातीति मनुः । मनुषी ॥

(११६) मन्यते बुध्यते यो येन वा तन् मधुः पवित्रद्रव्यं वा ॥

(११७) ऋच्छति प्राप्नोतीत्यरुः । आदित्यो व्रणो वा । पिपर्त्ति येन तत् परुः । ग्रंथिर्वा । वपति बीजादिकमस्मात्तद्वपुः शरीरं वा । यजति येन तद्यजुः । वेदविशेषो वा । तनोति कार्याण्यनेन तत्तनुः शरीरं वा । दिधन्ति धनादिकं प्राप्नोति येन तद्धनुः वाणक्षेपणं वा । तपति दुःखयतीति तपुः सूर्योऽग्निः शत्रुर्वा ॥

(११८) ईयते प्राप्यते यत्तदायुः । जीवनं वा जटापूर्वाज्जटायुः । पक्षिराजः ॥

(११९) चष्टे रूपमनुभवन्त्यनेन तच्चक्षुः । नेत्रं वा । चक्षुषा गृह्यत इति चाक्षुषं रूपम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहेः किच्च ॥ १२० ॥ मुहुः ॥ १२० ॥

कॄगॄशॄवॄञ्चतिभ्यः ष्वरच् ॥ १२१ ॥ कर्वरः । गर्वरः । शर्वरी । वर्वरः । चत्वरम् ॥ १२१ ॥

नौ षदेः ॥ १२२ ॥ निषद्वरः ॥ १२२ ॥

इत्युणादिषु द्वितीयः पादः ॥

छित्वरछत्वरधीवरपीवरमीवरचीवरतीवरनीवरगह्वरकट्वरसंयद्वराः ॥ १ ॥

---

(१२०) मुह्यति भ्रान्तो भवतीति मुहुः । पौनः पुन्येऽर्थेऽव्ययं वा ॥

(१२१) किरति विक्षिपतीति कर्वरः । व्याघ्रो दुष्टो वा । कर्वरी रात्रिर्व्याघ्री दुष्टा वा । गिरति निगरतीति गर्वरोऽहंकारः । अहङ्कारयोगाद्गर्वरो नायकः । शृणाति हिनस्ति प्रकाशमिति शर्वरी रात्रिर्वा । वृणातीति बर्वरः । प्राकृतजनो वा । चतति याचते स्वीक्रियते यत्तत् चत्वरम् । अङ्गनं वा ॥

(१२२) निषीदति यो यत्र वा स निषद्वरः । पङ्को निषद्वरी रात्रिर्वा ॥

इत्युणादिव्याख्यायां वैदिकलौकिककोषे द्वितीयः पादः ॥

---

(१) छित्वरादय एकादश शब्दाः ष्वरच् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । छिनत्तीति छित्वरः धूर्त्तः । शत्रुश्छेदनद्रव्यं वा । छदतेऽपवारयतीति छत्वरः । गृहं लताच्छादितं स्थानं वा । अत्रोभयत्र धातुदकारस्य तकारः । डुधाञ्, पा पाने, मा माने । एषामीत्वमन्त्यस्य । दधातीति धीवरः । नौवाहको वा । पिबति दुग्धादिकमिति पीवरः स्थूलो वा । माति मीनाति हिनस्ति वा स मीवरः । हिंसको वा । चिनोति तृणादिना चीयते वा स चीवरः । चीवरं वस्त्रं मुनिस्थानं वा । धातोर्दीर्घादेशः । तीरयति कर्म्मसमाप्तिं करोतीति तीवरो जातिविशेषो वा । रेफलोपो गुणाभावश्च । नयतीति नीवरः । गुणनिषेधः । परिव्राट् वा । गाहते विलोडयतीति गह्वरम् । गहनं वा । ह्रस्वादेशः । कटति वर्षत्यावृणोति वा तत् कट्वरम् । भोज्यं व्यञ्जनं वा । संयच्छतीति संयद्वरः । नृपो वा । मकारस्य दकारः । बाहुलकात् । उपजुह्वोतीत्युपह्वरः । रथो वा । ष्वरच् प्रत्ययस्य षित्वात् स्त्रियां छित्वरी । इत्यादि सर्वत्र ङीष् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इण्सिञ्जिदीङुष्यविभ्यो नक् ॥ २ ॥ इनः । सिनः । जिनः । दीनः । उष्णः । ऊनः ॥ २ ॥

फेनमीनौ ॥ ३ ॥

कृषेर्वर्णे ॥ ४ ॥ कृष्णः ॥ ४ ॥

बन्धेर्ब्रधिबुधी च ॥ ५ ॥ ब्रध्नः । बुध्नः ॥ ५ ॥

धापॄवस्यज्यतिभ्यो नः ॥ ६ ॥ धानाः । पर्णम् । वस्नः । वेनः । अत्नः ॥ ६ ॥

लक्षेरट्मुट् च ॥ ७ ॥ लक्षणम् । लक्ष्मणम् ॥ ७ ॥

वनेरिच्चोपधायाः ॥ ८ ॥ वेन्ना ॥ ८

(२) एतीति इनः । ईश्वरो राजा प्रभुः सूर्य्यो वा । इनेन स्वामिना सह वर्त्तत इति सेना । सिनोति बध्नातीति सिनः । काणो वा । जयतीति जिनः । अतिवृद्धो जयशीलो नास्तिकभेदो वा । दीयते क्षीणो भवतीति दीनः । दुःखी वा । ओषति दहतीत्युष्णम् । ईषत्तप्तं वा । वाच्यलिङ्गः । अवति रक्षादिकं करोतीत्यूनः । असंपूर्णं वा ॥

(३) स्फायते वर्द्धते स फेनः । हिण्डीरः । समुद्रफेन इतिप्रसिद्धः । जलविकारो वा । फेनायते नदी । मीनाति हिनस्तीति मीनः । राश्यन्तरो मत्स्यो वा ॥

(४) कृषतीति कृष्णो नीलवर्णो वा । कृष्णा पिप्पली वा । बाहुलकात् । जिघर्त्ति क्षरति चित्तं यया सा घृणा दौर्मनस्यं वा ॥

(५) बध्नातीति ब्रध्नः । बुध्नो वा । ब्रध्नो महान् सूर्य्यो वा । बुध्नो मेघो वा मूलमन्तरिक्षं वा ॥

(६) दधातीति धानाः । अग्निपक्वा यवा वा । नित्यं स्त्रीलिङ्गो बहुवचनश्च । पिपर्त्ति पालयति पूरयति वा तत् पर्णम् । पत्रं वा । वसति येन स वस्नः । मूल्यं वेतनं वा । अजति गच्छति प्राप्नोति वा स वेनः । कमनीयः प्रजापतिरीश्वरो वा । अतति निरन्तरं गच्छतीति अत्नः । सूर्य्यो वा । बाहुलकात् शृणोतीति श्रोणः । पङ्गुर्वा ॥

(७) लक्षयतीति लक्षणः । लक्ष्मणम् । चिह्नं नाम वा । रामभ्राता लक्ष्मणो वा । हंसस्त्री लक्षणा सारसी वा ॥

(८) वन्यते सम्भज्यते या सा वेन्ना । नदी वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिविष्टेर्यूच्च ॥ ९ ॥ स्योनः ॥ ९ ॥

कृवृजृसिद्रूपन्यनिस्वपिभ्यो नित् ॥ १० ॥ कर्णः । वर्णः । जर्णः । सेना । द्रोणः । पन्नः । अन्नम् । स्वप्नः । १० ॥

धेट इच्च ॥ ११ ॥ धेनः । धेना । ११ ॥

तृषिशुषिरसिभ्यः कित् ॥१२॥ तृष्णा । शुष्णः । रस्नम् । १२॥

सुञो दीर्घश्च ॥ १३ ॥ सूना । १३ ॥

रमेस्तच ॥ १४ ॥ रत्नम् । १४ ॥

रास्नासास्नास्थूणावीणाः ॥ १५ ॥

(९) सीव्यति तन्तून्सन्तनोतीति स्यूनः । आदित्यो वा । टिभागस्य यू इत्यादेशः । बाहुलकात् केवलोऽपि नप्रत्ययस्तेन ऊठादेशे कृते स्योनः सुखी स्योनं सुखमित्यपि सिद्धं भवति ॥

(१०) नो नित् । किरति विक्षिपतीति कर्णः । श्रोत्रं क्षत्रियविशेषो वा । वृणोति व्रियते वा स वर्णः । ब्राह्मणादिः शुक्लादिः स्तुतिर्यशोरूपमक्षरं स्वीकारश्च । जीर्यतीति जर्णः । चन्द्रमा वृक्षो वा । सिनोति बध्नाति शत्रूनिति सेना । इनेन सह वर्त्तत इति पूर्वमुक्तम् । द्रवति गच्छतीति द्रोणः । कृष्णकाको मानविशेषोऽर्जुनगुरुर्वा । द्रोणी जलसेचनी वा । पनायति स्तौतीति पन्नः । सर्पो वा । अनिति जीवयतीत्यन्नमोदनादिकं वा । यः स्वपिति यत् सुप्यते वा स स्वप्नः । निद्रा वा ॥

(११) धयन्ति पिबन्ति यस्मात्स धेनः समुद्रो धेना नदी वा । आत्वनिवृत्त्यर्थं इकारादेशः ॥

(१२) तृष्यति काङ्क्षति पिपासति वा यया सा तृष्णा । लिप्सा पिपासा वा शुष्यति रसादिकमिति शुष्णः । सूर्योऽग्निर्वा । रसति शब्दयतीति रस्नम् । द्रव्यं वा ॥

(१३) यः सुनोति यत्र वेति सूना । जन्तुबधस्थानं वा ॥

(१४) णयन्ताद्रमेर्नप्रत्ययो मस्य तश्चादेशः । रमयति हर्षयतीति रत्नम् । जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्धि रत्नं प्रचक्षते । अश्वरत्नम् । गजरत्नम् । मणिरत्नम् । स्त्रीरत्नम् । इत्यादि ॥

(१५) रसति शब्दयतीति रास्ना । गन्धद्रव्यं वा । सस्ति स्वपिति यया सा सास्ना । गवादीनां कण्ठाऽधोभागस्थमं वा । तिष्ठति छादनादिकमनया सा स्थूणा गृहस्तम्भो वा । आकारस्य ऊ आदेशः । वेति व्याप्नोति शब्दोऽस्याः सा वीणा वाद्यविशेषो वा । निपातनात्सत्वम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गादाभ्यामिष्णुच् ॥ १६ ॥ गेष्णुः । देष्णुः । १६ ॥

कृत्यशूभ्यां क्स्नः ॥ १७ ॥ कृत्स्नम् । अक्ष्णम् ॥ १७ ॥

तिजेर्दीर्घश्च ॥ १८ ॥ तीक्ष्णम् । १८ ॥

श्लिषेरच्चोपधायाः ॥ १९ ॥ श्लक्ष्णम् । १९ ॥

यजिमनिशुन्धिदसिजनिभ्यो युच् ॥ २० ॥ यज्युः । मन्युः । शुन्ध्युः । दस्युः । जन्युः ॥ २० ॥

भुजिमृङ्भ्यां युक्त्युकौ ॥ २१ ॥ भुज्युः । मृत्युः । २१ ॥

सरतेरयुः ॥ २२ सरयुः । २२ ॥

पानीविषिभ्यः पः ॥ २३ ॥ पापम् । नीपः । वेष्पः । २३ ॥

च्युवः किच्च ॥ २४ ॥ च्युपः ॥ २४ ॥

(१६) गायति शब्दं करोतीति गेष्णुः । गायको वा । ददातीति देष्णुः । दानशीलो वा ॥

(१७) कृन्तति स्वल्पमिति कृत्स्नम् । संपूर्णं वा । अश्नुते व्याप्नोतीत्यक्ष्णम् । अखण्डं वा ॥

(१८) तितिक्षते तत् तीक्ष्णम् । तीव्रम् । वाच्यलिङ्गोऽयं शब्दः । तीक्ष्णा बुद्धिः । तीक्ष्णः पुरुषः । तीक्ष्णं घृतम् ॥

(१९) क्स्नः । श्लिष्यतीति श्लक्ष्णम् । सुकुमारं त्रिलिङ्गेषु वा ॥

(२०) यजतीति यज्युः । अध्वर्युर्वा । मन्यतेऽसौ मन्युः । शोकः क्रोधो वा । शुन्धतीति शुन्ध्युः । अग्निर्वा । दस्यति नाशयति परपदार्थानिति दस्युः । तस्करो वा । जायते प्रादुर्भवतीति जन्युः । शरीरी वा । बाहुलकादनादेशाभावः ॥

(२१) यो भुनक्ति यत्र वा स भुज्युः पात्रं वा । म्रियत इति मृत्युः । शरीरवियोगो वा स्त्रीलिंगः पुंल्लिंगश्च ॥

(२२) यः सरति यत्र जलानि वा सरन्ति स सरयुः । नदी वा । अयूप्रत्यय इति पाठान्तरम् । सरयूः ॥

(२३) पान्ति रक्षन्त्यात्मानमस्मादिति पापमधर्मो वा । तद्योगात्पापः पुरुषः । नयतीति नेपः । पुरोहितो वा । वेवेष्टि व्याप्नोतीति वेष्पः । पेयमुदकं वा ॥

(२४) च्यवते प्राप्नोति वदति वा येन स च्युपः । सुखं वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तुवो दीर्घश्च ॥ २५ ॥ स्तूपः ॥ २५ ॥

सुशृभ्यां निच्च ॥ २६ ॥ सूपः । शूर्पम् ॥ २६ ॥

कुयुभ्यां च ॥ २७ ॥ कूपः । यूपः ॥ २७ ॥

खष्पशिल्पशष्पबाष्परूपपर्पतल्पाः ॥ २८ ॥

स्तनिहृषिपुषिगदिमदिभ्यो णेरित्नुच् ॥ २९ ॥ स्तनयित्नुः। हर्षयित्नुः । पोषयित्नुः । गदयित्नुः । मदयित्नुः ॥ २९ ॥

कृहनिभ्यां क्त्नुः ॥ ३० ॥ कृत्नुः । हत्नुः ॥ ३० ॥

गमेः सन्वच्च ॥ ३१ ॥ जिगत्नुः ॥ ३१ ॥

(२५) स्तौतीति स्तूपः । भूमिसमुच्छ्रायो यज्ञवेदिर्वा ॥

(२६) किद् दीर्घश्च । सुनोति सूयते पच्यते वा स सूपः पक्वं द्विदलान्नं वा शृणाति हिनस्तीति शूर्पं मानभेदोऽन्नशोधकं पात्रं वा ॥

(२७) कित् दीर्घश्च । कौति शब्दयतीति कूपः । यौति मिश्रयतीति यूपः। यज्ञशाला स्तम्भो वा ॥

(२८) खष्पादयः पप्रत्ययान्ता निपाताः । खनतीति खष्पः । क्रोधो बलात्कारी वा । नकारस्य षत्वम् । यत् शीलति समादधाति तत् शिल्पम् कौशलं वा। ह्रस्वादेशः। शष्यते हन्यते तच्छष्पम् । बालतृणं कान्तिक्षयो वा । षत्वम् । बाधते दुःखयतीति बाष्पम् । नेत्रजलमूष्मा वा । धकारस्य सत्वम् । रौति शब्दयतीति रूपम् । आकृतिः स्वभावः सौन्दर्यं वा । दीर्घादेशः । पिपर्त्तीति पर्पम् । गृहं बालतृणं वा । तलयति प्रतिष्ठां करोतीति तल्पम् । शय्या स्त्रियो वा । बाहुलकात् । चमति भक्षयतीति चम्पा । नगरी वा । पाति रक्षतीति पम्पा। नदी वा । ह्रस्वत्वं मुडागमश्च ॥

(२९) स्तनयति शब्दयतीति स्तनयित्नुः । मेघो विद्युद्वा । हर्षयतीति हर्षयित्नुः । हर्षयिता । सुवर्णं वा। पोषयतीति पोषयित्नुः । पोषयिता। गादयतीति गदयित्नुः । वावदूको वा । मादयतीति मदयित्नुः । मदिरा वा । अत्र सर्वत्र । अयामन्ताल्वाय्येत्न्वि० इतिसूत्रेण णेरयादेशः ॥

(३०) करोतीति कृत्नुः । शिल्पी वा यो हन्ति येन वा स हत्नुः । व्याधिः शस्त्रं वा ॥

(३१) गमयति शरीराणीति जिगत्नुः प्राणो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाभाभ्यां नुः ॥ ३२ ॥ दानुः । भानुः ॥ ३२ ॥
वचेर्गश्च ॥ ३३ ॥ वग्नुः ॥ ३३ ॥
धेट इच्च ॥ ३४ ॥ धेनुः ॥ ३४ ॥
सुवः कित् ॥ ३५ ॥ सूनुः ॥ ३५ ॥
जहातेर्द्वे ऽन्त्यलोपश्च ॥ ३६ ॥ जह्नुः ॥ ३६ ॥
स्थो णुः ॥ ३७ ॥ स्थाणुः ॥ ३७ ॥
अजिवृरीभ्यो निच्च ॥ ३८ ॥ वेणुः । वर्णुः । रेणुः ॥ ३८ ॥
विषेः किच्च ॥ ३९ ॥ विष्णुः ॥ ३९ ॥
कृदाधाराचिंकलिभ्यः कः ॥ ४० ॥ कर्कः । दाकः । धाकः । राका । अर्कः । कल्कः ॥ ४० ॥

(३२) ददातीति दानुः । दानशीलो बुद्ध्यादिविचक्षणो वा । भाति दीप्यतेऽसौ भानुः सूर्यः प्रकाशः किरणो वा । स्वर्भानूराहुः । चित्रभानुः सूर्योऽग्निर्वा । बृहद्भानुरग्निः ॥

(३३) वक्तीति वग्नुः । वाचालो वा ॥

(३४) धयन्ति पिबन्ति यस्याः सा धेनुः । नवप्रसूता गौर्वा । कनि सति धेनुका हस्तिनी वा ॥

(३५) सूयत उत्पद्यतेऽसौ सूनुः । अनुजः पुत्रः सूर्यो वा ॥

(३६) जहाति दोषानिति जह्नुः । कश्चिद्राजर्षिर्वा ॥

(३७) तिष्ठतीति स्थाणुः शुष्कवृक्षो निश्चलो वा ॥

(३८) अजति गच्छति प्रक्षिपति वा स वेणुः । वंशो राजविशेषो वा । व्रियते सम्भजतीति वर्णुः । गदो देशभेदो वा । रिणाति गच्छति हिनस्ति हन्यते वा स रेणुः । धूलिः । सुरेणुः सुवर्णरजः । त्रसरेणुः सुरेणुर्वा ॥

(३९) वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगदिति विष्णुर्जगदीश्वरः ॥

(४०) बहुलवचनान्न ककारस्येत्संज्ञा । करोतीति कर्कः । अग्निः शुक्लाश्वो दर्पणो घटो वा । ददातीति दाकः । यजमानो वा । दधातीति धाकः । आधारोऽनड्वान् वा । राति ददातीति राका । पौर्णमासी नदीभेदो वा । अर्चयतीत्यर्कः । अर्कपर्णं स्फटिकं सूर्यो वा । कलते शब्दयतीति कल्कम् । दम्भः किल्बिषं वा । बाहुलकात् । रमतेऽसौ रल्लकः क्षपणो मन्दो वा । कपिलकादित्वाल्लत्वे लङ्का । लङ्का दुष्टनगरी वृक्षशाखा पुंश्चली वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृवृभूशुषिमुषिभ्यः कक् ॥ ४१ ॥ सृकः । वृकः । भूकम् । शुष्कः । मुष्कः ॥ ४१ ॥

शुकवल्कोल्काः ॥ ४२ ॥

इण्भीकापाशल्यतिमर्चिभ्यः कन् ॥ ४३ ॥ एकः । भेकः । काकः । पाकः । शल्कम् । अल्कः । मर्कः ॥ ४३ ॥

नौ हः ॥ ४४ ॥ निहाका ॥ ४४ ॥

नौ सदेर्डिच्च ॥ ४५ ॥ निष्कः ॥ ४५ ॥

स्यमेरीट् च ॥ ४६ ॥ स्यमीकः । स्यमिकः ॥ ४६ ॥

अजियुधुनीभ्यो दीर्घश्च ॥४७॥ वीकः । यूका । धूकः । नीकः ४७॥

---

(४१) सरतीति सृकः । वाणो वज्रं वायुरुत्पलं वा । वृणोतीति वृकः काकः श्वापदो वा । वृक एव वार्केण्यः । भवतीति भूकम् । छिद्रं कालो वा । शुष्यतीति शुष्कः । नीरसो वा । मुष्यत आध्रियत इति मुष्कः अण्डकोषः सङ्घाती वा । मुष्कोऽस्यास्तीति मुष्करः । बाहुलकादवति रक्षणहेतुर्भवतीत्योकः । राशिः स्थानं वा । मूर्च्छते बध्यतेऽसौ मूकः । वचनवर्जितो वा । रेफवकारयोर्लोपः ॥

(४२) शुकादयः कप्रत्ययान्ता निपाताः । शोभतेऽसौ शुकः । पक्षिजातिर्व्यासपुत्रो वा । बलते संवृणोति येन तत् बल्कलं वा । ओषति दहतीति, उल्का । विद्युदग्नेर्ज्वाला वा । षकारस्य लत्वम् ॥

(४३) एति प्राप्नोतीत्येकः । मुख्योऽन्यः केवलो वा । यो बिभेति यस्माद्वा स भेकः । मण्डूको मेघो वा । कायति शब्दयतीति काकः । वायसो वा । पिबत्यसाविति पाकः शिशुर्दैत्यो वा । शल्यति गच्छति शल्यते वा तत् शल्कम् वल्कलं वा । अतति निरन्तरं गच्छतीत्यल्कः । पथिकः शरीरावयवो वा । मर्च इति सौत्रो धातुः मर्चति चेष्टतेऽसौ मर्कः । शरीरवायुर्वा । बाहुलकात् । श्यतीति शाकम् । स्यतीति साकं वा ॥

(४४) नितरां जहाति त्यजतीति निहाका । गोधिका वा ॥

(४५) निषीदतीति निष्कः । परिमाणभेदो वा ॥

(४६) स्यमति शब्दयतीति स्यमीकः । वल्मीको वृक्षभेदो वा । चकारादिडागमे स्यमिकः ॥

(४७) अजति गच्छतीति वीकः । वायुः पक्षी वा । यौतीति यूका । शिरः केशजन्तुर्वा । धूनोति कम्पयतीति धूकः । वायुर्वा । नयतीति नीकः । वृक्षविशेषो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह्रियो रश्च लो वा ॥ ४८ ॥ ह्रीका । ह्लीका ॥ ४८ ॥

शकेरुनोन्तोन्त्युनयः ॥ ४९ ॥ शकुनः । शकुन्तः । शकुन्तिः । शकुनिः ॥ ४९ ॥

भुवो झिच् ॥ ५० ॥ भवन्तिः ॥ ५० ॥

कन्युच् क्षिपेश्च ॥ ५१ ॥ क्षिपण्युः । भुवन्युः ॥ ५१ ॥

अनुङ् नदेश्च ॥ ५२ ॥ नदनुः । क्षिपणुः ॥ ५२ ॥

कृवृदारिभ्य उनन् ॥ ५३ ॥ करुणा । वरुणः । दारुणम् ॥ ५३ ॥

तॄ रश्च लो वा ॥ ५४ ॥ तरुणः । तलुनः ॥ ५४ ॥

क्षुधिपिशिमिथिभ्यः कित् ॥ ५५ ॥ क्षुधुनः । पिशुनः । मिथुनम् । ५५ ॥

---

(४८) जिह्रेति लज्जां करोतीति ह्रीका ह्लीका लज्जा वा ॥

(४९) उन, उन्त, उन्ति, उनि, इत्येते प्रत्यया भवन्ति । शक्नोतीति शकुनः । शकुन्तः । शकुन्तिः । शकुनिः । पक्षिनामानि वा ॥

(५०) भवन्ति पदार्था यस्मिन् स भवन्तिः । वर्त्तमानकालो वा । कामयतेऽसौ कुन्तिः । स्त्रियां कुन्ती । धातोः कुरादेशः प्रत्ययादिलोपश्च । अवतीति, अवन्तिः । राजा वा । वदतीति वदन्तिः । कोलाहलो वा । किंवदन्ती जनश्रुतिः । कुन्त्यादयो बाहुलकादेव भवन्ति ॥

(५१) चाद्भुवः । क्षिप्यति प्रेरयतीति क्षिपण्युः । वसन्त ऋतुर्वा । भवतीति भुवन्युः । स्वामी सूर्यो वा ॥

(५२) चात् क्षिपेः । नदत्यव्यक्तं शब्दं करोतीति नदनुः मेघो वा क्षिप्यतीति क्षिपणुः वायुर्वा ॥

(५३) किरति विक्षिपति दुःखमिति करुणः । वृक्षभेदो वा । करुणा कृपा वा । करुणा शीलमस्येति कारुणिकः । वृणोति व्रियते वाऽसौ वरुणः । उत्तमं जलं वृक्षभेदो वा । दारयति यो येन वा तद्दारुणं भीषणं वा ॥

(५४) उनन् । तरतीति तरुणः तलुनः । युवा वृक्षभेदो वा । स्त्रियां गौरादित्वान् ङीष् तरुणी तलुनी वा युवती ॥

(५५) क्षुध्यति भोक्तुमिच्छतीति क्षुधुनः । म्लेच्छजातिर्वा । पिंशत्यवयवं करोतीति पिशुनः । खलः सूचको वा । मेथति जानाति मेथते हिनस्ति वा तन् मिथुनम् । द्वयोः संयोगो राशिर्वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फलेर्गुक् च ॥ ५६ ॥ फल्गुनः । ५६ ॥

अशिर्लशश्च ॥ ५७ ॥ लशुनम् ॥ ५७ ॥

अर्जेर्णिलुक् च ॥ ५८ ॥ अर्जुनः । ५८ ॥

तृणाख्यायां चित् ॥ ५९ ॥ अर्जुनम् । ५९ ॥

अर्त्तेश्च ॥ ६० ॥ अरुणः । ६० ॥

अजियमिशीङ्भ्यश्च ॥ ६१ ॥ वयुनम् । यमुना । शयुनः । ६१ ॥

वृतृवदिवचिवसिहनिकमिकषिभ्यः सः ॥ ६२ ॥ वर्षम् । तर्षः । वत्सः । वक्षः । वत्सम् । हंसः । कंसः । कक्षम् । ६२ ॥

प्लुषिरञ्चोपधायाः ॥ ६३ ॥ प्लक्षः । ६३ ॥

मनेर्दीर्घश्च ॥ ६४ ॥ मांसम् । ६४ ॥

(५६) फलति निष्पन्नो भवतीति फल्गुनः शुक्लो वा ॥

(५७) उनन् । अश्यते भुज्यते यत्तल्लशुनम् । औषधरूपः कन्दो वा ॥

(५८) उनन् अर्जयतीत्यर्जुनः । शुक्लो मयूरो वृक्षभेदो वा । अर्जुनी । सौरभेयी ॥

(५९) अर्जयति यत्तदर्जुनं तृणम् । चित्करणमन्तोदात्तार्थम् ॥

(६०) ऋच्छति प्राप्नोतीत्यरुणः सूर्यः कुष्ठं रक्तं वा ॥

(६१) वीयते गम्यतेऽत्रेति वयुनम् । मन्दिरं वा । यच्छतीति यमुना । नदीभेदो वा । शेतेऽसौ शयुनः । अजगरो वा ॥

(६२) वृणोति स्वीकरोतीति वर्षम् । संवत्सरो वृष्टिरार्यावर्त्तो मेघो वा । स्त्रियां बहुवचनान्तो वर्षाः प्रावृषि ऋतौ । तरति येन यत्र वा स तर्षः । समुद्रो वा । वदतीति वत्सः । वालो वक्षःस्थलं वा । हन्तीति हंसः । निर्लोभः सूर्यः पक्षिभेदो ब्रह्मभेदः शरीरस्थो वायुर्वा । कामयते परपदार्थानिति कंसः । तैजसद्रव्यं पात्रं तस्करो वा । कषति हिनस्तीति कक्षः तृणं लता वनसमीपं बाहुमूलं वा । बाहुलकात् । राजते दीप्यते सा राचा लाचा । कपिलकादित्वाल्लत्वम् । यौतीति योषा स्त्री वा ॥

(६३) प्लोषति दहतीति प्लक्षः । पिप्पलं पर्कटी वा । पाकरि इति प्रसिद्धा । द्वीपभेदो गृहस्य द्वारपार्श्वं वा ॥

(६४) मन्यते ज्ञायतेऽनेन तन्मांसम् । शरीरोपचयो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशेर्देवने ॥ ६५ ॥ अक्षः । ६५ ॥

स्नुव्रश्चिकृत्यृषिभ्यः कित् ॥ ६६ ॥ स्नुषा । वृक्षः । कृत्सम् । ऋक्षम् । ६६ ॥

ऋषेर्जातौ ॥ ६७ ॥ ऋक्षः । ६७ ॥

उन्दिगुधिकुषिभ्यश्च ॥ ६८ ॥ उत्सः । गुत्सः । कुक्षः । ६८ ॥

गृधिपण्योर्दकौ च ॥ ६९ ॥ गृत्सः । पक्षः ॥ ६९ ॥

अशेः सरन् ॥ ७० ॥ अक्षरम् ॥ ७० ॥

वसेश्च ॥ ७१ ॥ वत्सरः ॥ ७१ ॥

संपूर्वाच्चित् ॥ ७२ ॥ संवत्सरः ॥ ७२ ॥

---

(६५) अश्नुते व्याप्नोतीत्यक्षः । अक्षाणीन्द्रियाणि तुषं चक्रं शकटं व्यवहारो वा ॥

(६६) स्नौति प्रस्रवतीति स्नुषा । यवीयसोभ्रातुर्भार्या वा । वृश्च्यते छिद्यतेऽसौ वृक्षः । वृक्ष वरण इत्यस्मादपीगुपधात् के प्रत्यये वृक्ष इति सिध्यति । अर्थभेदायाव्रश्चिग्रहणं तेन छेद्यत्वात् कार्यं जगदपि वृक्ष उच्यते । कृन्तति छिनत्तीति कृत्समुदकम् । ऋषति गच्छतीति ऋक्षम् । नक्षत्रसामान्यं वा । बाहुलकात् । समन्तात्रेषति हिनस्तीत्याभिक्षा । क्षीरविकारो वा । लिश्यतेऽल्पा भवतीति लिक्षा । शिरःकेशजन्तुर्वा । रोहति बीजाज्जायतेऽसौ रुक्षः । वृक्षजातिः प्रीतिहीनो वा ॥

(६७) ऋषति गच्छतीति ऋक्षः । मृगजातिभेदो भल्लूकः । पूर्वसूत्रेण सिद्धे जातिनियमाद्यौगिके ऋषधातोः षः प्रत्ययो वा ॥

(६८) उनत्ति क्लिद्यतीत्युत्सः । जलस्रवणस्थानमृषिर्वा । गुध्नाति रोषं करोतीति गुत्सः । हारभेदः पुष्पगुम्फो वा । कुष्णाति निष्कर्षतीति कुक्षः । जठरस्थानं वा ॥

(६९) चित् गृध्यति अभिकाङ्क्षतीति गृत्सः । कामो वा । गकारस्य भष्भावनिवृत्त्यर्थो दकारादेशः । पणायति स्तौति व्यवहरति वा येन यत्र वा स पक्षः । मासार्द्धः पार्श्वभागः साध्यविरोधः समूहो बलं मित्रसहायो वा ॥

(७०) अश्नुते व्याप्नोतीत्यक्षरम् । ब्रह्म वर्णो मोक्ष उदकं वा ॥

(७१) वसन्त्यस्मिन्निति वत्सरः । वर्षो वा ॥

(७२) चित्वादन्तोदात्तस्वरः । सम्यग्वसन्त्यत्र स संवत्सरः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षुधूमदिभ्यः कित् ॥ ७३ ॥ क्षुसरः । धूसरः । मत्सरः ॥ ७३ ॥
पतेरश्च लः ॥ ७४ ॥ पत्सलः ॥ ७४ ॥
तन्यृषिभ्यां क्सरन् ॥ ७५ ॥ तसरः । ऋत्सरः ॥ ७५ ॥
पीयुक्वणिभ्यां कालन् ह्रस्वः संप्रसारणञ्च ॥ ७६ ॥ पियालः । कुणालः ॥ ७६ ॥
कठिकुषिभ्यां काकुः ॥ ७७ ॥ कठाकुः । कुषाकुः ॥ ७७ ॥
सर्त्तेर्दुक् च ॥ ७८ ॥ सृदाकुः ॥ ७८ ॥
वृतेश्छन्दसि ॥ ७९ ॥ वार्त्ताकुः । वार्त्ताकम् ॥ ७९ ॥
पर्देर्नित्संप्रसारणमल्लोपश्च ॥ ८० ॥ पृदाकुः ॥ ८० ॥
सृयुवचिभ्योऽन्युजागूजक्नुचः ॥ ८१ ॥ सरण्युः । यवागूः । वचक्नुः ॥ ८१ ॥

(७३) यः करोति क्रियते वा स क्षुसरः । तिलौदनं मिश्रं वा । धूनोतीति धूसरः । ईषत्पाण्डुरो वा । माद्यतीति मत्सरः । असह्यपरसंपत्तिर्जनः कृपणः क्रुद्धो वा मत्सरा मक्षिका वा ॥

(७४) पतन्ति गच्छन्ति यत्र स पत्सलः । पन्था वा ॥

(७५) तनोतीति तसरः । सूत्रवेष्टनो वा । ऋषति प्राप्नोति वा स ऋत्सरः ऋत्विग्वा ॥

(७६) पीयुः सौत्रो धातुः पीयति तर्पयतीति पियालः । वृक्षभेदो वा । चिरौंजी इति प्रसिद्धा । क्वणति शब्दं करोतीति कुणालः । देशभेदो वा । बाहुलकात् । भजतीति भगालम् । नरमस्तकं वा । कुलं च ॥

(७७) कठतीति कठाकुः । पक्षी वा । कषति हिनस्तीति कषाकुः । अग्निः सूर्यो वा ॥

(७८) सरतीति सृदाकुः । वायुर्वा । सरन्त्यापोऽस्यामिति सृदाकुर्नदी ॥

(७९) वर्त्ततेऽसौ वार्त्ताकुः । हिंगुली । वन्ताक इति प्रसिद्धम् । बाहुलकादुकारस्य अ, ई भवतः । वार्त्ताकं । वार्त्ताकी वा ॥

(८०) पर्दते कुत्सितं शब्दं करोतीति पृदाकुः । व्याघ्रः सर्पो वा ॥

(८१) सरतीति सरण्युः । मेघो वायुर्वा । यौति मिश्रयतीति यवागूः । दुग्धे पक्वयवचूर्णं वा । वक्तीति वचक्नुः वाचालः प्राज्ञो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनकः शीङ्भियः ॥ ८२ ॥ शयानकः । भयानकः ॥ ८२ ॥
आणको लूधूशिङ्घिधाञ्भ्यः ॥ ८३ ॥ लवाणकः । धवाणकः ।
शिङ्घाणकः । धाणकः ॥ ८३ ॥
उल्मुकदर्विहोमिनः ॥ ८४ ॥
ह्रियः कुक्रश्च लो वा ॥ ८५ ॥ ह्रीकुः । ह्लीकुः ॥ ८५ ॥
हसिमृग्रिण्वामिदमिलूपूधूर्विभ्यस्तन् ॥ ८६ ॥ हस्तः । मर्त्तः ।
गर्त्तः । एतः । वातः । अन्तः । दन्तः । लोतः । पोतः । धूर्त्तः ॥८६॥
नञ्याप इट् च ॥ ८७ ॥ नापितः ॥ ८७ ॥

(८२) शेतेऽसौ शयानकः । अजगरो वा । बिभेत्यस्मादिति भयानको भयप्रदः ॥

(८३) लुनाति येन तल्लवाणकम् । दात्रं वा । धूनोतीति धवाणकः । वायुर्वा शिङ्घति समन्ताज्जिघ्रतीति शिङ्घाणकः । श्लेष्मा वा । बाहुलकात् ककारलोपे शिङ्घाणम् । काचपात्रं लोहनासिकयोर्मलं वा । दधाति धीयते वा स धाणकः । व्यवहारयोग्यद्रव्यभागो वा ॥

(८४) ओषति दहतीत्युल्मुकम् । ज्वलदङ्गारो वा । मुकप्रत्यये धातोः षकारस्य लत्वम् । दृणाति विदारयति येन स दर्विः । परिवेषणपात्रं वा । विन् प्रत्ययः जुहोतीति होमी । यजमानो वा । अत्र मिन् प्रत्ययः ॥

(८५) जिह्रेति लज्जां करोतीति ह्रीकुर्लज्जावान्। ह्लीकुः । जतु त्रपुणी लाक्षादिर्वा ॥

(८६) हसतीति हस्तः । नक्षत्रं करो वा । हस्तोऽस्यास्तीति हस्ती । म्रियतेऽसौ मर्त्तः । मनुष्यो वा । मर्त्त एव मर्त्यः स्वार्थे यत् । गिरति निगलति स गर्त्तः । अवटः पतनस्थानं वा । एति प्राप्नोति यं स एतः । विचित्रवर्णो वा । स्त्रियां, एनी एता । वातीति वातः । वायुर्व्याधिर्वा अमति गच्छतीति, अन्तः । नाशः समीपं तत्स्वरूपं मनोहरं वा । दाम्यत्युपशाम्यति यो येन वा स दन्तः । दशनो वा । शोभना दन्ता यस्याः सा सुदती युवतिः । दन्तावलो दन्तुरो वा हस्ती । लुनातीति लोतः । अश्रुश्चिन्हं वा । पुनातीति पोतः । बालो वहित्रो वा । धूर्वतीति धूर्त्तः । शठो लवणं धत्तूरं वा । बाहुलकात् । तोसति शब्दयतीति तूस्तम् । पापं जटा वा । तूस्तं करोति तूस्तयति । छ्यति छिनत्तीति छातः । दुर्बलो वा । अभितो म्लायतीति, अभिम्लातः । हर्षक्षीणो वा ॥

(८७) नाप्नोति सत्कर्माणीति नापितः । केशच्छेदको वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनिमृङ्भ्यां किच्च ॥ ८८ ॥ ततम् । मृतम् ॥ ८८ ॥
अञ्जिघृषिभ्यः क्तः ॥ ८९ ॥ अक्तम् । घृतम् । षितम् ॥ ८९ ॥
दुतनिभ्यां दीर्घश्च ॥ ९० ॥ दूतः । तातः ॥ ९० ॥
जेर्मूट् चोदात्तः ॥ ९१ ॥ जीमूतः ॥ ९१ ॥
लोष्टपलितौ ॥ ९२ ॥
हृश्याभ्यामितन् ॥ ९३ ॥ हरितः । श्येतः ॥ ९३ ॥
रुहेरश्च लो वा ॥ ९४ ॥ रोहितः । लोहितम् ॥ ९४ ॥
पिशेः किच्च ॥ ९५ ॥ पिशितम् ॥ ९५ ॥

(८८) तनोतीति ततम् । वीणादिकं वाद्यं वा । म्रियते येन तन्मृतम् । याचितं भैक्ष्यं वा ॥

(८९) यदनक्ति प्रकटीकरोति तदक्तम् । व्याघ्रः परिमितं वा । जिघर्त्ति संचलति दीप्यते वा तत्, घृतम् । उदकं सर्पिः प्रदीप्तं वा । सिनोति बध्नातीति षितम् । शुक्लं वा । बहुलवचनात् । ह्वर्च्छति कुटिलं भवतीति मुहूर्त्तम् । घटिकाद्वयकालो वा । धातोर्मुडागमो राल्लोप इति छलोपः । ऋच्छत्यात्मानं प्राप्नोतीति ऋतम् । यथार्थं वा । वसति यत्रेति वस्तम् । स्थानं वा ॥

(९०) द्रवति गच्छति दुनोत्युपतपति वा स दूतः । बहुकार्यसाधको राजभृत्यो वा । स्त्रियां दूती । तनोति कार्याणीति तातः । पिता वा । बाहुलकात् । स्यति कर्मसमाप्तिं करोतीति सीता चेत्रे हलेन कृता रेखा स्त्रीविशेषो वा ॥

(९१) धातोर्दीर्घः प्रत्ययस्य मूडुदात्तत्वं च । यो जयति येन वा । स जीमूतः । मेघः पर्वतो वा ॥

(९२) लोष्टते सङ्घातो भवतीति लोष्टम् । मृत्पिण्डो वा । पल्यते प्राप्यते तत् पलितम् । वृद्धावस्थया केशादीनां शुक्लत्वं वा ॥

(९३) हरतीति हरितः । वर्णभेदो वा । श्यायति गच्छतीति श्येतः । श्यामवर्णो वा । स्त्रियां हरिणी । हरिता । श्येनी श्येता ॥

(९४) रोहति प्रादुर्भवतीति रोहितः । मृगमत्स्ययोर्भेदो रोहितं रुधिरं वा । लोहितोऽङ्गारको रुधिरम् रक्तवर्णो वा ॥

(९५) पिश्यते ऽवयवरूपं क्रियते तत् पिशितं मांसं वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रुदक्षिस्पृहिगृहिभ्य आय्यः ॥ ९६ ॥ श्रवाय्यः । दक्षाय्यः । स्पृहयाय्यः । गृहयाय्यः ॥ ९६ ॥

दधातेर्द्वित्वमित्वं षुक् च ॥ ९७। दधिषाय्यः ॥९७॥

वृञ एण्यः ॥ ९८ ॥ वरेण्यः॥ ९८॥

स्तुवः क्येय्यश्छन्दसि ॥ ९९ ॥ स्तुवेय्यम् ॥ ९९ ॥

राजेरन्यः ॥ १०० ॥ राजन्यः ॥ १०० ॥

शृरम्योश्च ॥ १०१ ॥ शरण्यम् । रमण्यम् ॥ १०१ ॥

अर्त्तेर्निच्च ॥ १०२॥ अरण्यम् ॥ १०२ ॥

पर्जन्यः ॥ १०३ ॥

वदेरान्यः ॥ १०४ ॥ वदान्यः ॥ १०४ ॥

अमिनक्षियजिबधिपतिभ्योऽत्रन् ॥ १०५ ॥ अमत्रम् । नक्षत्रम् । यजत्रम् । बधत्रम् । पतत्रम् ॥ १०५ ॥

(९६) श्रावयतीति श्रवाय्यः । दानपशुर्वा । दक्षयति वर्द्धतेऽसौ दक्षाय्यः । गृध्रो वा । स्पृहयतीति स्पृहयाय्यः । अभीप्सुर्नक्षत्रं वा । गर्हयति पदार्थान् गृह्णातीति गृहयाय्यः । गृहस्वामी वा । आय्यप्रत्यये णेरयादेशः ॥

(९७) दधिस्यति समापयतीति दधिषाय्यो घृतम् । निपातनात् षत्वम् ॥

(९८) व्रियते स्वीक्रियतेऽसौ वरेण्यः । श्रेष्ठो वा ॥

(९९) स्तूयतेऽसौ स्तुवेय्यः पुरन्दरो वा । क्सेय्य इति पाठान्तरं तदा स्तुषेय्यः॥

(१००) राजते दीप्यतेऽसौ राजन्यः । अग्निर्वा । क्षत्रियजातौ तु राज्ञोऽपत्यं राजन्यः । तत्रान्त्यस्वरितः ॥

(१०१) शृणाति हिनस्तीति शरण्यम् । अज्ञानं वा । रमतेऽस्मिँस्तद्रमण्यम् । गृहं वा

(१०२) ऋच्छन्ति गृहाद् गच्छन्ति यत्र तदरण्यम् । वनं वा।महदरण्यमरण्यानी

(१०३) पर्षति सिञ्चतीति पर्जन्यः।मेघः समर्थोवा निपातनात् षकारस्य जकारः

(१०४) उद्यते वदतीति वा स वदान्यः । वाग्मी त्यागी वा ॥

(१०५) अमति प्राप्नोति यत्र तत् अमत्रम् । पात्रं वा । नक्षति गच्छतीति नक्षत्रम् । तारका वा । इज्यते यजति वा तद् यजत्रम् । अग्निहोत्रं होता वा । बधीति हनः स्थाने बधादेशो निपात्यते। हन्ति येन तद् बधत्रम्। आयुधं वा। पतति गच्छति येन तत्पतत्रम् । वाहनं लोमानि वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गडेरादेश्च कः ॥ १०६ ॥ कडत्रम् । कलत्रम् ॥ १०६ ॥

वृञश्चित् ॥ १०७ ॥ वरत्रा ॥ १०७ ॥

सुविदेः कत्रन् ॥ १०८ ॥ सुविदत्रम् ॥ १०८ ॥

कृतेर्नुम् च ॥ १०९ ॥ कृन्तत्रम् ॥ १०९

भृमृदृशियजिपर्विपच्यमितमिनमिहर्य्यिभ्योऽतच् ॥ ११० ॥
भरतः । मरतः । दर्शतः । यजतः । पर्वतः । पचतः । अमतः । तमतः नमतः । हर्य्यतः ॥ ११० ॥

पृषिरञ्जिभ्यां कित् ॥ १११ ॥ पृषतः । रजतम् ॥ १११ ॥

खलतिः ॥ ११२ ॥

(१०६) गडति सिञ्चतीति कडत्रम् । बाहुलकाड्डस्य लः । कलत्रम् । कटिभागो भार्या वा ॥

(१०७) वृणोत्युदकादिकं यया या वा सा वरत्रा चर्मरज्जुर्वा ॥

(१०८) सुष्ठु विद्यते तत् सुविदत्रम् कुटुम्बं वा ॥

(१०९) कृन्तति छिनत्ति येन तत्कृन्तत्रम् । लाङ्गलं वा ॥

(११०) भरति पुष्णातीति भरतः । राजभेदो नटो रामानुजो वा । म्रियतेऽसौ मरतः मृत्युर्वा । पश्यन्ति येन स दर्शतः । चन्द्रः सूर्यो वा । यजतीति यजतः । ऋत्विग्वा । पर्वति पूर्णो भवतीति पर्वतः । पर्व विद्यतेऽस्मिन्निति मत्वर्थीयस्तकारप्रत्ययो वा । गिरिर्वा । पचति येन स पचतः । अग्निर्वा । अमति गच्छतीति, अमतः । रेणुर्वा । ताम्यति काङ्क्षतीति तमतः । तृष्णापरो वा । नमतीति नमतः नम्रो वा । हर्यति गच्छतीति हर्यतः । अश्वो वा । बाहुलकात् । मलते स्वरूपं धरतीति मालती । उपधादीर्घो गौरादित्वान् ङीष् ॥

(१११) पर्षति सिञ्चतीति पृषतः । बिन्दुर्मृगो वा । रजति प्रियं भवतीति रजतम् । रूप्यं शुक्लं वा ॥

(११२) स्खलति संचलतीति खलतिः । निष्केशशिराः पुरुषो वा । धातोः सलोपः प्रत्ययान्तस्यैवं निपातः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीङ्शपिरुगमिवञ्चिजीविप्राणिभ्योऽथः ॥ ११३ ॥ शयथः । शपथः । रवथः । गमथः । वञ्चथः । जीवथः । प्राणथः । दरथः । शमथः । दमथः ॥ ११३ ॥

भृञश्चित् ॥ ११४ ॥ भरथः ॥ ११४ ॥

रुविदिभ्यां ङित् ॥ ११५ ॥ रुवथः । विदथः ॥ ११५ ॥

उपसर्गे वसेः ॥ ११६ ॥ आवसथः । संवसथः ॥ ११६ ॥

अत्यविचमितमिनमिरभिलभिनभितपिपतिपनिपणिमहि भ्योऽसच् ॥ ११७ ॥ अतसः । अवसः । चमसः । तमसः । नमसः । रभसः । लभसः । नभसः । तपसः । पतसः । पनसः । पणसः । महसम् ॥

(११३) शेतेऽसौ शयथः । अजगरो वा । शप्यत आक्रुश्यत इति शपथः । निश्चय करणं वा रौतीति रवथः कोकिलो वा । गच्छतीति गमथः । पथिको वा । वञ्चति प्रलम्भयतीति वञ्चथो धूर्त्तः । अस्य स्थाने वन्दीति पाठान्तरे वन्दथः स्तोता स्तुत्यं वा । जीवतीति जीवथ आयुष्मान् । प्राणितीति प्राणथः । बलवान् वा । बाहुलकात् । दृणातीति दरथः । दिचु प्रसरणं गर्त्तो वा । शाम्यतीति शमथः । शान्तिः । दाम्यतीति दमथः । दमो वा ॥

(११४) बिभर्त्तीति भरथः । लोकपालो राजा वा ॥

(११५) रौतीति रुवथः । श्वा वा । वेत्तीति विदथः । योगी वा ॥

(११६ समन्तादवसति यत्र स आवसथः । गृहं वा । सम्यग्वसन्ति यत्र स संवसथः । ग्रामो वा ॥

(११७) अतति निरन्तरं गच्छतीत्यतसः । वायुर्वा । स्त्रियामतसी । अवति रक्षादिकं करोतीत्यवसः । राजा वा । चमति भक्षयति येन स चमसः । गौरादित्वाच्च मसी । ताम्यति काङ्क्षतीति तमसः । ध्वान्तं वा । नमतीति नमसः । अनुकूलं वा । रभतेऽसौ रभसः । वेगो हर्षो वा । लभतेऽसौ लभसः । अश्वबन्धनं वा । नभते हिनस्तीति नभसः । आकाशं वा । तपति तापहेतुर्भवतीति तपसः । चन्द्रमा वा । पततीति पतसः । पक्षी वा । पनायति स्तौतीति पनसः । कण्टकिफलं वा । महतीति महसम् । ज्ञानं वा । बाहुलकात् । अश्यते प्राप्यते तत्तामरसम् । कमलं वा । प्रत्ययस्य णित्वाद् वृद्धिर्धातोश्च तुट् स्यति कर्म समापयतीति साध्वसम् । पश्चाद् ज्ञानं वा । धातोर्धुक् । कंकते चञ्चलं भवतीति कीकसम् । अस्थि वा । धातोः कीकादेशः । तरतीति तरसम् । मांसं वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेञस्तुट् च ॥ ११८ ॥ वेतसः ॥ ११८ ॥

वहियुभ्यां णित् ॥ ११९ ॥ वाहसः । यावसः ॥ ११९ ॥

वयश्च ॥ १२० ॥ वायसः ॥ १२० ॥

दिवः कित् ॥ १२१ ॥ दिवसम् ॥ १२१ ॥

कृशृशलिकलिगर्दिभ्योऽभच् ॥१२२॥ करभः । शरभः । शलभः। गर्दभः ॥ १२२ ॥

ऋषिवृषिभ्यां कित् ॥ १२३ ॥ ऋषभः वृषभः ॥ १२३ ॥

रुषेर्नित्लुष् च ॥ १२४ ॥ लुषभः ॥ १२४ ॥

रासिवल्लिभ्यां च ॥ १२५ ॥ रासभः । वल्लभः ॥ १२५ ॥

जॄविशिभ्यां झच् ॥ १२६ ॥ जरन्तः । वेशन्तः ॥ १२६ ॥

(११८) वयति तन्तून् संतनोतीति वेतसः । वृक्षभेदो वा ॥

(११९) वहतीति वाहसः । अजगरो वा । यौति मिश्रयत्यमिश्रयति वा स यावसः । तृणसन्ततिर्वा ॥

(१२०) वयते गच्छतीति वायसः काको वा ॥

(१२१) दीव्यति प्रकाशते सूर्यो यत्र तद्दिवसम्। दिवसो वा। अर्द्धादिपाठाद्द्विलिंगः॥

(१२२) किरति विक्षिपतीति करभः । हस्तस्य बहिर्भागो बालो वा । शृणातीति शरभः। आरण्यानां मध्ये हिंसकविशेषपशुजातिः । शलते गच्छतीति शलभः। पतङ्गो वा । कलते संख्यां करोति स कलभः । करिशावको वा । गर्दयति शब्दं करोतीति गर्दभः । खरो वा ॥

(१२३) ऋषति गच्छतीति ऋषभः। वर्षतीति वृषभः। श्रेष्ठपर्यायौ बलीवर्दौ वा॥

(१२४) रोषति हिनस्तीति लुषभः । मत्तहस्ती वा ॥

(१२५) रासति शब्दयतीति रासभः। खरो वा। वल्लते संवृणोतीति वल्लभः प्रियो वा॥

(१२६) प्रत्ययादिझकारस्य झोऽन्त इत्यन्तादेशः। जीर्यति स जरन्तः । महिषो वा। विशति प्रवेशं करोतीति वेशन्तः अल्पजलाशयो वा। बाहुलकात् । अर्हति पूज्यो भवतीति, अर्हन्तः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुहिनन्दिजीविप्राणिभ्यः षिदाशिषि ॥ १२७ ॥ रोहन्तः । नन्दन्तः । जीवन्तः । प्राणन्तः । रोहन्ती ॥ १२७ ॥

तॄभूवहिवसिभासिसाधिगडिमंडिजिनन्दिभ्यश्च ॥ १२८ ॥ तरन्तः। भवन्तः। वहन्तः। वसन्तः। भासन्तः। साधन्तः। गण्डयन्तः। मण्डयन्तः। जयन्तः। नन्दयन्तः ॥ १२८ ॥

हन्तेर्मुट् हि च ॥ १२९ ॥ हेमन्तः । १२९ ॥

भन्देर्नलोपश्च ॥ १३० ॥ भदन्तः । १३० ॥

ऋच्छेररः ॥ १३१ ॥ ऋच्छरः । १३१ ॥

(१२७) रोहतीति रोहन्तः । वृक्षभेदो वा । नन्दति समृद्धियुक्तो भवतीति नन्दन्तः । पुत्रो वा । यो जीवति स जीवन्तः । औषधं वा । प्राणिति श्वासप्रश्वासान् प्रवर्त्तयति स प्राणन्तः । वायुर्वा । षित्वात् स्त्रियां ङीष् । प्राणन्ती । रोहन्ती । नन्दन्ती । जीवन्ती ॥

(१२८) झच् । यस्तरति येन यत्र वा । स तरन्तः समुद्रस्तरन्ती नौका वा । यो भवतीति यत्र वा स भवन्तः । कालो वा । वहति कार्याणि प्रापयतीति वहन्तः वायुर्वा । यो वसति यत्र वा स वसन्तः ऋतुभेदो वा । भासयते दीप्यतेऽसौ भासन्तः । सूर्यो वा । साध्नोति कार्याणीति साधन्तः । भिक्षुको वा । गण्डयति सेचयतीति गण्डयन्तः । मेघो वा । मण्डयति शोभितं करोतीति मण्डयन्तः । भूषणं वा । जयतीति जयन्तो जयशीलः ।

स्त्रियां जयन्ती पुष्पभेदो वा। विजयन्तः कश्चिद्राजविशेषस्तस्य प्रासादो वैजयन्तः । वैजयन्ती पताका । नन्दन्ति येन स नन्दन्तः । आनन्दकरो वा । अतः पूर्वसूत्रेऽपि नन्दिः पठितः । अत्र पुनर्ग्रहणमनाशिष्यपि यथा स्यात् ॥

(१२९) यो हन्ति शीतेन स हेमन्तः । ऋतुभेदो वा ॥

(१३०) भन्दते कल्याणं करोतीति भदन्तः प्रव्रजितो वा ॥

(१३१) ऋच्छति गच्छति स ऋच्छरः । ऋच्छरा वेश्या वा । बाहुलकात् वदतीति बदरम् । बदर्य्याः फलं वा कन्दति वैकल्यं करोतीति कदरः श्वेतखदिरो वा । कपिलकादित्वाल्लत्वे गौरादित्वान् ङीष् कदली । कदरी । बदरी । मन्दरकन्दरशीकरकोटरशबरसमरबर्बरबर्करकर्परपिञ्जराम्बराडम्बरजर्जरकर्करनखरतोमरप्रभृतयोऽपि–अरप्रत्ययान्ता बहुलवचनादेव साधनीयाः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्त्तिकमिभ्रमिचमिदेविवासिभ्यश्चित् ॥ १३२ ॥ अररः। कमरः। भ्रमरः। चमरः। देवरः वासरः। १३२ ॥

कुवः क्ररन् ॥ १३३ ॥ कुररः। १३३ ॥

अङ्गिमदिमन्दिभ्य आरन् ॥ १३४ ॥ अङ्गारः। मदारः। मन्दारः ॥ १३४ ॥

गडेः कड च ॥ १३५ ॥ कडारः। १३५ ॥

शृङ्गारभृङ्गारौ ॥ १३६ ॥

कञ्जिमृजिभ्यां चित् ॥ १३७ ॥ कञ्जारः। मार्जारः। १३७ ॥

कमेः किदुच्चोपधायाः ॥ १३८ ॥ कुमारः ॥ १३८ ॥

(१३२) ऋच्छति गच्छति यतः स, अररः। कपाटो वा। कामयतेऽसौ कमरः। कामुको वा। भ्राम्यतीति भ्रमरः षट्पदः। कामुको वा। चमति भक्षयतीति चमरः। मृगभेदो वा। गौरादित्वात् स्त्रियां ङीष्। चमरी सुरा गौः। चमर्या अयं चामरो बालसमूहः। दीव्यति क्रीडादिकं करोतीति देवरः। विधवाया द्वितीयः पतिः पत्युः कनिष्ठभ्राता। वासयतीति वासरः मङ्गलादिवारो वा ॥

(१३३) कौति शब्दयतीति कुररः। पक्षिभेदो वा ॥

(१३४) अङ्गति गच्छति स अङ्गारः। निर्धूमोऽग्निर्भूमिविकारो वा। माद्यति मत्तो भवतीति मदारः। वराहो वा। मन्दते स्तौतीति मन्दारः। निम्बतरुर्कवृक्षो वा। बाहुलकान्मन्दधातोरारुप्रत्ययोऽपि भवति। मन्दतेऽसौ मन्दारुः। निम्बार्को वा॥

(१३५) गडति सिञ्चतीति कडारः। पीतवर्णो वा ॥

(१३६) शृणाति हिनस्तीति शृङ्गारः। हस्तिशोभा नाट्यरसो दम्पत्योरन्योऽन्यं सम्भोगस्पृहा वा। अत्र धातानुम् ह्रस्वादेशश्च। बिभर्त्ति पुष्यतीति भृङ्गारः। सुवर्णपात्रविशेषो वा। स्त्रियां भृङ्गारी कीटजातिभेदो वा। भींगर इति प्रसिद्धः॥

(१३७) कञ्जति रौतीति कञ्जारः। मयूरो व्यंजनं वा। मार्ष्टि शुन्धतीति मार्जारः। विडालो वा। स्त्रियां मार्जारी ॥

(१३८) चिदनुवर्त्तते। कामयते भोगानिति कुमारः। शिशुर्युवराजो वा। कुमारक्रीडायामित्यस्मादपि पचाद्यचि कृते कुमारशब्दो व्युत्पद्यते तदुपायान्तरमर्थभेदश्च ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुषारादयश्च ॥ १३९ ॥ तुषारः । कासारः । सहारः । १३९ ॥
दीङो नुट् च ॥ १४० ॥ दीनारः ॥ १४० ॥
सर्तेरपः षुक् च ॥ १४१ ॥ सर्षपः ॥१४१॥
उषिकुटिदलिकचिखजिभ्यः कपन् ॥१४२॥ उषपः । कुटपः । दलपः । कचपम् । खजपम् ॥ १४२ ॥
क्वणेः संप्रसारणं च ॥ १४३ ॥ कुणपम् ॥ १४३ ॥
कपश्चाक्रवर्मणस्य ॥ १४४ ॥
विटपविष्टपविशिपोलपाः ॥ १४५ ॥
वृतेस्तिकन् ॥ १४६ ॥ वर्त्तिका ॥ १४६ ॥

(१३९) यस्तुष्यति येन वा तत्तुषारम् । हिमं वा । कासते शब्दयति निन्दति वा स कासारः । सरसी वा । सहतीति सहारः । आम्रभेदो वा । तर्कयति भाषते ऽसौ तर्कारः । स्त्रियां गौरादित्वात् तर्कारी । जयन्ती विशेषलता वा ॥

(१४०) दीयते चयति येन वा स दीनारः । सुवर्णाभरणं वा ॥

(१४१) सरति गच्छति स सर्षपः । कटुस्नेहवान् वा ॥

(१४२) ओषति दहति स उषपः । अग्निः सूर्यो वा । कुटतीति कुटपः । मानभांडं वा । दालयति विदारयतीति दलपः । प्रहारो वा । कचते बध्नातीति कचपम् । शाकपात्रं वा । खजति मथ्नाति मथ्यत इति खजपम् । घृतं वा ॥

(१४३) क्वणति शब्दं करोतीति कुणपः । शवो मृद्भेदो वा ॥

(१४४) चाक्रवर्मणस्य मते कपे सति प्रत्ययस्यादिरुदात्तः । अन्यमते सङ्घातस्याद्युदात्तत्वम् ॥

(१४५) कपप्रत्ययान्ता निपाताः वेटति शब्दयति वायुनेति विटपः । शाखाविस्तारो वा । विशन्ति यत्रेति विष्टपम् । भुवनं वा । त्रिविष्टपः । सुखविशेषभोगो वा । धातोर्वकारस्य पत्वम् । प्रत्ययस्य तुट् च । त्रिविष्टप इति वा । विशन्ति यत्रेति विशिपम् । मन्दिरं वा । प्रत्ययादेरित्वम् । बलते संवृणोतीत्युलपम् । कोमलतृणं वा । धात्वादेः संप्रसारणम् ॥

(१४६) वर्त्ततेऽसौ वर्त्तिका पक्षिभेदो वा । यत्तु वृत धातोर्ण्वुल् प्रत्यये वर्त्तका शब्दस्तत वार्त्तिकेनेत्वनिषेधाद्वर्त्तका इत्येव । तत्रोणादीनामव्युत्पन्नत्वाद्वर्त्तकाव्युत्पन्न इति भेदः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृतिभिदिलतिभ्यः कित् ॥ १४७ ॥ कृत्तिका । भित्तिका । लत्तिका ॥ १४७ ॥

इष्यशिभ्यां तकन् ॥ १४८ ॥ इष्टका । अष्टका ॥ १४८ ॥

इणस्तशन्तशसुनौ ॥ १४९ ॥ एतशः । एतशाः ॥ १४९ ॥

विपतिभ्यां तनन् ॥ १५० ॥ वेतनम् । पत्तनम् ॥ १५० ॥

दृदलिभ्यां भः ॥ १५१ ॥ दर्भः । दल्भः ॥ १५१ ॥

अर्त्तिगृभ्यां भनन् ॥ १५२ ॥ अर्भः । गर्भः ॥ १५२ ॥

इणः कित् ॥ १५३ ॥ इभः ॥ १५३ ॥

असिसञ्जिभ्यां क्थिन् ॥ १५४ ॥ अस्थि । सक्थि ॥ १५३ ॥

---

(१४७) कृन्ततीति कृत्तिका । नक्षत्रं वा । भिनत्तीति भित्तिका भित्तिर्वा । लततीति लत्तिका गोधा वा ॥

(१४८) इष्यतेऽसाविष्टका । अश्नुते सा अष्टका । वैदिककर्मविशेषो वा । बाहुलकात् मस्यति परिणमतीति मस्तकम् । शिरो वा । दधातीति धातकम् । स्त्रियां धातकी पुष्पभेदः ॥

(१४९) एति प्राप्नोतीति एतशः । एतशाः । एतशौ । अश्वो ब्राह्मणो वा । एकोऽदन्तोऽपरः सान्तः ॥

(१५०) वेत्ति प्राप्नोति खादति वा तद्वेतनम् । भृतिर्वा । वेतनेन जीवति वैतनिकः कर्मकरः । पतति गच्छतीति पत्तनम् । नगरं वा ॥

(१५१) दृणाति विदारयतीति दर्भः । कुशो वा । दलते विशीर्णो भवतीति दल्भः । ऋषिसंज्ञं वा ॥

(१५२) इयर्त्ति गच्छतीत्यर्भः । शिशुर्वा । अल्पोऽर्भोऽर्भकः । गिरति गृणात्युपदिशतीति गर्भः । जठरं तत्रस्थो वा । गर्भादप्राणिनीति तारकादित्वादितच् । गर्भिताः शालयः । प्राणिनि तु गर्भिणी ॥

(१५३) एतीति इभः । हस्ती वा ॥

(१५४) अस्यति प्रक्षिपति येन तत् अस्थि । कीकसं शरीरान्तरवयवो वा । सजतीति सक्थि । ऊरुदेशो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्लुषिकुषिशुषिभ्यः क्सिः॥१५५॥प्लुक्षिः। कुक्षिः।शुक्षिः॥१५५॥

अशेर्नित् ॥ १५६ ॥ अक्षिः ॥ १५६ ॥।

इषेः क्सुः ॥ १५७ ॥ इक्षुः १५७ ॥

अवितॄस्तृतन्त्रिभ्य ईः ॥ १५८ ॥ अवीः। तरीः। स्तरीः। तन्त्रीः ॥ १५८ ॥

यापोः किद् द्वे च ॥ १५९ ॥ ययीः। पपीः ॥ १५९ ॥

लक्षेर्मुट् च ॥ १६० ॥ लक्ष्मीः ॥ १६० ॥

इत्युणादिषु तृतीयः पादः ॥

(१५५) प्लोषति दहतीति प्लुक्षिः। अग्निर्वा। कुष्णाति निष्कर्षतीति कुक्षिः। जठरं गर्भाशयो वा। शोषयतीति शुक्षिः। वायुर्वा। अत्रान्तर्गतो णिच् तस्य च पर्यशड्वत् णिलुक् ॥

(१५६) अश्नुते व्याप्नोति विषयान् येन तदक्षि। नेत्रं वा ।।

(१५७) इष्यते स इक्षुः। मधु तृणं वा ॥

(१५८) अवतीति अवीः। रजस्वला स्त्री वा। तरति यया सा तरीः। नौका वस्त्रादिरक्षकं भांडं वा। स्तृणोत्याच्छादयतीति स्तरीः। धूमो वा। तंत्रयति कुटुंबं धरतीति तन्त्रीः। वीणा वा। णिलोपः ॥

(१५९) याति प्रापयति स ययीः। अश्वो वा। पिबति पाति रक्षतीति वा स पपीः। सूर्य्यश्चन्द्रो वा ॥

(१६०) लक्षयति पश्यत्यङ्कयति वा सा लक्ष्मीः। विभूतिर्वा। लक्ष्मीरस्यास्तीति लक्ष्मणः। लक्ष्म्या अच्चेति पामादिपाठान्मत्वर्थीयो नः ॥

इत्युणादिव्याख्यायां वैदिकलौकिककोषे तृतीयः पादः ॥

———*———

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातप्रमीः ॥ १ ॥

ऋतन्यञ्जिवन्यञ्ज्यर्पिमद्यत्यङ्गिकुयुकृशिभ्यः कन्निच्यतुजलिजिष्णुजिष्ठजिसनृस्यनिथिन्नुल्यसासानुकः ॥ २ ॥ रत्निः। तन्यतुः। अञ्जलिः। वनिष्णुः। अञ्जिष्ठः। अर्पिसः। मत्स्यः। अतिथिः। अङ्गुलिः। कवसः। यवासः। कृशानुः ॥ २॥

शॄः करन् ॥ ३ ॥ शर्करा ॥ ३ ॥

पुषः कित् ॥ ४ ॥ पुष्करम् ॥ ४ ॥

कलँश्च ॥ ५ ॥ पुष्कलम् ॥ ५ ॥

(१) वात इव प्रमिणोति प्रक्षिपतीति वातप्रमीः। अतिशीघ्रगामी हरिणविशेषो वा। पुंल्लिंग एवायं शब्दः। वातप्रमीन् मृगान्' ङौ तु वातप्रमौ। अमि वातप्रमीम्। बाहुलकात्। वष्टि कामयतेऽसौ उशी वाञ्छा तत्कुशला नरा अस्मिन् सन्तीति उशीनरो देशः अत्र बहुलवचनादेव सम्प्रसारणम्॥

(२) एभ्यो द्वादशधातुभ्यः कन्निजादयो द्वादश प्रत्यया यथासंख्यं भवन्ति। ऋच्छति गच्छतीति रत्निः। बद्धमुष्टिहस्तो वा। प्रसृताङ्गुलिररत्निः तनु—यतुच्। तनोति विस्तृणोतीति तन्यतुः। वायूरात्रिर्वा। अञ्जू—अलिच्। अनक्ति व्यक्तं करोतीति,अञ्जलिः। संयुतौ करौ वा। वनु—इष्णुच्। वनोति याचतेऽसौ वनिष्णुः। अपानवायुर्वा। अञ्जू—इष्ठच्। अनक्ति प्रकटयति पदार्थानिति, अञ्जिष्ठः। सूर्यो वा। अर्पि—इसन्। अर्पयतीति, अर्पिसः। अग्रमांसं वा। माद्यति हृष्यतीति मत्स्यः। मीनो वा। अत—इथिन्। अतति निरन्तरं गच्छति भ्रमतीत्यतिथिः। अकस्मादागतः सज्जनो वा। न विद्यते नियता तिथिरस्येति व्युत्पत्यन्तरम्। स्त्रियां कृदिकारादक्तिन इति ङीष् अतिथी स्त्री। अङ्गि—उलि। अङ्गति चेष्टतेऽनेन सोऽङ्गुलिः। करशाखा वा। कु—असु। कौति वा कवत इति कवसः। कण्टकजातिर्वा। अच इति पाठान्तरम्। तदा कचत इति कवचम्। यौति मिश्रयतीति यवासः। कण्टकवृक्षभेदो वा। कृषति तनूकरोतीति कृशानुः। अग्निर्वा॥

(३) शृणातीति शर्करा। खण्डविकारो मृद्विकारो वा॥

(४) पुष्णातीति पुष्करम्। अन्तरिक्षं कमलमुदकं वा॥

(५) पुष धातोः कलनपि। पुष्यतीति पुष्कलम् पूर्णं वा॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गमेरिनिः ॥ ६ ॥ गमी ॥ ६ ॥
आङि णित् ॥ ७ ॥ आगामी ॥ ७ ॥
भुवश्च ॥ ८ ॥ भावी ॥ ८ ॥
प्रे स्थः ॥ ९ ॥ प्रस्थायी ॥ ९ ॥
परमे कित् ॥ १० ॥ परमेष्ठी ॥ १० ॥
मन्थः ॥ ११ ॥ मन्थाः । मन्थानौ ॥ ११ ॥
पतः स्थ च ॥ १२ ॥ पन्थाः ॥ १२ ॥
खजेराकः ॥ १३ ॥ खजाकः ॥ १३ ॥
वलाकादयश्च ॥ १४ ॥ वलाका । शलाका । पताका ॥ १४ ॥

(६) गमिष्यतीति गमी पथिको वा । भविष्यति गम्यादय इति कालनियमः ॥

(७) णित्वाद् वृद्धिः । आगमिष्यतीत्यागामी ॥

(८) इनिः णित् । भविष्यतीति भावी ॥

(९) इनिः णित् । णित्वाद्युक् । प्रस्थातुमिच्छतीति प्रस्थायी गन्तुमनाः ॥

(१०) परमे उत्तमे व्यवहारे तिष्ठतीति परमेष्ठी । सर्वेषां पितामह ईश्वरो वा । सप्तम्या अलुक् षत्वं च ॥

(११) इनिः कित् कित्त्वान्नलोपः । मन्थयति विलोडयतीति मन्थाः । मथिन् शब्दस्य सर्वनामस्थान आत्वम् । मन्थानौ । मन्थानः । दध्यादिमन्थनदण्डो वज्रो वायुर्वा ॥

(१२) पतन्ति गच्छन्ति यत्र स पन्था मार्गः । पन्थानौ । पूर्ववदात्वम् । पथे गतावित्यस्माद्धातोः पचाद्यचि कृते पथः । पथौ । पथाः । इत्यदन्तोऽपि दृश्यते ॥

(१३) खजति मथ्नातीति खजाकः पक्षिः । खजाकादर्विर्वा । बहुलवचनान्मन्दतेस्तूयन्ते तानि मन्दाकानि स्रोतांसि वा । तान्यस्याः सन्तीति मन्दाकिनी । नदीभेदः ॥

(१४) वलते संवृणोत्यसौ वलाका । वकपंक्तिः कामिनी वलाको वकपक्षी वा । मन्यते जानाति सा मनाका । हस्तिनी वा । पुनातीति पवाका । यां शलन्ति गच्छन्तीति शलाका । अञ्जनयष्टिका वा । पटति गच्छतीति पटाकः । पक्षी वा । पत्यते ज्ञायतेऽसौ पताका ध्वजा वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिनाकादयश्च ॥ १५ ॥ पिनाकः । तडाकः ॥ १५ ॥

कषिदूषिभ्यामीकन् ॥ १६ ॥ कषीका । दूषीका ॥ १६ ॥

अनिहृषिभ्यां किच्च ॥ १७ ॥ अनीकम् । हृषीकम् ॥ १७ ॥

चङ्कणः कङ्कण च ॥ १८ ॥ कङ्कणीका ॥ १८ ॥

शॄपॄवृञां द्वे रुक् चाभ्यासस्य ॥ १९ ॥ शर्शरीकः ॥ पर्परीकः । वर्वरीकः । १९ ॥

फर्फरीकादयश्च ॥ २० ॥ फर्फरीकम् । दर्दरीकम् । तिन्तिडीकः । चञ्चरीकः । मर्मरीकः । कर्करीकम् । पुण्डरीकः ॥ २० ॥

(१५) पाति रक्षयतीति पिनाकः । त्रिशूलं धातुर्वा । ताडयत्याहन्तीति तडाका प्रभा वा । बहुलवचनात् । आगप्रत्यये सति तडागः । इत्यपि सिद्धं भवति । भन्दतेऽसौ भदाकः । कल्याणम् । श्यायति प्राप्नोतीति श्यामाकः व्रीहिभेदो वा । समा इति प्रसिद्धः । मुगागमो निपातनम् । न भाति प्रकाशत इति नभाकम् । मेघयुतमाकाशं वा । यं पिनष्टि सम्यक् चूर्णयति स पिण्याकः । तिलकल्को वा । धातोः षकारस्य णत्वं युगागमश्च । वर्त्तते येन स वार्त्ताको वार्त्ताको वा । वनभण्टा इति प्रसिद्धः । धातोर्वृद्धिः । गुवति पुरीषमुत्सृजतीति गुवाकः । पूगीफलं वा । कुटादित्वाद् गुणाभावः ॥

(१६) कषति हिनस्तीति कषीका । पक्षिजातिर्वा । दूषयतीति दूषीका । नेत्रमलं वा ॥

(१७) अनिति जीवयतीत्यनीकम् । विरुद्धं सैन्यं वा । हृष्यति तुष्टो भवतीति येन तत् हृषीकम् । ज्ञानेन्द्रियं वा ॥

(१८) यङ्लुगन्तात्कणधातोरीकन् कंकणादेशश्च । पुनः पुनः कणति शब्दयतीति कङ्कणीका । वाद्यसाधनविशेषो वा । घरियार इति प्रसिद्धः । किङ्किणीका क्षुद्रघण्टिका । बहुलवचनात् सिद्धम् ॥

(१९) शृणाति हिनस्तीति शर्शरीको हिंसकः । पिपर्त्ति पालयतीति पर्परीकः सूर्यो वा । वृणोति स्वीकरोतीति वर्वरीकः । कुटिलकेशो जनो वा ॥

(२०) स्फुरति चेतनो भवतीति फर्फरीकम् । पत्रादिसहितः शाखाग्रन्थिर्वा । ईकन्प्रत्यये धातोः फर्फरादेशः । दृणातीति दर्दरीकम् । वादित्रं वा । करोति कार्याणि येन तत् कर्करीकम् । शरीरं वा । कर्करीका गलन्तिका । कलशी इति प्रसिद्धा । अत्रोभयत्र धातोर्द्वित्वमभ्यासस्य रुक् च । तिम्यत्यार्द्रीकरोतीति तिन्तिडीकः । वृक्षजातिर्वा । मकारस्य डकारोऽभ्यासस्य नुट् च । चरति गच्छति भक्षयति वा स चञ्चरीकः । भ्रमरो वा । अभ्यासस्य नुम् । म्रियतेऽसौ मर्मरीकः । हीनजनो वा । पुणति शुभकर्माचरतीति पुण्डरीकम् । श्वेताम्भोजं सितपत्रं भेषजं व्याघ्रोऽग्निर्वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईषेः किद्ध्रस्वश्च ॥ २१ ॥ इषीका । २१ ॥
ऋजेश्च ॥ २२ ॥ ऋजीकः । २२ ॥
सृत्तेर्नुम् च ॥ २३ ॥ सृणीका । २३ ॥
मृडः कीकच् कङ्कणौ ॥ २४ ॥ मृडीकः । मृडङ्कणः । २४ ॥
अलीकादयश्च ॥२५॥ अलीकम् । व्यलीकम् । वलीकम् । २५ ॥
कॄतॄभ्यामीषन् ॥ २६ ॥ करीषः । तरीषः ॥ २६ ॥
शॄपॄभ्यां किच्च ॥ २७ ॥ शिरीषः । पुरीषम् ॥ २७ ॥
अर्जेर्ऋज च ॥ २८ ॥ ऋजीषम् ॥ २८ ॥
अम्बरीषः ॥ २९ ॥

(२१) कित्वाद् गुणाभावः । ईषते गच्छतीति इषीका । मुञ्जादिशलाका वा ॥

(२२) कित् । अर्जति गच्छतीति ऋजीकः । उपहतो वा कित्त्वाद्गुणनिषेधः ॥

(२३) सरति प्राप्नोतीति सृणीका । लाला वा । ष्ठीवनभेदः । लार इतिप्रसिद्धम् ॥

(२४) मृडति सुखयतीति मृडीकः । सुखदाता । मृडङ्कणः । बालो वा । बहुलवचनात् कायति शब्दयतीति कङ्कणः । करभूषणं वा ॥

(२५) कीकन् प्रत्ययान्ता अमी निपात्यन्ते । अलति वारयतीत्यलीकम् । मिथ्या वा । विपूर्वाद् व्यलीकमप्रियं खेदो वा । वलते संवृणोत्यनेन तत् वलीकम् । गृहच्छादनसामग्री वा । अन्येपि वलते संवृतो भवतीति वल्मीकम् । छिद्रसर्पभेदो वा । तस्यापत्यं वाल्मीकिः । मुडागमः । वहतीति वाहीकः । गौरश्वो वा । धातोर्वृद्धिः । सुष्ठु प्रतीतीति सुप्रतीकः अग्निर्वा । धातोस्तुट् च ॥

(२६) कीर्यते विक्षिप्यते स करीषः । शुष्कगोमयं वा । तरति येन स तरीषः । नौका वा ॥

(२७) शृणाति हिनस्तीति शिरीषः । वृक्षभेदो वा । पिपर्त्ति तत् पुरीषम् । शकृद्वा ॥

(२८) अर्जति सञ्चितो भवति यस्मात्तत्, ऋजीषम् । पिष्टपचनं वा । तवा इतिप्रसिद्धम् ॥

(२९) अम्बति शब्दयतीति, अम्बरीषः । आकाशः स्वेदनी वा । भाड़ इति प्रसिद्धम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृशॄपॄकटिपटिशौटिभ्य ईरन् ॥ ३० ॥ करीरः । शरीरम् । परीरम् । कटीरः । पटीरः । शौटीरः ॥ ३० ॥

वशेः कित् ॥ ३१ ॥ उशीरम् ॥ ३१ ॥

कशेर्मुट् च ॥ ३२ ॥ कश्मीरः ॥ ३२ ॥

कृञ उच्च ॥ ३३ ॥ कुरीरम् ॥ ३३ ॥

घसेः कित् ॥ ३४ ॥ क्षीरम् ॥ ३४ ॥

गभीरगम्भीरौ ॥ ३५ ॥

विषाविहा ॥ ३६ ॥

पच एलिमच् ॥ ३७ ॥ पचेलिमः ॥ ३७ ॥

(३०) किरतीति करीरः । वृक्षभेदो वंशाङ्कुरो वा । शीर्य्यते हिंस्यत इति शरीरम् । प्राणिकायो वा । पूर्य्यतेऽनेनेति परीरम् । फलं वा । कट्यत आव्रियतेऽसौ कटीरः । कुटी जघनदेशो वा । पटति गच्छतीति पटीरः । कन्दुकः कामश्चन्दनवृक्षो वा । शौटति गर्वं करोतीति शौटीरः । त्यागी वीरो वा । ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ् शौटीर्य्यम् । वैराग्यम् । बहुलवचनात् । हिण्डत इतस्ततो गच्छतीति हिंडीरः । समुद्रफेनो दाडिमो वा । किर्मीर तूणीरजम्बीरकुम्भीरकुटीरादयोऽपीरन् प्रत्ययान्ता बाहुलकादेव बोद्धव्याः ॥

(३१) उश्यते काम्यते तदुशीरम् वीरणमूलं वा । खस २ इति प्रसिद्धम् ॥

(३२) ईरन्नित्येव । कष्टे गच्छति शास्ति वाऽसौ कश्मीरः । देशभेदो वा ॥

(३३) क्रियते तत् कुरीरम् । मैथुनं वा । कपिलकादित्वाल्लत्वे कुलीरः । जलजन्तुभेदो वा ॥

(३४) अद्यते भक्ष्यते यत्तत् क्षीरम् दुग्धं वा ॥

(३५) गमधातोर्मकारस्य भकार एकस्मिन् पक्षे नुडागमश्च । गम्यते प्राप्यते ज्ञायते वा स गभीरः शान्तो महाशयो वा । विशेष्यलिङ्गावेतौ शब्दौ ॥

(३६) विशेषेण स्यति कर्मान्तं करोतीति विषा । बुद्धिर्वा । विशेषेण जहाति त्यजति दुःखमिति विहा सुखलोको वा । स्वभावादनयोरव्ययत्वम् ॥

(३७) पचति पदार्थानिति पचेलिमः । अग्निः सूर्यो वा । यत्तु पचधातोः सामान्य वार्त्तिकेन कृत्यार्थे केलिमज् विधीयते स भावे कर्मणि कर्मकर्त्तरि वेति भेदः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीङो धुक्लक्वलञ्वालनः ॥ ३८ ॥ शीधु । शीलम् । शैवलः । शैवालम् । शैपालः ॥ ३८ ॥

मृकणिभ्यामूकोकणौ ॥ ३९ ॥ मरूकः । काणूकः ॥ ३९ ॥

वलेरूकः ॥ ४० ॥ वलूकः ॥ ४० ॥

उलूकादयश्च ॥४१॥ उलूकः। वावदूकः। भल्लूकः। शम्बूकः॥४१॥

शलिमण्डिभ्यामूकण् ॥ ४२ ॥ शालूकम् मण्डूकः । ४२ ॥

नियो मिः ॥ ४३ ॥ नेमिः । ४३ ॥

अर्त्तेरूच्च ॥ ४४ ॥ ऊर्मिः । ४४ ॥

भुवः कित् ॥ ४५ ॥ भूमिः । ४५ ॥

अश्नोतेरश्च् ॥ ४६ ॥ रश्मिः । ४६ ॥

---

(३८) शेते येन तत् शीधु । मद्यं वा । शीलं स्वभावः । शैवलम् । शैवालम् । बाहुलकात् प्रत्ययवकारस्य पकारः । शैपालम् । जलनील्यानामान्येतानि । उदके लता रूपमुत्पन्नं सेवार इति प्रसिद्धम् ॥

(३९) म्रियतेऽसौ मरूकः । मृगो वा । कणति शब्दयतीति काणूकः काको वा ॥

(४०) वलते संवृणोतीति वलूकः । पक्षी कमलमूलं वा ॥

(४१) ऊक प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । वलतेऽसावुलूकः । पक्षिभेदो वा । धातोः संप्रसारणम् । भृशं वक्तीति वावदूको वक्ता । यङ्लुगन्तादूकः । जलशक्तिर्वा । धातोर्वुक्। बाहुलकादुकप्रत्यये शम्बुक इत्यपि सिद्धम्। भल्लते परितो भाषतेऽसौ भल्लूकः। ऋक्षो वा । बाहुलकाद् ह्रस्वे भल्लुक इत्यपि । तथा भलतेऽसौ भालूकः स एव । मह्यतीति मधूकः । वृक्षभेदो वा । तथा । एलूकजम्बूकबन्धूकवास्तूकादयोऽप्यत्रैव द्रष्टव्याः ॥

(४२) शल्यते प्राप्यते यत्तत्, शालूकम् । मूलद्रव्यं वा । मण्डति शोभतेऽसौ मण्डूकः । भेको जलजन्तुर्वा ॥

(४३) नयतीति नेमिः । चक्रावयवो वा बाहुलकात् । याति कार्याणि प्रापयतीति यामिः । आदेर्जत्वं जामिः । स्वसा कुलस्त्री वा ॥

(४४) ऋच्छति गच्छतीत्यूर्मिः । जलतरङ्गो वा ॥

(४५) भवन्ति पदार्था अस्यामिति भूमिः । उत्पत्तिस्थानम् । अल्पा भूमिर्भूमिका । कृदिकारादिति ङीष् भूमी ॥

(४६) अश्नुते व्याप्नोतीति रश्मिः । किरणा रज्जुर्वा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दलिमः ॥ ४७ ॥

वीज्याज्वरिभ्यो निः ॥ ४८ ॥ वेणिः । ज्यानिः । जूर्णिः ॥४८॥

सृवृषिभ्यां कित् ॥ ४९ ॥ सृणिः । वृष्णिः । ४९ ॥

अङ्गेर्नलोपश्च ॥ ५० ॥ अग्निः । ५० ॥

वहिश्रिश्रुयुद्रुग्लाहात्वरिभ्यो नित् ॥ ५१ ॥ वह्निः । श्रेणिः

श्रोणिः । योनिः । द्रोणिः । ग्लानिः । हानिः । तूर्णिः । ५१ ॥

घृणिपृश्निपार्ष्णिचूर्णिभूर्णयः ॥ ५२ ॥

वृदृभ्यां विन् ॥ ५३ ॥ वर्विः । दर्विः । ५३ ॥

(४७) दलति येन विदृणातीति दलिमः । सूर्यकिरण उत्तमायुधं वा ॥

(४८) वीयते क्षिप्यते स वेणिः । केशविन्यासो वा । क्षिप्रा नदी रखलम् । जिनाति वयोहीनो भवतीति ज्यानिः । क्षतिर्वा । ज्वरति रोगी भवतीति जूर्णिः । स्त्रीरोगो वा । बाहुलकात् चौति शब्दयतीति चोणिः । ङीष् चोणी । भूमिर्वा । क्रीणातीति क्रेणिः । क्रेणी ॥

(४९) सरति गच्छतीति सृणिः । अङ्कुशं वा । वर्षतीति वृष्णिः । क्षत्रियो वैश्य वा ॥

(५०) अङ्गति गच्छति प्राप्नोति जानाति वा सोऽग्निः । वह्निः । प्रसिद्धो वा ॥

(५१) वहतीति वह्निः । अग्निर्वा । श्रयति सेवतेऽसौ श्रेणिः । पङ्क्तिर्वा । निपूर्वान्निश्रेणी । अधिरोहणी वा । शृणोतीति श्रोणिः । कटिप्रदेशो वा । यौति संयोजयति पृथक्करोति वा स योनिः । कारणमुपस्थेन्द्रियं वा । द्रवन्ति गच्छन्ति यत्र स द्रोणिः । सेचनी देशविशेषो वा । ग्लायति यस्मिन् स ग्लानिः । दौर्बल्यं दौर्मनस्यं वा । हीयते जहाति वा स हानिः । अपचयो वा । प्रहाणिः परिहाणिः । णत्वञ्च इति णत्वम् । त्वरति सम्यग्भ्रमतीति तूर्णिः । मनो वा । बहुलवचनात् श्रीतेऽसौ श्विनिः । क्षत्रियो वा । धातोर्ह्रस्वत्वं च । म्लायतीति म्लानिः । आनन्दक्षयो वा ॥

(५२) जिघर्त्ति क्षरति दीप्यते वा स घृणिः । किरणो वा । स्पृशति संयुक्तो भवतीति पृश्निः । अल्पशरीरो वा । धातोः सलोपः पर्षति सिञ्चतीति पार्ष्णिः । पादतलं वा । धातोर्वृद्धिः । चरति गच्छति भक्षयति चूर्णयति प्रेरयतीति वा चूर्णिः । विवरणं वा । बिभर्त्ति धरति सर्वमिति भूर्णिः । पृथिवी वा । बाहुलकात् घुरति शब्दयतीति घूर्णिः ॥

(५३) वृणोतीति वर्विः । भक्षको वा । दृणाति यया सा दर्विः । सूपचालनपात्रं वा । ङीष् । दर्वी ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जॄशॄस्तॄजागृभ्यः क्विन् ॥ ५४ ॥ जीर्विः । शीर्विः । स्तीर्विः । जागृविः ॥ ५४ ॥

दिवो द्वे दीर्घश्चाभ्यासस्य ॥ ५५ ॥ दीदिविः । ५५ ॥

कृविघृष्विच्छविस्थविकिकीदिवि ॥ ५६ ॥

पातेर्डतिः ॥ ५७ ॥ पतिः । ५७ ॥

शकेर्ऋतिन् ॥ ५८ ॥ शकृत् ॥ ५८ ॥

अमेरतिः ॥ ५९ ॥ अमतिः ॥ ५९ ॥

वहिवस्यर्त्तिभ्यश्चित् ॥ ६० ॥ वहतिः । वसतिः । अरतिः ॥ ६० ॥

अञ्चेः को वा ॥ ६१ ॥ अङ्कतिः । अञ्चतिः ॥ ६१ ॥

(५४) जीर्य्यतीति जीर्विः । पशुर्वा । शृणातीति शीर्विः । स्तृणोत्याच्छादयतीति स्तीर्विः । अध्वर्युर्वा । जागर्त्तीति जागृविः नृपतिर्वा ॥

(५५) दीव्यतीति दीदिविः । सुखमन्नं वा । क्विन्प्रत्ययस्य बाहुलकादेवेत्संज्ञा लोपौ न भवतः ॥

(५६) करोति येन स कृविः । तन्तुवायद्रव्यं वा । वर्षति सिञ्चतीति घृष्विः । वराहो वा । छ्यति सूक्ष्मं करोतीति छविः । दीप्तिर्वा । धातोर्ङ्कत्वं च । तिष्ठतीति स्थविः । तन्तुवायो वा । अत्रापि ह्रस्वः । किकिना शब्देन दीव्यतीति किकिदीविः । चाषो वा । नीलकण्ठ इति प्रसिद्धः । किकीदिविः । किकिदिविः । किकिदीविः । किकिदिवः । किकीदीविः । इति पंचभेदा बहुलवचनादेव मन्तव्याः ॥

(५७) पाति रक्षतीति पतिः । स्वामी वा ।

(५८) शक्नोतीति शकृत् । बाहुलकात् । यजतीति यकृत् । कालखण्डं वा । धातोर्जकारस्य ककारः ॥

(५९) अमति गच्छतीति, अमतिः कालो वा । बाहुलकात् व्रतमाचरतीति व्रततिः । विस्तरी व्रतती लता वा । मालयति गन्धं धारयतीति मालती मालतिः । सुमना वा । चमेली इति प्रसिद्धा । स्थापयति धर्ममिति स्थपतिः । वाग्मी यज्ञकर्त्ता वा । ण्यन्तस्य स्थाधातोः पुकि सति ह्रस्वत्वम् ॥

(६०) वहति प्रापयति पदार्थान् प्राप्नोति वेति वहतिः । पवनो वा । वसन्ति यत्रेति वसतिर्वसती वा गृहं रात्रिर्वा । ऋच्छति गच्छतीति, अरतिः क्रोधो वा । बाहुलकात् । अलति भूषयति समर्थो वा भवति । स, अलतिः । गौतमाविका वा ॥

(६१) अञ्चति गच्छति पूजयति वा स, अङ्कतिः । अञ्चतिः । वायुर्वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हन्तेरंह च ॥ ६२ ॥ अंहतिः ॥ ६२ ॥

रमेर्नित् ॥ ६३ ॥ रमतिः ॥ ६३ ॥

सूङः क्रिः ॥ ६४ ॥ सूरिः ॥ ६४ ॥

अदिशदिभूशुभिभ्यः क्रिन् ॥ ६५ ॥ अद्रिः । शद्रिः । भूरिः । शुभ्रिः ॥ ६५ ॥

वङ्क्र्यादयश्च ॥ ६६ ॥ वङ्क्रिः । वप्रिः । अंह्रिः । तन्द्रिः । भेरिः ॥ ६६ ॥

राशदिभ्यां त्रिप् ॥ ६७ ॥ रात्रिः । शत्रिः ॥ ६७ ॥

अदेस्त्रिनिश्च ॥ ६८ ॥ अत्री । अत्रिः ॥ ६८ ॥

पतेरत्रिन् ॥ ६९ ॥ पतत्रिः ॥ ६९ ॥

मृकणिभ्यामीचिः ॥ ७० ॥ मरीचिः । कणीचिः ॥ ७० ॥

(६२) अतिः । हन्यनेनेति, अंहतिः । दानं वा ॥

(६३) रमन्तेऽस्मिन् स रमतिः कालः कामो वा ॥

(६४) सुते प्राणिनः प्रसवति समर्थयतीति,सूरिः । पण्डितो वा । स्त्रियां सूरी॥

(६५) योऽत्ति, अदन्ति यत्रेति वा स, अद्रिः । पर्वतो मेघो वृक्षः सूर्यो वा । शीयते शातयतीति शद्रिः । शर्करा वा । भवतीति भूरि बहु सुवर्णं वा। भूरिप्रयोजनमस्य स भौरिकः । कनकाध्यक्षो वा । शोभतेऽसौ शुभ्रिः । चतुर्वेदविद् ब्रह्मा वा ॥

(६६) वङ्कतेऽसौ वङ्क्रिः । वाद्यभेदो गृहदारु वा । वपन्ति यस्मिन् स वप्रिः क्षेत्रं वा । सम्प्रसारणाभावो बाहुलकात् । अंहयति भाषतेऽसावंह्रिः । पादो वा । तन्दिः सौत्रो धातुः। तन्दति क्लिश्नातीति तन्द्रिः मोहो वा। स्त्रियां तन्द्री। बिभेति येन स भेरिः । वाद्यविशेषो वा । भेरी वा ॥

(६७) राति सुखं ददातीति रात्रिः । प्रसिद्धा वा । शीयते छिनत्तीति शत्रिः हस्ती वा ॥

(६८) चात् त्रिप् । अत्ति भक्षयतीति, अत्री, । अत्रिणी । पापं वा । अत्रिः । मुनिभेदो वा । तस्यापत्यमात्रेयः ॥

(६९) पततीति पतत्रिः । पक्षी वा । पतत्रयः । पक्षवाचकात्पतत्रशब्दान्मत्वर्थ इनिः । पतत्री । पतत्रिणी ॥

(७०) म्रियतेऽसौ मरीचिः । दीप्तिर्महर्षिर्वा । कणति शब्दयतीति कणीचिः । पत्रादियुक्ता शाखा शब्दो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वयतेश्चिच्च ॥ ७१ ॥ श्वयीचिः ॥ ७१ ॥
वेञो डिच्च ॥ ७२ ॥ वीचिः ॥ ७२ ॥
ऋहनिभ्यामूषन् ॥ ७३ ॥ अरूषः । हनूषः ॥ ७३ ॥
पुरः कुषन् ॥ ७४ ॥ पुरुषः । पूरुषः ॥ ७४ ॥
पॄनहिकलिभ्य उषच् ॥ ७५ परुषः । नहुषः । कलुषम् ॥ ७५ ॥
पीयेरूषन् ॥ ७६ ॥ पीयूषम् । पेयूषम् ॥ ७६ ॥
मस्जेर्नुम् च ॥ ७७ ॥ मञ्जूषा ॥ ७७ ॥
गण्डेश्च ॥ ७८ ॥ गण्डूषः ॥ ७८ ॥
अर्त्तेरुः ॥ ७९ ॥ अररुः ॥ ७९ ॥
कुटः किच्च ॥ ८० ॥ कुटरुः ॥ ८० ॥
शकादिभ्योऽटन् ॥८१॥ शकटः । कङ्कटः । देवटः । करटः ॥८१॥

(७१) श्वयति गच्छति वर्धते वा स श्वयीचिः । व्याधिर्वा ॥

(७२) वयति तन्तून् सन्तनोतीति वीचिः । डित्वाट्टिलोपः । तरङ्गो वा ॥

(७३) ऋच्छति गच्छतीति, अरूषः । सूर्यो वा । हन्तीति हनूषो दस्युः ॥

(७४) पुरत्यग्रं गच्छतीति पुरुषः पुमान् । अन्येषामपि दृश्यत इति दीर्घे पूरुषो वा

(७५) पिपर्त्तीति परुषम् । निष्ठुरं वचो वा । नह्यति बध्नातीति नहुषः । राजर्षिः सर्पविशेषो वा । कलते शब्दयतीति कलुषम् । पापम् ॥

(७६) पीयति पीयते वा तत् पीयूषम् । पेयूषम् । नूतनं पयोऽमृतं वा । सप्तरात्रप्रसूतायाः क्षीरम् । बहुलवचनात् । अङ्कयते लक्षयतीति अङ्कूषः । नकुलो वा ॥

(७७) धातोर्नुम् । स चाचोऽन्त्यात्परः । जश्त्वश्चुत्वे । मज्जति शुद्धो भवतीति मञ्जूषा । काष्ठमयं द्रव्यं वा ॥

(७८) गण्डति वदनावयवं दिशतीति गण्डूषः । जलादिना पूर्णं मुखम् कुल्ला इति प्रसिद्धम् ॥

(७९) ऋच्छति प्राप्नोति येन तत् । अररुः । आयुधं वा ॥

(८०) कुटतीति कुटरुः । वस्त्रगृहं वा ॥

(८१) शक्नोतीति शकटः । शकटं यानविशेष ऋषिर्वा यस्यापत्यं शाकटायनः । वृणोतीति वरटः । कीटभेदो वरटा हंसयोषिद्वा । कङ्कते गच्छतीति कङ्कटः । कवचो वा । सरति प्रसरतीति सरटः । कृकलासो वा । गिरगट इति प्रसिद्धः । देवते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृकदिकडिकटिभ्योऽम्बच् ॥ ८२ ॥ करम्बम् । कदम्बः । कडम्बः कटम्बः ॥ ८२ ॥

कदेर्णित् पक्षिणि ॥ ८३ ॥ कादम्बः । ८३ ॥

कलिकर्द्योरमः ॥ ८४ ॥ कलमः । कर्दमः । ८४ ॥

कुणिपुल्योः किन्दच् ॥ ८५ ॥ कुणिन्दः । पुलिन्दः । ८५ ॥

कुपेर्वा बश्च ॥ ८६ ॥ कुबिन्दः । कुपिन्दः । ८६ ॥

नौ षञ्जेर्घथिन् ॥ ८७ ॥ निषङ्गथिः । ८७ ॥

उदृत्तेश्चित् ॥ ८८ ॥ उदरथिः । ८८ ॥

व्यवहरतीति देवटः । शिल्पी वा । कम्पते येन स कपटः । माया वा । धातोर्नलोपः । कर्कमर्ककर्पाः सौत्रा धातवः । कर्कतीति कर्कटः । जलजन्तुभेदो वा । मर्कतीति मर्कटः । वानरो वा । स्त्रियां गौरादित्वान् ङीष् । मर्कटी । कर्पतीति कर्पटः । छिन्नं पुराणं वस्त्रं वा । पर्पति गच्छतीति पर्पटः । ऊषरभूमिर्वा । कखति हसतीति कक्खटम् । कठिनं वा । कुगागमः । चपति सान्त्वयतीति येन स चपेटः । चर्पटो वा । प्रसृताङ्गुलिर्हस्तो वा । एकत्र प्रत्ययादेरेत्वमपरत्र रेफागमश्च । मयते प्राप्नोति यं स मयटः । प्रासादो वा । किरति विक्षिपतीति करटः । काको वा । एवमन्येऽपि शब्दा अटन्प्रत्ययान्ता यथाप्रयोगं सध्याः ॥

(८२) करोतीति करम्बम् । व्यामिश्रम् कदतीति कदम्बः । वृक्षभेदो वा । कडत्यावृणोतीति कडम्बः । अग्रभागो वा । कटतीति कटम्बो वादित्रं वा ॥

(८३) कदति विकलो भवतीति कादम्बः पक्षिभेदो वा बक इति प्रसिद्धः ॥

(८४) कलते संख्यातीति कलमः । शालिभेदो वा । कर्दति कुत्सितं शब्दयतीति कर्दमः पापं वा ॥

(८५) कुणति शब्दयतेऽसौ कुणिन्दः । शब्दो वा । पोलति महान् भवतीति पुलिन्दः । शवरश्चाण्डालभेदो वा । बाहुलकात् । अलति भूषयतीति, अलिन्दः । गृहैकदेशो वा । प्रज्ञादित्वादणि आलिन्द इत्यपि सिद्धम् ॥

(८६) कुप्यति क्रुद्धो भवति स कुबिन्दः । कुपिन्दः । तन्तुवायो वा ॥

(८७) नितरां सजति सङ्गं करोतीति निषङ्गथिः । आलिङ्गी वा । घित्वात् कुत्वम् ॥

(८८) उद्गच्छन्त्यूर्ध्वं गच्छन्त्यापोऽस्मिन् स उदरथिः । समुद्रो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्त्तेर्णिच्च ॥ ८६ ॥ सारथि: । ८६ ॥

खर्जिपिञ्जादिभ्य ऊरोलचौ ॥ ९० ॥ खर्जूर: । कर्पूर: । धुस्तूर: । वल्लूरम् । पिञ्जूलम् । लाङ्गूलम् । ९० ॥

कुवश्चट् दीर्घश्च ॥ ९१ ॥ कूची ॥ ९१ ॥

समीण: ॥ ९२ ॥ समीच: । समीची ॥ ९२ ॥

सिवेष्टेरू च ॥ ९३ ॥ सूच: । सूची ॥ ९३ ॥

शमेर्वन् ॥ ९४ ॥ शम्ब: ॥ ९४ ॥

उल्वादयश्च ॥ ९५ ॥ उल्वम् । विल्वम् ॥ ९५ ॥

(८६) सारयतीति नियमेन चालयतीति सारथि: । नियन्ता वा । अत्र णेर्लोपो णित्त्वाद् वृद्धि: ॥

(९०) खर्ज्यादिभ्य: ऊर: । खर्जति मार्जयतीति खर्जूर: । वृक्षभेदो रजतं वा ॥ स्त्रियां गौरादित्वान् ङीष् । खर्जूरी । कल्पते समर्थो भवतीति कर्पूर: । सुगन्धिद्रव्यं वा । बाहुलकादत्र लत्वाभाव: । धुनोति कम्पयतीति धुस्तूर: । कनकाह्वय: । धतूरा इति प्रसिद्ध: । वल्लते संवृणोतीति वल्लूरम् । शुष्कमांसं वा । शालयति गमयतीति शालूर: । मण्डूको वा । मल्लते धरतीति मल्लूर: । कस्ते गच्छति प्राप्नोति शास्ति वा स कस्तूर: । स्त्रियां कस्तूरी प्रसिद्धा । सुगन्धिभेद: । पिञ्जादिभ्य ऊल: । पिङ्क्ते वर्णयतीति पिञ्जूलम् । कुशवर्तिर्वा । कच्यते दीप्यतेऽसौ कच्चूल: । स्त्रीणामाभरणं वा । लङ्गति गच्छतीति लांगूलम् । पुच्छं वा । धातोर्वृद्धि: । ताम्यति काङ्क्षति यस्तत् ताम्बूलमिति प्रसिद्धम् । धातोर्बुक् । धातोर्दुक् दीर्घत्वं च । शृणाति हिनस्तीति शार्दूल: । व्याघ्रो वा । धातोर्दुक् वृद्धिश्च । दुनोत्युपतापयतीति दुकूलम् । स्त्रिया अधोवस्त्रम् । धातो: कुक् । कुस्यति श्लिष्यतीति कुमूल: । धान्यपात्रं वा ॥

(९१) कौति शब्दयतीति कूच: । स्तनं हस्तो वा । स्त्रियां कूची चित्रलेखनी ॥

(९२) सम्यगीति गच्छतीति समीच: । समुद्रो वा । समीची हरणी ॥

(९३) इवभागस्य टेरू आदेश: । सीव्यति येन स सूच: । दर्भाङ्कुरो वा । स्त्रियां सूचीति प्रसिद्धा ॥

(९४) शाम्यतीति शम्ब: । मुसलस्य लोहमुखं वा । शामो इति प्रसिद्धा ॥

(९५) वन् प्रत्ययान्ता निपाता: । उच्यति समवैतीति उल्व: । गर्भो वा । चकारस्य लत्वं गुणाभावश्च । शोचतीति शुल्वम् । ताम्रं वा । पूर्ववत्सर्वम् । नयति प्रापयतीति शुभगुणानिति निम्ब: । वृक्षभेदो वा । वीयते काम्यते तत् बिम्बम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तः स्तोऽम्बजवकौ ॥ ९६ ॥ स्तम्बः । स्तबकः ॥ ९६ ॥
शाशपिभ्यां ददनौ ॥ ९७ ॥ शादः । शब्दः ॥ ९७ ॥
अब्दादयश्च ॥ ९८ ॥ अब्दः । कुन्दः ॥ ९८ ॥
वलिमलितनिभ्यः कयन् ॥ ९९ ॥ वलयम् । मलयः । तनयम् ॥ ९९ ॥
वृह्रोः षुग्दुकौ च ॥ १०० ॥ वृषयः । हृदयम् ॥ १०० ॥
मीपीभ्यां रुः ॥ १०१ ॥ मेरुः । पेरुः ॥ १०१ ॥
जत्र्वादयश्च ॥ १०२ ॥

मण्डलमोषधिविशेषो वा । अत्रोभयत्र नो वी धातोर्नुमागमो ह्रस्वत्वं च । स्त्रियां गौरादित्वात् । बिम्बी । बिम्बफलमिवौष्ठौ यस्याः सा बिम्बोष्ठी । कन्या । दिधन्ति धान्यहेतुर्भवतीति धन्वम् । धनुर्वा । तद्योगाद्धन्वी जनः । जमति भक्षयतीति जम्बः । पङ्को वा ॥

(९६) अम्बच् अवक इत्येतौ प्रत्ययौ तिष्ठतीति स्तम्बः । शाखाशून्यो व्रीह्यादेर्गुच्छो वा । स्तबकः । पुष्पगुच्छके वा ॥

(९७) श्यति सूक्ष्मं करोतीति शादः । कर्दमो बालतृणं वा । शप्यत आहूयतेऽनेन स शब्दो नादः । पस्य बः ॥

(९८) ददन् प्रत्ययान्ता निपाताः । अवति रक्षणादिकं करोतीति अब्दः । सम्बत्सरोऽवसरो मेघो वा । कौति शब्दयतीति कुन्दः । पुष्पजातिर्वा । धातोर्नुम् । वृणोतीति वृन्दं समूहो वा । नुम् गुणाभावश्च । कनति दीप्यतेऽसौ कन्दः । सस्य मूलं सूकरो वा । तुदति व्यथतीति तुन्दः । स्थूलमुदरं वा । तुन्दी स्थूलोदरी धातोर्नुम् ॥

(९९) वलते संवृणोतीति वलयः । करभूषणं वा । मलते धरतीति मलयः । पर्वतो वा । तनोति सुखमिति तनयः । पुत्रो वा बाहुलकात् । आमयति पीडयतीति आमयः रोगो वा ॥

(१००) वृणोतीति वृषयः । आश्रयो वा । षुक् । हरति विषयानिति हृदयम् । मनो वा । दुक् ॥

(१०१) मिनोति प्रक्षिपतीति मेरुः । सुमेरुः पर्वतो वा । पीयते पिबतीति वा पेरुः । आदित्यो वा । बाहुलकात् । पिबतीति पारुः । स एव ॥

(१०२) जायते तत् जत्रु । स्कन्धसन्धिर्वा । नस्य तः जतुणी । जतवि । शेतेऽसौ शिग्रुः । शोभाञ्जनस्तरुः । सहिंजना इति प्रसिद्धः । शाकं वा । मनुष्यविशेषो वा । तत्र शिग्रोरपत्यं शैग्रवः । विशेषेण तनोतीति वितद्रुः । नदी वा । नकारस्य दः । कवतेऽसौ कद्रुः । वर्णभेदो वा । वस्य दः । अस्यति प्रक्षिपति जलमिति अस्रुः । बहुलवचनात् । शकारभेदे । अश्रुः । नेत्रजलं वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुशातिभ्यां क्रुन् ॥ १०३ ॥ रुरुः । शत्रुः ॥ १०३ ॥

जनिदाच्युसृवृमदिपमिनमिभृञ्भ्य इत्वन्त्वन्त्लणिक्निन्शक्सठढाटचः ॥ १०४ ॥ जनित्वः । दात्वः । च्यौत्नः । सृणिः । वृशः । मत्स्यः । षण्ढः । नटः भरटः ॥ १०४ ॥

अन्येऽपि दृश्यन्ते ॥ १०५ ॥ पेत्वम् ॥ १०५ ॥

कुसिकम्भोमेदेताः ॥ १०६ ॥ कुसुम्भम् । कुसुमम् । कुसीदम् । कुसितः ॥ १०६ ॥

सानसिवर्णसिपर्णसितण्डुलाङ्कुशचषालेल्वलपल्वलधिष्ण्यशल्याः ॥ १०७ ॥

(१०३) रौति शब्दं करोतीति रुरुः । मृगभेदो वा । शीयते शातयतीति शत्रुः । प्रज्ञादित्वादण् । शात्रवः । वैरी ॥

(१०४) जायते जनयति वा । स जनित्वः । मातापितरौ वा । यो ददाति यत्र वा स दात्वः । यज्ञकर्म वा । च्यवते गच्छतीति च्यौत्नम् । बलं वा । सरतीति सृणिः चन्द्रोऽङ्कुशो वा । वृणोतीति वृशः । ओषधिर्वा । माद्यतीति मत्स्यः । मीनो वा स्त्रियां मत्सी । मत्स्या । शाम्यतीति शण्ढः । अकृतदारो वा । नमतीति नटः । वंशावरोहीति प्रसिद्धः । डित्वाट्टिलोपः । बिभर्तीति भरटः । कुलालो वा ॥

(१०५) इत्वनादय इति शेषः । पीयते यत् पेत्वम् । अमृतं वा । कच्यते बध्यतेऽसौ कच्छः । शाकमूलं वा । सरतीति सरटः । वायुर्वा । श्यायते तद् श्यालम् । चिन्ता वा जुहोतीति होत्रः । यजमानो वा । लूयतेऽसौ लूनिः । ब्रीहिर्वा इत्यादि ॥

(१०६) कुस्यति श्लिष्यतीति कुसुम्भम् । महारजनं वा । कुसुमम् । पुष्पं वा । कुसीदम् । वृद्धिजीविका वा । कुसितः । देशो वा ॥

(१०७) सनोति ददाति सन्यते वा स सानसिः । हिरण्यं वा । असिप्रत्यय उपधावृद्धिश्च । वृणोतीति वर्णसिः । जलं वा । धातोर्नुक् । पिपर्त्तीति पर्णसिः । जलगृहं वा । पूर्ववत्सर्वम् । तण्डति ताडयति ताड्यते वा । स तण्डुलः । उलच् । तुषरहितो ब्रीहिर्वा । अङ्कते लक्षयति येन स, अङ्कुशः । शस्त्रभेदो वा । उशच् । चषति भक्षयतीति चषालः । यूपकङ्कणं वा । इलति स्वपितीति, इल्वलः । नक्षत्रविशेषो वा । पलति गच्छतीति पल्वलम् । अल्पसरो वा । अत्रोभयत्र वलच् गुणाभावश्च । धृष्णोति प्रगल्भो भवतीति धिष्ण्यः । स्थानमृक्षोऽग्निरालयो वा । ऋकारस्येकारो ण्यप्रत्ययश्च । शलति गच्छतीति शल्यम् । शस्त्रविशेषो वाणाग्रभागो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूशक्यबिम्यः क्लः ॥१०८॥ मूलम्। शक्लः। अम्बूलः। अम्लः ॥१०८॥
माछाशसिभ्यो यः ॥ १०६ ॥ माया। छाया। सस्यम्॥१०६॥
सनोतेः ॥ ११० ॥ सव्यम् ॥ ११० ॥
जनेर्यक् ॥ १११ ॥ जन्यम्। जाया ॥ १११ ॥
अघ्न्यादयश्च ॥ ११२ ॥ अघ्न्या। कन्या। बन्ध्या ॥ ११२ ॥
स्नामदिपद्यर्त्तिपृशकिभ्यो वनिप् ॥ ११३ ॥ स्नावा। मद्वा। पद्वा। अर्वा। पर्वा। शक्वा। शक्वरी ॥ ११३ ॥

(१०८) मनते बध्नातीति मूलमिति प्रसिद्धम्।शक्नोतीति शक्लः। प्रियम्वदो वा। अम्बते शब्दं करोतीत्यम्बूलः।बाहुलकात्।अमति गच्छतीति, अम्लः। रसविशेषो वा॥

(१०६) मात्यन्तर्भवतीति माया। छलं मिथ्याज्ञानं वा। छ्यति प्रकाशमिति छाया। प्रकाशावरणसुल्कोचक प्रतिबिम्बो वा। शस्यते यत्तत् सस्यम्। क्षेत्रपक्वमन्नं गुणो वा बाहुलकात् अनितिजीवतीत्यन्यः। इतरो वा॥

(११० सुनोत्यभिषवतीति सव्यम्। वामभागो वा॥

(१११) या जायते यस्यां वा सा जाया पत्नी।ये विभाषेति व्यवस्थितविभाषया पत्न्यां जाया नित्यमात्वमन्यत्र जन्यम्। निर्वादो युद्धं वा॥

(११२) यगन्ता निपाताः। यो न हन्यते न हन्तीति वा स, अघ्न्यः। प्रजापालको वा। धातोरुपधालोपो हस्य घत्वं च। अघ्न्या गौर्वा। सन्दधाति यस्यां वेलायां सा सन्ध्या। आतो लोपः। सायंकालः प्रतिज्ञा वा। सम्यग्ध्यायन्ति परं ब्रह्म यस्यां सा सन्ध्या। इति तु स्त्रियां क्तिन्नित्यधिकारे, आतश्चोपसर्गे इत्यङ्। कन्यते दीप्यते काम्यते गच्छति वा सा कन्या। कुमारी वा। बध्यतेऽसौ बन्ध्या अप्रसूता वा। कौति शब्दयतीति कुड्यम्। भित्तिर्वा। धातोर्डुक्। मन्यते येन तन्मध्यम्। द्वयोरन्तरालं वा। नस्य धः। उह्यते यत्तद् वह्यम्। मनुष्यविशेषो वा। अहति व्याप्नोतीत्यह्न्या। रात्रिर्वा। अहर्लीयतेऽस्यामिति व्युत्पत्यन्तरम्। पूर्वत्र धातोरलुगागमः। ऋषति गच्छतीति ऋष्यः मृगभेदो वा। कष्टे गच्छति शास्ति वा स कष्यः। मर्यं वा। इत्यादि॥

(११३) स्नाति शुच्यतीति स्नावा। रसिको वा। स्नावानौ। स्नावानः। माद्यतीति मद्वा। कल्याणदातेश्वरो वा। पद्यन्ते यत्र स पद्वा। पन्था वा। ऋच्छतीत्यर्वा। अश्वो निन्द्यो वा। पिपर्त्तीति पर्व।ग्रन्थिर्वा। शक्नोतीति शक्वा। हस्ती वा। स्त्रियां ङीब्रौ। शक्वरी। नदीछन्दो भेदो वा॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीङ्क्रुशिरुहिजिक्षिसृधृभ्यः क्वनिप् ॥ ११४ ॥ शीवा । क्रुश्वा । रुह्वा । जित्वा । क्षित्वा । सृत्वा । धृत्वा ॥ ११४ ॥

ध्याप्योः संप्रसारणं च ॥ ११५ ॥ धीवा । पीवा ॥ ११५ ॥

अदेर्ध च ॥ ११६ ॥ अध्वा ॥ ११६ ॥

प्र ईरशदोस्तुट् च ॥ ११७ ॥ प्रेत्वा । प्रशत्वा । प्रेत्वरी । प्रशत्वरी ॥ ११७ ॥

सर्वधातुभ्य इन् ॥ ११८ ॥ पचिः । तुण्डिः । बलिः । वटिः । मणिः । वह्निः । यजिः । गण्डिः । तडिः । शाडिः । काशिः । वाशिः । घटिः । घटी । यतिः । केलिः । मषिः । कोटिः । जटिः । कटिः । हलिः । हेलिः । पणिः । कलिः ॥ ११८ ॥

(११४) शेतेऽसौ शीवा । अजगरो वा । क्रोशतीति क्रुश्वा । शृगालो वा । रोहति बीजादुत्पद्यत इति रुह्वा । वृक्षो वा । जयतीति जित्वा । जयशीलः । क्षयति नाशयति क्षिपति निवसति गच्छति वा स क्षित्वा । वायुर्वा । सरतीति सृत्वा । प्रजापतिर्वा । धारयतीति धृत्वा । व्यापको जगदीश्वरो वा । स्त्रियां जित्वरी त्यादि बोध्यम् ॥

(११५) ध्यायतीति धीवा । कर्मकारो वा । स्त्रियां धीवरी । मत्स्याधानं पात्रम् । प्यायते वर्धतेऽसौ पीवा । स्थूलो वा । पीवरी तरुणी ॥

(११६) अत्ति भक्षयतीति, अध्वा । मार्गो वा ॥

(११७) प्रेतेऽसौ प्रेत्वा । सागरो वा । प्रेत्वरी । प्रशीयतेऽसौ प्रशत्वा समुद्रो वा । प्रशत्वरी नदी ॥

(११८) पचति येन स पचिः । अग्निर्वा । तुण्डति छिनत्तीति तुण्डिः । बलते संवृणोतीति बलिः । महाराजो वा । वाटयति ग्रथ्नाति स वटिः । विभाजको वा मणति शब्दयतीति मणिः । बहुमूल्यः पाषाणो वा । प्रशंसितो मणिर्मणिकः । तदेव माणिक्यम् । वहृते प्रधानी भवतीति वह्निः । वह्लिका नाम क्षत्रिया जनपदो वा । यजतीति यजिः । संगन्ता होता वा । गण्डति स गण्डिः । वदनैकदेशो वा । ताडयतीति तडिः । पीडकः । शाडते विशेषेण हिनस्तीति शाडिः । पुष्पचयो वा काशते दीप्यतेऽसौ काशिः । देशभेदो वा । तद्देशान्तर्गत्वाद्वाराणसी नगरी काशिः । काशी । तस्य देशस्य राजा काश्यः । वाश्यते शब्दयतीति वाशिः । काष्ठभेदिनी वा । घटतेऽसौ घटिः । घटी । यततेऽसौ यतिः । नियमधारी संन्यासी वा । केलति चलति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृपिषिरुहिवृतिविदिछिदिकीर्त्तिभ्यश्च ॥ ११९ ॥ हरिः । पेषिः । रोहिः । वर्त्तिः । वेदिः । छेदिः । कीर्त्तिः ॥ ११९ ॥

इगुपधात् कित् ॥ १२० ॥ कृषिः । ऋषिः । रुचिः । शुचिः । लिपिः ॥ १२० ॥

भ्रमेः संप्रसारणं च ॥ १२१ ॥ भृमिः । भ्रमिः । १२१ ॥

क्रमितमिशतिस्तम्भामत इच्च ॥ १२२ ॥ क्रिमिः । क्रमिः । तिमिः । शतिः । स्तिभिः । १२२ ॥

यस्यां सा केलिः । क्रीडा वा । मस्यति परिणमते स मसिः।मसी। पाञ्चाञ्जनं वा । कुटतीति कोटिः । संख्यावरणमग्रभागो वा । बाहुलकाद् गुणः । जटति संघातं करोतीति जटिः जटाधारी वा । कटतीति कटिः । कटी । शरीरमध्यं वा। हलति येन विलिखतीति हलिः । कृषीवलः । कृषिसाधनं वा । हेलति विरुद्धं बहु भाषत इति हेलिः । प्रहेलिः । यः पणायति व्यवहरति स पणिः विपणिः । वणिजां वीथी वा । कलन्ते स्पर्द्धमाना भाषन्ते यत्र स कलिः । कलहो विग्रहो वा। नन्दति यत्रेति नन्दिः । वृद्धिर्वा । इत्यादीन्यनेकान्युदाहरणानि सन्ति ॥

(११९) हरतीति हरिः । सर्पो मण्डूकोऽश्वः सिंहः सूर्यो वा । इगुपधात् किदिति वक्ष्यते तद्बाधनार्थं पिषादीनां ग्रहणम् । तत्र हि कित्वाद् गुणनिषेधः प्राप्तः स न स्यात् । पिनष्टि येन स पेषिः । वज्रो वा । रोहतीति रोहिः ।व्रती वा। वर्त्तते सा वर्त्तिः।दीपोपकरणं वा विद्यते या सा वेदिः।यज्ञभूमिर्वा छिनत्तीति छेदिः। वर्धकिश्छेत्ता वा । कीर्त्यते संशब्द्यते सा कीर्त्तिः । पुण्यं यशो वा ।।

(१२०) कृष्यते विलेख्यते या सा कृषिः । खेतीति प्रसिद्धा । ऋषति गच्छति प्राप्नोति जानाति वा स ऋषिः । मंत्रार्थद्रष्टा । वा । रुच्यते सा रुचिः दीप्तिर्वा । शुच्यतीति शुचिः । शुद्धिर्वा । लिम्पतीति लिपिः । लेखो वा बाहुलकात् । बत्वे लिबिः । इत्यपि लिबिं करोतीति लिबिकरः । लिप्यर्थ एव । तूलति निष्कर्षतीति तूलिः । तूली । कूर्चिका दध्यादिना सह पक्वः क्षीरविकारो वा । इत्यादि ॥

(१२१) भ्राम्यतीति भृमिः । वायुर्वा । बाहुलकात् । भ्रमिरित्यपि सिद्धम् ॥

(१२२) क्राम्यति पादान् विक्षिपतीति क्रिमिः । क्षुद्रजन्तुर्वा । संप्रसारणानुवृत्तेः क्रमिरित्यपि । ताम्यत्याकाङ्क्षतीति तिमिः । मत्स्यभेदो वा । शतिस्तम्भी सौत्रौ धातू । शितिः कृष्णः । शुक्लो वा । स्तभ्नातीति स्तिभिः । समुद्रो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनेरुच्च ॥ १२३ ॥ मुनिः। १२३ ॥

वर्णेर्वलिश्चाहिरण्ये ॥ १२४ ॥ वलिः। १२४ ॥

वसिवपियजिराजिव्रजिसदिहनिवाशिवादिवारिभ्य इञ्॥ १२५॥
वासिः। वापिः। याजिः। राजिः। व्राजिः। सादिः। निघातिः। वाशिः। वादिः। वारिः। १२५ ॥

नहो भश्च ॥ १२६ ॥ नाभिः। १२६ ॥

कृषेर्वृद्धिश्छन्दसि ॥ १२७ ॥ कार्षिः। १२७ ॥

शॄः शकुनौ ॥ १२८ ॥ शारिः। शारिका। १२८ ॥

कृञ उदीचां कारुषु ॥ १२९ ॥ कारिः। १२९ ॥

(१२३) किदित्येव। मन्यते जानातीति मुनिः। मननशीलः। मुनिरियं ब्राह्मणी। बह्वादित्वान् मुनी। मुनेर्भावः कर्म वा मौनम् ॥

(१२४) वर्णिः सौत्रो धातुः वर्णयति स वलिः। राजकरः सत्कारसामग्री शरीराङ्गं वा। हिरण्ये तु वर्णिः सुवर्णम् ॥

(१२५) वस्त आच्छादयति वसति वा स वासिः। छेदनवस्तु वा। वपन्ति यत्रेति वापिर्वापी वा। जलाशयभेदो वा। यजतीति याजिः। यष्टा वा। राजते दीप्यतेऽसौ राजिः। राजी। पंक्तिर्वा। राजीवं पद्मम्। व्रजतीति व्राजिः। वायुसमूहो वा। सीदतीति सादिः। सारथिर्वा। हन्ति यया सा घातिः। निघातिर्लोहघाता धारा। वाश्यते शब्दयतीति वाशिः। अग्निर्वा। वादयति व्यक्तमुच्चारयति स वादिः। विद्वान् वा। वारयति निवारयतीति वारिः। गजबन्धनी शृङ्खला वा। जले नपुंसकम्। वारि। बाहुलकात्। हरतीति हारिः। पथिकसंसतिर्वा। संप्रहारिः। योद्धा। खटति काङ्क्षतीति खाटिः। शुष्कव्रणस्थानं वा ॥

(१२६) नह्यति दुष्टं नाडीर्वा बध्नातीति नाभिः। क्षत्रियः प्राण्यङ्गं वा। नाभी ङीष् ॥

(१२७) कर्षत्याकर्षतीति कार्षिः। अग्निर्वा। लोके तु कृषिः ॥

(१२८) शृणाति हिनस्तीति शारिः पक्षी। स्त्री शारिका। शुकशारिकमिति पक्ष एकवद्भावः। शारीन् हन्तीति शारिका वा। शकुनेरन्यत्र शरिर्हिंस्रः। कपिलकादित्वाल्लत्वम्। शलिः। अपिशलिमुनिविशेषस्तस्यापत्यमापिशलिः। बाह्वादित्वादिञ् ॥

(१२९) करोतीति कारिः। शिल्पी। शिल्पिनोऽन्यत्र करिः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनिघसिभ्यामिण् ॥ १३० ॥ जनिः । घासिः ॥ १३० ॥
अज्यतिभ्यां च ॥ १३१ ॥ आजिः । आतिः । १३१ ॥
पादे च ॥ १३२ ॥ पदाजिः । पदातिः । १३२ ॥
अशिपणाय्योरुडायलुकौ च ॥१३३॥ राशिः । पाणिः ।१३३॥
वातेर्डिच्च ॥ १३४ ॥ विः । १३४ ॥
प्रे हरतेः कूपे ॥ १३५ ॥ प्रहिः । १३५ ॥
नौ व्यो यलोपः पूर्वस्य च दीर्घः ॥ १३६ ॥ नीविः । १३६ ॥
समाने ख्यः स चोदात्तः ॥ १३७ ॥ सखा । १३७ ॥
आङि श्रिहनिभ्यां ह्रस्वश्च ॥१३८॥ अश्रिः । अहिः ॥१३८॥

(१३०) जायतेऽसौ जनिः । जननं वा । घसति भक्षयतीति घासिः । अग्निर्वा । बाहुलकात् शल्यते प्राप्यतेऽसौ शालिः । व्रीहयो वा । पलति गच्छतीति पालिः खड्गादेरग्रभागो वा । प्रत्ययान्तरकरणं स्वरार्थम् ॥

(१३१) अजन्ति क्षिपन्ति शस्त्रादिकं यत्र स आजिः । संग्रामो वा । अतति निरन्तरं गच्छतीति, आतिः । तित्तिरिभेदो वा । शोभनः—आतो स्वाती नक्षत्रम् ॥

(१३२) पद्भ्यामजत्यतति वा स पदाजिः । पदातिः । पदगः । पादस्य पदाज्याति० सूत्रेण पदादेशः ॥

(१३३) अश्नोतेट् पणायते रायलुक् । अश्नुते व्याप्नोतीति राशिः । समूहो वा । पणायति व्यवहरति येन स पाणिः । हस्तो वा ॥

(१३४) वाति वायुवद्गच्छतीति विः पक्षी वा । डित्त्वादाकारलोपः । अटन्ति वयोऽस्यामित्यटविर्नगरी । पदस्य विः । पदवी ॥

(१३५) इण्—डित् । प्रहरति जलमस्मात् स प्रहिः कूपो वा । कूपादन्यत्र हरिः ॥

(१३६) पूर्वस्योपसर्गस्य दीर्घः । निवीयते संव्रियते सा नीविः । नीवी । मूलधनं दुकूलबन्धनं वा ॥

(१३७) समानं ख्यातीति सखा । सखायौ । सखायः । मित्रं सहायो वा ॥

(१३८) आश्रयति तत्रेति, अश्रिः । कोणो वा । आहन्तीति, अहिः । मेघः सर्पो वा । अत्राङुपसर्गस्यैव ह्रस्वत्वम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच इः ॥ १३९ ॥ रविः। कविः। पविः। अरिः। अलिः ॥ १३९ ॥

खनिकष्यज्यसिवसिवनिसनिध्वनिग्रन्थिचरिभ्यश्च ॥ १४० ॥ खनिः। कषिः। अजिः। असिः। वसिः। वनिः। सनिः। ध्वनिः। ग्रन्थिः। चरिः ॥ १४० ॥

वृतेश्छन्दसि ॥ १४१ ॥ वर्त्तिः। ॥ १४१ ॥

भुजेः किच्च ॥ १४२ ॥ भुजिः ॥ १४२ ॥

कॄगॄशॄपॄकुटिभिदिछिदिभ्यश्च ॥१४३॥ किरिः। गिरिः। शिरिः पुरिः। कुटिः। भिदिः। छिदिः ॥ १४३ ॥

(१३९) अजन्ताद्धातोरिः प्रत्ययः। लुनाति छिनत्तीति लविः। छेदको लोहो वा। पुनातीति पविः। वज्रं हीरकं वा। तरति येन स तरिः। वस्त्रादिस्थापनभाण्डं वा। स्त्रियां तरी। रौतीति रविः। सूर्यो वा। कौति शब्दयत्युपदिशति स कविः। मेधावी विद्वान् क्रान्तदर्शनो वा। स्त्रियां कवी। ऋच्छति प्राप्नोति परपदार्थानित्यरिः। शत्रुर्वा। कपिलकादित्वाल्लत्वे। अलिः। भ्रमरो वा। नखेनातिक्रामतीति नखयति तस्मात्। नखिः। सूचयतीति सूचिः ॥ इत्यादि ॥

(१४०) खनति येन खन्यते यत्रेति वा स खनिः। धनस्थानं वा। बाहुलकाद्दीर्घत्वे खानिरित्यपि। कषति हिनस्तीति कषिः। हिंसको वा अनक्ति व्यनक्ति कार्यमित्यञ्जिः। प्रेषणकर्त्ता। ङीष्। अञ्जी मङ्गलार्थः। अस्यति क्षिपत्यनेनेत्यसिः खड्गो वा। वस्त आच्छादयत्यनेनेति वसिः। वस्त्रं वा। वनति संभजतीति वनिः। अग्निर्वा। धान्यवनिर्धान्यराशिः वन्यते याच्यत इति वनिः। तं वनिं याचनमिच्छतीति वनीयति तदन्ताण्ण्वुल्। वनीयकः। प्रार्थकः। सनोति ददातीति सनिः। अध्येषणं वा। ध्वन्यत उच्चार्यते स ध्वनिः। शब्दो वा। यं ग्रथ्नाति समुदेति स ग्रन्थिः पर्व। चरतीति चरिः। पशुर्वा ॥

(१४१) वर्त्तते तत्र येन वा स वर्त्तिः। योगक्रिया साधनद्रव्यं मार्गो वा ॥

(१४२) भुनक्ति पालयति भक्षयति वा स भुजिः। अग्निर्वा ॥

(१४३) किदिति वर्त्तते। किरतीति किरिः। वराहो वा। गिरति गृणाति वा स गिरिः। गोत्रमचिरोगः पर्वतो मेघो वा शृणातीति शिरिर्हन्ता। पिपर्त्तीति पुरिः नगरं नदी वा। कुटतीति कुटिः कुटी। शाला वा। भिनत्ति येन स भिदिः। वज्रं वा। छिनत्त्यनेन स छिदिः। परशुर्वा बहुलवचनात्। तरति प्लवतेऽसौ तित्तिरिः। पक्षिभेदो वा। तॄधातोरिः प्रत्ययः स च कित् सन्वत्कार्यमभ्यासस्य तुगागमश्च ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुण्ठिकम्प्योर्नलोपश्च ॥ १४४ ॥ कुठिः । कपिः ॥ १४४ ॥

सर्वधातुभ्यो मनिन् ॥ १४५ ॥ कर्म । चर्म । भस्म । जन्म । शर्म । हेम । श्लेष्मा । तर्म । स्थाम । दाम । छद्म । सुत्रामा ॥ १४५ ॥

बृंहेर्नोऽच्च ॥ १४६ ॥ ब्रह्म ॥ १४६ ॥

अशिशकिभ्यां छन्दसि ॥ १४७ ॥ अश्मा । शक्मा । १४७ ॥

हृभृधृसृस्तृशृभ्य इमनिच् ॥ १४८ ॥ हरिमा । भरिमा । धरिमा । सरिमा । स्तरिमा । शरिमा । १४८ ॥

जनिमृङ्भ्यामिमनिन् ॥ १४९ ॥ जनिमा । मरिमा । १४९ ॥

(१४४) कुण्ठति गतिं प्रतिहन्तीति कुठिः । पर्वतो वृक्षो वा । कम्पतेऽसौ कपिः वानरो वर्णभेदो वा । कपिवर्णमस्यास्तीति कपिशः । कपिलवर्णः । लोमादिपाठाच्च मत्वर्थीयः शप्रत्ययः ॥

(१४५) क्रियते तत् कर्म क्रिया वा । अर्द्धर्चादित्वादुभयलिङ्गः कर्मशब्दः । कर्माणं कुरुते शुभम् । चरति गच्छति येन तच्चर्म । प्रसिद्धम् । भसितं दीपितमिति यत्तद्भस्म । जायते यत्र तज्जन्म । उत्पत्तिः । शृणातीति शर्म । सुखं गृहं वा । हिनोति वर्धते येन तत्, हेम । सुवर्णं वा । श्लिष्यतीति श्लेष्मा । कफोद्गावो वा । श्लेष्माऽस्यास्तीति पामादित्वान्मत्वर्थे नः प्रत्ययः । श्लेष्मणः । सिध्मादित्वात् । श्लेष्मलः तरतीति तर्म यूपाग्रं वा । तर्मणी । तर्माणि । तिष्ठति येन तत् स्थाम । बलं वा । स्थामनी । ददातीति दाम । स्रग्वा । छादयतीति छद्म । माया वा । छद्मविति छलम् । सुष्ठु त्रायत इति सुत्रामा । ओषति दहतीति, जष्मा । अन्येषामपीति दीर्घः । जष्मा । ग्रीष्मर्त्तुर्बाष्पो वा ॥

(१४६) बृंहति वर्धते तद ब्रह्म । ईश्वरो वेदस्तत्त्वं तपो वा ॥

(१४७) अश्नात्यश्नुते व्याप्नोति वा स, अश्मा । मेघः पाषाणो वा । भाषायामपि दृश्यते । अश्मानं दृषदं मन्ये । शक्नोतीति शक्मा सूर्यो वा ॥

(१४८) छन्दसीति वर्त्तते । हरति स हरिमा । कालो वा । भर्त्तुं योग्यो भरिमा । कुटुम्बं वा । ध्रियत इति धरिमा । रूपं वा । सरतीति सरिमा । वायुर्वा । स्तीर्यते आच्छाद्यत इति स्तरिमा । तल्पं वा । शृणातीति शरिमा । प्रसवो वा ॥

(१४९) छन्दसीत्यनुवर्त्तते । जायत इति जनिमा जन्म । म्रियत इति मरिमा मृत्युः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेञः सर्वत्र ॥ १५० ॥ वेमा । १५० ॥

नामन्सीमन्व्योमन्रोमन्लोमन्पाप्मन्ध्यामन् ॥ १५१ ॥

मिथुने मनिः ॥ १५२ ॥ सुशर्मा । सुधर्मा । १५२ ॥

सातिभ्यां मनिन्मनिणौ ॥ १५३ ॥ साम । आत्मा । १५३ ॥

हनिमशिभ्यां सिकन् ॥ १५४ ॥ हंसिका । मक्षिका । १५४ ॥

कोररन् ॥ १५५ ॥ कबरः । १५५ ॥

गिरः उडच् ॥ १५६ ॥ गरुडः । १५६ ॥

इन्देः कमिन्नलोपश्च ॥ १५७ ॥ इदम् । १५७ ॥

कायतेर्डिमिः ॥ १५८ ॥ किम् । १५८ ॥

(१५०) वयति वस्त्राणि येन स वेमा । तन्तुवायदण्डः । वस्त्रनिर्माणसामग्री वा । सर्वत्र वचनाच्छन्दसीति निवृत्तम् ॥

(१५१) सप्तामी मनिनन्ता निपात्यन्ते । म्नायतेऽभ्यस्यते येन तत् नाम संज्ञा। स्वार्थे वार्त्तिकेन धेयट्।नामैव नामधेयम्।सिनोति बध्नातीति सीमा।अवधिर्वा।व्ययति संवृणोतीति व्योम । अन्तरिक्षं वा। रौति शब्दयतीति रोम । लूयते छिद्यते तल्लोम । गात्रकेशा वा।पिबतीति पाप्मा।किल्बिषं वा धातोः पुक्।ध्यायते स ध्यामा परिमाणं तेजो वा। बाहुलकात् । यक्षयति पूजयतीति यक्ष्मा । राजरोगो वा।सुवति प्रेरयतीति सोमा।चन्द्रो वा।हूयतेऽसौ होमा।आहुतिर्वा।दधाति यद्यत्र वेति धाम स्था तेजो वा॥

(१५२) यत्रोपसर्गौ धातुक्रियया सम्बद्धस्तन्मिथुनम् । तस्मिन् सत्युक्तेभ्यो वक्ष्यमाणेभ्यश्च धातुभ्यो मनिः प्रत्ययः स्यात्तत्तु मनिन् स्वरभेदार्थो नियमः । सुष्ठु शृणातीति सुशर्मा । राजविशेषो वा । सुधरतीति सुधर्मा । इत्यादि ॥

(१५३) स्यति कर्माणि समापयतीति साम वेदभेदो वा । अतति निरन्तरं कर्मफलानि प्राप्नोति व्याप्नोति वा स आत्मा । आत्मने हितमात्मनीनम् ॥

(१५४) हन्तीति हंसिका । हंसस्त्री वा । मशति शब्दयति रोषं करोति वा सा मक्षिका । प्रसिद्धा जातिर्वा ॥

(१५५) कौत्युपदिशतीति कबरः । पाठको वा । केशविन्यासः कबरी । अन्यत्र कबरा कन्या पाठिकेत्यर्थः ॥

(१५६) गिरति निगलतीति गरुडः । पक्षिभेदो वा ॥

(१५७) इन्दति परमैश्वर्यहेतुर्भवतीति, इदम् । प्रत्यक्षविषयबोधकः सर्वनाम-संज्ञको वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन् ॥१५९॥ वस्त्रम् । अस्त्रम् । छत्रम् । १५९ ॥

भ्रस्जिगमिनमिहनिविश्यशां वृद्धिश्च ॥ १६० ॥ भ्राष्ट्रः । गात्रम् । नात्रम् । हात्रम् । वेष्ट्रम् । आष्ट्रम् । १६० ॥

दिवेर्द्युच्च ॥ १६१ ॥ द्योत्रम् ॥ १६१ ॥

उषिखनिभ्यां कित् १६२ ॥ उष्ट्रः । खात्रम् ॥ १६२ ॥

सिविमुच्योष्टेरू च ॥ १६३ ॥ सूत्रम् । मूत्रम् ॥ १६३ ॥

अमिचिमिशसिभ्यः क्त्रः ॥ १६४ ॥ अन्त्रम् । चित्रम् । मित्रम् । शस्त्रम् ॥ १६४ ॥

पुवो ह्रस्वश्च ॥ १६५ ॥ पुत्रः ॥

(१५८) कायति शब्दयतीति किम् । प्रश्नाद्यर्थे वा ॥

(१५९) वस्त आच्छाद्यत इति वस्त्रम्। अस्यति क्षिपतीति, अस्त्रम् । छादयति घर्मादिकमपवारयतीति छत्रमिति प्रसिद्धम् । इस्मन्त्रन्क्विषु चेति सूत्रेण ह्रस्वादेशः । पतति शीघ्रं गच्छति येन वा तत्पत्त्रम्। वाहनं वा । राजतेऽसौ राष्ट्रः राष्ट्रं राज्यं देशो वा । जातिविशेषो वा। अन्येपि गच्छत्यनया सा गन्त्री । महच्छकटं वा । पिबत्यनेन तत् पात्रम् । पाति रक्षतीति पात्रः सज्जनो वा । दशति यया सा दंष्ट्रा दन्तो वा । इत्यादि॥

(१६०) भृज्जति यत्रेति भ्राष्ट्रः । अम्बरीषो वा । गच्छति येन तद्गात्रम् । शकटं वा । नमति येन तन्नात्रम् । स्तोत्रं वा । हन्यते तत् हात्रम् । मरणं वा । विशन्ति यत्रेति वेष्ट्रम् । लोको वा । अश्नुते व्याप्नोतीति आष्ट्रम् । आकाशो वा ॥

(१६१) वृद्धिरित्यनुवर्त्तते । दीव्यति द्योतते प्रकाशते तद् द्योत्रम् ॥

(१६२) ओषति दहत्युष्ट्रः । पशुजातिभेदो वा । खन्यते तत् खात्रम् खनित्रम् । जलाधारविशेषो वा । जनसनखनामित्यात्वम् ॥

(१६३) सीव्यति येन यदर्थं बध्नाति वा तत् सूत्रम् । तन्तुः शास्त्रैकादेशो वा । मुच्यते यस्तत् मूत्रम् । प्रस्रावो वा ॥

(१६४) अमति जानाति प्राप्नोति येन तत् अन्त्रम् । उदरनाड़ी वा । चीयते तत् चित्रम् । चित्रा नक्षत्रं वा । चैत्रो मासः । मिनोति मान्यं करोतीति मित्रम् । सुहृद्वा । नित्यं नपुंसकम् । क्वचित् पुंल्लिङ्गी वा । शत्रो मित्र इत्यादिषु । अयं मित्रम् । इयं मित्रम् । शोभनानि मित्राण्यस्याः सन्तीति सुमित्रा तस्या अपत्यं सौमित्रिः । बाह्वादित्वादिञ् । शंसति हिनस्तीति येन तत् शस्त्रम् । आयुधं वा ॥

(१६५) पुनाति पवित्रं करोतीति पुत्रः । आत्मजो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्यायतेर्ड्रट् ॥ १६६ ॥ स्त्री ॥ १६६ ॥

गुधृवीपचिवचियमिसदिक्षदिभ्यः त्रः ॥ १६७ ॥ गोत्रम् । गोत्रम् । गोत्रा । धर्त्रम् । वेत्रम् । पक्त्रम् । वक्त्रम् । यन्त्रम् । सत्रम् । क्षत्रम् ॥ १६७ ॥

हुयामाश्रुभसिभ्य स्त्रन् ॥ १६८ ॥ होत्रम् । यात्रा । मात्रा । श्रोत्रम् । भस्त्रा ॥ १६८ ॥

गमेरा च ॥ १६९ ॥ गात्रम् ॥ १६९ ॥

दादिभ्यश्छन्दसि ॥ १७० ॥ दात्रम् । पात्रम् ॥ १७० ॥

भूवादिगृभ्यो णित्रन् ॥ १७१ ॥ भावित्रम् । वादित्रम् । गारित्रम् ॥ १७१ ॥

---

(१६६) स्त्यायति शब्दयति गुणान् गृह्णाति वा सा स्त्री । प्रसिद्धा भार्य्या वा ॥

(१६७) गवते शब्दयत इति गोत्रम् । नामवंशो वा । गोत्रा पृथिवी । धरतीति धर्त्रम् । गृहं वा । वेति गच्छतीति वेत्रम् । लताविशेषो वा । पचति येन यत्र वा तत् पक्त्रम् । गार्हपत्यं वा । वक्ति येन तद् वक्त्रम् । मुखं वा । यच्छति उपरमति येन तद्यन्त्रम् । कलाविशेषो वा । सीदन्ति यत्रेति सत्रम् । यज्ञो वा । सतः सत्पुरुषान् त्रायते तत् सत्रमिति व्युत्पत्यन्तरम् । क्षद सौत्रो धातुः । क्षदति रक्षतीति क्षत्रम् । वर्णभेदो वा । क्षतात्त्रायत इत्यपि ॥

(१६८) हूयत इति होत्रं होमः । यायत इति यात्रा गमनं वा । मातीति मात्रा । मानं भूषणं वा । श्रूयतेऽनेन तत् श्रोत्रम् । कर्णं वा । बिभस्ति दीप्यते यया सा भस्त्रा । अग्निज्वलनी वा ॥

(१६९) गच्छति चेष्टतेऽनेनेति गात्रम् । अवयवः शरीरं वा ॥

(१७०) दाति लुनाति तत् दात्रम् । धान्यादिच्छेदनसाधनं वा । पिबत्यनेनेति पात्रम् । योग्यो भाजनं वा । पूर्वत्रापि पात्रमिति साधितम् । तत्र प्रत्ययस्य षित्वात्पात्री । ब्राह्मणीत्यपि साधितम् । क्षयति नश्यति निवासहेतुर्भवतीति क्षेत्रम् । केदारः कलत्रं वा । एवमन्येपि शब्दा द्रष्टव्याः ॥

(१७१) भवतीति भावित्रम् । लोकत्रयी वा । वाद्यते तद्वादित्रम् । तूर्यादिर्वा । गीर्य्यते भक्ष्यते तद् गारित्रम् । ओदनो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरेर्वृत्ते ॥ १७२ ॥ चारित्रम् ॥ १७२ ॥

अशित्रादिभ्य इत्रोत्रौ ॥ १७३ ॥ अशित्रम् । वहित्रम् । धरित्री । त्रोत्रम् । वस्त्रम् ॥ १७३ ॥

अमेर्द्विषति चित् ॥ १७४ ॥ अमित्रः ॥ १७४ ॥

आः समिण्निकषिभ्याम् ॥ १७५ ॥ समया । निकषा ॥ १७५ ॥

चितेः कणः कश्च ॥ १७६ ॥ चिक्कणम् ॥ १७६ ॥

सूचेः स्मन् ॥ १७७ ॥ सूक्ष्मम् ॥ १७७ ॥

पातेर्डुम्सुन् ॥ १७८ ॥ पुमान् ॥ १७८ ॥

रुचिभुजिभ्यां किष्यन् ॥ १७९ ॥ रुचिष्यम् । भुजिष्यः ॥ १७९ ॥

(१७२) चरतीति चारित्रम् । वृत्तान्तं समाचारो वा । इत्रच्प्रत्यये चरित्रं सुशीलम् ॥

(१७३) अश्यादिभ्यः इत्रः अश्नुते व्याप्नोतीति अशित्रम् । चरुर्वा । कटतीति कटित्रम् । कवचभेदो वा । वहति येन तद्वहित्रम् । वाहनं वा । बध्नातीति बधित्रम् । कामो वा । धरतीति धरित्री । पृथिवी वा । त्रादिभ्य उत्रः । त्रायते येन तत् त्रोत्रम् । प्रहारो वा । लुनाति छिनत्ति येन तल्लोत्रम् । चौरचिह्नं वा । वृणोतीति वस्त्रम् । प्रावरणं वा ॥

(१७४) शत्रौ वाच्येऽमेरित्रः । अमति गच्छतीति अमित्रः । शत्रुः ॥

(१७५) समेतीति समया । निकषति हिनस्तीति निकषा । समीपवाचकौ वा । स्वरादिपाठादनयोरव्ययत्वम् । बाहुलकाद् दीव्यतीति दिवा । दिनं वा । दुष्यतीति दोषा । रात्रिर्वा । अनयोरपि तत्रैव पाठादव्ययत्वम् । स्वदते स्वादुक्रियते या सा स्वधा । न्यायेनैश्वर्यक्रिया तृप्तिर्वा । धातोर्दस्य धः ॥

(१७६) चेतति जानाति येन तत् चिक्कणम् । स्निग्धं वा ॥

(१७७) सूचयति पैशुन्यं करोतीति सूक्ष्मम् । अत्यल्पं वा ॥

(१७८) पाति रक्षतीति । पुमान् । पुमांसौ । पुमांसः । असुङादिकार्यम् । शोभनः पुमान् यस्याः सा सुपुंसी । असुङ उगित्वान् ङीप् ॥

(१७९) रोचते तत्, रुचिष्यम् । इष्टं वा । भुनक्तीति भुजिष्यः । दासी वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसेस्तिः ॥ १८० ॥ वस्तिः ॥ १८० ॥

स्वावसेः ॥ १८१ ॥ स्वस्ति ॥ १८१ ॥

वौ तसेः ॥ १८२ ॥ वितस्तिः ॥ १८२ ॥

पदिप्रथिभ्यां नित् ॥ १८३ ॥ पत्तिः । प्रथितिः ॥ १८३ ॥

दृणातेर्ह्रस्वः ॥ १८४ ॥ दृतिः ॥ १८४ ॥

कृतॄकृपिभ्यः कीटन् ॥ १८५ ॥ किरीटम् । तिरीटम् । कृपीटम् ॥ १८५ ॥

रुचिवचिकुचिकुटिभ्यः कितच् ॥ १८६ ॥ रुचितम् । उचितम् । कुचितम् । कुटितम् ॥ १८६ ॥

(१८०) वस्त आच्छादयतीति सा वस्तिः । वसनस्य दशा कोणो नाभेरधोभागो वा । बाहुलकात् । शास्ति शिक्षत इति शास्तिः । राजदण्डो वा । यजतीति यष्टिः यष्टी वा । काष्ठदण्डो वा । अस्यते क्षिप्यते या सा, अस्तिः । अगं वृक्षमस्यत्युत्पाटयति स, अगस्तिः । मुनिर्वा । तस्यापत्यमागस्त्यः । शकन्ध्वादित्वाच्च पररूपम् । पुलं महत्वमसते गच्छति प्राप्नोतीति पुलस्तिः । ऋषिर्वा । तस्यापत्यं पौलस्त्यः । गभमन्धकारमस्यतीति गभस्तिः किरणो वा । दूयते परितापयतीति दूतिः । दूती वा । इतस्ततः समाचारज्ञापिका स्त्री वा ॥

(१८१) सुष्ठु, अस्ति वर्त्तत इति स्वस्ती कल्याणं वा । बहुलवचनाद् भूभावनिषेधः । स्वरादित्वादव्ययत्वं च ॥

(१८२) विशेषेण तस्यत्युपक्षिपति वा सा वितस्तिः । द्वादशाङ्गुलं परिमाणं वा ॥

(१८३) पद्यते गच्छत्यसौ पत्तिः । पदातिः पुरुषो वा । प्रथ्यते या सा प्रथितिः । प्रख्यातिर्वा । तितुत्रे ति सूत्रेऽग्रहादीनामिति वार्त्तिकेनेट् ॥

(१८४) दीर्यतेऽसौ दृतिः चर्ममयं पात्रं वा ॥

(१८५) किरति विक्षिपतीति किरीटम् मुकुटं शिरोवेष्टनं वा । तरतीति तिरीटम् । शिरोवेष्टनं लोध्रो वा कल्पतेऽसौ कृपीटम् । कुक्षिरुदकं वा । बाहुलकादत्र लत्वाभावः ॥

(१८६) रोचते तत्, रुचिरम् । मिष्टं वा । वक्तुं योग्यमुचितम् । योग्यं वा । कोचति अस्तारं करोतीति कुचितम्, परिमितम् वा । कुटतीति कुटितम् कुटिलं वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुटिकुषिभ्यां क्मलन् ॥ १८७ ॥ कुट्मलम् । कुष्मलम् ॥ १८७ ॥
कुषेर्लश्च ॥ १८८ ॥ कुल्मलम् ॥ १८८ ॥
सर्वधातुभ्योऽसुन् ॥ १८९ ॥ चेतः । सरः । सदः ॥ १८९ ॥
रपेरत एच्च ॥ १९० ॥ रेपः ॥ १९० ॥
अशेर्देवने युट् च ॥ १९१ ॥ यशः ॥

(१८७) कुटतीति कुड्मलम् मुकुलम् (फूलती हुई कली) इतिप्रसिद्धम् । कुष्णाति निष्कर्षतीति कुष्मलम् । पर्णं वा ॥

(१८८) कुष्णातीति कुल्मलम् । पापं वा ॥

(१८९) वर्चते दीप्यतेऽसौ वर्चः । तेजः पुरीषं वा । रक्षतीति रक्षः । पालको दुष्टो वा । प्रज्ञादित्वादणि स एव राक्षसः । रुणद्धि येन स रोधः । तटो वा । चेतति जानाति येन तत्, चेतः । चित्तं वा । सरन्ति गच्छन्त्यपो यत्र तत् सरः । तडागो वा । स्त्रीत्वविवक्षायां गौरादित्वात्सरसी महासरो वा । सरस्वान् समुद्रः । सरोविज्ञानमुदकं वा विद्यतेऽस्यां सा सरस्वती वाक् नदी वा । रोदतीति रोदः । गौरादित्वाद्रोदसी द्यावापृथिव्यौ वा । वेति गच्छतीति वयः कालकृताऽवस्था वा । अथवा वेति खादतीति वयो वय एव वायसः काकः । प्रज्ञादित्वादण् । सीदन्त्यत्रेति सदः सभा वा । एति प्राप्नोतीति, अयः । लोहं वा । अयः कामयतेऽसावयस्कान्तश्चुम्बक मणिः । अनिति जीवति येनेति, अनः । ओदनं पक्वान्नं वा । अनो महत्सम्पद्यते यत्र तन्महासनम् । पाकस्थानम् । समासान्तष्टच् । ताम्यति काङ्क्षति येन तत् तमः । गुणः क्लेशोराचिरन्धकारो वा । तमश्शब्दोऽच्प्रत्ययान्तोऽदन्तोऽपि दृश्यते । महति पूजयति पूज्यो भवति वेति महः । महहा । महसी । महांसि । अच् प्रत्ययेऽकारान्तोऽपि । सहते यत्रेति सहः । बलं मार्गशीर्षो वा । सहसा बलेन सह प्रवर्त्तते स साहसिको दस्युर्दुष्टकर्मा वा । सहो बलं विद्यते यत्रेति सहस्यः पौषो मासः । तपति दुःखी भवति तप्यते समर्थो वा भवति येन तत् तपः । धर्मसेवनं माघमासो वा । तपसि साधुस्तपस्यः फागुनो मासः । ग्रीष्मेऽकारान्तस्तपशब्दः । मिमीते येन समाः । मासो वा । इत्यादि ॥

(१९०) रप्यत उच्यत इति रेपः । अवद्यं वचो वा । बहुलवचनादन्यत्रापि । पीयते तत् पयः । उदकं दुग्धं वा । पयोऽस्या अस्तीति पयस्विनी गौः । पयस्वी तड़ागः । विनिः । धातोरीत्वम् । पुनर्गुणोऽसत्ययादेशः ॥

(१९१) अश्यते दीव्यते क्रीडादि क्रियते येन तत्, यशः । कीर्त्तिर्वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उब्जेर्बले बलोपश्च ॥ १९२ ॥ ओजः ॥ १९२ ॥
श्वेः सम्प्रसारणं च ॥ १९३ ॥ शवः ॥ १९३ ॥
श्रयतेः स्वाङ्गे शिरः किच्च ॥ १९४ ॥ शिरः ॥ १९४ ॥
अर्त्तेरुच्च ॥ १९५ ॥ उरः ॥ १९५ ॥
व्याधौ शुट् च ॥ १९६ ॥ अर्शः ॥ १९६ ॥
उदके नुट् च ॥ १९७ ॥ अर्णः ॥ १९७ ॥
इण आगसि ॥ १९८ ॥ एनः ॥ १९८ ॥
रिचेर्धने घिच्च ॥ १९९ ॥ रेक्णः ॥ १९९ ॥
चायतेरन्ने ह्रस्वश्च ॥ २०० ॥ चनः ॥ २०० ॥
वृङ्शीङ्भ्यां रूपस्वाङ्गयोः पुट् च ॥ २०१ ॥ वर्पः ॥ शेपः ॥ २०१ ॥

(१९२) उब्जति कोमलो भवतीति, ओजः । पराक्रमो वा । ओजसा वर्त्तते, औजसिकः । ठक् ॥

(१९३) श्वयति गच्छतीति शवः । मृतकशरीरं वा । बाहुलकात् । वहति यत इति ऊधः । गवादेर्दुग्धस्थानं वा । धातोः सम्प्रसारणे कृते दीर्घत्वं धकारश्चान्तादेशः घट इवोधो यस्याः सा घटोध्नी कुण्डोध्नी । गौर्महिषी वा ॥

(१९४) श्रीयत आश्रीयते तत् शिरः । मस्तकम् । शिरसी । शिरांसि ॥

(१९५) स्वाङ्ग इत्यनुवर्त्तते । ऋच्छति प्राप्नोति येन तत्, उरः । हृदयस्थानं वा । पिच्छादित्वादिलच् । बहूरोऽस्यास्तीत्युरसिलः ॥

(१९६) ऋच्छति प्राप्नोति दुःखं येन तत्, अर्शः । गुदरोगो वा । अर्शोऽस्यास्तीत्यर्शसः पुमान् । अर्श आदित्वादच् ॥

(१९७) अर्त्तेरित्येव । ऋच्छति गच्छतीत्यर्णो जलम् अर्णोऽस्मिन्नस्तीत्यर्णवः समुद्रः । वप्रत्यये सलोपः ॥

(१९८) ईयते प्राप्यते दुःखमनेन तदेनः पापं वा ॥

(१९९) रिणक्ति व्ययं करोति यत् तत् रेक्णः । सुवर्णं वा । घित्वात्कुत्वम् ॥

(२००) चायते पूज्यतेऽनेन तत् चनो भक्तम् प्रत्ययस्य नुडागमे सति यलोपो ह्रस्वश्च

(२०१) व्रियते स्वीक्रियते तत् वर्पो रूपम् । शेते येन तत् शेपः । लिङ्गेन्द्रियं वा । अकारान्तोऽपि मेढ्रवाची शेपशब्दो दृश्यते । शुन इव शेपोऽस्य स शुनःशेपो मुनिः । षष्ठ्या अलुक् । बाहुलकात् । वर्णव्यत्यये वर्फः शेफ इत्यपि सिद्धम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्रुरीभ्यां तुट् च ॥ २०२ स्रोतः । रेतः ॥ २०२ ॥
पातेर्बले जुट् च ॥ २०३ ॥ पाजः ॥ २०३ ॥
उदके थुट् च ॥ २०४ ॥ पाथः ॥ २०४ ॥
अन्ने च ॥ २०५ ॥ पाथः ॥ २०५ ॥
अदेर्नुम्धौ च ॥ २०६ ॥ अन्धः ॥ २०६ ॥
स्कन्देश्च स्वाङ्गे ॥ २०७ ॥ स्कन्धः ॥ २०७ ॥
आपः कर्माख्यायां ह्रस्वो नुट् च वा ॥२०८॥ अप्नः । अपः । आपः ॥ २०८ ॥
रूपे जुट् च ॥ २०९ ॥ अब्जः ॥ २०९ ॥
उदके नुम्भौ च ॥ २१० ॥ अम्भः ॥ २१० ॥
नहेर्दिवि भश्च ॥ २११ ॥ नभः ॥ २११ ॥

(२०२) स्रवति चलतीति स्रोतः । स्रती जलचरणं वा । रीयते स्रवतीति रेतः । वीर्यं वा ॥

(२०३) पाति रक्षतीति पाजः बलं वा ॥

(२०४) पातेरेव । पातीति पाथो जलम् ॥

(२०५) थुट् । पाति रक्षतीति पाथो भक्तम् ॥

(२०६) अन्न इत्यनुवर्त्तते । अद्यते भक्ष्यते तदन्धोऽन्नमोदनो वा ॥

(२०७) स्कन्दति गच्छति चेष्टते शुष्यति वा येन तत्स्कन्धो बाहुमूलं वृक्षावयवो वा । अकाराऽन्तोप्ययम् ॥

(२०८) आप्यते सुखं येन तत्, अप्नः । अपः । अपत्यं सुकर्म वा ह्रस्वस्यापि विकल्पे । आप इत्यपि भवति आपोभिर्मार्जनमित्यादि सत्प्रयोगदर्शनात् ॥

(२०९) आप इत्येव । आप्यते यत्, तद अब्जो रूपम् । अद्भ्यो जात इति निर्वचने अब्जः कमलं वा ॥

(२१०) आप इत्येव । आप्यते तत्, अम्भः । उदकम् । अम्भसा वर्तत इत्याम्भसिको मत्स्यः ॥

(२११) नह्यति घर्मं बध्नातीति नभो मेघधूल्यादियुक्त आकाशः श्रावणमासो वा । नभोऽस्मिन् शुद्धमस्तीति नभस्यो भाद्रो मासः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूयो आगोऽपराधे च ॥ २१२ ॥ आगः ॥ २१२ ॥

अमेर्हुक् च ॥ २१३ ॥ अंहः ॥ २१३ ॥

रमेश्च ॥ २१४ ॥ रंहः ॥ २१४ ॥

देशे ह च ॥ २१५ ॥ रहः ॥ २१५ ॥

अञ्च्यञ्जियुजिभृजिभ्यः कुश्च ॥२१६॥ अङ्कः । अङ्गः । योगः । भर्गः ॥ २१६ ॥

भूरञ्जिभ्यां कित् ॥ २१७ ॥ भुवः । रजः ॥ २१७ ॥

वसेर्णित् ॥ २१८ ॥ वासः ॥ २१८ ॥

चन्देरादेश्च छः ॥ २१९ ॥ छन्दः ॥ २१९ ॥

(२१२) हूयते प्राप्यते त्यायते वा तत्, आगोऽपराधो दण्डो वा ॥

(२१३) अमन्ति प्राप्नुवन्ति दुःखं येन तत्, अंहः । पापं वा ॥

(२१४) चात्—हुक् । रमते येन तत् रंहः । वेगो वा ॥

(२१५) चाद्रमेरसुन् । रमन्तेऽस्मिन्निति रहः । एकान्तो विश्वासदेशो वा । रह एकान्ते भवं रहस्यं वेदान्तं वा । देशादन्यत्र रहोऽव्ययं शब्दान्तरं वास्ति । रहो मैथुनसमयस्तत्र भवं रहस्यं मैथुनम् । दिगादित्वाद्यत् ॥

(२१६) अञ्चति गच्छति येन तत् अङ्कः । संख्याद्योतकं चिन्हं वा । अनक्ति व्यक्तीकरोतीति अङ्गः । पक्षी वा । अवयवेऽङ्गशब्दोऽदन्तः । युज्यते स योगः । समाधिः कालो वा । भर्जति पक्वं भवतीति भर्गः । प्रजापतिः तेजो वा । बाहुलकात् उच्यते यत्र तत् ओकः । स्थानं वा । न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम् ॥

(२१७) भवन्ति यस्मिन्निति भुवः । अन्तरिक्षं वा । रजति तत् रजः । लोकः । सूक्ष्मधूलिः । स्त्रीपुष्पं गुणो वा । आकारान्तश्च ॥

(२१८) वस्त आच्छादयति शरीरादिकमनेन तत् । वासो वस्त्रं वा । असुनो णिद्वद्भावाद्वृद्धिः ॥

(२१९) चन्दति हृष्यति येन दीप्यते वा तत् छन्दः । गायत्र्यादि कपटमिच्छाऽभिप्रायो वशो वा । छन्दानुवृत्तिः । इत्यादि प्रयोग दर्शनादकारान्तोऽप्ययं शब्द इति मन्तव्यम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पचिवचिभ्यां सुट् च ॥ २२० ॥ पच्चः । वच्चः ॥ २२० ॥

वहिहाधाञ्भ्यश्छन्दसि ॥२२१॥ वक्षाः।हासाः ।धासाः॥२२१॥

इणश्चासिः ॥ २२२ ॥ अयाः ॥ २२२ ॥

मिथुनेऽसिः ॥ २२३ ॥ सुपयाः । सुयशाः ॥ २२३ ॥

नञि हन एह च ॥ २२४ ॥ अनेहाः ॥ २२४ ॥

विधाञो वेध च ॥ २२५ ॥ वेधाः ॥ २२५ ॥

नुवो धुट् च ॥ २२६ ॥ नोधाः ॥ २२६ ॥

गतिकारकयोः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं च ॥ २२७ ॥ सुतपाः । जातवेदाः ॥ २२७ ॥

(२२०) पचतीति पच्चः । पूर्वोत्तरपक्षौ वा । वक्ति येन तद्वच्चः । हृदयं वा ॥

(२२१) सुट् । वहति भारमिति वक्षाः । अनड्वान् वा । हीयते हीनो भवतीति हासाः । चन्द्रमा वा । दधातीति धासाः । पर्वतो वा ॥

(२२२) एति प्राप्नोति अयाः । अग्निर्वा । स्वरादिपाठादव्ययम् । अत एव दीर्घादिरासिः प्रत्ययः ॥

(२२३) यत्रोपसर्गो धातुक्रियया संयुक्तस्तन्मिथुनम् । तत्र सति येभ्यो धातुभ्योऽसुन् विधीयते तेभ्यः सर्वेभ्योऽसिरेव स्यात् । स्वरभेदार्थं सूत्रमिदम् । सुपयाः । सुतपाः । सुपेशाः । न्योजाः । सुजवाः । सुस्रोताः । इत्यादयो द्रष्टव्याः ॥

(२२४) न हन्यते विच्छिन्नो न भवतीत्यनेहाः । कालो वा । अनेहसौ । अनेहसः ॥

(२२५) विशेषेण दधातीति वेधाः । वेधसौ । वेधसः । वेधसम् । विद्वान् विधाता जगदीश्वरो वा ॥

(२२६) नौति स्तौति नूयते स्तूयते वा स नोधाः । ऋषिर्वा ॥

(२२७) गतिकारकोपपदाद्धातोरसिः प्रत्ययो भवति तस्मिन् सति गतिकारकयोः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम् । उत्तरपदप्रकृतिस्वरस्यापवादः । सुतपाः । सुतेजाः । सुवचाः । कारके । उग्रतेजाः । हिरण्यरेताः । जातवेदाः । सर्ववेदाः । विश्ववेदाः । हृद्भ्यः शृणोतीति हृद्श्रवाः । विष्ठर आसने शृणोतीति विष्टरश्रवाः । इत्यादि ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रे मो डित् ॥ २२८ ॥ चन्द्रमाः ॥ २२८ ॥

वयसि धाञः ॥ २२९ ॥ वयोधाः ॥ २२९ ॥

पयसि च ॥ २३० ॥ पयोधाः ॥ २३० ॥

पुरसि च ॥ २३१ ॥ पुरोधाः २३१ ॥

पुरूरवाः ॥ २३२ ॥

चक्षेर्बहुलं शिच्च ॥ २३३ ॥ नृचक्षाः । २३३ ॥

उषः किच्च ॥ २३४ ॥ उषः । २३४ ॥

दमेरुनसिः ॥ २३५ ॥ दमुनाः । २३५ ॥

अङ्गेरसिः ॥ २३६ ॥ अङ्गिराः । २३६ ॥

(२२८) चन्द्रमानन्दं मिमीतेऽसौ चन्द्रमाः । सोमो वा । चन्द्रमसौ । चन्द्रमसः ॥

(२२९) वयो दधातीति वयोधाः । तरुणो वा ॥

(२३०) धाञ इत्येव । पयो दधातीति पयोधाः । समुद्रो वा । मेघविशेषः स्तनो वा ॥

(२३१) धाञ इत्येव । पुरोऽग्रे यजमानं दधातीति पुरोधाः । पुरोहितो वा ॥

(२३२) पुरु बहु रौत्युपदिशति ब्रवीति वा स पुरूरवाः । राजर्षिर्वा ॥

२३३) विशेषेण चष्टेऽसौ विचक्षाः । उपाध्यायो वा नॄन् चष्टे पश्यति ख्याति वा स नृचक्षाः । ईश्वरो द्रष्टा वा । शित्त्वाभावपक्षे । आचष्टेऽसौ । आख्याः । प्रख्याः प्रजापतिर्वा ॥

(२३४) असिः । श्रोषति । दहतीति, उषः । कर्णछिद्रं पर्वतभेदः स्त्रियां सूर्योदयात्प्राक् प्रभातप्रकाश उषा वा । उषः काले बुध्यत इत्युषर्बुधः । अग्निर्बालः संयमी वा । कप्रत्ययान्ताट्टापि कृते । उषा रात्रिरित्यपि भवति ॥

(२३५) दाम्यत्युपशमयतीति दमुनाः । अग्निर्वा ॥

(२३६) अङ्गति प्राप्नोति जानाति वा स, अङ्गिराः । ईश्वरोऽग्निर्ऋषिभेदो वा । तस्यापत्यमाङ्गिरसः । असिप्रत्ययस्य इडागमः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्सराः ॥ २३७ ॥

विदिभुजिभ्यां विश्वेऽसिः ॥२३८॥ विश्ववेदाः । विश्वभोजाः ।

वशेः कनसिः ॥ २३९ ॥ उशनाः । २३९ ॥

इत्युणादिषु चतुर्थः पादः ॥

---o---

अदिभुवो डुतच् ॥ १ ॥ अद्भुतम् । १ ॥

गुधेरूमः ॥ २ ॥ गोधूमः । २ ॥

मसेरूरन् ॥ ३ ॥ मसूरा । ३ ॥

स्थः किच्च ॥ ४ ॥ स्थूरः । ४ ॥

पातेरतिः ॥ ५ ॥ पातिः । ५ ॥

(२३७) अप्सरति विरुद्धं गच्छतीत्यप्सराः । उपसर्गान्त्यलोपः । अथवाऽप्सु जलेषु प्राणेषु वा सरन्तीत्यप्सरसः । किरणा वा । अथवा न प्सान्ति भक्षयन्ति रक्षां कुर्वन्तीत्यप्सरसः । प्रत्ययस्य रुट् । नित्यबहुवचनान्तः स्त्रीलिङ्गश्च ॥

(२३८) विश्वं सर्वं वेत्ति जानातीति विश्ववेदाः जगदीश्वरो वा । विश्वे विद्यते विश्वं वा विन्दति स विश्ववेदाः । अग्निर्वा । विश्वं भुनक्ति प्रलयसमये कारणरूपेण स्वात्मनि स्थापयति वा विश्वं पालयतीति विश्वभोजाः । ईश्वरो राजा वा ॥

(२३९) वष्टि कामयते स उशनाः । शुक्रवारो वा । संप्रसारणादिकार्यम् ॥

इत्युणादिव्याख्यायां वैदिकलौकिककोषे चतुर्थः पादः ॥

---o---

(१) अदित्यव्ययं कदाचिदर्थे । अद् भवतीत्यद्भुतम् । आश्चर्यम् । अद्भुतमधीते । अद्भुताध्यापकः ॥

(२) गुध्यति वेष्टयतीति गोधूमः । अन्नविशेषो वा । गोधूमस्य विकारो गोधूममयः ।

(३) मस्यति परिणमतेऽसौ मसूरा । व्रीहिभेदो वेश्या वा ॥

(४) तिष्ठतीति स्थूरः । मनुष्यो वा । तस्यापत्यं स्थौर्य्यः ॥

(५) पाति रक्षतीति पातिः स्वामी । सम्पातिः पक्षिराजो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातेर्नित् ॥ ६ ॥ वातिः । ६ ॥

अर्त्तेश्च ॥ ७ ॥ अरतिः । ७ ॥

तृहेः क्नो हलोपश्च ॥ ८ ॥ तृणम् । ८ ॥

वृञ्‌ लुठितमिताडिभ्य उलच् तण्डश्च ॥ ९ ॥ तण्डुलाः ॥ ९ ॥

दंसेष्टटनौ न आ च ॥ १० ॥ दासः । १० ॥

दाशेश्च ॥ ११ ॥ दाशः । ११ ॥

उदि चेर्डैसिः ॥ १२ ॥ उच्चैः । १२ ॥

नौ दीर्घश्च ॥ १३ । नीचैः । १३ ॥

सौ रमे क्तो दमे पूर्वपदस्य च दीर्घः ॥ १४ ॥ सूरतः ॥ १४ ॥

पूञो यण् णुग्ह्रस्वश्च ॥ १५ ॥ पुण्यम् ॥ १५ ॥

(६) वाति गच्छतीति वातिः सूर्यश्चन्द्रो वा ॥

(७) अर्यते गम्यते सा अरतिः । उद्वेगो वा ॥

(८) तृह्यते हन्यते तत्, तृणम् । प्रसिद्धमेव ॥

(९) व्रियन्ते लुठ्यन्ते तन्यन्ते ताड्यन्ते वा ये तण्डुलाः प्रसिद्धा वा वृञादीनां स्थाने तण्डादेशः ॥

(१०) दंसयन्ति दशति पश्यति वा स दासः । सेवकः शूद्रो वा । टित्वान् ङीप् । दासी । नकारस्याकारः । नित्करणं पक्ष आद्युदात्तार्थम् ॥

(११) टटनौ नकारस्य चात्वम् । दशति मत्स्यादिकमिति दाशो धीवर-स्त्रियां दाशी । धीवरी ॥

(१२) उच्चीयते वर्ध्यतेऽसावुच्चैः । महान् वा । स्वरादित्वादव्ययम् ॥

(१३) चेरित्येव । निचीयत इति नीचैः । अधोऽधमो वा । अस्यापि स्वरादित्वा-देवाव्ययत्वम् ॥

(१४) सुष्ठु रमत इति सूरतः । उपशान्तः कृपालुर्वा । दमार्थादन्यत्र सुरतः । क्रीडायुक्तः ॥

(१५) पवते पवित्रो भवति येन तत् पुण्यम् । सुकृतो धर्मो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्रंसेः शिः कुट् किच्च ॥ १६ ॥ शिक्यम् ॥ १६ ॥

अर्त्तेः क्युरुच्च ॥ १७ ॥ उरणः ॥ १७ ॥

हिंसेरीरन्नीरचौ ॥ १८ ॥ हिंसीरः ॥ १८ ॥

उदि दृणातेरजलचौ पूर्वपदान्त्यलोपश्च ॥ १६ ॥ उदरम् ॥

डित्खनेर्मुट् चोदात्तः ॥ २० ॥ मुखम् ॥ २० ॥

अमेः सन् ॥ २१ ॥ अंसः ॥ २१ ॥

मुहेः खो मूर्च ॥ २२ ॥ मूर्खः ॥ २२ ॥

नहेर्हलोपश्च ॥ २३ ॥ नखम् ॥ २३ ॥

शीङो ह्रस्वश्च ॥ २४ ॥ शिखा ॥ २४ ॥

(१६) स्रंसते गच्छतीति शिक्यम् । काचः छींका इति प्रसिद्धः । तत्र धृतं वस्तु शैक्यम् ॥

(१७) ऋच्छति गच्छतीति उरणः । मेषो वा ॥

(१८) हिनस्तीति हिंसीरः । व्याघ्रो दुष्टो वा । प्रत्ययद्वयं स्वरभेदार्थम् ॥

(१६) उद् दृणाति येनान्नमिति, उदरम् । कुक्षिस्थानम् । प्रत्ययभेदोऽत्रापि स्वरभेदार्थः ॥

(२०) खनेरलचौ । तयोर्डित्त्वं धातोर्मुडागमश्च । तस्योदात्तत्वम् । खनत्यवादिकमनेनेति मुखमास्यम् मुखे भवो मुख्यो रोगः । शरीरावयवाद्यत् । मुखमिवोत्तमं मुख्यम् । शाखादित्वादिवार्थे यः ॥

(२१) अमति गच्छति प्राप्नोति येन स, अंसः । स्कन्धो विभागो वा । अंसोऽस्यास्तीत्यंसलः ॥

(२२) मुह्यति विचित्त इव भवतीति मूर्खः । मूर्खस्य भावो मौर्ख्यं मूर्खिमा वा । बाहुलकात् खस्येनादेशाभावः ॥

(२३) नह्यति बध्नाति रुधिरादिकमिति नखः प्राण्यङ्गं वा ॥

(२४) खः । शेतेऽसौ शिखा । चूड़ा केशभेदो ज्वाला वा ह्रस्वविधानसामर्थ्याद् गुणाऽभावः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माङ ऊखो मय च ॥ २५ ॥ मयूखः ॥ २५ ॥

कलिगलिभ्यां फगस्योच्च ॥ २६ ॥ कुल्फः । गुल्फः ॥ २६ ॥

स्पृशेः श्वण्शुनौ पृ च ॥ २७ ॥ पार्श्वः । पर्शुः ॥ २७ ॥

श्मनि श्रयतेर्डुन् ॥ २८ ॥ श्मश्रु ॥ २८ ॥

अश्नोतेरश्च ॥ २९ ॥ अश्रु ॥ २९ ॥

जनेष्टन् नलोपश्च ॥ ३० ॥ जटा ॥ ३० ॥

अच् तस्य जङ्घ च ॥ ३१ ॥ जङ्घा ॥ ३१ ॥

हन्तेः शरीरावयवे द्वे च ॥ ३२ ॥ जघनम् ॥ ३२ ॥

क्लिशेरन्लो लोपश्च ॥ ३३ ॥ केशः ॥ ३३ ॥

फलेरितजादेश्च पः ॥ ३४ ॥ पलितम् ॥ ३४ ॥

(२५) मिमीते मान्यहेतुर्भवतीति मयूखः । किरणः कान्तिः करो ज्वाला वा ॥

(२६) कलति संख्यातीति कुल्फः । शरीरावयवो रोगो वा । गलति भक्षयतीति गुल्फः । पादग्रंथिर्वा ॥

(२७) स्पृशति येन स पार्श्वः । कक्षयोरधोभागो वा । पर्शुः । आयुधं वा ॥

(२८) श्मनि मुखे श्रयतीति, श्मश्रु । श्मश्रुणी । श्मश्रूणि । पुरुषमुखरोमाणि वा ॥

(२९) अश्नुते व्याप्नोतीति, अश्रु नेत्रजलं वा । क्रुन् प्रत्ययो रुडागमश्च । एवमन्येऽपि यथायोग्यं द्रष्टव्याः ॥

(३०) जायतेऽसौ जटा । दीर्घाः केशा वा । जटा अस्य सन्तीति जटालः । सिध्मादित्वाल्लच् । जटिलः । पिच्छादित्वादिलच् ॥

(३१) तस्य जनेः । जायतेऽसौ जङ्घा । जानोरधोभागो वा ॥

(३२) हन्ति येन यो वा हन्यते तज्जघनम् । जानोरुपरिभागो वा । इवार्थे शाखादित्वाद्यः । जघनमिव जघन्यं नीचम् ॥

(३३) क्लिश्यति येन स केशः । शिरलोमानि वा । केशा अस्य सन्तीति केशवः केशिकः । केशी ॥

(३४) फलति निष्पन्नं पक्वमिव भवतीति पलितम् । केशश्वैत्यं वा । फस्य पः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृञादिभ्यः संज्ञायाम् ॥ ३५ ॥ करकः । कटकः । नरकः । कोरकः ॥ ३५ ॥

चीकयतेराद्यन्तविपर्ययश्च ॥ ३६ ॥ कीचकः । ३६ ॥

पचिमच्योरिच्चोपधायाः ॥ ३७ ॥ पेचकः । मेचकः । ३७ ॥

जनेररष्ठ च ॥ ३८ ॥ जठरम् । ३८ ॥

वचिमनिभ्यां चिच्च ॥ ३९ ॥ वठरः । मठरः । ३९ ॥

ऊर्जिदृणातेरलचौ ॥ ४० ॥ जर्दरः । ४० ॥

कृदरादयश्च ॥ ४१ ॥ कृदरः । मृदरः । स्रृदरः । ४१ ॥

हन्तेर्युन्नाद्यन्तयोर्घत्वतत्वे ॥ ४२ ॥ घतनः । ४२ ॥

(३५) करोतीति करकः करका । वृष्टिपाषाणो वा । करको दाडिमः कमण्डलुर्वा । कटति वर्षत्यावृणोति वा स कटकः । बाहुभूषणं शिखरो वा । नृणाति नयतीति नरकम् । पापभागो वा । सरति गच्छतीति सरकम् । गमनं वा । अलति भूषितो भवतीत्यलकम् । शीतादिकं वा । अलति वारयति येन तेऽलकाः । कुटिलाः केशा वा । कुरति शब्दयतीति
कोरकः । कलिका (कली) इति प्रसिद्धा ॥

(३६) चीकयते सहतेऽसौ कीचकः । वंशभेदो वा ॥

(३७) पचतीति पेचकः । उलूकपक्षी वा । मचते शब्दयतीति मेचकः । कृष्णवर्णो मयूरपक्षचिह्नं वा ॥

(३८) जायतेऽस्मादिति जठरम् । उदरं कठिनं वा ॥

(३९) अन्त्यस्य ठः वक्तीति वठरः । मूर्खो वा । मन्यतेऽसौ मठरः । मुनिभेदो मत्तो वा । तस्यापत्यं माठरः । माठर्यः ॥

(४०) ऊर्जं पराक्रमं रसं वा दृणातीति, जर्दरः । शूरो दुष्टो वा । स्वरभेदार्थं प्रत्ययद्वयम् ॥

(४१) कृत्स्नं दृणातीति कृदरः । कुशूलो वा । मृदं दृणातीति मृदरः व्याधिर्बिलं वा । सृष्टिं दृणातीति सृदरः सर्पः ॥

(४२) हन्तीति घतनः । मारको वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमिगमिक्षमिभ्यस्तुन् वृद्धिश्च ॥ ४३ ॥ क्रान्तुः । गान्तुः । क्षान्तुः । ४३ ॥

हर्यतेः कन्यन् हिरच् ॥ ४४ ॥ हिरण्यम् ॥ ४४ ॥

कृञः पासः ॥ ४५ ॥ कर्पासः । ४५ ॥

जनेस्तुरश्च ॥ ४६ ॥ जर्त्तुः ॥ ४६ ॥

ऊर्णोतेर्डः ॥ ४७ ॥ ऊर्णा । ४७ ॥

दधाते र्यन्नुट् च ॥ ४८ ॥ धान्यम् । ४८ ॥

जीर्यतेः क्रिन् रश्च वः ॥ ४९ ॥ जिव्रिः । ४९ ॥

मव्यतेर्यलोपो मश्चायतुट्चालः ॥ ५० ॥ ममायतालः ॥ ५० ॥

ऋजेः कीकच् ॥ ५१ ॥ ऋजीकः । ५१ ॥

(४३) क्रामति पादान् विक्षिपतीति क्रान्तुः । पक्षी वा । गच्छतीति गान्तुः । पथिको वा । आगान्तुरभ्यागतः । क्षमतेऽसौ क्षान्तुः । सहनशीलो वा ॥

(४४) हर्यते काम्यते तत्, हिरण्यम् । सुवर्णं वा ॥

(४५) क्रियत उत्पाद्यतेऽसौ कर्पासः सस्य भेदो वा । कर्पासस्य विकारः कार्पासं वस्त्रम् । बिल्वादित्वादण् ॥

(४६) जायते यत इति जर्त्तुः । उपस्थेन्द्रियं हस्ती वा ॥

(४७) ऊर्णोत्याच्छादयति यया सा, ऊर्णा । अविमेषयो रोमाणि वा । ऊर्णां याति प्राप्नोतीत्यूर्णायुः । मेषो मेषोर्णा कम्बलो वा । ऊर्णा इव नाभिरस्य स ऊर्णनाभः । समासान्तोऽच् ऊर्णनाभिरिति वा समासान्तस्य विधेरनित्यत्वात् । लूता हि वा ॥

(४८) दधाति पुष्णाति लोकानिति धान्यम् । व्रीहिर्वा । धाने पोषणे साधु धान्यमित्यपि ॥

(४९) यो जीर्यति येन वा स जिव्रिः । कालः पक्षी वा । हलिचेति बाहुलकाद्दीर्घाभावः ॥

(५०) मव्यति बध्नातीति ममायतालः । बन्धनहेतुर्विषयो वा ॥

(५१) ऋजति गच्छतीति, ऋजीकः । सूर्यो धूमो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनोतेर्डउः सन्वच्च ॥ ५२ ॥ तितउ ॥ ५२ ॥

अर्भकपृथुकपाका वयसि ॥ ५३ ॥

अवद्यावमाधमार्वरेफाः कुत्सिते ॥ ५४ ॥

लीरीङोर्ह्रस्वः पुट् च तरौ श्लेषणकुत्सनयोः ॥५५॥ लिप्तम्। रिप्रम् ॥ ५५ ॥

क्लिशेरीच्चोपधायाः कन् लोपश्चलो नाम् च ॥५६॥ कीनाशः।

अश्नोतेराशुकर्मणि वरट् च ॥ ५७ ॥ ईश्वरः ॥ ५७ ॥

चतेरुरन् ॥ ५८ ॥ चत्वारः ॥ ५८ ॥

प्रातेररन् ॥ ५९ ॥ प्रातः ॥ ५९ ॥

(५२) तनोति विस्तृणोति, येन तत् तितउ । चालनी पेषणशोधकपात्रम् ॥

(५३) ऋध्यति वर्धतेऽसावर्भकः ऋधुधातोर्वुन् धस्य भः । प्रथते वर्धते स पृथुकः । कुकन् प्रत्ययः सम्प्रसारणं च पिबतीति पाकः । कन् प्रत्ययः । अर्भकपृथुक पाका बालकपर्यायाः ॥

(५४) वदितुमयोग्यमवद्यम् । नञ्पूर्वाद्वद्धातोर्यत् । अवतीत्यवमः । अमः प्रत्ययः । तत्रैव वस्य धः । अधमम् । ऋच्छति गच्छतीत्यर्वा । वन् । अश्वो वा । रिफति निन्दतीति रेफः । कुत्सितपर्याया इमे ॥

(५५) लीयते श्लिष्यत इति लिप्तम् । श्लिष्टम् । रीयते तत्, रिप्रं कुत्सितम् । तरौ प्रत्ययौ पुडागमः ॥

(५६) क्लिश्नातीति कीनाशः । कृषीवलो न्यायाधीशो वा । धातोरुपधाया ईत्वं लकारलोपः कन् प्रत्ययो नामागमश्चान्त्यादचः परः ॥

(५७) अश्नुते, आशु शीघ्रं करोति जगद्रचयति स, ईश्वरः । स्वामी वा । टित्वादीश्वरी । वरच् प्रत्यये । ईश्वरा ॥

(५८) चतते याचतेऽसौ चतुः । संख्यावाची वा । चत्वारः । चतस्रः ॥

(५९) प्रकृष्टमतति गच्छतीति प्रातः । प्रभातकालो वा । स्वरादित्वादव्ययम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेस्तुट् च ॥ ६० ॥ अन्तः ॥ ६० ॥

दहेर्गो हलोपो दश्च नः ॥ ६१ ॥ नगः ॥ ६१ ॥

सिचेः संज्ञायां हनुमौ कश्च ॥ ६२ ॥ सिंहः ॥ ६२ ॥

व्याङि घ्रातेश्च जातौ ॥ ६३ ॥ व्याघ्रः ॥ ६३ ॥

हन्तेरच् घुर च ॥ ६४ ॥ घोरम् ॥ ६४ ॥

क्षमेरुपधालोपश्च ॥ ६५ ॥ क्ष्मा ॥ ६५ ॥

तरतेड्रिः ॥ ६६ ॥ त्रयः ॥ ६६ ॥

ग्रहेरनिः ॥ ६७ ॥ ग्रहणिः ॥ ६७ ॥

प्रथेरमच् ॥ ६८ ॥ प्रथमः ॥ ६८ ॥

चरेश्च ॥ ६९ ॥ चरमः ॥ ६९ ॥

(६०) अमति गच्छतीति यत्रेति, अन्तः । मध्यं वा । पूर्ववदव्ययम् ॥

(६१) दहति दह्यते वा स नगः । पर्वतो वृक्षो वा । बाहुलकान्नकारस्य नाकारो नागः सर्पभेदो वा ॥

(६२) सिञ्चतीति सिंहः । प्रसिद्धो वा । हकारप्रत्ययो नुमागमः । चस्य कः । ककारस्य च लोपः हिनस्तीति सिंहः इति पृषोदरादित्वादप्याद्यन्तविपर्ययः ॥

(६३) विशेषेण समन्ताज् जिघ्रतीति व्याघ्रः हस्ती वा ॥

(६४) हन्तीति घोरम् । भयानकं वा ॥

(६५) क्षमते सहते सर्वमिति क्ष्मा पृथिवी वा ॥

(६६) तरतीति त्रिः । संख्यावाची वा । त्रयः । त्रीन् । त्रिभ्यः ॥

(६७) गृह्णातीति ग्रहणिः । कृदिकारादिति ङीष् । ग्रहणी संग्रहणी व्याधिभेदो वा ॥

(६८) प्रथते प्रख्यातो भवतीति प्रथमः । आद्य उत्तमो नूतनो वा ॥

(६९) चरति गच्छति भक्षयति वा स चरमः । अन्त्यः पश्चिमो वा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मङ्गेरलच् ॥ ७० ॥ मङ्गलम् ॥ ७० ॥

इत्युणादिषु पञ्चमः पादः समाप्तः ॥

मन्थानंविशदंविधायबहुलंव्युत्पन्नपक्षेनवा
ऽव्युत्पन्नेनदलेनयेनविधिवद्वाग्वारिधिर्मन्थितः ।
व्यक्ताव्यक्ततराणियत्नवचसांरत्नान्यदीप्यन्त्वै
भूयात्सोयमुणादिरत्नगणोध्येतुर्यशोवृद्धये ॥ १ ॥

(७०) मङ्गति प्राप्नोति सुखं येन तन्मङ्गलम् । प्रशस्तम् मङ्गलो वारभेदो वा । मङ्गलस्य भावो माङ्गल्यम् ॥

इतिश्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वतीकृतेरुणादिव्याख्यायां वैदिकलौकिककोषे पञ्चमः पादः समाप्तः ॥
समाप्तश्चायं ग्रन्थः

———0———

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथोणादिशब्दसूचीपत्रम्॥

शब्दाः	पाद	सूत्र	शब्दाः	पाद	सूत्र	शब्दाः	पाद	सूत्र
अ			अन्तः	५	६०	अर्कः	३	४०
अक्तम्	३	८९	अन्त्रम्	४	१६४	अर्णः	४	१९७
अक्षरम्	३	७०	अन्धः	४	२०६	अरणिः	२	१०२
अक्षः	३	६५	अन्नम्	३	१०	अरण्यम्	३	१०२
अक्ष्णम्	३	१७	अनलः	१	१०६	अरतिः	४	६०
अग्रम्	२	२८	अन्यः	४	१०९	अरतिः	५	७
अगस्तिः	४	१८०	अपः	४	२०८	अर्थः	२	४
अघ्न्यः	४	११२	अप्नः	४	२०८	अर्भः	३	१५२
अङ्कः	४	२१६	अप्सराः	४	२३७	अर्भकः	५	५३
अङ्कतिः	४	६१	अपष्ठुः	१	२५	अर्मः	१	१४०
अङ्गः	४	२१६	अब्जः	४	२०९	अर्यमः	१	१५९
अञ्चतिः	४	६१	अब्दः	४	९८	अररः	३	१३२
अञ्जलिः	४	२	अभ्रकम्	२	३२	अररुः	४	७९
अटविः	४	१३४	अमतः	३	११०	अर्वः	५	५४
अण्डः	१	११४	अमत्रम्	३	१०५	अर्शः	४	१९६
अश्वः	१	९	अमतिः	४	५९	अर्शसानः	२	८८
अत्कः	३	४२	अमनिः	२	१०२	अर्हन्तः	३	१२६
अत्रः	३	६	अम्बरम्	३	१३१	अलकम्	५	३५
अतसः	३	११७	अम्बरीषः	४	२९	अलकाः	५	३५
अद्रः	१	१२३	अम्बुः	४	१०८	अलतिः	४	६०
अद्मनिः	२	१०५	अम्भः	४	२१०	अवगथः	२	९
अधमः	५	५४	अम्लः	४	१०८	अवद्यम्	५	५४
अध्वर्युः	१	३७	अयः	४	१८९	अवनिः	२	१०२
अनः	४	१८९	अयस्कान्तः	४	१८९	अवभृथः	२	३
अन्तः	३	८६						

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पादः	सूत्रम्	शब्दाः	पादः	सूत्रम्	शब्दाः	पादः	सूत्रम्
आमलकः	२	३२	इष्टका	३	१४८	उरः	४	१९५
आर्द्रम्	२	१८	इष्मः	१	१४५	उरणः	५	१७
आवसथः	३	११६	इरा	२	२८	उल्कः	३	४२
आष्ट्रम्	४	१६०	इरिणम्	२	५१	उलपः	३	१४५
आख्याः	४	२२२	इषिरः	१	५१	उल्वः	४	९५
आगामी	४	७	इषीका	४	२१	उशनाः	४	२३९
आत्मा	४	१५३	इक्षुः	३	१५७	उस्रः	२	१३
आजिः	४	१३१	इक्षुकुट्टकः	२	३२	उषः	४	२३४
आतिः	४	१३१	इन्दुः	१	१२	उष्ट्रः	४	१६२
आमिक्षा	३	६६	इषुः	१	१३	उष्णः	३	२
आमिषम्	१	४६	ई			उषपः	३	१४३
आविः	२	१०८	ईर्मम्	१	१४५	उषर्बुधः	४	२३४
आखुः	१	३३	ईश्वरः	५	५७	उच्चा	१	१५९
आतुरः	१	४१	ईष्वः	१	१५३	उषाः	४	२३४
आयुः	१	२				उष्मा	१	१४५
आयुः	२	११८	उ			उचितम्	४	१८६
आलुः	१	५	उक्थम्	२	७	उष्णिक्	२	७१
आशुः	१	१	उग्रः	२	२८	उद्गीथः	२	१०
आशुशुक्षणिः	२	१०२	उग्रतेजाः	४	२२७	उशी	४	१
आहू	१	८६	उज्झकः	२	३७	उशीनरः	४	१
आह्व	१	८५	उत्सः	३	६८	उशीरम्	४	३१
			उदकम्	२	३९	उरुः	१	३१
इ			उदकधरः	२	२२	उल्मुकम्	३	८४
इदम्	४	१५७	उदरम्	५	१९	उलूकः	४	४१
इन्द्रः	२	२८	उदरथिः	४	८८	उन्नेता	२	९४
इध्मः	१	१४५	उदश्वित्	२	५७	उच्चैः	५	१२
इनः	३	२	उन्द्रः	२	१३	ऊ		
इमः	३	१५३	उपदेष्टा	२	९४	ऊधः	४	१९३
इल्वलः	४	१०७	उपह्वरः	३	१	ऊनः	३	२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पा०	सू०	शब्दाः	पा०	सू०	शब्दाः	पा०	सू०
ऊसम्	१	१४४	एतः	३	८६	कटम्बः	४	८२
ऊर्णनाभः	५	४७	एतशः	३	१४९	कट्वरम्	२	१
ऊर्णनाभिः	५	४७	एतशाः	३	१४९	कटिः	४	११८
ऊर्दरः	५	४०	एधतुः	१	७७	कटित्रम्	४	१७२
ऊर्णा	५	४७	एनः	४	१९८	कटीरः	४	३०
ऊर्णायुः	५	४७	एवः	१	१५२	कटुः	१	८
ऊष्मा	४	१४५	एलूकः	४	४१	कटोलः	१	६६
ऊर्मिः	४	४४	ओ			कठाकुः	३	७७
ऊरुः	१	३०	ओकः	३	४१	कठिनम्	२	४९
ऋ			ओकः	४	२१६	कठेरः	१	५८
ऋक्	२	५७	ओजः	४	१९२	कठोरः	१	६४
ऋक्थम्	२	७	ओदनः	२	७६	कडत्रम्	३	१०६
ऋचम्	२	६६	ओम्	१	१४२	कडम्बः	४	८२
ऋचः	२	६७	ओष्ठः	२	४	कडारः	३	१३५
ऋच्छरः	२	७५	ओतुः	१	६९	कणीचिः	४	७०
ऋच्छरः	३	१३१	क			कण्ठः	१	१०३
ऋज्रः	२	२८	कक्खटम्	४	८१	कण्वम्	१	१५१
ऋञ्जसानः	२	८७	कचम्	३	६२	कण्डोलः	१	६६
ऋतम्	३	८९	कङ्कटः	४	८१	कदम्बः	४	८२
ऋषभः	३	१२३	कङ्कणः	४	२४	कदरः	३	१३१
ऋष्यः	४	११२	कङ्कणीका	४	१८	कद्रुः	४	१०२
ऋषिः	४	१२०	कच्छः	४	१०५	कदली	१	१०१
ऋजीकः	४	२२	कच्छूः	१	८४	कदली	३	१३१
ऋजीकः	५	५१	कच्छपम्	३	१४२	कनकम्	२	३२
ऋजीषम्	४	२८	कंचूलः	४	९	कन्तुः	१	२७
ऋजुः	१	२७	कंगारः	३	१३७	कन्तुः	१	७२
ऋतुः	१	७२	कटकम्	२	३२	कन्दः	४	९८
ए			कटकः	५	३५	कन्दरः	३	१३१
एकः	३	४३						
एतत्	१	१३३	कटप्रूः	२	५७	कन्दुः	१	१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पादः	सूत्रम्	शब्दाः	पादः	सूत्रम्	शब्दाः	पादः	सूत्रम्
कन्या	४	११२	क्रतुः	१	७६	कश्यः	४	११२
कपटम्	४	८१	कर्दमः	४	८४	कशेरुः	१	८८
कपालम्	१	११८	कर्पटः	४	८१	कशेरूः	१	८८
कपिः	४	१४४	कर्परः	३	१३१	कषिः	४	१४०
कपिलः	१	५५	कर्पासः	५	४५	कषाकुः	३	७७
कपोतः	१	६२	कर्पूरः	४	९०	कषीका	४	१६
कपोलः	१	६६	कर्बुरः	१	४१	क्षत्रम्	४	१६७
कफेलूः	१	९३	करभः	३	१२२	क्षत्ता	२	९४
कबरः	४	१५५	कर्म	४	१४५	कंसः	३	६२
कमठः	१	१००	करम्बम्	४	८२	कस्तूरः	४	९०
कम्बलः	१	१०७	क्रयिकः	२	४४	कस्तूरी	४	९०
कम्बूः	१	९३	करीरः	४	३०	काकः	३	४३
कमरः	३	१३२	कर्वः	१	१५५	काकुः	१	१
कमलम्	१	१०४	कर्वरः	२	१२१	काणूकः	४	३९
कमलः	१	१०४	करीषः	४	२६	काण्डम्	१	११५
करिः	४	१२९	कर्षूः	१	८०	कादम्बः	४	८३
कर्कः	३	४०	कलिः	४	११८	कारिः	४	१२९
करकः	५	३५	कलकः	३	४०	कारुः	१	१
कर्कटः	४	८१	कलत्रम्	३	१०६	क्रान्तुः	५	४३
कर्कन्धूः	१	९३	कलापकम्	२	३२	कार्विः	४	१२७
कर्करः	३	१३१	कलभः	३	१२२	कार्षकः	२	३८
कर्करीकम्	४	२०	कलमः	४	८४	काशिः	४	११८
कर्करेटुः	१	३७	कलिलम्	१	५४	काशूः	१	८५
करटः	४	८१	कलुषम्	४	७५	काष्ठम्	२	२
करेटुः	१	३७	कविः	४	१३९	काष्ठपुत्रिका	२	३२
कर्णः	३	१०	कवलः	१	१०६	क्षान्तुः	५	४३
करण्डः	१	१२८	कवचः	४	२	क्षमा	५	६५
करुणा	३	५३	कश्मलम्	१	१०९	कासारः	३	१३९
करेणुः	२	१	कश्मीरः	४	३२			

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे
किकीदिविः	४	५६	कुटितम्	४	१८६	कुररः	३	१३३
किङ्कणीका	३	१८	कुटपः	४	१४२	कुरीरम्	४	३३
किम्	४	१५८	कुट्मलम्	४	१०९	कुशा	४	११४
किरिः	४	१४३	कुट्मलः	१	१०९	कुरवः	१	२४
किरीटम्	४	१८५	कुटरुः	४	८०	कुल्फः	२	२६
किरणः	२	८१	कुटीरः	४	३०	कुल्मलम्	४	१८८
क्रिमिः	४	१२२	कुटिलम्	४	१८६	कुलीरः	४	३३
किर्मीरः	४	३०	कुटिलः	१	५४	कुलालः	१	११८
किरीरः	४	३०	कुठिः	४	१४४	कुशलः	१	१०६
किल्बिषम्	१	५०	कुठेरः	१	५८	कुष्ठम्	२	२
किंवदन्ती	३	५०	कुड्मलः	१	१०९	क्षुद्रः	२	१३
किंशारुः	१	४	कुड्यम्	४	११२	क्षुधुनः	३	५५
किशोरः	१	६५	कुण्डम्	१	११५	कुष्मलम्	४	१८७
क्षिल्ला	४	११४	कुण्डिनः	२	४९	क्षुमा	१	१४५
क्षिपणिः	२	१०७	कुण्डलम्	१	१०४	क्षुरः	२	२८
क्षिपणुः	३	५२	कुणिन्दः	४	८५	कुसितः	४	१०६
क्षिपण्युः	३	५१	कुणपः	३	१४३	कुसीदम्	४	१०६
क्षिप्रम्	२	१३	कुणालः	३	७६	कुसुम्भम्	४	१०६
कीकसम्	३	११७	कुत्सम्	३	६६	कुसुमम्	४	१०६
कीचकः	५	३६	कुन्तिः	३	५०	कुसूलः	४	९०
कीनाशः	५	५६	कुन्दः	४	९८	कुहुः	१	३७
कीर्त्तिः	४	११९	कुपिन्दः	४	८६	कुहकः	२	३७
कीरम्	४	२४	कुविन्दः	४	८६	कूर्ची	४	९१
कुक्कुरः	१	४१	कुब्रः	२	२८	कूपः	३	२७
कुकुरः	१	४१	कुबेरः	१	५९	क्रूरः	२	२१
कुचः	३	६८	कुम्भीरः	४	३०	कृकवाकुः	१	६
कुचिः	३	१५५	कुमारः	३	१३८	कृच्छ्रम्	२	२१
कुञ्चितम्	४	१८६	कुमारयुः	१	३७	कृतकम्	३	३७
कुटिः	४	१४२	कुरङ्गः	१	१२१	कृत्तिका	३	१४७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पादः	सूत्रं	शब्दाः	पादः	सूत्रं	शब्दाः	पादः	सूत्रं
कृतुः	३	३०	कोमलम्	१	१०९	ग		
कृत्तम्	३	६६	कोरकः	५	३५	गगनम्	२	७७
कृत्स्नम्	३	१७	क्रोष्टुः	१	९६	गङ्गा	१	१२२
कृदरः	५	४१	कोशलः	१	१०६	गडेरः	१	५८
कृन्तत्रम्	३	१०९	कोष्ठः	२	४	गडोलः	१	६६
कृपीटम्	४	१८५	क्षोणिः	४	४८	गण्डः	१	११४
कृपणः	२	७९	क्षोत्ता	२	९४	गण्डयन्तः	३	१२८
कृपाणः	२	९०	क्षौमम्	१	१४०	गण्डिः	४	११८
कृमिः	४	१२२	ख			गण्डुः	१	७
कृविः	४	५६	खजपम्	३	१४२	गण्डूषः	४	७८
कृशानुः	४	२	खजाकः	४	१३	गण्डोलः	१	६६
कृषिः	४	१२०	खट्वा	१	१५१	गतिला	१	५७
कृषिः	४	१२७	खड्गः	१	१२४	गदयित्नुः	३	२९
कृषकः	२	३८	खडूः	१	८२	गन्त्री	४	१५९
कृषिकः	२	४०	खड्डूः	१	८२	गन्तुः	१	६९
कृष्णः	३	४	खण्डः	१	११४	गभीरः	४	३५
कृसरः	३	७३	खदिरः	१	५३	गभस्तिः	४	१८०
केतुः	१	७४	खनिः	४	१४०	गमथः	३	११३
केपिः	४	४८	खनित्रम्	४	१६२	गमी	४	६
क्लेदा	१	१५९	खरुः	१	३६	गम्भीरः	४	३५
क्लेदुः	१	१०	खर्जूः	१	८०	गर्गः	१	१२८
केलिः	४	११८	खर्जूरः	४	९०	गरुडः	४	४६
केवलः	१	१०६	खलतिः	३	११२	गरुत्	१	९४
केशः	५	३३	खष्पः	३	२८	गर्त्तः	३	८६
क्षेत्रम्	४	१७०	खाटिः	४	१२५	गर्दभः	३	११२
क्षेमम्	१	१४०	खातम्	४	१६२	ग्रन्थिः	४	१४०
कोकिलः	१	५४	खिद्रुः	२	१३	गर्भः	३	१५२
कोटरः	३	१२१	खिदिरः	१	५१	गर्मुत्	१	९५
कोटिः	४	११८	खुरः	२	२८	गर्वः	१	१५५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पादः	सूत्रम्
गर्वरः	२	१२१
ग्रहणिः	५	६७
गवयः	२	६८
गह्वरः	३	१
गातुः	१	७३
गात्रम्	४	१६९
गाथा	२	४
गान्दम्	४	६०
गान्तुः	५	४३
ग्रामः	१	१४३
गारित्रम्	४	१७१
ग्लानिः	४	५१
गिरिः	४	१४३
ग्रीवा	१	१५४
ग्रीष्मः	१	१४९
गुडः	१	११५
गुडेरः	१	५८
गुत्सः	३	६८
गुधिरः	१	६१
गुपिलः	१	५६
गुरुः	१	२४
गुर्विणी	२	५४
गुल्फः	५	२६
गुवाकः	४	१५
गुहेरः	१	६१
गुहिलः	१	५६
गूथः	२	१२
गृत्सः	३	६९
गृध्रः	२	२४
गृधुः	१	२३
गृहयाय्यः	३	२६
गेष्णुः	३	१६
गोत्रम्	४	१६७
गोत्रा	४	१६७
गोधूमः	५	२
गोपीथः	२	९
गोरोचनम्	२	७८
गौरः	१	६५
गौरः	२	२८
गौः	२	६८
ग्लौः	२	६४
घ		
घटिः	४	११८
घतनः	५	४२
घर्मः	१	१४९
घासिः	४	१३०
घुण्डः	१	११५
घुरणः	२	८३
घूर्णिः	४	५२
घृणा	३	४
घृणिः	४	५२
घृतम्	३	८९
घृष्विः	४	५६
घोरम्	५	६४
च		
चक्रधरः	२	२२
चक्षुः	१	२२
चञ्चुः	२	११९
चकोरः	१	६४
चङ्कुरः	१	३८
चञ्चरीकः	४	२०
चटुलः	१	९६
चण्डः	१	११४
चण्डालः	१	११७
चण्डिला	१	५७
चतुरः	१	३८
चत्वरम्	१	१२१
चत्वारः	५	५८
चत्तः	४	२००
चन्दनम्	२	७८
चन्द्रः	२	१३
चन्द्रमाः	४	२२८
चन्दिरम्	१	५१
चपटः	४	८१
चपेटः	४	८१
चपलम्	१	१११
चम्पा	३	२८
चमूः	१	८०
चमरः	३	१३२
चमसः	३	११७
चरिः	४	१४०
चरुः	१	७
चरकः	२	३२
चरित्रम्	४	१७२
चर्पटः	४	८१
चर्म	४	१४५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पादः	सूत्रम्	शब्दाः	पादः	सूत्रम्	शब्दाः	पादः	सूत्रम्
तिमिरम्	१	५१	द			दशन्	१	१५६
तिरीटम्	४	१७५	दक्षिणः	२	५०	दशेरः	१	५८
त्रिफला	१	१०४	दक्षिणा	२	५०	दंष्ट्रा	४	१५९
त्रिविष्टपम्	३	१४५	दक्षाय्यः	३	९६	दस्मः	१	१४५
त्रिविष्टपः	३	१४५	दण्डः	१	११४	दस्युः	३	२०
तीक्ष्णम्	३	१८	दण्डधरः	२	२२	दस्रः	२	१३
तीव्रम्	२	२८	दद्रुः	१	९०	दह्रः	२	१३
तीर्थम्	२	७	दद्रूः	१	९०	दाकः	३	४०
तीवरः	३	१	दधिषाय्यः	३	९७	दात्रम्	४	१७०
तुण्डिः	४	११	दन्तः	३	८६	दात्वः	४	१०४
तुण्डिलः	१	५४	दमुनाः	४	२३५	दानुः	३	३२
तुत्थः	२	७	दभ्रम्	२	१३	दाम	४	१४५
तुन्दः	४	९८	दमथः	३	११३	दारु	१	३
तुषारः	३	१३९	दरत्	१	१३०	दारुणम्	३	५३
तुहिनम्	२	५२	दरथः	३	११३	द्वाः	२	५७
तूणीरः	४	३०	दर्दरीकम्	४	२०	दाशः	५	११
तूर्णिः	४	५१	दर्भः	३	१५१	दासः	५	१०
तूलिः	४	१२०	दर्दुरः	१	४०	दिधिषूः	१	९३
तूस्तम्	३	८६	दर्द्रूः	१	९०	दिनम्	२	४९
तृणम्	५	८	दर्वः	१	१५५	दिवसम्	३	१२१
तृपत्	२	८५	दर्विः	३	८४	दिवा	१	१५६
तृप्रः	२	१३	दर्विः	४	५३	दिवा	४	१७५
तृपला	१	१०४	द्रविणम्	२	५०	दीदिविः	४	५५
तृफला	१	१०४	दशतः	३	११०	दीनः	३	२
तृष्णा	३	१२	दरसानः	२	८६	दीनारः	३	१४०
तोत्रम्	४	१७२	दलपः	३	१४२	दुकूलम्	४	९०
तोमरः	३	१३१	दलभः	३	१५१	दुवा	१	१५६
			दल्मिः	४	४७	द्रुः	१	३५
						द्रुमः	१	३५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पा०	सू०	शब्दाः	पा०	सू०	शब्दाः	पा०	सू०
नन्दिः	४	११८	निद्रा	२	१७	पच्चः	४	२२०
ननन्दा	२	९८	निधनम्	२	८१	पङ्गुः	१	३६
ननान्दा	२	९८	निधुवनम्	२	८०	पतङ्गः	१	११९
नप्ता	२	९५	निम्बः	४	९५	पचतः	३	११०
नभः	४	२११	निर्ऋथः	२	८	पचिः	४	११८
नभसः	३	११७	निशीथः	२	९	पचेलिमः	४	३७
नभस्यः	४	२११	निष्कः	३	४५	पञ्चन्	१	१५७
नमतः	३	११०	निषङ्गथिः	४	८७	पञ्चालः	१	११८
नभाकम्	४	१५	निषद्वरः	२	१२२	पटाकः	४	१४
नमसः	३	११७	निहाका	३	४४	पटीरः	४	३०
न्यङ्कुः	१	१७	नीकः	३	४७	पटलः	१	१०४
नयनम्	२	७८	नीचैः	५	१३	पटुः	१	१८
नरकम्	५	३५	नीथः	२	२	पटोलः	१	६६
नलिनम्	२	४९	नीपः	३	२३	पट्वः	१	१५३
नवन्	१	१५६	नीरम्	२	१३	पण्डः	१	११४
नंशुकः	२	३०	नीलङ्गुः	१	३६	पण्डा	१	११४
नहुषः	४	७५	नीविः	४	१३६	पणसः	३	११७
ना	२	१००	नीवरम्	३	१	पणिः	४	११८
नाकुः	१	१८	नृचक्षाः	४	२३३	पताका	४	१४
नागः	५	६१	नृतूः	१	९१	पत्तिः	४	१८३
नाम्नम्	४	१६०	नेमः	१	१४०	पतिः	४	५७
नापितः	३	८७	नेमिः	४	४३	पत्तनम्	३	१५०
नाभिः	४	१२६	नेष्टा	२	९५	पतत्रम्	३	१०५
नाम	४	१५१	नोधाः	४	२२६	पतत्रम्	४	१५९
नारङ्गः	१	१२२	न्योजाः	४	२२३	पतत्रिः	४	६४
निकषा	४	१७५	नौः	२	६४	पतेरः	१	५८
निघण्टुः	१	२७	प			पतसः	३	११७
निघातिः	४	१२५	पक्ष्मम्	४	१६६	पत्सलः	३	७४
निष्ठ्वः	१	१५३	पचः	३	६९	पथः	४	१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पा०	सू०	शब्दाः	पा०	सू०	शब्दाः	पा०	सू०
पथिलः	१	५७	परीरम्	४	३०	पशुः	१	२७
पदाजिः	४	१३२	पर्परीकः	४	१९	पाकः	३	४३
पदातिः	४	१३२	परिव्राट्	२	५९	पाकः	५	५३
पद्मम्	१	१४०	पर्वतः	३	११०	पाकुकः	२	३०
पद्रः	२	१३	पर्वा	४	११३	पाजः	४	२०३
पद्वा	४	११३	प्रगत्वा	४	११७	पाण्डुः	१	३७
पविः	४	१३९	प्रगत्वरी	४	११७	पाणिः	४	१३३
पन्थाः	४	१२	प्रगास्ता	२	९५	पातालम्	१	११७
पन्नः	३	१०	पर्शुः	१	३३	पातिः	५	५
पनसः	३	११७	पर्शुः	५	२७	पात्रम्	४	१५९
पपीः	३	१५९	परशुः	१	३३	पात्रम्	४	१७०
पपुः	१	२२	पर्षत्	१	१३०	पाथः	४	२०४
पम्पा	३	२८	प्रस्थायी	४	९	पाथः	४	२०५
पयः	४	१९०	परुः	२	११७	पाथिः	२	११४
पयोधाः	४	२३०	परुषः	४	७५	पादूः	१	९५
पयस्याः	४	२३३	प्रहाणिः	४	५१	पापम्	३	२३
पर्जन्यः	३	१०३	परिहाणिः	४	५१	पाप्मा	४	१५१
परिज्वा	१	१५९	प्रहिः	४	१३५	पायुः	१	१
पर्णम्	३	६	प्रहेलिः	४	११८	पावः	४	१०१
पर्णसुट्	२	२२	प्रत्नः	१	१५३	पारक्	१	१३६
पर्णरुट्	२	२२	प्लवः	३	६३	प्राकषिकः	२	४१
पर्णशुट्	२	२२	पलाण्डुः	१	३७	प्राट्	२	५७
पर्णसिः	४	१०७	पलितम्	५	३४	प्राणथः	३	११३
प्रतिदिवा	१	१५६	पलितः	३	९२	प्राणन्तः	३	१२७
प्रथितिः	४	१८३	पललम्	१	१०६	प्रातः	५	५९
प्रथमः	५	६८	पलालम्	१	११८	प्रापणिका	२	४१
पर्पः	३	२८	पल्वलः	४	१०७	प्राहट्	२	५७
पर्पटः	४	८१	पताका	४	१४	पार्श्वम्	५	२७
परमेष्ठी	४	१०	पविः	४	१३९	पार्ष्णिः	४	५२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पादः	सूत्रम्	शब्दाः	पादः	सूत्रम्	शब्दाः	पादः	सूत्रम्
बन्धुः	१	१०	बृहत्	२	८४	भातुः	१	७२
बन्धुरः	१	४१	बृहद्भानुः	२	३२	भानुः	३	३२
बन्धूकः	४	४१	भ			भामः	१	१४०
बन्ध्या	४	११२	भगालम्	३	७६	भ्राता	२	९५
बन्धूरः	१	४१	भडिलः	१	५४	भ्राष्ट्रम्	४	१६०
बभ्रुः	१	२२	भण्डिलः	१	५४	भालुः	१	५
बक्रुरः	३	१३१	भदाकः	४	१५	भालूकः	४	४१
ब्रध्नः	३	५	भद्रम्	२	२८	भावित्रम्	४	१७१
बर्बरः	३	१३१	भदन्तः	३	१३०	भावी	४	८
बर्बरः	२	१२१	भयानकः	३	८२	भासन्तः	३	१२८
ब्रह्म	४	१४६	भर्गः	४	२१६	भित्तिका	३	१४७
बर्हिः	२	१०९	भरटः	४	१०४	भिदुकः	२	३७
बर्हिषः	२	४९	भरण्डः	१	१२९	भिद्रम्	२	१३
बल्लभः	३	१२५	भरतः	३	११०	भिदिः	४	१४३
बलिः	४	११८	भरथः	३	११४	भिदिरम्	१	५१
बलिः	४	१२४	भ्रमरः	३	१३२	भिदुः	१	२३
बलीकम्	४	२५	भ्रमिः	४	१२१	भिषक्	१	१३८
बल्हिः	४	११८	भरिमा	४	१४८	भीमः	१	१४८
बहुः	१	२९	भरुः	१	७	भीरुकः	२	३१
बाष्पः	३	२८	भल्लुकः	४	४१	भीष्मः	१	१४८
बाहुः	१	२७	भल्लूकः	४	४१	भुजिः	४	१४२
बिन्दुः	१	१०	भवन्तः	३	१२८	भुजिष्यः	४	१७९
बिल्वम्	४	९५	भवन्तिः	३	५०	भुज्युः	३	२१
बुध्नः	३	५	भवान्	१	६३	भुरिक्	२	७२
बुधानः	२	९०	भविलः	१	५४	भुवः	४	२१७
बृन्दः	४	९८	भषकः	२	३२	भुवनम्	२	८०
बृहिषः	४	४९	भसत्	१	१३०	भुवन्युः	३	५१
बृषभः	३	१२१	भस्त्रा	४	१६८	भुविः	२	११२
बृषलः	१	१०६	भस्म	४	१४५	भूकम्	३	४१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पादः	सूत्रम्	शब्दाः	पादः	सूत्रम्	शब्दाः	पादः	सूत्रम्
महत्	२	८४	मीव:	१	१५४	मृडीकः	४	२४
महानसम्	४	१८९	मीवरः	३	१	मृणालम्	१	११८
महिनम्	२	५६	मुकुरः	१	४०	मृतम्	३	८८
महिलः	१	५४	मुखम्	५	२०	मृत्युः	३	२१
महसम्	३	११७	मुचिरः	१	५१	मृदङ्गः	१	१२१
महिषः	१	४५	मुद्गः	१	१२८	मृदरः	५	४१
माः	४	१८९	मुद्गलः	१	१२८	मृदुः	१	२८
माता	२	९५	मुद्रा	२	१३	मेचकः	५	३७
मात्रा	४	१६८	मुदिरः	१	५१	मेरुः	४	१०१
मातरिश्वा	१	१५९	मुनिः	४	१२२	मौनम्	४	१२२
माया	४	१०९	मुमुचानः	२	९३	य		
मायुः	१	१	मुशलः	१	१०६	यक्ष्मः	१	१४०
मार्जारः	३	१३७	मुष्कः	३	४१	यक्ष्मा	४	१५१
मार्जालीयः	१	११६	मुषलः	१	१०६	यकृत्	४	५८
माला	२	२८	मुस्तम्	२	१३	यजतः	३	११०
मालती	३	११०	मुसलः	१	१०६	यजत्रम्	३	१०५
मालती	४	५९	मुहिरः	१	५१	यजिः	४	११८
म्लानिः	४	५१	मुहुः	२	१२०	यजुः	२	११७
मांसम्	३	६४	मुहूर्त्तम्	३	९८	यज्युः	३	२०
माहिनम्	२	५६	मुहिरः	१	६१	यतिः	४	११८
मितद्रुः	१	३४	मूकः	३	४१	यद्	१	१३२
मित्रम्	४	१६४	मूत्रम्	४	१६३	यन्त्रम्	४	१६७
मित्रयुः	१	३७	मूर्खः	५	२२	यमुना	३	६१
मिथिला	१	५७	मूर्द्धा	१	१५९	ययीः	३	१५९
मिथुनम्	३	५५	मूलम्	४	१०८	ययुः	१	२१
मिस्रम्	२	१३	मूलेरः	१	६१	यवागूः	३	८१
मिहिरः	१	५१	मूषिकः	२	४२	यवनः	२	७४
मीनः	३	३	मृगयुः	१	३७	यवासः	४	२
मीरः	२	२५	मृडङ्कणः	४	२४			

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

शब्दाः	पा॰	सू॰	शब्दाः	पा॰	सू॰	शब्दाः	पा॰	सू॰
रेफः	५	५४	लवाणकः	३	८३	वचक्नुः	२	८१
रोचना	२	७८	लविः	४	१३९	वज्रः	२	२८
रोचिः	२	१११	लशुनम्	३	५७	वज्रधरः	२	२२
रोदः	४	१८९	लम्बः	१	१५३	वटुः	१	८
रोदसी	४	१८९	लाचा	३	६२	वण्डः	१	११४
रोधः	४	१८९	लाङ्गलम्	१	१०८	वतण्डः	१	१२९
रोम	४	१५१	लाङ्गूलम्	४	९०	वत्सम्	३	६२
रोहन्तः	३	१२७	लिक्षा	३	६६	वत्सः	३	६२
रोहन्ती	३	१२७	लिगुः	१	३६	वत्सरः	३	७१
रोहिः	४	११९	लिप्तम्	५	५५	वदन्तिः	३	५०
रोहिणः	२	५५	लिपिः	४	१२०	वदान्यः	३	१०४
रोहित्	१	९७	लिविः	४	१२०	वन्द्रः	२	१३
रोहितः	३	९४	लुषभः	३	१२४	वर्नः	२	२८
रोहिषम्	१	४७	लूनिः	४	१०५	वनिः	४	१४०
ल			लोतः	३	८६	वनिष्णुः	४	२
लक्षणम्	३	७	लोत्रम्	४	१७३	वप्रः	२	२७
लक्ष्मणम्	३	७	लोम	४	१५१	वप्रिः	४	६६
लक्ष्मीः	३	१६०	लोष्ठः	३	९२	वपुः	२	११७
लघट्	१	१३५	लोहितम्	३	९४	वयः	४	१८९
लघुः	१	२९	व			वयुनम्	३	६१
लङ्का	३	४०	वक्त्रम्	४	१६७	वयोधाः	४	२२९
लङ्कः	२	३७	वक्रः	२	१३	व्यलीकम्	४	२५
लटकः	२	३२	वकुलः	१	४१	वर्चः	४	१८९
लट्वा	१	१५१	वचः	३	६२	वरटः	४	८१
लप्तिका	३	१४७	वचः	४	२२०	वठरः	५	३९
लभसः	३	११७	वचाः	४	२२१	वर्णः	३	१०
लमकः	२	३३	वग्नुः	३	३३	वरणः	२	७४
लवङ्गः	१	१२०	वङ्क्तिः	४	६६	वर्णसिः	४	१०७
						वर्षिः	४	१२४

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पाद॰	सूत्र॰	शब्दाः	पाद॰	सूत्र॰	शब्दाः	पाद॰	सूत्र॰
वर्णुः	३	३८	वस्तिः	४	१८०	वार्त्ताकम्	३	७९
वरुणः	३	५३	वस्तु	१	७०	वार्त्ताकः	४	१५
वरेण्यः	३	९८	वस्नः	३	६	वार्त्ताकुः	३	७९
व्रततिः	४	५९	वसन्तः	३	१२८	वारि	४	१२५
वरत्रा	३	१०७	वस्तिः	४	१४०	वावदूकः	४	४१
वरुत्रम्	४	१७२	वसुः	१	१०	वाश्रः	२	१३
वर्त्तनिः	२	१०६	वस्त्रः	२	१३	वाश्रिः	४	११८
वर्त्तिः	४	११९	वसुरोचिः	२	१११	वाश्रिः	४	१२५
वर्त्तिः	४	१४१	वहतिः	४	६०	वाशुरा	१	३८
वर्त्तिका	३	१४६	वहित्रम्	४	१७३	वासः	४	२१८
वरूथः	२	६	वहतुः	१	७७	वासरः	३	१३२
वर्द्ध्रम्	२	२७	वहन्तः	३	१२८	वासिः	४	१२५
वर्पः	४	२०१	वह्निः	४	५१	वासुः	१	१
दर्फः	४	२०१	वह्यम्	४	११२	वास्तु	१	७०
वरण्डः	१	१२९	वाक्	२	५७	वास्तूकः	४	४१
वर्वरीकः	४	१९	वागुरा	१	४१	वाहसः	३	११९
वर्विः	४	५३	वातः	३	८६	वाह्लीकः	४	२५
वर्षम्	३	६२	वातप्रमीः	४	१	विः	४	१३४
वरसानः	२	८६	वातिः	५	६	विक्रयिकः	२	४४
वल्कः	३	४२	वाद्रिः	४	१२५	विक्लुस्तः	२	१५
वलाका	४	१४	वादित्रम्	४	१७१	विचचाः	४	२२२
वलूकः	४	४०	वापिः	४	१२५	विजयन्तः	३	१२८
वल्गुः	१	१९	वामः	१	१४०	विटपः	३	१४५
वल्मीकम्	४	२५	वायसः	३	१२०	विडङ्गः	१	१२१
वलयम्	४	९९	वायसः	४	१८९	विडालः	१	११८
वल्लूरम्	४	९०	वायुः	१	१	वितद्रुः	४	१०२
वस्तम्	३	८९	व्याघ्रः	५	६३	वितस्तिः	४	१८२
वस्नम्	४	१५९	वारङ्गः	१	१२२	विथुः	१	३९
वसतिः	४	६०	व्राजिः	४	१२५	विदथः	३	११५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पादः	सूत्रम्	शब्दाः	पादः	सूत्रम्	शब्दाः	पादः	सूत्रम्
विधुः	१	२३	वृशः	४	१०४	शक्रः	२	१३
विधुरः	१	३९	वृश्चिकः	२	४०	शकलम्	१	११२
विपणिः	४	११८	वृषपः	४	१००	शकुलः	१	४१
विपिनम्	२	५२	वृषा	१	१५६	शक्का	४	११३
विप्रः	२	२८	वेणिः	४	४८	शक्करी	४	११३
विल्वम्	४	९५	वेणुः	३	३८	शङ्कुः	१	३६
विशिपः	३	१४५	वेतनम्	३	१५०	शङ्खः	१	१०२
विशालः	१	११८	वेत्रम्	४	१६७	शण्ठः	४	१०४
विश्वम्	१	१५१	वेतसः	३	११८	शण्डिलः	१	५४
विश्वसन्	१	१५९	वेदिः	४	११९	शण्ढः	१	९९
विश्वभोजाः	४	२३८	वेधाः	४	२२५	शतद्रुः	१	३५
विश्ववेदाः	४	२३८	वेनः	३	६	शतिः	४	१२२
विषा	४	३६	वेन्वा	३	८	शश्विः	४	६७
विष्टपः	३	१४५	वेमा	४	१५०	शत्रुः	४	१०३
विष्टरश्रवाः	४	२२७	वेशन्तः	३	१२६	शतेरः	१	६०
विष्णुः	३	३९	वेष्टम्	४	१६०	शद्रिः	४	६५
विहा	४	३६	वेष्पः	३	२३	शपथः	३	११३
वीकः	३	४७	वेहत्	२	८५	शब्दः	४	९७
वीचिः	४	७२	वैजयन्तः	३	१२८	शबलः	१	१०५
वीणा	३	१५	व्योम	४	१५१	शमठः	१	१००
वीध्रम्	२	२६	श			शमथः	३	११३
वीरः	२	१३	शकटः	४	८१	शम्बः	४	९४
वृकः	३	४१	शक्तिधरः	२	२२	शम्बुकः	४	४१
वृचः	३	६६	शकृत्	४	५८	शम्बूकः	४	४१
वृजनम्	२	८१	शकुनः	३	४९	शमलम्	१	११२
वृजिनम्	२	४७	शकुनिः	३	४९	श्मश्रुः	५	२८
वृत्रः	२	१३	शकुन्तः	३	४९	शयण्डः	१	१२९
वृद्धश्रवाः	४	२२७	शकुन्तिः	३	४९	शयथः	३	११३
वृधसानः	२	८७	शक्मा	४	१४७	शयानकः	३	८२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पाद	सूत्र	शब्दाः	पाद	सूत्र	शब्दाः	पाद	सूत्र
शयुः	१	७	शष्पः	३	२८	शिरीषः	४	२०
शबुनः	३	६१	शस्त्रम्	४	१६४	श्लिकुः	१	३२
शरिः	४	१२८	शंस्ता	२	९४	शिल्पम्	३	२८
शरुः	१	१०	शाकम्	३	४३	श्वित्रम्	२	१३
शर्करा	४	३	शादः	४	९७	शिवः	१	१५३
शरण्यम्	३	१०१	श्यामः	१	१४६	शिश्विदानः	२	९२
शरणिः	२	१०२	श्यामाकः	४	१५	शिविरम्	१	५३
शरत्	१	१३०	शारिका	४	१२८	शिशिरः	१	५३
शरभः	३	१२२	शारिः	४	१२८	शिशुः	१	२०
शर्म	४	१४५	शार्ङ्गः	१	१२७	शीकरः	३	१३१
शरिमा	४	१४८	शार्दूलः	४	९०	शीधुः	४	३८
शरीरम्	४	३०	शालभञ्जिका	२	३२	श्रीः	२	५७
शर्वः	१	१५५	शालिः	४	१३०	शीरः	२	१३
श्रवणा	२	७८	शालुः	१	५	शीर्विः	४	५४
श्रवाय्यः	३	९६	शालूकम्	४	४२	शीलम्	४	३८
शर्वरी	२	१२१	शालूरः	४	९०	शीवा	४	११४
शर्शरीकः	४	१९	श्वा	१	१५९	शुकः	३	४२
शल्कम्	३	४३	शास्ता	२	९४	शुच्चिः	३	१५५
शल्कः	४	१०८	शास्तिः	४	१८०	शुक्तः	२	२८
श्लक्ष्णम्	३	१९	शिक्यम्	५	१६	शुक्लम्	२	२८
शलाका	४	१४	शिखा	५	२४	शुचिः	४	१२०
शलभः	३	१२२	शिग्रुः	४	१०२	शुनकः	२	३२
शल्यम्	४	१०९	शिङ्घाणकः	३	८३	शुन्ध्युः	३	२०
शलिः	४	१२८	शिङ्घाणम्	३	८३	शुभ्रम्	२	१३
शवः	४	१९३	शितिः	४	१२२	शुभ्रिः	४	६५
श्वयोचिः	४	७१	शिथिलः	१	५३	शुल्वम्	४	९५
शवरः	३	१३१	शिनिः	४	५१	शुष्कः	३	४१
शवसानः	२	८६	शिरः	४	१९४	शुष्णः	३	१२
श्वसुरः	१	४४	शिरिः	४	१४३	शुष्मम्	१	१४४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पाद	सूत्र	शब्दाः	पाद	सूत्र	शब्दाः	पाद	सूत्र
स्वरुः	१	१०	सार्थः	२	५	सुधर्मा	४	१५२
स्वर्भानुः	३	३२	सारथिः	४	८९	स्नुषा	३	६६
स्वसा	२	९६	स्वाती	४	१३१	सुपयाः	४	२२३
स्वस्ति	४	१८१	स्वादुः	१	१	सुप्रतीकः	४	२५
संवसथः	३	११६	सास्ना	३	१५	सुयशाः	४	२२३
संश्वत्	२	८५	सिक्थम्	२	७	सुमेरुः	४	१०१
संस्तवानः	२	८९	सितम्	३	८९	सुरः	२	२४
सस्यम्	४	१०९	स्तिभिः	४	१२२	स्रुक्	२	६२
सह्वः	४	१८९	स्थिरः	१	५३	सुरेणुः	३	३८
सहसानः	२	८७	सिन्दूरम्	१	६८	सुरतः	५	१४
सहारः	३	१३९	सिन्धुः	१	११	स्रुवः	२	६१
सहुरिः	२	७३	सिध्रः	२	१३	सुवचाः	४	२२७
सहोरः	१	६५	सिनः	३	२	सुविदत्रम्	३	१०८
साकम्	३	४३	स्फिरः	१	५३	सुवनम्	२	८०
स्थाणुः	३	३७	सिमः	१	१४४	सुशर्मा	४	१५२
स्थाम	४	१४५	सिरा	२	१३	सुष्टु	१	२५
स्थालम्	१	११६	सिंहः	५	६२	सुस्रोतः	४	२२३
सादिः	४	१२५	सीता	३	९०	सूक्ष्मम्	४	१७७
साधन्तः	३	१२८	स्त्री	४	१६६	सूचः	४	९३
साध्वसम्	३	११७	स्तीर्विः	४	५४	सूचिः	४	१३९
साधुः	१	१	सीमा	४	१५१	सूची	४	९३
सानु	१	३	सीमिकः	२	४३	स्तूपः	३	२५
स्नायुः	१	१	सीरः	२	२५	सूत्रम्	४	१६३
स्नावा	४	११३	सुजवाः	४	२२३	स्थूणा	३	१५
स्नानसिः	४	१०७	सुतपाः	४	२२७	स्थूरः	५	४
स्फारम्	२	१३	सुतेजाः	४	२२७	सूनुः	३	३५
साम	४	१५३	सुत्रामा	४	१४५	सूना	३	१३
सारङ्गः	१	१२२	सुवेप्यम्	३	९९	सूपः	३	२६
सारथिः	२	१०२	सुषेप्यम्	३	९९	सूमः	१	१४५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाः	पा०	सू०	शब्दाः	पा०	सू०	शब्दाः	पा०	सू०
स्यूनः	३	९	ह			हालुः	१	१
स्यूमः	१	१४४	हत्नुः	३	३०	हासाः	४	२२१
स्रूः	२	५७	हथः	२	२	हिङ्गुः	१	३६
सूरः	२	२४	हन्ता	२	९४	हिण्डीरः	४	३०
सूरतः	५	१४	हनुः	१	१०	हिमम्	१	१४७
सूरिः	४	६४	हनूषः	४	७३	हिरण्यम्	५	४४
सृकः	३	४१	हरिः	४	११९	हिरण्यरेताः	४	२२७
सृणिः	४	१०४	हरिणः	२	४६	हिंसीरः	५	१८
सृखिः	४	४९	हरेणुः	२	१	ह्रीका	३	४८
सृणीका	४	२३	हरित्	१	९७	ह्रीकुः	३	८५
सृत्वा	४	११४	हरितः	३	९३	ह्लीका	३	४८
सृदाकुः	३	७८	हरिद्रुः	१	३४	ह्लीकुः	३	८५
सृदरः	५	४१	हरिमा	४	१४८	हृदयम्	४	१००
सृप्रः	२	१३	हर्यतः	३	११०	हृषीकम्	४	१७
स्पृहयाय्यः	३	९६	हर्षयित्नुः	३	२९	हृषुः	१	२३
सेतुः	१	६९	हर्षुलः	१	९६	हेतुः	१	७३
स्त्येनः	२	४६	ह्रस्वः	१	१५३	हेम	४	१४५
सेना	३	१०	हलिः	४	११८	हेमन्तः	३	१२९
स्नेहा	१	१५९	हविः	२	१०८	हेलिः	४	११८
स्नेहुः	१	१०	हंसः	३	६२	होता	२	९५
सोमः	१	१४०	हंसिका	४	१५४	होत्रम्	४	१६८
स्तोमः	१	१४०	हस्तः	३	८६	होमः	१	१४०
सोमः	४	१५१	हस्रः	२	१३	होमा	४	१५१
स्योनः	३	९	हान्त्रम्	४	१६०	होमी	३	८४
स्रोतः	४	२०२	हानिः	४	५१	हौत्रः	४	१०५
			हारिः	४	१२५			

इति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्धिपत्रम् ॥

पृ०	पं०	अशुद्धम्	शुद्धम्
६	०	अ०१ पा०१	पा० १
६	८	सूयते	शृणाति
८	०	अ०१ पा०१	पा० १
१०	१०	कार्त्तिः	कीर्त्तिम्
१४	३०	वुक्	वुँक्
१५	५	कपिल	कपिलः
१९	१३	आमुष्मान्	आयुष्मान्
१९	१६	तनूः	धनूः
२२	२९	द्वान्तो	दातो
२३	२९	पंन्था	पन्था
२४	८	ङः	डः
२७	२४	भैषज	भेषज
३२	२	हाग्रः	हृथः
३५	२३	दस्त्रम्	दास्त्रम्
३६	२१	संकत्या	संमत्या
४०	३	स्त्येनः	श्येनः
४०	१७	या	वा
४०	२७	दवति	द्रवति
४२	२१	व्युत्पन्न	व्यु त्पन्न
४७	२३	०	नारी
५१	२६	लचणा	लक्ष्मणा
५५	२७	रष्ङ्कः	रङ्कः
५७	२६	युवती	युवतिः
८५	२९	वाणग्र	वाणाग्र
८६	८	मनते	भवते
९३	१९	कियुनम्	मिथुनम्
९४	१	१५९	१५८
९४	२२	कादेशोवा	कदेशोवा
९६	१७	अमितः	अमित्रः
९६	२०	क्रियये	क्रियते
९८	२४	फागुनो	फाल्गुनो
११२	०	पा० ४	पा० ५
११४	२२	४७	१४७
११४	८२	आपाणिक	आपणिकः
११६	५५	९	९०
११६	८१	१०१	१०८
११८	३२	४	१
१२०	८	६०	१६०
१२०	३१	२६	९६
१२४	५९	धिषसा	धिषणा
१२५	८३	६४	६९
१२७	१९	पालुः	पीलुः
१२९	६८	मरिचिः	मरीचिः
१३१	१५	युवाः	युवा
१३१	५९	२५	१२५

इति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Copy right Registered under Sections 18 and 19 Act XXV of 1867

॥ अथ वेदाङ्गप्रकाशः ॥

तत्रस्थः ।

षोडशो भागः ॥

निघण्टुः

यास्कमुनिनिर्मितो वैदिककोषः

श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वतीकृतशब्दानुक्रमणिकया सहितः ।

पण्डितज्वालादत्तशर्मणा संशोधितः

पठनपाठनव्यवस्थायां षोडशं पुस्तकम् ।

मुन्शी समर्थदान के प्रबन्ध से

वैदिकयन्त्रालयप्रयाग में मुद्रित हुआ ।

इस पुस्तक के छापने का अधिकार किसी को नहीं है ।

क्योंकि

इस को रजिस्टरी कराई गई है ।

संवत् १९४० आश्विनकृष्णा २

पहली बार १००० पुस्तक छपे

मूल्य ॥)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयसूचीपत्रम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्।

निघण्टुर्वैदिककोशः।

अथास्य भूमिका।

यह ग्रन्थ ऋग्वेदी लोगों के पठितव्य दश ग्रन्थों में है। विशेष कर वेद और सामान्य से लौकिक ग्रन्थों से भी संबन्ध रखता है। यह मूल और इस का भाष्य निरुक्त यह दोनों ग्रन्थ यास्क मुनि जी के बनाये हैं। सदा से चले आने से प्राचीन हैं। इस को बहुत पुस्तकों से मिला कर जो २ पुस्तकान्तरों में विशेष शब्द पाये वे नोट में धर दिये हैं। अकारादि शब्द क्रम से इस को शब्दानुक्रमणिका भी बना कर छपवाई है कि जिस से जिस शब्द को देखना चाहै झटिति देख सकता है इस में पांच अध्याय हैं। उस के प्रथम अध्याय में १७ खण्ड द्वितीयाध्याय में २२ तृतीयाध्याय में ३० चतुर्थाध्याय ३ और पंचमाध्याय में ६ खंड हैं। इस की शब्दानुक्रमणिका में प्रथम अङ्क से अध्याय और द्वितीय से खंड समझना। तृतीय कोष्ठ में अकारादि शब्द और चतुर्थ में जिस का नाम है लिखा है। परन्तु यह सब शब्द वेद में यौगिक और योगरूढि आते हैं केवल रूढि नहीं। इस में जो पदनाम हैं वे पद धातु के गत्यर्थ अर्थात् ज्ञान गमन प्राप्त्यर्थ के वाचक हो कर योगिक हो जाते हैं। यह ग्रन्थ सर्वत्र उपलब्ध नहीं था अब छपने से प्राप्त होने लगा है इस से बड़ा उपकार यह होगा। कि जो पुराण वालों ने अर्थ का अनर्थ किया है। सो इन आर्ष ग्रन्थों से निवृत्त हो कर सब के आत्मा में सत्य का प्रकाश होगा। निदर्शन जैसे पुराणी लोगों ने वृत्र शम्बर और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असुर शब्द से दैत्य निघंटुमें मेघ। पु॰अहि शब्दसे सर्प नि॰ मेघ। पु॰ अद्रि गिरि तथा पर्वत से केवल पहाड़ नि॰मेघ।पु॰ अश्मा, ग्रावा; शब्दोंसे पाषाण और नि॰मेघ । पु॰वराह से सुअर नि॰ मेघ। पु॰ धारा से जल का प्रवाह नि॰ वाणी । पु॰ गौरी से महादेव की स्त्री नि॰ वाणी पु॰कर्मकाण्डी स्वाहा शब्द सेअग्नि की स्त्री और स्वधा शब्द से पितृ की स्त्री नि॰ स्वाहा वाणी और स्वधा से अन्न। पु॰ शची शब्दसे इन्द्र की स्त्री नि॰में वाणी कर्म और प्रज्ञा का नाम है । पुराणीलोग शचीपति शब्द से देवों का राजा इन्द्र और वेद में वाणी कर्म और प्रज्ञा का पालन करने हारा स्वामी लिया जाता है। पु॰गय शब्द से एक मृतकों के अर्थ पिण्डप्रदानार्थ स्थानविशेष और निघं॰ अपत्य,धन और गृह का नाम है।पु॰ घृताची शब्द से देवलोक की वेश्या विशेष स्त्री और नि॰ में रात्रि का नाम है। आज कल के लोग विप्र शब्द से केवल ब्राह्मण और निघंटु में बुद्धिमान् का नाम है।पु॰श्रद्धा सेप्रीति और श्राद्ध से मृतकों की तृप्ति मानते हैं और नि॰ में श्रत् शब्द से सत्य और जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण हो वह श्रद्धा और जो इस से धर्मयुक्त कर्म किया जाय सो श्राद्ध कहाता है अब कहां तक लिखें मनुष्य लोग जब इस कोश को पढें गे तभी नवीन पुराणादि ग्रन्थों का मिथ्यापन और वेदों का सत्यत्व तथा वेदों के अर्थ करने में प्रवृत्ति अपने आप हो जायगी। जब तक वेदार्थ में प्रवृत्ति नहीं होती और व्याकरणादि का पढना निष्फल है। यद्यपि जहां तहां यंत्रालयों में निघंटु छपा है तथापि इस के छापने का मुख्य प्रयोजन यही है कि अकारादिशब्द क्रम से इस के साथ शब्दानुक्रमणिका ठिकाने के सहित छपवा दिई है कि जिस शब्द को निकालना चाहैं उस को शब्दानुक्रमणिका के अनुकूल देख के शीघ्र निकाल लेवें गे इस से जिस को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंठस्थ ग्रन्थ न होगा वह भी शब्दानुक्रमणिका से लाभ ले सकेगा अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वर्येषु ॥

इतिभूमिका समाप्ता ॥

निधि (९) रामा (३) ङ्क (९) चन्द्रे (१)ब्दे मार्गशीर्षसिते दले ॥
चतुर्थ्यां गुरुवारेयं निघंटुः शोधितोनघाः ॥ १ ॥

श्रीमन्महामहिमविक्रमभूपतेरेकोनचत्वारिंशदुत्तर
एकोनविंशतितमे संवत्सरे यन्त्रणाय मुनिवर
यास्कमुनिनिर्मितः सशब्दानुक्रमणिको
निघंटुः प्रेषितः ॥

स्थान महाराणा जी का
उदयपुर

दयानन्दसरस्वती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ अथ निघण्टुः ॥

प्रथमोऽध्यायः ॥

गौः । ग्मा । ज्मा । क्ष्मा । क्षा । क्षमा (१)। क्षोणिः (२)। क्षितिः । अवनिः । उर्वी । पृथ्वी । मही । रिपः (३)। अदितिः । इळा । निर्ऋतिः । भूः । भूमिः । पूषा । गातुः । गोत्रेत्येकविंशतिः पृथिवीनामधेयानि ॥ १ ॥

हेम (४)। चन्द्रम् । रुक्मम् । अयः । हिरण्यम् । पेशः । कृशनम् । लोहम् । कनकम् । काञ्चनम् । भर्म । अमृतम् । मरुत् । दत्रम् । जातरूपमिति पञ्चदश हिरण्यनामानि ॥ २ ॥

अम्बरम् । वियत् । व्योम । बर्हिः । धन्व । अन्तरिक्षम् । आकाशम् । आपः । पृथिवी । भूः । स्वयम्भूः । अध्वा । पुष्करम् । सगरः (५)। समुद्रः । अध्वरमिति षोडशान्तरिक्षनामानि ॥ ३ ॥

स्वः । पृश्निः । नाकः (६)। गौः । विष्टपम् । नभ इति षट् साधारणानि ॥ ४ ॥

खेदयः । किरणाः । गावः । रश्मयः (७)। अभीशवः । दीधितयः (८)। गभस्तयः । वनम् । उस्राः । वसवः । मरीचिपाः । मयूखाः । सप्तऋषयः । साध्याः । सुपर्णाः । इति पंचदश रश्मिनामानि ॥ ५ ॥

---

(१) इत्यस्यस्थाने । क्षुमः । क्षामा । क्षामः । क्षाम । इति चत्वारः शब्दाः पुस्तकान्तरेषु क्वचित् २ दृश्यन्ते ॥ (२) कृदिकारादक्तिन इति ङीषि सति क्षोणी । इत्यपि भवति ॥ (३) स्वरभेदेन रिपः, इत्यपि पु० २ दृश्यते ॥ (४) हेमाः, इत्यपि पु० २ ॥ (५) सगरम् । इति लिङ्गभेदेन पुस्तकान्तरपाठः ॥ (६) नाकाः । इति बहुवचनान्तः क्वचित् ॥ (७) रश्म्यः । इति ङीषि सति पु० २ ॥ (८) दिधीतयः । इत्यपि पुस्तकान्तरपाठः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आताः । आशाः । उपराः । आष्ठाः । काष्ठाः । व्योम । ककुभः । हरितः । इत्यष्टौ दिङ्नामानि ॥ ६ ॥

श्यावी । क्षपा । शर्वरी । अक्तुः । ऊर्म्या । राम्या (१) । यम्या । नम्या । दोषा । नक्ता । तमः । रजः । असिक्नी । पयस्वती । तमस्वती । घृताची । शिरिणा (२) । मोकी । शोकी । ऊधः (३) । पयः । हिमा (४) । वस्वी (५) । इति त्रयोविंशती रात्रिनामानि ॥ ७ ॥

विभावरी । सूनरी । भास्वती । ओदती । चित्रामघा । अर्जुनी । वाजिनी । वाजिनीवती (६) । सुम्नावरी । अहना । द्योतना । श्वैत्या । अरुषी (७) । सूनृता । सूनृतावती । सूनृतावरी । इति षोडशोषोनामानि ॥ ८ ॥

वस्तोः । द्युः (८) । भानुः । वासरम् । स्वसराणि । घ्रंसः । घर्मः । घृणः (९) । दिनम् । दिवा । दिवेदिवे । द्यविद्यवि । इति द्वादशाहर्नामानि ॥ ९ ॥

अद्रिः । ग्रावा । गोत्रः । बलः । अश्नः । पुरुभोजाः । बलिशानः (१०) । अश्मा । पर्वतः । गिरिः । व्रजः । चरुः । वराहः । शम्बरः । रौहिणः । रैवतः । फलिगः । उपरः । उपलः । चमसः । अहिः । अभ्रम (११) । बलाहकः । मेघः । दृतिः (१२) ।

(१) रम्या इति पाठः ॥ (२) शीर्षा इत्यपि पु० २ (३) उधा । इत्यपि पु० २ ॥ (४) हिम इत्यपि पु० २ ॥ (५) वस्ं । वस्ना । वसी । इत्यपि पु० २ ॥ (६) वाजिनिवती । इत्यपि पु० ॥ (७) अरुषी इत्यपि पु० ॥ (८) द्यौ इति पा० ॥ (९) घृणिः इत्यपि पु० ॥ (१०) पर्शानः । पर्णानः । इमावपि क्वचित् ॥ (११) अभ्रम् इत्यपि पु० ॥ (१२) दृत्तिः इति च पु० ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओदनः (१)। वृषन्धिः (२)। वृत्रः । असुरः । कोशः । इति त्रिंशन्मेघनामानि ॥ १० ॥

श्लोकः । धारा । इळा । गौः । गौरी । गान्धर्वी । गभीरा । गम्भीरा । मन्द्रा । मन्द्राजनी । वाशी । वाणी । वाणीची । वाणः । पविः । भारती । धमनिः । नाळीः (३) । मेळिः । मेना । सूर्या । सरस्वती । निवित् । स्वाहा । वग्नुः (४) । उपब्दिः । मायुः । काकुत् (५) । जिह्वा । घोषः । स्वरः । शब्दः । स्वनः । ऋक् । होत्रा । गीः । गाथा । गणः (६) । धेना । ग्नाः । विपा (७) । नना । कशा । धिषणा । नौः । अक्षरम् । मही । अदितिः । शची । वाक् । अनुष्टुप् । धेनुः । वल्गुः (८) । गल्दा (९) । सरः । (१०) । सुपर्णी (११) । बेकुरा (१२) । इति सप्तपंचाशद् वाङ्नामानि ॥ ११ ॥

अर्णः । क्षोदः । क्षद्म (१३) । नभः । अम्भः । कबन्धम् (१४) । सलिलम् । वाः । वनम् । घृतम् । मधु । पुरीषम् । पिप्पलम् । क्षीरम् । विषम् । रेतः । कशः (१५) । जन्म (१६) । बृबूकम् । बुसम् । तुग्र्या बर्बुरम् (१७) । सुक्षेम (१८) । धरुणम् ।

(१) ओदनम् । इति नपुंसकम् पु० ॥ (२) विषन्धिः । इत्यपि पु० ॥ (३) नालिः । नीलिः । इमौ क्वचित् ॥ (४) गग्नुः । इति क्वचित् ॥ (५) काकुप् इति पु० ॥ (६) गणा । इति पु० (७) नग्ना, इति पु० ॥ (८) वग्नुः । इति पु० ॥ (९) गल्दः । गल्दः । इमौ पु० ॥ (१०) रसः । रासः । इमौच पु० ॥ (११) सुपर्णा, इतिच पु० ॥ (१२) बेकु, इति पु० ॥ (१३) क्षद्मा । क्षद्मः । क्षद्म । इमे त्रयः पु० ॥ (१४) कवन्धम् । इति वकारभेदेन क्वचिद दृश्यते ॥ (१५) शकम् । पु० ॥ (१६) ब्रह्म । जह्म । इमावस्यैव स्थाने पु० दृश्यते ॥ (१७) बुबुरम् । बुबुरः । इमौ च पूर्ववत् ॥ (१८) सुक्षेमा । सुक्षोम । एतौच ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिरा (१)। अरविन्दानि (२)। ध्वस्मन्वत्। जामि (३)। आयुधानि। क्षपः। अहिः। अक्षरम् (४)। स्रोतः। तृप्तिः। रसः। उदकम् (५)। पयः। सरः। भेषजम्। सहः। शवः। यहः। ओजः। सुखम्। क्षत्रम्। आवयाः। शुभम्। यादुः (६)। भूतम्। भुवनम्। भविष्यत्। महत्। आपः। व्योम। यशः। महः। सर्णीकम् (७)। स्वृतीकम् (८)। सतीनम् (९)। गहनम्। गभीरम् (१०)। गम्भरम् (११)। ईम् (१२)। अन्नम्। हविः। सद्म। सदनम्। ऋतम्। योनिः। ऋतस्ययोनिः। सत्यम्। नीरम्। रयिः। सत्। पूर्णम्। सर्वम्। अक्षितम्। बर्हिः। नाम। सर्पिः। अपः। पवित्रम्। अमृतम्। इन्दुः। हेम (१३)। स्वः। सर्गाः। शम्बरम्। अभ्वम्। वपुः। अम्बु (१४)। तोयम्। तूयम्। कृपीटम् (१५)। शुक्रम्। तेजः। स्वधा। वारि। जलम्। जलाषम्। इदम्। इत्येकशतमुदकनामानि ॥ १२ ॥

अवनयः। यव्याः (१६)। खाः। सीराः। स्रोत्याः। एन्यः। धुनयः। रुजानाः। वक्षणाः। खादोअर्णाः। रोधचक्राः। हरितः। सरितः। अग्रुवः। नभन्वः (१७)। वध्वः। हिरण्यवर्णाः। रोहितः।

(१) सुरा। सुरा। इतिपु० ॥ (२) अरविंदानि। इतिपु० ॥ (३) जामिः। जामिवत्। इतिपु० ॥ (४) अक्षरः। अक्षराः। इति पाठान्तरम् ॥ (५) पयः। इत्यपि पु० ॥ (६) यादः इति क्वचित् पु० ॥ (७) स्वर्णीकम्। इति पु० ॥ (८) सतीकम्। सृतीकम्। इति पु० ॥ (९) सतिनम्। पु० ॥ (१०) गम्भीरम्। इति पु० ॥ (११) गह्वरम्। इति पु० ॥ (१२) कम्। इत्यधिकं क्वचित् पु० ॥ (१३) हेमा इति पु० ॥ (१४) अम्बुः, इति लिङ्गभेदेन क्वचित् ॥ (१५) कपीटम्। नृपीटम्। इति पुस्तकान्तरपाठः ॥ (१६) यव्वाः। इति पु० ॥ (१७) नभन्वाः, इति मात्राभेदेन पु० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्रुतः । अर्णाः । सिन्धवः । कुल्याः । वर्यः (१) । उर्व्यः । इरावत्यः । पार्वत्यः (२) । स्रवन्त्यः (३) । ऊर्जस्वत्यः । पयस्वत्यः । सरस्वत्यः । तरस्वत्यः । हरस्वत्यः । रोधस्वत्यः । भास्वत्यः । अजिराः । मातरः । नद्यः । इति सप्तत्रिंशन्नदीनामानि ॥ १३ ॥

अत्यः । हयः । अर्वा । वाजी । सप्तिः । वह्निः । दधिक्राः । दधिक्रावा । एतग्वः (४) । एतशः । पैद्वः । दौर्गहः । औच्चैःश्रवसः (५) । तार्क्ष्यः । आशुः । ब्रध्नः । अरुषः । मांश्चत्वः (६) । अव्यथयः (७) । श्येनासः । सुपर्णाः । पतङ्गाः । नरः । ह्वार्याणाम् (८) । हंसासः । अश्वाः । इति षड्विंशतिरश्वनामानि ॥ १४ ॥

हरी इन्द्रस्य । रोहितोऽग्नेः । हरित आदित्यस्य । रासभावश्विनोः । अजाः पूष्णः । पृषत्यो मरुताम् । अरुण्यो गाव उषसाम् । श्यावाः सवितुः । विश्वरूपा बृहस्पतेः । नियुतो वायोः । इति दशाऽऽदिष्टोपयोजनानि ॥ १५ ॥

भ्राजते । भ्राशते (९) । भ्राश्यति । दीदयति । शोचति । मन्दते । भन्दते । रोचते । द्योतते । ज्योतते द्युमत् । इत्येकादश ज्वलतिकर्माणः ॥ १६ ॥

जमत् । कल्मलीकिनम् । जञ्जणाभवन् । मल्मलाभवन् । अर्चिः । शोचिः । तपः । तेजः (१०) । हरः । घृणिः (११) । शृङ्गाणि । इत्येकादश ज्वलतो नामधेयानि ॥ १७ ॥

गौर्हेमाम्बरं ख१ः खेदय आताः श्यावी विभावरीवस्तोरद्रिः श्लोकोऽर्णोऽवनयोऽत्यो हरीन्द्रस्य भ्राजते जमदिति सप्तदश ॥

इति निघण्टौ प्रथमाध्यायः समाप्तः ॥

(१) ऋतावर्य्यः । इति पु० ॥ (२) वावत्यः । अर्वत्यः । इमौ पा० ॥ (३) रेवत्यः । इति पु० ॥ (४) एतग्वा इति पु० ॥ (५) उच्चैः श्रवसः । इति पु० ॥ (६) मंश्चतो । मंश्चतुः । इति पा० ॥ (७) व्यथयः । इति पा० ॥ (८) वार्याणाम् । इति पाठान्तरम् ॥ (९) भ्लाश्यति । भ्लाशते । भ्लाश्यते । इमे पुस्तकान्तरेषु दृश्यन्ते ॥ (१०) पयः । इति पु० ॥ (११) हृणिः । हणिः । इति पाठभेदः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयाध्यायारम्भः ।

अपः । अप्नः । दंसः । वेषः । वेपः (१) । विष्ट्वी । व्रतम् । कर्वरम् । शक्म (२) । क्रतुः । कृणवम् (३) । करणानि । करांसि । करन्ती (४) । करिक्रत् । चक्रत् (५) । कर्त्वम् (६) । कर्तोः । कर्तवै । कृत्वी । धीः । शची । शमी । शिमी । शक्तिः । शिल्पमिति षड्विंशतिः कर्मनामानि ॥ १ ॥

तुक् । तोकम् । तनयः (७) । तोक्म । तक्म । शेषः । अप्नः । गयः । जाः । अपत्यम् । यहुः । सूनुः । नपात् । प्रजा । बीजम् । इति पंचदशापत्यनामानि ॥

मनुष्याः । नरः (८) । धवाः । जन्तवः । विशः । क्षितयः । कृष्टयः । चर्षणयः । नहुषः (९) । हरयः । मर्याः । मर्त्याः । मर्ताः । व्राताः । तुर्वशाः । द्रुह्यवः । आयवः (१०) । यदवः । अनवः । पूरवः । जगतः । तस्थुषः । पञ्चजनाः । विवस्वन्तः । पृतनाः । इति पंचविंशतिर्मनुष्यनामानि ॥ ३ ॥

आयती । च्यवाना । अभीशू । अप्नवाना । विनङ्गृसौ । गभस्ती । करस्नौ । बाहू । भुरिजौ । क्षिपस्ती (११) । शक्वरी । भरित्रे । इति द्वादश बाहुनामानि ॥ ४ ॥

(१) वेशः । विष्टी । इति पुस्तकान्तर० ॥ (२) शक्म । शक्मम् । अस्यैव भेदः पु० ॥ (३) करणम् । इति पु० ॥ (४) करन्ति । इति पु० ॥ (५) चक्रतुः । इति पु० ॥ (६) कर्तुम् । इति पाठभेदपु० ॥ (७) तनयम् । इति लिङ्गभेदेन क्वचित् पु० ॥ (८) नराः । इति पुस्तकान्तरेषु ॥ (९) नहुषाः । इति वचन भेदेन क्वचित् पाठः ॥ (१०) आयवः । इति पु० ॥ (११) चिपंती । चिपन्ती । इति पु० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्रुवः । अण्व्यः (१)। विशः (२) । क्षिपः । शर्याः । रशनाः । धीतयः । अथर्यः (३) । विपः । कक्ष्याः । अवनयः । हरितः (४)। स्वसारः । जामयः । सनाभयः। योक्त्राणि। योजनानि। धुरः । शाखाः । अभीशवः। दीधितयः। गभस्तयः (५) । इति द्वाविंशतिरङ्गुलिनामानि ॥ ५ ॥

उश्मि । उश्मसि (६) । वेति। वेनति । वेसति (७)। वाञ्छति। वष्टि (८) । वनोति। जुषते । हर्यति (९)। आचके। उशिक्। मन्यते । छन्त्सत् (१०)। चाकनत्। चकमानः । कनति। कानिषत् । इत्यष्टादश कान्तिकर्माणः ॥ ६ ॥

अन्धः (११)। वाजः। पयः। प्रयः (१२)। पृक्षः। पितुः। वयः। सुतः (१३)। सिनम् (१४)। अवः। क्षु (१५)। धासिः। इरा। इळा। इषम्। ऊर्क्। रसः। स्वधा। अर्कः। क्षद्म (१६)। नेमः। ससम्। नमः। आयुः। सूनृता। ब्रह्म। वर्चः। कीलालम्। यशः। इत्यष्टाविंशतिरन्ननामानि ॥ ७ ॥

आवयति। भर्वति। बभस्ति। वेति। वेवेष्टि। अविष्यन्। बप्सति। भसथः। बब्धाम्। ह्वरति (१७)। इति दशात्तिकर्माणः ॥८॥

(१) विभ्वाः, इत्यधिकं क्वचित् पु०॥ (२) वृशः । इति पाठान्तरम् ॥ (३) अथर्यवः । अथर्याः इति पाठान्तरम् ॥(४) रोहितः, इति क्वचित् पाठः॥ (५) सुहस्त्यः । सस्वतः। अस्यैव स्थाने इमौ लभ्येते पु० ॥ (६) इतोऽग्रे, अववेति, इत्यधिकं पुस्तकान्तरेषु ॥ (७) विसति । वेशति । इति पुस्तकान्तरपाठः ॥ (८) वेष्टि, इति क्वचित् पु० ॥ (९) ईयर्ति । उशत् । इमावधिकौ पुस्तकान्तरेषु ॥ (१०) ग्रंसनत् । इति पु० ॥ (११) पाजः । इत्यधिकं क्वचित् पु० ॥ (१२) अर्वः, इति क्वचित् पु० ॥ (१३) सुतम् इति लिङ्गभेदेन दृश्यते पु० ॥ (१४) सीनमिति पु० ॥ (१५) चुमत् ॥ नुत् । इत्येतौ चु, इत्यस्यैव स्थाने दृश्येते पुस्तकान्तरेषु ॥ (१६) चदमः । इति पु० । (१७) ह्वयति, इति पु० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओजः (१) । पाजः । शवः । तरः । तवः । त्वक्षः । शर्द्धः (२) । बाधः । नृम्णम् । तविषी । शुष्मम् । शुष्णम् । शूषम् । दक्षः । वीळु । च्यौत्नम् । सहः । यहः । बधः । वर्गः । वृजनम् । वृक् (३) । मज्मना । पौंस्यानि । धर्णसिः (४) । द्रविणम् । स्यन्द्रासः । शम्बरम् । इत्यष्टाविंशतिर्बलनामानि ॥ ९ ॥

मघम् । रेक्णः । रिक्थम् । वेदः । वरिवः । श्वात्रम् । रत्नम् । रयिः । क्षत्रम् । भगः । मीढुम् (५) । गयः । नृम्णम् । द्युम्नम् । तना । बन्धुः । इन्द्रियम् । वसु । रायः । राधः । भोजनम् । मेधा । यशः । ब्रह्म । द्रविणम् (६) । श्रवः । वृत्रम् (७) । वृतम् । इत्यष्टाविंशतिरेव धननामानि ॥ १० ॥

अघ्न्या । उस्रा । उस्रिया । अही मही । अदितिः (८) । इळा । जगती शक्वरी । इति नव गोनामानि ॥ ११ ॥

रेळते । हेळते । भामते । हृणीयते (९) । भ्रीणाति । भ्रेषति । दोधति । वनुष्यति । कम्पते । भोजते । इति दश क्रुध्यतिकर्माणः ॥ १२ ॥

हेळः । हरः । घृणिः (१०) । त्यजः । भामः । एहः । ह्वरः (११) । तपुषी । जूर्णिः । मन्युः । व्यथिः । इत्येकादश क्रोधनामानि ॥ १३ ॥

वर्त्तते । अयते । लोटते । लोठते । स्यन्दते (१२) । कसति ।

(१) वाजः इत्यधिकं क्वचित् पुस्तके ॥ (२) त्वर्चः, इति पु० ॥ (३) विट्, इति पाठान्तरम् ॥ (४) धर्णसि, इति प्रधानं पाठः ॥ (५) मील्हम्, इति क्वचित् पु० ॥ (६) श्रवः । इत्यधिकं क्वचित् ॥ (७) ऋतम् । वित्तम् । इति पु० ॥ (८) अढितिः । इति पुस्तकान्तरपाठः ॥ (९) अस्यैव स्थाने हृणीयते, इति क्वचित् पु० ॥ (१०) घृणिः, इति च पु० ॥ (११) वरः, इति तस्यैव स्थाने पुस्त० । (१२) स्यन्दति । इति पु० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्पति । स्यमति । स्रवति (१) । स्रंसति । अवति । श्चोतति । ध्वंसति । वेनति । मार्ष्टि । भुरण्यति । शवति । काल्यति । पेलयति । कण्टति । पिस्यति । विस्यति । मिस्यति । प्रवते । प्लवते । च्यवते । कवते । गवते । नवते (२) । चोदति । नक्षति । सक्षति । स्यक्षति (३) । सचति (४) । ऋच्छति । तुरीयति । चतति । अतति । गाति । इयक्षति । सश्चति । त्सरति । रंहति । यतते । भ्रमति । ध्रजति । रजति । लजति । क्षियति । धमति । मिनाति (५) । ऋण्वति (६) । ऋणोति । स्वरति । सिसर्त्ति । विषिष्टि (७) । योषिष्टि (८) । रिणाति (९) । रीयते । रेजति । दघ्नति (१०) । दभ्नोति (११) । युध्यति (१२) । धन्वति । अरुषति (१३) । आर्यति (१४) । सीयते (१५) । तकति (१६) । दीयति । ईषति । फणति (१७) । हनति (१८) । अर्दति । मर्दति । सस्रते । नसते । हर्यति । इयर्त्ति । ईर्त्ते । ईङ्खते । जयति । श्वात्रति । गन्ति । आगनीगन्ति । जगन्ति (१९) ।

(१) स्रंसते । इति पाठश्च । (२) अवते । इत्यपि क्वचित् पु० ॥ (३) मियक्षति । इत्यपि पु० ॥ (४) अर्चति । इत्यपि० ॥ (५) । मिनोति । क्षिणोति । इतिपु० ॥ (६) रिखति । इत्यपि पु० ॥ (७) वेविष्टि । वेषिष्टि । इति क्वचित् पु० ॥ (८) योयिष्टि । इति च पु० ॥ (९) ऋणाति । ऋणन्ति । ऋणत्ति । इति भेदः पुस्तकान्तरे ॥ (१०) दध्यति । इतिभेदः । नख्यति । इत्यधिकं पु० ॥ (११) दघ्नोति । इति पु० ॥ (१२) युध्यते । इति क्वचित् पाठः ॥ (१३) अरुष्यति । अरषति । इतिपा० ॥ (१४) । अलर्यति । अलर्षति । इति पाठान्तरम् ॥ (१५) डीयते । इति बहुमतः पाठः ॥ (१६) दीयते । इत्यपि क्वचित् पा० ॥ (१७) अनकणति । इत्यपि क्वचित् पा० ॥ (१८) सस्रति । सिस्रति । धवति । धावति । हम्मति । हम्यति । हयति इत्येतेऽधिकाः पुस्तकान्तरे ॥ (१९) जङ्गन्ति इत्यपि पु० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्वति (१) । जसति । गमति । भ्रति । भ्राति । भ्रपति (२) । वहते (३) । रथर्यति । जेहते (४) । ष्वःकति (५) । चुम्पति (६) । ष्साति । वाति । याति । द्रुषति (७) । द्राति (८) । द्रूळ्हति । एजति । जसुति । जर्वति । वञ्चति अनिति । पर्वते (९) । हन्ति । सिंधति । अगन् । अजगन् । जिगाति । पतति । द्रुवति । द्रमति (१०) । द्रवति (११) । वेति । ह्यन्तात् (१२) । एति । जगायात् । अययुः (१३) । इति द्वाविंशशतं गतिकर्माणः ॥ १४ ॥

नु । मक्षु । द्रवत् । ओषम् । जीराः (१४) । जूर्णिः (१५) । शूर्त्ताः । शूघनासः (१६) । शीभम् । तृषु (१७) । तूयम् (१८) । तूर्णिः (१९) । अजिरम् (२०) । भुरण्युः । शु (२१) । आशु । प्राशुः (२२) । तूतुजिः (२३) । तूतुजानः (२४) । तुज्यमानासः ।

(१) जगाति । जगति । इत्यपि क्वचित् पु० ॥ (२) भ्रुवति इति पाठान्तरम् ॥ (३) । वल्गूयति । अथर्यति । इत्यधिकं क्वचित् पु० ॥ (४) जिहति, इतिभेदः । वर्दति । राति । रूळ्हति इत्यधिकं क्वचित् पुस्तकान्तरपाठः ॥ (५) षःकति । ष्वक्कति इति पु० ॥ (६) चिम्पति । इति पु० ॥ (७) । जायति इत्यधिकं क्वचित् पु० ॥ (८) पुतयति इत्यप्यधिकं क्वचित् पु० ॥ (९) प्लवति इति पु० ॥ (१०) व्रजति इत्यधिकं क्वचित् पु० ॥ (११) दूवति । द्रुम्मति । इति पाठान्तरम् ॥ (१२) यकाराभावे । हन्तात् । इति पु० ॥ (१३) अयुथुः । अयुधुः । इति तस्यैव भेदेन पाठः (१४) । जिरा इति पु० ॥ (१५) जूर्णीः । इति ङीष्भेदेन दीर्घान्तः पु० ॥ (१६) शुघनसाः । शूधनाः । शूघनाशः । इति तस्यैव भेदेन पाठान्तरम् ॥ (१७) त्रिषु । इति पु० (१८) । तीयम् । इति पा० (१९) । तूर्णि इति लिङ्गभेदेन पा० ॥ (२०) अजिरम् । इत्याद्युदात्तस्वरभेदेन क्वचित् पाठः ॥ (२१) शूः । आशुः । इति पूर्वापरयोर्भेदः पु० ॥ (२२) प्राशुचित् । प्राशुवित् इति पाठान्त० ॥ (२३) । तूतुजित् इतिपाठान्तरम् ॥ (२४) तूतुजानासः । इति पा० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज्राः (१) साचिवित् । (२) द्युगत् (३) । ताजत् । तरणिः । वातरंहाः । इति षड्विंशतिः क्षिप्रनामानि ॥ १५ ॥

तजित् (४)। आसात् (५)। अम्बरम्। तुर्वशे (६) अस्तमीके । आके । उपाके । अर्वाके (७)। अन्तमानाम् । अवमे । उपमे । इत्येकादशान्तिकनामानि ॥ १६ ॥

रणः । विवाक् । विखादः । नदनुः । भरे । आक्रन्दे । आहवे आजौ । पृतनाज्यम् । अभीके । समीके । ममसत्यम् । नेमधिता (८) सङ्काः । समितिः । समनम् । मीळ्हे । पृतनाः । स्पृधः । मृधः । पृत्सु । समत्सु । समर्ये । समरणे । समोहे । (९) समीथे (१०) सङ्ख्ये । सङ्गे । संयुगे (११) । सङ्गथे । सङ्गमे । वृत्रतूर्ये । पृक्षे । आणौ (१२) शूरसातौ । वाजसातौ । समनीके । खले । खजे । पौंस्ये । महाधने । वाजे । अज्म । सद्म (१३) संयत् । संवतः (१४) इति षट्चत्वारिंशत्संग्रामनामानि ॥ १७ ॥

इन्वति । नक्षति । (१५) आक्षाणः । आनट् । आष्ट । (१६) आपानः । अशत् । नशत् । आनशे । अश्नुते । इति दश व्याप्तिकर्माणः ॥ १८ ॥

(१) अजराः। इति पा०॥ (२) साचीवित् । साचीवत्। इति पुस्तकान्त०॥ (३) युगत् । इति पु० ॥ (४) तुजित् इति पा० ॥ (५) आसा । इति तकाराभावे तस्यैव भेदः ॥ (६) तुर्वशः । इति पा० ॥ (७) अर्वाकः । इति पु० ॥ (८) नेमधितिः । इति पा० ॥ (९) सम्मोहे इति पु० ॥ (१०) समिथे । सङ्खे इति पूर्वापरयोर्भेदेन पाठः ॥ (११) इत्यस्मात् पूर्वं संयत् । इत्यधिकं क्वचित् पुस्तके ॥ (१२) प्रधने । इत्यधिकं क्वचित् पु० ॥ (१३) अग्मन् । सग्मन् । स्पग्मन् । इत्येतेऽधिकाः पु० ॥ (१४) संवतम् । इति पाठान्तरम् ॥ (१५) ननक्षे इति पा० ॥ (१६) आष्ठ । आष्टः। आष्ठः । इति तस्यैव भेदः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दभ्नोति (१)। श्नथयति। ध्वरति। धूर्वति। वृणक्ति। वृश्चति। कृणवति (२)। कृन्तति। श्वसिति (३)। नभते (४)। अर्दयति। स्तृणाति। स्नेहयति (५) यातयति (६)। स्फुरति स्फुलति। निर्वपन्तु। अववतिरति। वियातः। आतिरत्। तळित् आखण्डल। दृणाति। रम्णाति। शृणाति। श्नप्नाति। तृणेढि। तार्ढि। निताशते (७)। निबर्हयति (८)। मिनाति। मिनोति। धमति (९)। इति त्रयस्त्रिंशद्वधकर्माणः ॥ १९ ॥

दिद्युत्। नेमिः। हेतिः। नमः। पविः। सृकः। वृकः। वधः। वज्रः। अर्कः (१०)। कुत्सः। कुलिशः। तुञ्जः। तिग्मम् (११)। मेनिः। स्वधितिः। सायकः। परशुः। इत्यष्टादश वज्रनामानि॥२०॥

इरज्यति। पत्यते। क्षयति (१२)। राजति। इति चत्वार ऐश्वर्यकर्माणः ॥ २१ ॥

राष्ट्री। अर्यः। नियुत्वान्। इनइनः। इति चत्वारीश्वरनामानि ॥ २२॥

अपस्तुङ्क् मनुष्यं। अपत्यगुर्वो वश्म्यन्ध आव यत्यो जोमघमघ्न्यं रिक्ते हैळोवर्त्तते बुतळिद्रणाद्दन्वातिदभ्नोतिदिद्युदिरज्यतिराष्ट्रीतिद्वाविंशतिः ॥

॥ इति निघण्टौ द्वितीयाध्यायः समाप्तः ॥

(१) श्नथति इत्यधिकं क्वचित् पु०। अथति। इति परस्यपाठान्तरम् ॥ (२) कृणत्ति। कृणत्ति। इति पु०॥ (३) श्वसति। इति पा० ॥(४) नभति इति पु० ॥ (५) स्नेहति इति पूर्वस्यैव भेदपाठः। अर्दति। मर्दति। इत्यधिकं क्वचित् ॥ (६) यार्चति। यावति। इति पुस्तकान्तरपाठः ॥ (७) नितोषति। नितोशयति इति भेदेन क्वचित् पाठः॥ (८) वर्हयति पु०॥(९) जूर्वति। इत्यधिकं क्वचित्॥(१०) अक्तः। इतिपु०॥(११) तुञ्जः। तिग्मः। इति पाठान्तरम् ॥(१२) क्षियति। इति क्वचित्पाठः।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ तृतीयाध्यायारम्भः।

उरु। तुवि। पुरु। भूरि। शश्वत्। विश्वम्। परीणसा। व्यानशिः। शतम्। सहस्रम्। सलिलम् (१)। कुवित्। इति द्वादश बहुनामानि॥ १॥

ऋहन् (२) ह्रस्वः। निघृष्वः। (३) मायुकः। प्रतिष्ठा। कृधु (४)। वम्रकः। दभ्रम् (५)। अर्भकः। क्षुल्लकः। अल्पः (६)। इत्येकादश ह्रस्वनामानि॥ २॥

महत् (७)। ब्रध्नः। ऋष्वः। बृहत् (८)। उक्षितः। तवसः। तविषः। महिषः। अभ्वः। ऋभुक्षाः। उक्षाः। विहायाः। यह्वः। ववक्षिथ। ववक्षसे। अम्भृणः। माहिनः। गभीरः। ककुहः (९)। रभसः। व्राधन् (१०)। विरप्शी। अद्भुतम् (११)। बंहिष्ठः (१२)। बर्हिषत् (१३)। इति पञ्चविंशतिर्महन्नामानि॥ ३॥

गयः। कृदरः। गर्त्तः। हर्म्यम्। अस्तम्। पस्त्यम्। दुरोणे। नीळम्। दुर्य्याः। स्वसराणि। अमा। दमे। कृत्तिः। योनिः। सद्म। शरणम्। वरूथम्। छर्दिः। छदिः। छाया। शर्म। अज्म (१४)। इति द्वाविंशतिर्गृहनामानि॥ ४॥

---

(१) सरिरम्। इति पुस्तकान्तरपाठः॥ (२) रिहम्। ऋहम्। ऋहत्। इति पा०॥ (३) वृषमः। त्रिषमः। इत्यधिकौ पु०॥ (४) कृधुकः। ऋधुकः। इति पा०॥ (६) अल्पकम्। पुस्तकान्तरपाठः॥ (५) दहरकः। देहरकः। इमावधिकौ पु०॥ (६) अल्पकम्। इति पा०॥ (७) महः। इति पु०॥ (८) तुचः। इत्यधिकः पु०॥ (९) ककुहस्तिना। इति पाठभेदः॥ (१०) व्राधम्। व्राधत्। इति पु०॥ (११) अद्भुतः। इति लिंगभेदः॥ (१२) बर्हिष्ठः। इति पु०॥ (१३) बर्हिषि। इति पु०॥ (१४) वर्म। इति पु०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इ॒र॒ज्यति॑ (१) । वि॒धे॑म । स॒प॒र्यति॑ । न॒म॒स्यति॑ । दु॒व॒स्यति॑ । ऋ॒ध्नोति॑ । ऋ॒णद्धि॑ । ऋ॒च्छति॑ । स॒पति॑ (२) । वि॒वा॒सति॑ । इति दश परिचरणकर्माणः ॥ ५ ॥

शि॒म्बा॒ता॑ । श॒त॒रा । शा॒त॑पन्ता । शर्म॑ (३) । स्यू॒म॒कम् । शे॒व॑धम् । मयः॑ । सु॒ग्म्य॒म् । सु॒दि॒न॒म् । शू॒ष॒म् । शु॒न॒म् । शु॒ग्म॒म् । (४) भे॒ष॒ज॒म् । ज॒ला॒ष॒म् । स्यो॒न॒म् । सु॒म्न॒म् । शे॒व॑म् । शि॒व॒म् । शम् । कम् । इति विंशतिः सुखनामानि । ६ ॥

नि॒र्णिक् । व॒व्रिः । वर्पः॑ । वपुः॑ (५) । अ॒मतिः॑ । अप्सः॑ (६) । प्सुः । अप्नः॑ । पि॒ष्ट॒म् । पेशः॑ । दृ॒श॑न॒म् । प्र॒रुत् । (७) अर्जु॑नम् । ता॒म्र॒म् । अ॒रु॒ष॒म् । शि॒ल्प॒म् (८) । इतिषोडश रूपनामानि ॥ ७ ॥

अ॒स्रे॒मा । अ॒ने॑मा । अ॒ने॑द्यः । (९) अ॒न॒व॒द्यः । अ॒न॑भिशस्ताः (१०) । उ॒क्थ्यः॑ । सु॒नी॒थः । पा॒कः । वा॒मः । व॒यु॒न॒म् । इति दश प्रशस्यनामानि ॥ ८ ॥

केतः॑ । केतुः॑ । (११) चेतः॑ । चि॒त्त॒म् । क्रतुः॑ । असुः॑ । धीः । शची॑ । मा॒या । व॒यु॒न॒म् । अ॒भिख्या । इत्येकादशप्रज्ञानामानि ॥ ९ ॥

बट् । श्रत् । स॒त्रा । अ॒द्धा । इ॒त्था । ऋ॒तम् । इति षट् सत्यनामानि ॥ १० ॥

चिक्य॑त् (१२) । चा॒क॒नत् (१३) । आचक्ष॑ (१४) । चष्टे॑ । विच॑ष्टे । विच॑र्षणिः । वि॒श्वच॑र्षणिः । अवचाकशत् । इत्यष्टौ पश्यतिकर्माणः ॥ ११ ॥

(१) इ॒रु॒ध्यति । इतिपा० ॥ (२) स॒र्वति । इतिपा० ॥ (३) शि॒लगुः । इति बहुमतः पा० ॥ (४) शु॒ग्म्यम् । इतिपा० ॥ (५) अपुः॑ । इत्यधिकं क्वचित् ॥ (६) बप्सः । इतिपा० ॥ (७) प्स॒रः । इतिपा० ॥ (८) शष्प्य॑म् । शि॒ष्प्य॑म् । इति पा० ॥ (९) अनिन्द्यः । इत्यधिकं पु० ॥ (१०) अन॑भिशस्तिः । इति सम्मतः पाठः ॥ (११) क्रतुः । इतिपु० । (१२) चिक्यं॑म् । पा० । (१३) च॒ना । इतिपा० ॥ (१४) चाक्ष॑ । अच॑क्ष । इतितस्यैव भेदः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह्विकम् । नुकम् । सुकम् । आह्विकम् । आकीम् । (१) नकिः । माकिः । नकीम् । आकृतम् । इति नवोत्तराणि पदानि सर्वपदसमाम्नायः ॥ १२ ॥

इदमिव । इदंयथा । अग्निर्न ये । चतुरश्चिद्ददमानात् । ब्राह्मणाव्रतचारिणः । वृक्षस्य नु ते पुरुहूतवयाः । जारआभगम् । मेषोभूतो ३ भियन्नयः । तद्रूपः । तद्वर्णः । तद्वत् । तथा । इत्युपमाः ॥ १३ ॥

अर्चति । गायति । रेभति । स्तोभति । गूर्धयति गृणाति । जरते (२) । ह्वयते (३) । नदति । पृच्छति । रिहति । धमति । कृपायति (४) । कृपण्यति । पनस्यति (५) । पनायते । वल्गूयति । मन्दते । भन्दति । छन्दति । छदयते (६) । शशमानः रञ्जयति । रजयति । शंसति । स्तौति । यौति । रौति । नौति । भनति (७) । पणायति (८) । पणते । सपति (९) । पपृक्षाः (१०) महयति । वाजयति । पूजयति । मन्यते (११) । मदति । रसति । स्वरति । वेनति । मन्द्रयते (१२) । जल्पति (१३) । इतिचतुश्चत्वारिंशदर्चतिकर्माणः ॥ १४ ॥

(१) आकिम् । इति पाठान्तरम् ॥ (२) जरति । इति पु० ॥ (३) ह्वयति । पा० ॥ (४) कृपा । इति पा० ॥ (५) पणस्यति । पणायते । इति पूर्वापरयोर्भेदः ॥ (६) छदयति । इति पा० ॥ (७) भणति । इति णत्वभेदः ॥ (८) भणायते । इति भेदः ॥ (९) स्वपिति । इति पा० ॥ (१०) पिपृक्षाः । इति पा० ॥ (११) स्वदति । इत्यधिकं पु० ॥ (१२) कल्पते । इत्यधिकं पु० ॥ (१३) मन्त्रयते । वन्दते । इमावधिकौ पुस्तकान्तरे ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विप्रः । विग्रः । गृत्सः । धीरः । वेनः । वेधाः (१) । कण्वः । ऋभुः । नवेदाः । कविः । मनीषी । मन्धाता । विधाता । विपः । मनश्चित् । विपश्चित् । विपन्यवः । (२) । आकेनिपः (३) । उशिजः । कीस्तासः । अद्धातयः । मतयः । मतुथाः (४) । वाघतः (५) । इति चतुर्विंशति मेधाविनामानि ॥ १५ ॥

रेभः । जरिता । कारुः । नदः । स्तामुः (६) । कीरिः । गौः । सूरिः । नादः । छन्दः । स्तुप् (७) । रुद्रः । कृपण्युः । इति त्रयोदशस्तोतृनामानि ॥ १६ ॥

यज्ञः । वेनः अध्वरः । मेधः । विदथः । नार्यः । सवनम् (८) । होत्रा । इष्टिः । देवताता । मखः । विष्णुः । इन्दुः । प्रजापतिः । घर्मः । इति पँचदशयज्ञनामानि ॥ १७ ॥

भरताः (९) कुरवः । वाघतः । वृक्तबर्हिषः । यतस्रुचः । मरुतः । सबाधः । देवयवः इत्यष्टावृत्विङ्नामानि ॥ १८ ॥

ईमहे । यामि । मन्महे । दद्धि । शग्धि (१०) पूर्द्धि । दिदिढ्ढि । मिमिढ्ढि । सिमीहि । रिरीहि । पीपरत् । यन्तारः । यन्धि (११) इषुध्यति । मदेमहि । मनामहे । मायते । इति सप्तदश याञ्चाकर्माणः ॥ १९ ॥

(१) मेधः । इत्यधिकः पु० ॥ (२) विपन्युः । इति पु० ॥ (३) केनिपः । अयमधिकः पु० ॥ (४) मनुषाः ॥ (५) मेधाविनः । इत्यधिकं पु० ॥ (६) तामुः । इति पाठान्तरम् ॥ (७) स्तुत् इति पाठान्तरम् ॥ (८) नारी । अयमधिकः पु० ॥ (९) भारताः । इति पाठभेदः ॥ (१०) दग्धि । इति पा० ॥ (११) यन्ति । इति पाठान्तरम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाति । दाशति । दासति । राति । रासति । पृणक्षि (१) । पृणाति (२) । शिक्षति । तुञ्जति । मंहते । इति दश दानकर्माणः ॥ २० ॥

परिस्रव (३) । पवस्व । अभ्यर्ष । आशिषः । इति चत्वारोऽध्येषणाकर्माणः ॥ २१ ॥

स्वपिति । सस्ति (४) । इति द्वौ स्वपितिकर्माणौ ॥ २२ ॥

कूपः । कातुः । कर्त्तः । वव्रः । काटः । खातः (५) । अवतः । क्रिविः (६) सूदः । उत्सः । ऋश्यदात् । कारोतरात् (७) । कुशयः । केवटः । इति चतुर्दश कूपनामानि ॥ २३ ॥

तृपुः (८) । तक्वा (९) । रिम्भा (१०) । रिपुः । रिक्वा । रिहायः । तायुः । तस्करः । वनर्गुः । हुरश्चित् । मुषीवान् । मलिम्लुचः । अघशंसः । वृकः । इति चतुर्दशैव स्तेननामानि ॥ २४ ॥

निण्यम् । सस्वः । सनुतः । हिरुक् । प्रतीच्यम् (११) । अपीच्यम् । इति षण् निर्णीतान्तर्हितनामधेयानि ॥ २५ ॥

आके । पराके । पराचैः । आरे । परावतः । इति पञ्च दूरनामानि ॥ २६ ॥

(१) पृणक्ति । इति पा० ॥ (२) इस्वति । इत्यधिकं पु० ॥ (३) परिस्रव । इति शकारभेदेन पाठः ॥ (४) स्वस्ति । इतिपा० ॥ (५) अवटः । अयमधिकः पुस्तकान्तरे ॥ (६) क्रविः । इति पाठः ॥ (७) कारोतरः । इति पाठः॥ (८) त्रिपुः । इति पाठः ॥ (९) रितक्वा । त्रिक्वा । त्वक्वा । इति पुस्तकान्तरपाठः ॥ (१०) रिह्वा । इतिपाठान्तरम् ॥ (११) प्रतीच्यम् । इति पा० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्नम् । प्रदिवः । प्रवयाः । सनेमि । पूर्व्यम् (१) । अह्नाय । इति षट् पुराणनामानि ॥ २७ ॥

नवम् । नूतनम् । नूतनम् । नव्यम् । इदा । इदानीम् । इति षडेव नवनामानि ॥ २८ ॥

प्रपित्वे । अभीके । दभ्रम् । अर्भकम् । तिरः । सतः । त्वः । नेमः । ऋक्षाः । स्तृभिः । वम्रीभिः । उपजिह्विका । ऊर्दरम् । कृदरम् । रम्भः । पिनाकम् । मेना । ग्नाः । शेपः । वैतसः । अया । एना । सिषक्तु (२) । सचते । भ्यसते (३) रेजते । इति षड्विंशतिर्द्विश उत्तराणि नामानि ॥ २९ ॥

स्वधे (४) पुरन्धी । धिषणे । रोदसी (५) । क्षोणी । अम्भसी । नभसी । रजसी । सदसी । सद्मनी । घृतवती । बहुले । गभीरे । गम्भीरे । ओण्यौ । चम्वौ (६) पार्श्वौ (७) महौ । उर्वी । पृथ्वी (८) । अदिती । अह्नी । दूरेअन्ते । अपारेअपारे । इति चतुर्विंशतिर्द्यावापृथिवीनामधेयानि ॥ ३० ॥

उर्व्यृ१ हन्महद्वयदूरज्यतिशिम्बातानिर्णिगस्त्रेमाकीतुर्वट्चिक्यद्धिकमिदमिवार्चतिविप्रोरिभोयक्षोभरताईमहेदातिपरिस्रवस्वपितिकूपस्तृपुर्निण्यमाकिप्रत्नन्नवम्प्रपित्वेस्वधेत्रिंशत् ॥

इति निघण्टौ तृतीयोऽध्यायः समाप्तः ॥

(१) पूर्वा । इति पा० ॥ (२) सिषक्ति । इति पा० ॥ (३) नंसते । इत्यधिकं पु० ॥ (४) सुधे । इति पु० ॥ (५) रोधसी । इति वर्णभेदेनाधिकं वा पु० ॥ (६) अतः पूर्वं नप्त्री । इत्यधिकं क्वचित् । अतोऽग्रे च चुम्बी । इति भेदपाठः ॥ (७) पार्श्वी । इति पा० ॥ (८) बृहती । इत्यधिकमत्र पुस्तकान्तरे ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्थोऽध्यायारम्भः ॥

—०*०—

जहा । निधा । शिताम । मेहना । दमूनाः । मूषः (१) । इषिरेण । कुरुतन । जठरे । तितउ । शिप्रे । मध्या । मन्दू । ईर्मान्तासः । कायमानः । लोधम् । शीरम् । विद्रधे । द्रुपदे । तुग्वनि । नंसन्ते । नसन्तः (२) । आहनसः । अदमसत् । इष्मिणः । वाहः । परितक्म्या । सुविते । दयते । नूचित् । नूच । दावने । अकूपारस्य । शिशीते । सुतुकः । सुप्रायणाः । अप्रायुवः । च्यवनः । रजः । हरः । जुहुरे । व्यन्तः । क्राणाः । वाशी । विषुणः । जामिः । पिता । शंयोः । अदितिः । एरिरे । जसुरिः । जरते । मन्दिने । गौः । गातुः । दंसयः । तताव । चयसे । वियुते । ऋधक् । अस्याः । अस्य । इति द्विषष्टिः पदानि ॥ १ ॥

सस्निम् । वाहिष्ठः । दूतः । वावशानः । वार्यम् । अन्धः । असश्चन्ती । वनुष्यति । तरुष्यति । भन्दनाः । आहनः । नदः । सोमो अक्षाः । श्वात्रम् । ऊतिः । हासमाने । पड्भिः । सुसम् । द्विता । व्राः । वराहः । स्वसराणि । शर्याः । अर्कः । पविः । वक्षः । धन्व । सिनम् । इत्था । सचा । चित् । आ । द्युम्नम् । पवित्रम् । तोदः । स्वञ्चाः । शिपिविष्टः । विष्णुः । आघृणिः । पृथुज्रयाः । अस्रयुम् । काणुका । अध्रिगुः । आङ्गूषः । आपान्तमन्युः । श्मशा । उर्वशी ।

---

(१) इषिरः । इत्यधिकं ु० ॥ (२) नसन्तः इत्यप्यधिकं क्वचित् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वयुनम् । वाजपस्त्यम् । वाजगन्ध्यम् । गध्यम् (१) । गधिता । कौरयाणः । तौरयाणः । अह्रयाणः (२) । आरितः । वन्दी । निष्षपी । तूर्णाशम् । क्षुम्पम् । निचुम्पुणः । पदिम् । पादुः । वृकः । जोषवाकम् । कृत्तिः । श्वघ्नी । समस्य । कुटस्य । चर्षणिः । शम्बः । केपयः । तूतुमाकृषे । असंतम् । काकुदम् । बीरिटे । अच्छ । परि । ईम् । सीम् । एनम् । एनाम् । सृणिः । इति चतुरुत्तरमशीतिः पदानि ॥ २॥

आशुशुक्षणिः । आशाभ्यः । काशिः । कुणारुम् । अलातृणः । सललूकम् । कत्पयम् । विस्रुहः । वीरुधः । नक्षद्दाभम् । अस्कृधोयुः । शृम्भाः । वृबदुक्थम् । ऋदूदरः । ऋदूपे । पुलुकामः । असिन्वती । कपना । भार्ऋजीकः । रुजानाः । जूर्णिः । ओमना । उपलप्रक्षिणी । उपसि । प्रकलवित् । अभ्यर्धयज्वा । ईक्षे । क्षोणस्य । अस्मे । पाथः । सवीमनि । सप्रथाः । विदथानि । श्रायन्तः । आशीः । अमीगः । असूरः । शुशुमानः । देवोदेवाच्या कृपा । विजामातुः । ओमासः । सोमानम् । अनर्वायम् । किमीदिने (१) अमवान् । अमीवा । दुरितम् । अप्वा । अमतिः । श्रुष्टी । पुरंधिः । रुशत् । रिशादसः । सुदत्रः । सुविदत्रः । आनुषक् । तुर्वणिः । गिर्वणसे । असूर्त्ते सूर्त्ते । अम्यक् । यादृश्मिन् । जारयायि । अग्रिया । चनः । पचता । शुरुधः । अमिनः । जज्झती । अप्रतिष्कुतः । शाशदानः । सुप्रः । सुशिप्रः । शिप्रे । रंसु । द्विबर्हाः । अक्रः । उराणः । स्तियानाम् । स्तिपाः । जबारु । जरूथम् ।

(१) गध्यति । इत्यधिकमत्र पुस्तकान्तरे ॥ (२) ह्वयाणः । इति पुस्तकान्तरपाठः ॥
(३) अप्नः । अमः । इत्यधिकौ क्वचित् पुस्तकान्तरे ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलिशः। तुञ्जः। बर्हणा। ततनुष्टिम्। इलीबिशः। कियेधाः। भृमिः। विष्पितः। तुरीपम्। रास्पिनः। ऋञ्जतिः। ऋजुनीती। प्रतद्वसू। हिनोत। चोष्कूयमाणः। चोष्कूयते। सुमत्। दिविष्टिषु। दूतः। जिन्वति। अमत्रः। ऋचीषमः। अनर्शरातिम्। अनर्वा। असामि। गल्दया जल्हवः। बकुरः। बेकनाटान्। अभिधेतन। अंहुरः। बतः। वाताप्यम्। चाकन्। रथर्यति। असक्राम्। आधवः। अनवब्रवः। सदान्वे। शिरिम्बिठः। पराशरः। क्रिविर्दती। करूळती। दनः। शरारुः। इदंयुः। कीकटेषु। बुन्दः। वृन्दम्। किः। उल्बम्। ऋबीसमृबीसमिति पञ्चत्रिंशच्छतं पदानि ॥ ३ ॥

जहामसि माशुशुचस्त्रीणि ॥ ३ ॥

॥ इति नैघण्टुके चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथ पञ्चमाध्यायारम्भः ॥

—— * ——

अग्निः। जातवेदाः। वैश्वानरः। इति त्रीणि पदानि ॥ १ ॥

द्रविणोदाः। इध्मः। तनूनपात्। नराशंसः। इळः। बर्हिः। द्वारः। उषासानक्ता। दैव्याहोतारा। तिस्रो देवीः। त्वष्टा। वनस्पतिः। स्वाहाकृतय इति त्रयोदश पदानि ॥ २ ॥

अश्वः। शकुनिः। मण्डूकाः। अक्षाः। ग्रावाणः। नाराशंसः (१)। रथः। दुन्दुभिः। इषुधिः। हस्तघ्नः। अभीशवः। धनुः। ज्या। इषुः। अश्वाजनी। उलूखलम्। वृषभः। द्रुघणः। पितुः। नद्यः। आपः। ओषधयः।

(१) नराशंसः। इति पुस्तकान्तर पाठः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात्रिः । अरण्यानी । श्रद्धा । पृथिवी । अप्वा । अग्नायी । उलूखले मुसले । हविर्धाने । द्यावापृथिवी । विपाट्छुतुद्री । आर्त्नी । शुनासीरौ । देवीजोष्ट्री । देवीऊर्जाहुतीति षट्त्रिंशत्पदानि ॥ ३ ॥

वायुः । वरुणः । रुद्रः । इन्द्रः । पर्जन्यः । बृहस्पतिः । ब्रह्मणस्पतिः । क्षेत्रस्यपतिः । वास्तोष्पतिः । वाचस्पतिः । अपांनपात् । यमः । मित्रः । कः । सरस्वान् । विश्वकर्म्मा । तार्क्ष्यः । मन्युः । दधिक्राः । सविता । त्वष्टा । वातः । अग्निः । वेनः । असुनीतिः । ऋतः । इन्दुः । प्रजापतिः । अहिः । अहिर्बुध्न्यः । सुपर्णः । पुरूरवा । इति द्वात्रिंशत्पदानि ॥ ४ ॥

श्येनः । सोमः । चन्द्रमाः । मृत्युः । विश्वानरः । धाता । विधाता । मरुतः । रुद्राः । ऋभवः । अङ्गिरसः । पितरः । अथर्वाणः । भृगवः । (१) आप्त्याः । अदितिः । सरमा । सरस्वती । वाक् । अनुमतिः । राका । सिनीवाली । कुहूः । यमी । उर्वशी । पृथिवी । इन्द्राणी । गौरी । गौः । धेनुः । अघ्न्या । पथ्या । स्वस्तिः । उषाः । इळा । रोदसी । इति षट्त्रिंशत्पदानि ॥ ५ ॥

अश्विनौ । उषाः । सूर्या । वृषाकपायी । सरण्यूः । त्वष्टा । सविता । भगः । सूर्यः । पूषा । विष्णुः । विश्वानरः । वरुणः । केशी । केशिनः । वृषाकपिः । यमः । अजएकपात् । पृथिवी । समुद्रः । अथर्वा । मनुः । दध्यङ् । आदित्याः । सप्तऋषयः । देवाः । विश्वेदेवाः । साध्याः । वसवः । वाजिनः । देवपत्न्यो देवपत्न्य इत्येकत्रिंशत्पदानि ॥ ६ ॥

अग्निर्द्रविणोदा अश्वो वायुः श्येनोऽश्विनौ षट् ॥ ६ ॥

इति नैघण्टुके पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ नैघण्टुकं समाप्तम् ॥

(१) ऋषयः । इत्यधिकं पुस्तकान्तरे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

॥ अथ निघण्टोः शब्दानुक्रमणिका ॥

—— * ——

अध्याय	खण्ड	अकारादयः	विषयः	अध्याय	खण्ड	अकारादयः	विषय.
४	३	अक्तः	पदनाम	४	२	अथर्युम्	पदनाम
१	११	अक्षरम्	वाङ्नाम	५	६	अथर्वा:	„
१	१२	अक्षरः	उदकनाम	५	५	अथर्वाणः	„
१	१२	अक्षरा	„	४	१	अद्मसत्	„
२	१४	अगन्	गतिकर्मा	१	३	अध्वरम्	अन्तरिक्षनाम
२	१७	अग्मन्	संग्रामनाम	३	१७	अध्वरः	यज्ञनाम
२	२४	अघशंसः	स्तेननाम	४	२	अन्धः	पदनाम
४	२	अच्छ	पदनाम	२	७	अन्धः	अन्ननाम
२	१४	अचति	गतिकर्मा	२	१६	अन्तमानाम्	अन्तिकनाम
३	११	अचष्ट	पश्यतिकर्मा	१	१२	अन्नम्	उदकनाम
५	६	अजएकपात्	पदनाम	१	३	अन्तरिक्षम्	अन्तरिक्षनाम
२	१४	अजगमन्	गतिकर्मा	२	३	अनवः	मनुष्यनाम
२	१७	अज्म	संग्रामनाम	३	८	अनभिशस्ताः	प्रशस्यनाम
३	४	अज्म	गृहनाम	३	८	अनभिशस्तिः	„
२	१५	अजराः	क्षिप्रनाम	३	८	अनवद्यः	„
२	५	अण्व्यः	अङ्गुलिनाम	४	३	अनर्वा	पदनाम
२	२०	अत्कः	वज्रनाम	४	३	अनवायम्	„
२	१४	अतति	गतिकर्मा	४	३	अनवब्रवः	„
२	१६	अतमीके	अन्तिकनाम	४	३	अनर्शरातिम्	„
१	१४	अत्यः	अश्वनाम	१	१२	अपः	उदकनाम
२	५	अथर्यः	अङ्गुलिनाम	२	१	अपः	कर्मनाम
२	१४	अथर्यति	गतिकर्मा	२	२	अपत्यम्	अपत्यनाम
२	५	अथर्याः	अङ्गुलिनाम	४	३	अप्रतिष्कुतः	पदनाम
२	५	अथर्यवः	„	२	१	अप्नः	कर्मनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	अकारादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	अकारादयः	विषयः
३	७	अप्नः	रूपनाम	१	१२	अर्णः	उदकनाम
४	३	अप्नः	पदनाम	५	३	अरण्यानि	पदनाम
२	२	अप्नः	अपत्यनाम	२	१४	अर्हति	गतिकर्मा
२	४	अप्नवाना	बाहुनाम	२	१९	अर्हति	वधकर्मा
३	७	अप्सः	रूपनाम	२	१९	अर्हयति	"
१	१०	अभ्रम्	मेघनाम	३	२	अर्भकः	ह्रस्वनाम
३	३	अभ्वः	महन्नाम	३	२९	अर्भकम्	उत्तराणिपदानि
१	१२	अभ्वम्	उदकनाम	२	२२	अर्यः	ईश्वरनाम
१	१०	अभ्वम्	मेघनाम	१	१२	अरविंदानि	उदकनाम
४	३	अभ्यर्द्धयज्वा	पदनाम	१	१२	अररिन्दानि	"
३	२१	अभ्यर्ष	अध्येषणाकर्मा	२	१४	अरर्षति	गतिकर्मा
४	३	अमः	पदनाम	३	२	अल्पम्	ह्रस्वनाम
३	७	अमतिः	रूपनाम	३	२	अल्पः	"
४	३	अमतिः	पदनाम	२	१४	अलर्यति	गतिकर्मा
१	१२	अम्भः	उदकनाम	२	१४	अलर्षति	"
४	३	अमत्रः	पदनाम	२	७	अवः	अन्ननाम
१	३	अम्बरम्	अन्तरिक्षनाम	३	११	अवचाकशत्	पश्यतिकर्मा
२	१६	अम्बरम्	अन्तिकनाम	३	२३	अवटः	कूपनाम
४	३	अम्यक्	पदनाम	३	२३	अवतः	"
४	३	अमवान्	"	२	१४	अवति	गतिकर्मा
३	३०	अम्भसी	द्यावापृथिवी	२	१९	अवतिरति	वधकर्मा
१	२	अयः	हिरण्यनाम	२	१४	अवते	गतिकर्मा
२	१४	अयते	गतिकर्मा	१	१३	अवत्यः	नदीनाम
२	१४	अयथुः	"	१	१३	अवनयः	"
२	३	अयवः	मनुष्यनाम	२	५	अवनयः	अङ्गुलिनाम
२	७	अर्कः	अन्ननाम	१	१	अवनिः	पृथिवीनाम
२	२०	अर्कः	वज्रनाम	१	१४	अव्यथयः	अश्वनाम
४	३	अर्कः	पदनाम	२	१६	अवमे	अन्तिकनाम
३	१४	अर्चति	अर्चतिकर्मा	२	६	अववेति	कान्तिकर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याये	खण्डे	अकारादयः	विषयः	अध्याये	खण्डे	अकारादयः	विषयः
२	१८	अग्मत्	व्याप्तिकर्मा	१	१२	अर्णः	उदकनाम
१	१०	अश्नः	मेघनाम	१	१३	अर्णाः	नदीनाम
१	१०	अभ्रः	,,	१	१४	अर्वा	अश्वनाम
५	३	अभ्रः	पदनाम	२	१६	अर्वाकौ	अग्निकनाम
४	३	असक्राम्	,,	२	१६	अर्वाकः	,,
३	४	अस्तम्	गृहनाम	४	३	अलातृणः	पदनाम
४	२	अंसत्रम्	पदनाम	१	१०	अश्ना	मेघनाम
४	१	अस्य	,,	१	१४	अश्वाः	अश्वनाम
४	२	असश्चन्ती	,,	५	३	अश्वाजनी	पदनाम
१	८	अहना	उषोनाम	४	१	अस्याः	,
४	२	अह्रयाणः	पदनाम	४	३	असामि	,,
५	३	अचाः	,,	३	२७	अह्नाय	पुराणनाम
५	३	अग्नायी	,,	१	१२	अक्षितम्	उदकनाम
२	११	अघ्न्या	गोनाम	५	१	अग्निः	पदनाम
५	५	अघ्न्या	पदनाम	५	४	अग्निः	,,
१	१५	अजाः पूष्णः	आदिष्टोपयो-	३	१३	अग्निर्न ये	उपमा
			जनानि	४	३	अग्रिया	पदनाम
२	१५	अज्राः	क्षिप्रनाम	५	५	अङ्गिरसः	,,
३	१०	अद्धा	सत्यनाम	२	१५	अजिरम्	क्षिप्रनाम
३	१५	अद्धातयः	मेधाविनाम	१	१३	अजिरा	नदीनाम
१	३	अध्वा	अन्तरिक्षनाम	२	११	अढितिः	गोनाम
५	४	अपान्नपात्	पदनाम	१	१	अदितिः	पृथिवीनाम
४	१	अप्रायुवः	,,	१	११	अदितिः	वाङ्नाम
३	३०	अपारे अपारे	द्यावापृथिवी-	२	११	अदितिः	गोनाम
५	३	अप्वा	पदनाम	४	१	अदितिः	पदनाम
३	४	अमा	गृहनाम	५	५	अदितिः	,,
३	२९	अया	उत्तराणि प०	१	१०	अद्रिः	मेघनाम
४	३	अरशा	पदनाम	३	३०	अदिती	द्यावापृथिवी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	अकारादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	अकारादयः	विषयः
४	२	अधिगुः	पदनाम	१	७	अक्तुः	रात्रिनाम
२	१४	अनिति	गतिकर्मा	१	१३	अग्रुवः	नदीनाम
३	८	अनिन्द्यः	प्रशस्यनाम	२	५	अग्रुवः	अङ्गुलिनाम
३	९	अभिख्या	प्रज्ञानाम	३	३	अद्भुतम्	महन्नाम
४	२	अभिधेतन	पदनाम	३	३	अद्भुतः	”
४	२	अमिनः	”	१	११	अनुष्टुप्	वाङ्नाम
३	३	अम्भृणः	महन्नाम	५	५	अनुमतिः	पदनाम
१	१७	अर्चिः	ज्वलतोनाम	३	७	अपुः	रूपनाम
२	८	अविष्यन्	अत्तिकर्मा	३	७	अप्सुः	”
५	६	अश्विनौ	पदनाम	१	१२	अम्बु	उदकनाम
१	७	असिक्नी	रात्रिनाम	१	१२	अम्बुः	”
४	२	असिन्वती	पदनाम	२	१४	अयुथुः	गतिकर्मा
१	१०	अहिः	मेघनाम	२	१४	अयुधुः	”
१	१२	अहिः	उदकनाम	३	७	अर्जुनम्	रूपनाम
५	४	अहिः	पदनाम	१	८	अर्जुनी	उषोनाम
५	४	अहिर्बुध्नः	”	१	१५	अरुण्योगा	आदिष्टोपयो-
४	२	अजीगः	”			व उषसाम्	जनानि
३	२५	अपीच्यम्	निर्णीतान्त-	३	७	अरुषम्	रूपनाम
			र्हितनाम	१	१४	अरुषः	अश्वनाम
२	१७	अभीके	संग्रामनाम	२	१४	अरुषति	गतिकर्मा
३	२९	अभीके	उत्तराणिप०	२	१४	अरुष्यति	”
१	५	अभीशवः	रश्मिनाम	१	८	अरुषी	उषोनाम
२	५	अभीशवः	अङ्गुलिनाम	२	१८	अश्नुते	व्याप्तिकर्मा
५	३	अभीशवः	पदनाम	३	९	असुः	प्रज्ञानाम
२	४	अभीशू	बाहुनाम	५	४	असुनीतिः	पदनाम
४	३	अमीवा	पदनाम	१	१०	असुरः	मेघनाम
२	११	अही	गोनाम	४	२	अंहुरः	पदनाम
३	३०	अही	द्यावापृथिवी	४	१	अकूपारस्य	”

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	खण्ड	अकारादय:	विषय:	अध्याय	खण्ड	आकारादय:	विषय:
४	२	असूर:	,,	२	१८	आष्ट:	,,
१	८	अरुषी	उषोनाम	२	१८	आष्ठ	,,
४	३	असूर्त्तसूर्त्ते	पदनाम	२	१८	आष्ठ:	,,
१	२	अमृतम्	हिरण्यनाम	४	१	आहनस:	पदनाम
१	१२	अमृतम्	उदकनाम	४	२	आहन:	,,
४	३	अस्कृधोयु:	पदनाम	२	१७	आहवे	संग्रामनाम
३	८	अनेद्य:	प्रशस्यनाम	१	३	आकाशम्	अन्तरिक्षनाम
३	८	अनेमा	,,	२	१८	आक्षाण:	व्याप्तिकर्मा
४	३	अस्मे	पदनाम	१	६	आता:	दिङ्नाम
३	८	अस्त्रेमा	प्रशस्यनाम	५	५	आत्था:	पदनाम
		आ		२	१८	आपान:	व्याप्तिकर्मा
४	२	आ	पदनाम	४	२	आपान्तमन्यु:	पदनाम
२	१७	आक्रन्दे	संग्रामनाम	१	६	आशा:	दिङ्नाम
२	१९	आखण्डल	वधकर्मा	४	३	आशाभ्य:	पदनाम
२	१४	आगनीगन्ति	गतिकर्मा	१	६	आष्ठा:	दिङ्नाम
३	११	आचष्ट्म	पश्यतिकर्मा	२	१६	आसा	अन्तिकनाम
२	६	आचके	कान्तिकर्मा	२	१६	आसात्	,,
४	३	आधव:	पदनाम	३	१२	आकिम्	सर्वपदसमाम्ना
२	१८	आनट्	व्याप्तिकर्मा	२	१९	आतिरत्	वधकर्मा
२	१८	आनशे	,,	५	६	आदित्या:	पदनाम
१	३	आप:	अन्तरिक्षनाम	४	२	आवित:	,,
१	१२	आप:	उदकनाम	३	२१	आशिष:	अध्येषणाकर्मा
५	३	आप:	पदनाम	३	१२	आहिकम्	सर्वपदसमा०
२	४	आयती	बाहुनाम	३	१२	आकीम्	,,
२	३	आयव:	मनुष्यनाम	५	३	आली	पदनाम
२	१४	आर्पति	गतिकर्मा	४	३	आशी:	,,
१	१२	आवया:	उदकनान	४	३	आनुषक्	,,
२	८	आवयति	अत्तिकर्मा	२	७	आयु:	अन्ननाम
२	१८	आष्ट	व्याप्तिकर्मा				

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय:	खण्ड:	आकारादय:	विषय:	अध्याय:	खण्ड:	इकारादय:	विषय:
१	१२	आयुधानि	उदकनाम	२	१४	इयर्ति	गतिकर्मा
१	१४	आशु:	अश्वनाम	२	१४	इषति	,,
२	१५	आशु	क्षिप्रनाम	२	७	इषम्	अन्ननाम
२	१५	आशु:	,,	१	१	इळा	पृथिवीनाम
४	२	आशुशुक्षणि:	पदनाम	१	११	इळा	वाङ्नाम
४	२	आङ्गूष:	,,	२	७	इळा	अन्ननाम
३	१२	आहतम्	सर्वपदसमाम्नाय:	२	११	इळा	गोनाम
४	२	आघृणि:	,,	५	५	इळा	पदनाम
२	१६	आके	अन्तिकनाम	३	१०	इत्था	सत्यनाम
३	२६	आके	दूरनाम	४	२	इत्था	पदनाम
३	१५	आकेनिय:	मेधाविनाम	३	२८	इदा	नवीननाम
३	२६	आरे	दूरनाम	३	२८	इदानीम्	,,
२	१७	आजौ	संग्रामनाम	५	५	इन्द्राणी	पदनाम
२	१७	आणौ	,,	२	७	इरा	अन्ननाम
		इ		१	१३	इरावत्य:	नदीनाम
५	२	इक:	पदनाम	२	१०	इन्द्रियम्	धननाम
१	१२	इदम्	उदकनाम	३	१७	इष्टि:	यज्ञनाम
३	१३	इदमिव	उपमा	४	१	इष्मिण:	पदनाम
३	१३	इदंयथा	,,	४	१	इषिर:	,,
४	२	इदंयु:	पदनाम	४	१	इषिरेण	,,
५	२	इध्म:	,,	४	२	इलीविश:	,,
२	२२	इनइन:	ईश्वरनाम	१	१२	इन्दु:	उदकनाम
५	४	इन्द्र:	पदनाम	३	१७	इन्दु:	यज्ञनाम
२	१४	इन्वति	गतिकर्मा	५	४	इन्दु:	पदनाम
२	१८	इन्वति	व्याप्तिकर्मा	५	२	इषु:	,,
२	१४	इयक्षति	गतिकर्मा	५	२	इषुधि:	,,
३	५	इरज्यति	परिचरणकर्मा	३	१९	इषुध्यति	याच्ञाकर्मा
२	२१	इरज्यति	ऐश्वर्यकर्मा			ई	
३	१५	इरध्यति	परिचरणकर्मा	२	१४	ईङ्खते	गतिकर्मा
				१	१२	ईम्	उदकनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	ईकारादयः	विषयः
४	२	ईम्	पदनाम
३	१९	ईमहे	याच्ञाकर्मा
२	६	ईयति	कान्तिकर्मा
२	१४	ईषति	गतिकर्मा
४	१	ईर्मान्तासः	पदनाम
४	२	ईळे	”
२	१४	ईर्ते	गतिकर्मा
		उ	
३	८	उक्थ्यः	प्रशस्यनाम
३	२३	उत्सः	कूपनाम
१	१२	उदकम्	उदकनाम
३	२९	उपजिह्विका	उत्तराणिपदानि
१	११	उपब्दिः	वाङ्नाम
२	१६	उपमि	अन्तिकनाम
१	१०	उपरः	मेघनाम
१	६	उपराः	दिङ्नाम
१	१०	उपलः	मेघनाम
४	३	उपलप्रक्षिणी	पदनाम
४	३	उपसि	”
१	१३	उर्व्यः	नदीनाम
४	२	उर्वशी	पदनाम
५	५	उर्वशी	”
४	३	उलवम्	”
२	६	उशत्	कान्तिकर्मा
२	६	उश्मसि	”
३	३	उक्षाः	महन्नाम
१	७	उधा	रात्रिनाम
२	१६	उपाके	अन्तिकनाम

अध्यायः	खण्डः	उकारादयः	विषयः
४	३	उराणः	पदनाम
२	११	उस्रा	गोनाम
१	५	उस्राः	रश्मिनाम
५	५	उषाः	पदनाम
५	६	उषाः	”
५	२	उषासानक्ता	”
३	३	उक्षितः	महन्नाम
२	११	उस्रिया	गोनाम
२	६	उशिक्	कान्तिकर्मा
३	१५	उशिजः	मेधाविनाम
१	१	उर्वी	पृथिवीनाम
३	३०	उर्वी	द्यावापृथिवी
३	१	उरु	बहुनाम
५	३	उलूखलम्	पदनाम
५	३	उलूखलमुसले	”
१	१४	उच्चैःश्रवसः	अश्वनाम
		ऊ	
१	७	ऊधः	रात्रिनाम
२	७	ऊर्क्	अन्ननाम
१	१३	ऊर्जस्वत्यः	नदीनाम
३	२९	ऊर्दरम्	उत्तराणिपदानि
१	८	ऊर्म्यः	उषोनाम
१	७	ऊर्म्या	रात्रिनाम
४	२	ऊतिः	पदनाम
		ऋ	
१	११	ऋक्	वाङ्नाम
२	१४	ऋच्छति	गतिकर्मा
३	५	ऋच्छति	परिचरणकर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायाः	खण्डः	ऋकारादयः	विषयः	अध्यायाः	खण्डः	एकारादयः	विषयः
४	२	ऋञ्जतिः	पदनाम	४	२	ऋदूपे	„
२	१४	ऋणक्ति	गतिकर्मा	२	१४	ऋणोति	गतिकर्मा
२	१९	ऋणक्ति	बधकर्मा	३	५	ऋध्नोति	परिचरणकर्मा
२	१४	ऋणत्ति	गतिकर्मा			ए	
२	१४	ऋखति	„	२	१४	एजति	गतिकर्मा
३	५	ऋणद्धि	परिचरणकर्मा	१	१४	एतग्वः	अश्वनाम
१	१२	ऋतम्	उदकनाम	१	१४	एतग्वा	„
२	१०	ऋतम्	धननाम	४	२	एतद्वसू	पदनाम
३	१०	ऋतम्	सत्यनाम	१	१४	एतशः	अश्वनाम
५	४	ऋतः	पदनाम	४	२	एनम्	पदनाम
१	१२	ऋतस्ययोनिः	उदकनाम	१	१३	एन्यः	नदीनाम
४	१	ऋधक्	पदनाम	२	१३	एहः	क्रोधनाम
५	५	ऋभवः	„	३	२९	एना	उत्तराणिपदानि
३	२३	ऋश्यदात्	कूपनाम	४	२	एनाम्	पदनाम
५	६	ऋषयः	पदनाम	२	१४	एति	गतिकर्मा
३	३	ऋष्वः	महन्नाम	४	१	एरिरे	पदनाम
३	२	ऋह्रत्	ह्रस्वनाम			ओ	
३	२	ऋह्रन्	„	१	१२	ओजः	उदकनाम
३	२	ऋह्रम्	„	२	९	ओजः	बलनाम
३	२९	ऋचाः	उत्तराणिपदानि	१	८	ओदती	उषोनाम
२	१४	ऋणाति	गतिकर्मा	१	१०	ओदनम्	मेघनाम
१	१३	ऋतावर्य्यः	नदीनाम	१	१०	ओदनः	„
४	३	ऋचीषमः	पदनाम	४	३	ओमना	पदनाम
४	३	ऋबीसम्	„	५	३	ओषधयः	„
४	३	ऋजुनीती	„	२	१५	ओषम्	क्षिप्रनाम
३	२	ऋधुकः	ह्रस्वनाम	४	३	ओमासः	पदनाम
३	१५	ऋभुः	मेधाविनाम	३	३०	ओण्यौ	द्यावापृथिवी
३	३	ऋभुचाः	महन्नाम			औ	
४	३	ऋदूदरः	पदनाम	१	१४	औच्चैःश्रवसः	अश्वनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायाः	खण्डाः	ककारादयः	विषयः	अध्यायाः	खण्डाः	ककारादयः	विषयः
		क		२	१	कर्वरम्	”
५	४	कः	पदनाम	२	४	करस्नौ	बाहुनाम
१	६	ककुभः	दिङ्नाम	२	१	करांसि	कर्मनाम
२	५	कक्ष्याः	अङ्गुलिनाम	२	१	करिक्रत्	”
३	३	ककुहः	महन्नाम	४	३	करूळती	पदनाम
३	३	ककुहस्तिमा	”	३	१४	कल्पते	अर्चतिकर्मा
२	१४	कंटति	गतिकर्मा	१	१७	कल्मलीकिन	ज्वलतोनाम
२	१४	कणति	”	२	१४	कवते	गतिकर्मा
३	१५	कण्वः	मेधाविनाम	१	१२	कवन्धम्	उदकनाम
२	१९	कण्वति	वधकर्मा	३	१५	कविः	मेधाविनाम
४	३	कत्पयम्	पदनाम	१	१२	कशः	उदकनाम
१	२	कनकम्	हिरण्यनाम	१	११	कशा	वाङ्नाम
२	६	कनति	कान्तिकर्मा	१	१२	क्षत्रम्	उदकनाम
४	३	कपना	पदनाम	२	१०	क्षत्रम्	धननाम
१	१२	कबन्धम्	उदकनाम	१	१२	क्षद्म	उदकनाम
१	१२	कम्	”	२	७	क्षद्म	अन्ननाम
३	६	कम्	सुखनाम	२	७	क्षद्मः	”
२	१२	कम्पते	क्रुध्यतिकर्मा	१	१२	क्षपः	उदकनाम
२	१	करणम्	कर्मनाम	२	२१	क्षपति	ऐश्वर्यकर्मा
२	१	करणानि	”	१	७	क्षपा	रात्रिनाम
३	२३	कर्त्तः	कूपनाम	१	१	क्षमः	पृथिवीनाम
२	१	क्रतुः	कर्मनाम	१	१	क्षमा	”
३	९	क्रतुः	प्रज्ञानाम	१	१२	क्षम्न	उदकनाम
२	१	करन्ति	कर्मनाम	२	१४	कसति	गतिकर्मा
२	१	करन्ती	”	१	११	काकुत्	वाङ्नाम
२	१	कर्त्तवे	”	४	२	काकुदम्	पदनाम
२	१	कर्त्तुम्	”	१	११	काकुप्	वाङ्नाम
२	१	कर्त्वम्	”	१	२	काञ्चनम्	हिरण्यनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	ककारादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	ककारादयः	विषयः
३	२३	काटः	कूपनाम	२	१४	क्षिपन्ति	गतिकर्मा
४	२	काण्डुका	पदनाम	२	४	क्षिपन्ती	बाहुनाम
४	२	काणुका	”	२	४	क्षिपस्ती	”
२	२३	कातुः	कूपनाम	२	१४	क्षिरुपति	गतिकर्मा
२	६	कानिषत्	कान्तिकर्मा	२	१४	क्षिपति	”
४	१	कायमानः	पदनाम	२	२१	क्षिपति	ऐश्वर्यकर्मा
४	१	क्राणः	”	४	३	कीकटेषु	पदनाम
३	१६	कारुः	स्तोतृनाम	३	१६	कीरिः	स्तोतृनाम
३	२३	कारोतरः	कूपनाम	२	७	कीलालम्	अन्ननाम
३	२३	कारोतरात्	”	१	१२	क्षीरम्	उदकनाम
२	१४	कालयति	गतिकर्मा	३	१५	कीस्तासः	मेधाविनाम
४	३	काशिः	पदनाम	४	२	कुटस्य	पदनाम
१	१	क्षां	पृथिवीनाम	४	३	कुणारुम्	”
१	६	काष्ठाः	दिशोनाम	३	९	क्रतुः	प्रज्ञानाम
१	१	क्ष्मा	पृथिवीनाम	२	२०	कुत्सः	वज्रनाम
१	१	क्षाम	”	३	१८	कुरवः	ऋत्विङ्नाम
१	१	क्षामः	”	४	१	कुरुतन	पदनाम
१	१	क्षामा	”	१	१३	कुल्याः	नदीनाम
४	३	किः	पदनाम	२	२०	कुलिशः	वज्रनाम
४	३	किमीदिने	”	४	३	कुलिशः	पदनाम
४	३	कियेधाः	”	३	२३	कुशयः	कूपनाम
१	५	किरणाः	रश्मिनाम	३	१	कुवित्	बहुनाम
३	२३	क्रिविः	कूपनाम	२	७	क्षु	अन्ननाम
४	३	क्रिविर्दती	पदनाम	२	७	क्षुत्	”
२	१४	क्षिणोति	गतिकर्मा	२	७	क्षुमत्	”
१	१	क्षितिः	पृथिवीनाम	४	२	क्षुम्पम्	पदनाम
२	३	क्षितयः	मनुष्यनाम	२	१४	क्षुम्पति	गतिकर्मा
२	५	क्षिपः	अङ्गुलिनाम	३	२	क्षुल्लकः	ह्रस्वनाम
२	४	क्षिपती	बाहुनाम	५	५	कुहूः	पदनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	ककारादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	ककारादयः	विषयः
२	२३	कूपः	कूपनाम	१	१०	कोशः	मेघनाम
२	१९	कृणत्ति	बधकर्मा	४	३	कोणस्य	पदनाम
२	१९	कृणत्ति	"	१	१	कोणिः	पृथिवीनाम
३	४	कृत्तिः	गृहनाम	१	१	कोणी	"
४	२	कृत्तिः	पदनाम	३	३०	कोणी	द्यावापृथिवी
२	१	कृत्वी	कर्मनाम	१	१२	कोदः	उदकनाम
३	४	कृदरः	गृहनाम	२	१४	कोदति	गतिकर्मा
३	२९	कृदरम्	उत्तरपदनाम	४	२	कोरपाणः	पदनाम
३	२	कृधुः	ह्रस्वनाम			ख	
३	२	कृधुकः	"	१	१७	खजे	संग्रामनाम
२	१९	कृन्तति	बधकर्मा	१	१७	खले	"
३	१४	कृपण्यति	अर्चतिकर्मा	१	१३	खाः	नदीनाम
३	१६	कृपण्युः	स्तोतृनाम	३	२३	खातः	कूपनाम
३	१४	कृपा	अर्चतिकर्मा	१	१३	खादोअर्णाः	नदीनाम
३	१४	कृपायति	"	१	५	खेदयः	रश्मिनाम
१	१२	कृपीटम्	उदकनाम			ग	
३	२३	कृविः	कूपनाम	१	११	गग्नुः	वाङ्नाम
१	२	कृशनम्	हिरण्यनाम	१	११	गणः	"
३	७	कृशनम्	रूपनाम	१	११	गणा	"
२	३	कृष्टयः	मनुष्यनाम	४	२	गध्यम्	पदनाम
३	९	केतः	प्रज्ञानाम	४	२	गध्यति	"
३	९	केतुः	"	४	२	गधिता	"
३	१५	केनिपः	मेधाविनाम	२	१४	गन्ति	गतिकर्मा
४	२	केपयः	पदनाम	१	५	गभस्तयः	रश्मिनाम
३	२३	केवटः	कूपनाम	२	५	गभस्तयः	अङ्गुलिनाम
५	६	केशी	पदनाम	२	४	गभस्ती	बाहुनाम
५	६	केशिनः	"	१	१२	गभीरम्	उदकनाम
५	४	क्षेत्रस्यपतिः	"	३	३	गभीरः	महन्नाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	खण्ड	गकारादय:	विषय:	अध्याय	खण्ड	गकारादय:	विषय:
१	११	गभीरा	वाङ्नाम	१	५	गावः	रश्मिनाम
३	३०	गभीरे	द्यावापृथिवी	१	१०	गिरिः	मेघनाम
२	१४	गमति	गतिकर्मा	४	३	गिर्वणसे	पदनाम
१	१२	गम्भरम्	उदकनाम	१	११	गीः	वाङ्नाम
१	१२	गम्भीरम्	,,	३	१४	गूर्धयति	अर्चतिकर्मा
१	११	गम्भीरा	वाङ्नाम	३	१४	गृणाति	,,
३	३०	गम्भीरे	द्यावापृथिवी	३	१५	गृत्सः	मेधाविनाम
२	२	गयः	अपत्यनाम	१	१०	गोत्रः	मेघनाम
२	१०	गयः	धननाम	१	१	गोत्रा	पृथिवीनाम
३	४	गयः	गृहनाम	१	१	गौः	,,
३	४	गर्त्तः	,,	१	४	गौः	साधारणनाम
१	११	गल्दः	वाङ्नाम	१	११	गौः	वाङ्नाम
१	११	गल्दः	,,	३	१६	गौः	स्तोतृनाम
१	११	गल्दा	,,	४	१	गौः	पदनाम
४	३	गल्दया	पदनाम	५	५	गौः	,,
२	१४	गवते	गतिकर्मा	१	११	गौरी	वाङ्नाम
१	१२	गह्वरम्	उदकनाम	५	५	गौरी	पदनाम
१	१२	गहनम्	,,			घ	
२	१४	गाति	गतिकर्मा	१	९	घर्मः	अहर्नाम
१	१	गातुः	पृथिवीनाम	३	१७	घर्मः	यज्ञनाम
४	१	गातुः	पदनाम	१	९	घ्रंसः	अहर्नाम
१	११	गाथा	वाङ्नाम	१	९	घृणः	,,
१	११	गान्धर्वी	,,	१	९	घृणिः	,,
१	११	ग्ना	,,	१	१७	घृणिः	ज्वलतोनाम
३	२९	ग्नाः	उत्तरपदनाम	२	१३	घृणिः	क्रोधनाम
१	१	ग्मा	पृथिवीनाम	१	१२	घृतम्	उदकनाम
३	१४	गायति	अर्चतिकर्मा	३	३०	घृतवती	द्यावापृथिवी
१	१०	ग्रावा	मेघनाम	१	७	घृताची	रात्रिनाम
५	३	ग्रावाणः	पदनाम	१	११	घोषः	वाङ्नाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	खण्ड	जकारादयः	विषयः	अध्याय	खण्ड	जकारादयः	विषयः
१	१२	जन्म	उदकनाम	४	१	जामिः	पदनाम
१	१७	जमत्	ज्वलतीनाम	५	३	ज्या	,,
२	१४	जमति	गतिकर्म्मा	२	१४	जायति	गतिकर्मा
२	१४	जयति	,,	३	१३	जारआक्ष-गोमेषोभू-तोऽभियन्नय	उपमानानि
३	१४	जरति	अर्चतिकर्म्मा				
३	१४	जरते	,,				
४	१	जरते	पदनाम	४	३	जारयायि	पदनाम
३	१६	जरिता	स्तोतृनाम	२	१४	जिगाति	गतिकर्मा
४	३	जरूथम्	पदनाम	२	१४	जिन्वति	,,
२	१४	ज्रयति	गतिकर्मा	४	३	जिन्वति	पदनाम
३	१४	जल्पति	अर्चतिकर्म्मा	२	१६	जिरा	अन्तिकनाम
१	१२	जलम्	उदकनाम	१	११	जिह्वा	वाङ्नाम
१	१२	जलाषम्	,,	२	१५	जीराः	क्षिप्रनाम
३	६	जलाषम्	सुखनाम	२	६	जुषते	कान्तिकर्मा
४	३	जल्हवः	पदनाम	४	१	जुहुरे	पदनाम
२	१४	जवति	गतिकर्मा	२	१३	जूर्णिः	क्रोधनाम
४	३	जवारू	पदनाम	२	१५	जूर्णिः	क्षिप्रनाम
१	१२	जह्म	उदकनाम	४	३	जूर्णिः	पदनाम
४	१	जह्वा	पदनाम	२	१५	जूर्णीः	क्षिप्रनाम
२	१४	जसति	गतिकर्मा	२	१९	जूर्वति	वधकर्मा
४	१	जसुरिः	पदनाम	२	१४	जेहते	गतिकर्मा
२	२	जाः	अपत्यनाम	१	१६	ज्योतते	ज्वलतिकर्मा
१	२	जातरूपम्	हिरण्यनाम	४	२	जोषवाकम्	पदनाम
५	१	जातवेदाः	पदनाम			**ड**	
१	१	ज्मा	पृथिवीनाम	२	१४	डीयते	गतिकर्म्मा
२	५	जामयः	अङ्गुलिनाम			**त**	
१	१२	जामि	उदकनाम	२	१४	तकति	गतिकर्म्मा
१	१२	जामिः	,,	२	२	तक्म	अपत्यनाम
१	१२	जामिवत्	,,	३	२४	तक्वा	स्तेननाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	खण्ड	तकारादयः	विषयः	अध्याय	खण्ड	तकारादयः	विषयः
२	१९	तळित्	वधकर्मा	२	९	तविषी	बलनाम
४	३	ततनुष्टिम्	पदनाम	३	२४	तस्करः	स्तेननाम
२	१४	तत्सरति	गतिकर्मा	२	३	तस्थुषः	मनुष्यनाम
३	१३	तथा	उपमा	२	१५	ताजत्	क्षिप्रनाम
३	१३	तद्रूपः	"	२	१९	ताढि	बधकर्मा
३	१३	तद्वर्णः	"	३	२४	तायुः	स्तेननाम
३	१३	तद्वत्	"	३	७	ताम्रम्	रूपनाम
२	२	तनयम्	अपत्यनाम	३	१६	तायुः	स्तोत्रनाम
२	२	तनयः	"	१	१४	तार्क्ष्यः	अश्वनाम
२	१०	तना	धननाम	५	४	तार्क्ष्यः	पदनाम
५	२	तनूनपात्	पदनाम	२	२०	तिग्मम्	वज्रनाम
१	१७	तपः	ज्वलतीनाम	२	२०	तिग्मः	"
२	१३	तपुषी	क्रोधनाम	४	१	तितउ	पदनाम
१	७	तमः	रात्रिनाम	३	२९	तिरः	उत्तरपदनाम
१	७	तमस्वती	"	३	२४	तिक्का	स्तेननाम
२	१३	त्यजः	क्रोधनाम	३	२४	त्रिपुः	"
२	९	तरः	बलनाम	२	१५	त्रिषु	क्षिप्रनाम
२	१५	तरणिः	क्षिप्रकर्म्मा	३	२	त्रिषमः	ह्रस्वनाम
१	१३	तरस्वत्यः	नदीनाम	५	२	तिस्रोदेवीः	पदनाम
४	२	तरुष्यति	पदनाम	२	२	तुक्	अपत्यनाम
२	१६	तलित्	अन्तिकनाम	३	३	तुचः	महन्नाम
२	९	तवः	बलनाम	१	१२	तुग्र्या	उदकनाम
३	२९	त्वः	उत्तरपदनाम	४	१	तुग्वनि	पदनाम
२	९	त्वचः	बलनाम	२	२०	तुजः	वज्रनाम
३	३	तवसः	महन्नाम	२	१५	तुज्यमानासः	क्षिप्रनाम
५	२	त्वष्टा	पदनाम	२	२०	तुञ्जः	वज्रनाम
५	४	त्वष्टा	"	४	३	तुञ्जः	पदनाम
५	६	त्वष्टा	"	३	२०	तुञ्जति	दानकर्मा
३	३	तविषः	महन्नाम	२	१४	तुरीयति	गतिकर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	खण्ड	तकारादयः	विषयः	अध्याय	खण्ड	तकारादयः	विषयः
४	२	तुरीयम्	पदनाम	४	२	तोदः	पदनाम
४	२	तुर्वणिः	,,	१	१२	तोयम्	उदकनाम
२	१६	तुर्वशः	अन्तिकनाम	२	१५	तोयम्	क्षिप्रनाम
२	३	तुर्वशाः	मनुष्यनाम	४	२	तौरयाणः	पदनाम
२	१६	तुर्वशे	अन्तिकनाम			द	
३	१	तुवि	बहुनाम	२	९	दक्षः	बलनाम
४	१	तूताव	पदनाम	२	१४	दगिध	याञ्चाकर्मा
२	१५	तूतुजानः	क्षिप्रनाम	३	१९	दध्यति	गतिकर्मा
२	१५	तूतुजानासः	,,	२	१४	दघ्नोति	,,
२	१५	तूतुजिः	,,	१	१०	दृतिः	मेघनाम
२	१५	तूतुजित्	,,	१	२	दत्रम्	हिरण्यनाम
४	२	तूतुमाकृषे	पदनाम	३	१९	दद्धि	याञ्चाकर्मा
१	१२	तूयम्	उदकनाम	५	६	दध्यङ्	पदनाम
२	१५	तूयम्	क्षिप्रनाम	२	१४	दध्यति	गतिकर्मा
२	१५	तूर्णिः	,,	१	१४	दधिक्रा	अश्वनाम
२	१५	तूर्णि	,,	१	१४	दधिक्रावा	,,
४	२	तूर्णाशम्	पदनाम	५	४	दधिक्राः	पदनाम
३	२४	तृक्षा	स्तेननाम	४	३	दनः	,,
२	९	तृचः	बलनाम	२	१४	दभ्नोति	गतिकर्मा
२	१९	तृणेढि	वधकर्मा	२	१९	दभ्नोति	वधकर्मा
१	१२	तृपीटम्	उदकनाम	३	२	दभ्रम्	ह्रस्वनाम
१	१२	तृम्रिः	,,	३	२९	दभ्रम्	उत्तरपदनाम
३	२४	तृपुः	स्तेननाम	४	१	दमूनाः	पदनाम
२	१५	तृषु	क्षिप्रनाम	३	४	दमे	गृहनाम
३	२	तृषमः	ह्रस्वनाम	४	१	दयते	पदनाम
१	१२	तेजः	उदकनाम	१	९	द्यविद्यवि	अहर्नाम
१	१७	तेजः	ज्वलतोनाम	२	१४	द्रमति	गतिकर्मा
२	२	तोकम्	अपत्यनाम	२	१५	द्रवत्	क्षिप्रनाम
२	२	तोकम्	,,	२	१४	द्रवति	गतिकर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	दकारादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	दकारादयः	विषयः
२	८	द्रविणम्	बलनाम	१	१६	द्युमत्	ज्वलतिकर्मा
२	१०	द्रविणम्	धननाम	२	१०	द्युम्नम्	धननाम
५	२	द्रविणोदाः	पदनाम	४	२	द्युम्नम्	पदनाम
२	१	दंसः	कर्मनाम	५	३	द्रुघणः	”
४	१	दंसयः	पदनाम	२	१९	द्रुणाति	वधकर्मा
३	२	दहरकः	कर्मनाम	३	४	दुरोणे	गृहनाम
३	२०	दाति	दानकर्मा	४	३	दुरितम्	पदनाम
५	३	द्यावापृथिवी	पदनाम	४	१	द्रुपदे	”
२	१४	द्राति	गतिकर्मा	२	१४	द्रुमति	गतिकर्मा
४	१	द्रावने	पदनाम	३	४	दुर्याः	गृहनाम
५	२	द्वारः	”	२	३	द्रुह्यवः	मनुष्यनाम
३	२०	दाशति	दानकर्मा	३	५	दुवस्यति	परिचरणकर्मा
३	२०	दासति	”	४	२	दूतः	पदनाम
२	२०	दिद्युत्	वज्रनाम	४	२	दूतः	”
१	५	दिधीतयः	रश्मिनाम	३	३०	दूरेअन्ते	द्यावापृथिवी
२	५	दिधीतयः	अङ्गुलिनाम	२	१४	द्रूळति	गतिकर्मा
१	९	दिनम्	अहर्नाम	२	१४	द्रूणाति	”
४	२	द्विता	पदनाम	२	१४	द्रवति	”
४	३	द्विबर्हाः	”	१	१०	दृतिः	मेघनाम
१	६	दिवा	अहर्नाम	३	१८	देवताता	यज्ञनाम
४	३	दिविष्टिषु	”	५	६	देवपत्न्यः	पदनाम
१	९	दिवेदिवे	”	३	१८	देवयवः	ऋत्विङ्नाम
१	१६	दीदयति	ज्वलतिकर्मा	५	६	देवाः	पदनाम
१	५	दीधितयः	अङ्गुलिनाम	५	३	देवीऊर्जाहुती	”
२	१४	दीयति	गतिकर्मा	५	३	देवीजोष्ट्री	”
२	१४	दीयते	”	४	३	देवोदेवो व्याकृपा	”
५	३	दुन्दुभिः	पदनाम				
१	९	द्युः	अहर्नाम	३	२	देहरकः	ह्रस्वनाम
२	१५	द्युगत्	क्षिप्रनाम	५	२	दैव्याहोतारः	पदनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	खण्ड	दकारादयः	विषयः	अध्याय	खण्ड	धकारादयः	विषयः
२	१२	दीधति	क्रुध्यतिकर्मा	२	१४	धावति	”
१	८	द्योतना	उषोनाम	२	७	धासिः	अन्ननाम
१	१६	द्योतते	ज्वलतिकर्मा	१	११	धिषणा	वाङ्नाम
१	७	दोषा	रात्रिनाम	३	३०	धिषणे	द्यावापृथिवी
१	९	द्यौः	अहर्नाम	२	१	धीः	कर्मनाम
१	१४	दौर्गहः	अश्वनाम	३	९	धीः	प्रज्ञानाम
		ध		२	५	धीतयः	अङ्गुलिनाम
५	३	धनुः	पदनाम	३	१५	धीरः	मेधाविनाम
१	३	धन्व	अन्तरिक्षनाम	१	१३	धुनयः	नदीनाम
४	२	धन्व	पदनाम	२	५	धुरः	अङ्गुलिनाम
२	१४	धन्वति	गतिकर्मा	२	१४	ध्रुवति	गतिकर्मा
२	१४	धमति	”	२	१९	ध्रुवति	वधकर्मा
२	१९	धमति	वधकर्मा	२	१९	धूर्वति	”
३	१४	धमति	अर्चतिकर्मा	२	१४	धृजति	गतिकर्मा
१	११	धमनिः	वाङ्नाम	१	११	धेना	वाङ्नाम
२	१४	ध्रजति	गतिकर्मा	१	११	धेनुः	”
२	९	धर्णसि	बलनाम	५	५	धेनुः	पदनाम
२	६	धर्णसिः	”			न	
१	१२	धरुणम्	उदकनाम	१	७	नक्ता	रात्रिनाम
२	१४	ध्रति	गतिकर्मा	२	१४	नक्षति	गतिकर्मा
२	१४	ध्रयति	”	२	१८	नक्षति	व्याप्तिकर्मा
२	१४	धवति	”	४	३	नक्षद्दाभम्	पदनाम
२	३	धवाः	मनुष्यनाम	३	१२	नकिः	सर्वपदसमाम
२	१९	ध्वरति	वधकर्मा	३	१२	नकीम्	नायः
१	१२	ध्वस्मन्वत्	उदकनाम	२	१४	नख्यति	गतिकर्मा
२	१४	ध्वंसति	गतिकर्मा	१	११	नगना	वाङ्नाम
५	५	धाता	पदनाम	३	१६	नदः	स्तोतृनाम
१	११	धारा	वाङ्नाम	४	२	नदः	पदनाम
२	१४	ध्राति	गतिकर्मा	३	१४	नदति	अर्चतिकर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	नकारादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	नकारादयः	विषयः
२	१७	नदनुः	सङ्ग्रामनाम	४	१	नसतः	पदनाम
१	१३	नद्यः	नदीनाम	२	१४	नसते	गतिकर्मा
५	३	नद्यः	पदनाम	४	१	नसन्तः	पदनाम
२	१८	ननक्षे	व्याप्तिकर्मा	३	२९	नंसते	उत्तरपदनाम
१	११	नना	वाङ्नाम	४	१	नंसन्ते	पदनाम
२	२	नपात्	अपत्यनाम	२	३	नहुषः	मनुष्यनाम
३	३०	नप्त्र्यौ	द्यावापृथिवी	२	३	नहुषाः	"
१	४	नभः	साधारणनाम	१	४	नाकः	साधारणनाम
१	१२	नभः	उदकनाम	१	४	नाका	"
१	१३	नभन्वः	नदीनाम	१	११	नाळीः	वाङ्नाम
१	१३	नभन्वाः	"	३	१६	नादः	स्तोतृनाम
२	१९	नभति	वधकर्मा	१	१२	नाम	उदकनाम
२	१९	नभते	"	३	१७	नार्यैः	यज्ञनाम
३	३०	नभसी	द्यावापृथिवी	५	३	नाराशंसः	पदनाम
२	७	नमः	अन्ननाम	३	१७	नारी	यज्ञनाम
२	२०	नमः	वज्रनाम	१	११	नालिः	वाङ्नाम
१	७	नम्या	रात्रिनाम	३	२	निघृष्वः	ह्रस्वनाम
३	५	नमस्यति	परिचरणकर्मा	४	२	निचुम्पुणः	पदनाम
१	१४	नरः	अश्वनाम	३	२५	निण्यम्	निर्णीतान्तर्हितनाम
२	३	नरः	मनुष्यनाम				
२	३	नराः	"	४	१	निधा	पदनाम
५	२	नराशंसः	पदनाम	२	१९	नितोशयति	वधकर्मा
५	३	नराशंसः	"	२	१९	नितोशते	"
३	२८	नवम्	नवनाम	२	१९	नितोषते	"
				२	१९	निबर्हयति	"
२	१४	नवते	गतिकर्मा	१	१५	नियुतो वायोः	आदिष्टोपयोजनानि
३	२८	नव्यम्	नवनाम				
३	१५	नवेदाः	मेधाविनाम	२	२१	निशुम्भान्	ईश्वरनाम
२	१८	नशत्	व्याप्तिकर्मा	१	१	निर्ऋतिः	पृथिवीनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याये	खण्डे	नकारादयः	विषयः	अध्याये	खण्डे	पकारादयः	विषयः
३	७	निर्णिक्	रूपनाम	३	१४	पणते	अर्चतिकर्मा
१	११	निवित्	वाङ्नाम	३	१४	पणायति	”
२	१९	निवपन्तु	वधकर्मा	३	१४	पणायते	”
४	३	निस्सृभ्वाः	पदनाम	३	१४	पणस्यति	”
४	२	निष्षपी	”	१	१४	पतङ्गाः	अश्वनाम
३	४	नीळम्	गृहनाम	२	१४	पतति	गतिकर्मा
१	१२	नीरम्	उदकनाम	२	१४	पतयति	”
१	११	नीलिः	वाङ्नाम	२	२१	पत्यते	ऐश्वर्यकर्मा
२	१५	नु	क्षिप्रनाम	५	५	पथ्या	पदनाम
३	१२	नुकम्	सर्वपदसमाम्नायः	४	२	पदिम्	”
४	१	नूच	पदनाम	३	१४	पनस्यति	अर्चतिकर्मा
४	१	नूचित्	”	३	१४	पनायते	”
३	२८	नूत्नम्	नवनाम	३	१४	पपृक्षाः	”
३	२८	नूतनम्	”	१	७	पयः	रात्रिनाम
१	१२	नृपीटम्	उदकनाम	१	१२	पयः	उदकनाम
२	९	नृम्णम्	बलनाम	१	१७	पयः	ज्वलतोनाम
२	१०	नृम्णम्	धननाम	२	७	पयः	अन्ननाम
२	२०	नेमिः	वज्रनाम	१	१३	पयस्वत्यः	नदीनाम
२	७	नेमः	अन्ननाम	१	७	पयस्वती	रात्रिनाम
३	२९	नेमः	उत्तरपदनाम	४	३	प्रकलवित्	पदनाम
२	१७	नेमधिता	संग्रामनाम	३	२६	पराके	दूरनाम
२	१७	नेमधितिः	”	३	२६	पराचैः	”
२	१४	नेहति	गतिकर्मा	५	४	पर्जन्यः	पदनाम
१	११	नौः	वाङ्नाम	२	२	प्रजा	अपत्यनाम
३	१४	नौति	अर्चतिकर्मा	३	१७	प्रजापतिः	यज्ञनाम
		प		५	४	प्रजापतिः	पदनाम
४	३	पचता	पदनाम	१	१०	पर्वतः	मेघनाम
२	३	पञ्चजनाः	अपत्यनाम	३	१	परीणसा	बहुनाम
४	२	पड्भिः	पदनाम	४	३	प्रतद्वसू	पदनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	पकारादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	पकारादयः	विषयः
३	२७	प्रत्नम्	पुराणनाम	४	२	पवित्रम्	पदनाम
३	२५	प्रतीच्यम्	निर्णीतान्तर्हितनाम	३	४	पस्त्यम्	गृहनाम
				३	७	प्सरः	रूपनाम
३	२	प्रतिष्ठा	ह्रस्वनाम	३	८	पाकः	प्रशस्यनाम
३	२५	प्रतीच्यम्	निर्णीतान्तर्हिं०	२	७	पाजः	अन्ननाम
४	२	परि	पदनाम	२	९	पाजः	बलनाम
४	१	परितक्म्या	,,	४	३	पाथः	पदनाम
३	२७	प्रदिवः	पुराणनाम	४	२	पादुः	,,
२	१७	प्रधने	संग्रामनाम	१	१३	पार्वत्यः	नदीनाम
३	२९	प्रपित्वे	उत्तरपदनाम	२	१५	प्राशुः	क्षिप्रनाम
१	१२	प्रयः	उदकनाम	२	१५	प्राशुवित्	,,
२	७	प्रयः	अन्ननाम	३	३०	पार्श्वौ	द्यावापृथिवी
१	१०	पर्वतः	मेघनाम	३	३०	पार्श्व्यौ	,,
२	१४	प्रवते	गतिकर्मा	२	१५	प्लाशुचित्	क्षिप्रकर्मा
३	२७	प्रवयाः	पुराणनाम	२	१४	प्साति	गतिकर्मा
३	२६	परावतः	दूरनाम	४	१	पिता	पदनाम
१	१०	पर्जन्यः	मेघनाम	२	७	पितुः	अन्ननाम
४	३	पराशरः	पदनाम	५	५	पितरः	पदनाम
३	२१	परिस्रव	अध्येषणाकर्मा	५	३	पितुः	,,
२	२०	परशुः	वज्रनाम	३	२९	पिनाकम्	उत्तरपदनाम
३	२१	परिस्रव	अध्येषणाकर्मा	३	१४	पिपृक्षाः	अर्चतिकर्मा
२	१४	प्लवति	गतिकर्मा	१	१२	पिप्पलम्	उदकनाम
२	१४	प्लवते	,,	२	१४	पिस्यति	गतिकर्मा
२	१४	पवते	,,	३	७	पिष्टम्	रूपनाम
३	२१	पवस्व	अध्येषणाकर्मा	३	१९	पीपरत्	याच्ञाकर्मा
१	११	पविः	वाङ्नाम	४	३	पुरन्धिः	पदनाम
४	२	पविः	पदनाम	३	३०	पुरन्धि	द्यावापृथिवी
२	२०	पविः	वज्रनाम	१	१२	पुरीषम्	उदकनाम
१	१२	पवित्रम्	उदकनाम	३	१	पुरु	बहुनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	खण्ड	पकारादय:	विषय:
१	१०	पुरुभोजा:	मेघनाम
५	४	पुरूरवा:	पदनाम
४	३	पुलुकाम:	,,
१	३	पुष्करम्	अन्तरिक्षनाम
३	७	प्सु:	रूपनाम
३	१४	पूजयति	अर्चतिकर्मा
१	१२	पूर्णम्	उदकनाम
३	१९	पूर्द्धि	याच्ञाकर्मा
३	२७	पूर्व्यम्	पुराणनाम
२	३	पूरव:	मनुष्यनाम
३	२७	पूर्वा	पुराणनाम
१	१	पूषा	पृथिवीनाम
५	६	पूषा	पदनाम
२	७	पृक्ष:	अन्ननाम
२	१७	पृक्षे	संग्रामनाम
३	१४	पृच्छति	अर्चतिकर्मा
३	२०	पृणक्षि	दानकर्मा
३	२०	पृणक्ति	,,
३	२०	पृणाति	,,
२	१७	पृतना	संग्रामनाम
२	३	पृतना:	मनुष्यनाम
२	१७	पृतनाज्यम्	संग्रामनाम
२	१७	पृत्सु	,,
१	३	पृथिवी	अन्तरिक्षनाम
५	३	पृथिवी	पदनाम
५	५	पृथिवी	,,
५	६	पृथिवी	,,
१	१	पृथ्वी	पृथिवीनाम
३	२०	पृथ्वी	द्यावापृथिवी

अध्याय	खण्ड	पकारादय:	विषय:
४	२	पृथुज्रया:	पदनाम
१	४	पृश्नि:	साधारणनाम
१	१५	पृषत्योम ताम्	आदिष्टोपयोजनानि
२	१४	पेलयति	गतिकर्मा
१	२	पेश:	हिरण्यनाम
३	७	पेश:	रूपनाम
१	१४	पैद्व:	अश्वनाम
२	९	पौंस्यानि	बलनाम
२	१७	पौंस्ये	संग्रामनाम
		फ	
२	१४	फणति	गतिकर्मा
१	१०	फलिग:	मेघनाम
		ब	
४	२	बकुर:	पदनाम
३	१०	बट्	सत्यनाम
४	३	बत:	पदनाम
२	९	बध:	बलनाम
२	१०	बन्धु:	धननाम
३	७	बप्स:	रूपनाम
२	८	बप्सति	अत्तिकर्मा
२	८	बभस्ति	,,
२	८	बब्धाम्	,,
१	१०	बृज:	मेघनाम
१	१४	ब्रध्न:	अश्वनाम
३	३	ब्रध्न:	महन्नाम
१	१२	बर्बुरम्	उदकनाम
१	१२	ब्रह्म	,,
२	७	ब्रह्म	अन्ननाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याये	खण्डे	बकारादयः	विषयः	अध्याये	खण्डे	भकारादयः	विषयः
२	१०	बृह्म	धननाम	५	४	बृहस्पतिः	पदनाम
५	४	बृह्मणस्पतिः	पदनाम	४	३	बेकनाटान्	"
४	३	बर्हणा	"	१	११	बेकुः	वाङ्नाम
२	१९	बर्हयति	बधकर्मा	१	११	बेकुरा	"
१	३	बर्हिः	अन्तरिक्षनाम			भ	
१	१२	बर्हिः	उदकनाम	२	१०	भगः	धननाम
५	२	बर्हिः	पदनाम	५	६	भगः	पदनाम
३	३	बर्हिषत्	महन्नाम	३	१४	भणति	अर्चतिकर्मा
३	३	बर्हिष्ठः	"	३	१४	भणायते	"
३	३	बर्हिषि	"	४	२	भन्दनाः	पदनाम
१	१०	बलाहकः	मेघनाम	१	१६	भन्दते	ज्वलतिकर्मा
३	३	बंहिष्ठः	महन्नाम	३	१४	भन्दति	अर्चतिकर्मा
३	३०	बहुले	द्यावापृथिवी	३	१४	भनति	"
२	९	बाधः	बलनाम	३	२९	भ्यसते	उत्तरपदनाम
३	१३	ब्राह्मणाव्रतचारिणः	उपमानाम	२	१७	भरे	संग्रामनाम
				३	१८	भरताः	ऋत्विङ्नाम
२	४	बाहू	बाहुनाम	२	४	भरित्रे	बाहुनाम
२	१४	बिस्यति	गतिकर्मा	१	२	भर्म	हिरण्यनाम
४	३	बिल्पितः	पदनाम	२	१४	भ्रमति	गतिकर्मा
२	२	बीजम्	अपत्यनाम	२	८	भर्वति	अत्तिकर्मा
४	२	बीरिटे	पदनाम	१	१२	भविष्यन्	उदकनाम
४	३	बुन्दः	"	२	८	भसथः	अत्तिकर्मा
१	१२	बुबुरः	उदकनाम	४	३	भाऋजीकः	पदनाम
१	१२	बुबुरम्	"	१	९	भातुः	अहर्नाम
१	१२	बुसम्	"	२	१३	भामः	क्रोधनाम
४	३	बृबदुक्थम्	पदनाम	२	१२	भामते	क्रुध्यतिकर्मा
१	१२	बृबूकम्	उदकनाम	१	१६	भ्राजते	ज्वलतिकर्मा
३	३	बृहत्	महन्नाम	३	१८	भारताः	ऋत्विङ्नाम
३	३०	बृहती	द्यावापृथिवी	१	११	भारती	वाङ्नाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	भकारादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	मकारादयः	विषयः
१	१६	भ्राशते	ज्वलतिकर्मा	२	९	मज्मना	बलनाम
१	१६	भ्राश्यति	„	५	३	मण्डूकाः	पदनाम
१	१६	भ्लाशते	„	३	१५	मतयः	मेधाविनाम
१	१६	भ्लाश्यति	„	३	१५	मतुथाः	„
१	१६	भ्लाश्यते	„	३	१४	मदति	अर्चतिकर्मा
१	१३	भास्वत्यः	नदीनाम	३	१९	मदेमहि	याच्ञाकर्मा
१	८	भास्वती	उषोनाम	४	१	मध्या	पदनाम
२	१२	भ्रीणाति	क्रुध्यतिकर्मा	१	१२	मधु	उदकनाम
२	४	भुरिजौ	बाहुनाम	५	६	मनुः	पदनाम
२	१४	भुरण्यति	गतिकर्मा	३	१४	मन्दयते	अर्चतिकर्मा
२	१५	भुरण्युः	क्षिप्रनाम	१	१६	मन्दते	ज्वलतिकर्मा
१	१२	भुवनम्	उदकनाम	३	१४	मन्दते	अर्चतिकर्मा
१	१	भूः	पृथिवीनाम	३	१४	मन्द्रयते	„
१	३	भूः	अन्तरिक्षनाम	१	११	मन्द्रा	वाङ्नाम
१	१२	भूतम्	उदकनाम	१	११	मन्द्राजनी	„
१	१	भूमिः	पृथिवीनाम	४	१	मन्दिने	पदनाम
३	१	भूरि	बहुनाम	४	१	मन्दू	„
५	५	भृगवः	पदनाम	३	१५	मन्धाता	मेधाविनाम
२	१२	भृणीयते	क्रुध्यतिकर्मा	३	१९	मन्महे	याच्ञाकर्मा
४	३	भृमिः	पदनाम	३	१९	मनामहे	„
२	१२	भ्रेषति	क्रुध्यतिकर्मा	२	६	मन्यते	कान्तिकर्मा
१	१२	भेषजम्	उदकनाम	१	४	मन्यते	अर्चतिकर्मा
३	६	भेषजम्	सुखनाम	२	१३	मन्युः	क्रोधनाम
२	१२	भोजते	क्रुध्यतिकर्मा	५	४	मन्युः	पदनाम
२	१०	भोजनम्	धननाम	३	१५	मनश्चित्	मेधाविनाम
		म		३	१५	मनीषी	„
२	१५	मक्षु	क्षिप्रनाम	२	३	मनुष्याः	मनुष्यनाम
३	१७	मखः	यज्ञनाम	३	१५	मनुष्याः	मेधाविनाम
२	१०	मघम्	धननाम	२	१७	ममसत्यम्	संग्रामनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	खण्ड	मकारादयः	विषयः	अध्याय	खण्ड	यकारादयः	विषयः
३	१७	मेधः	यज्ञनाम	२	१९	यार्चति	वधकर्मा
२	१०	मेधा	धननाम	२	१४	याति	गतिकर्मा
३	१५	मेधाविनः	मेधाविनाम	२	१९	यातयति	वधकर्मा
१	११	मेना	वाङ्नाम	१	१२	यादः	उदकनाम
३	२८	मेना	उत्तरपदनाम	१	१२	यादुः	,,
२	२०	मेनिः	वज्रनाम	४	३	यादृश्मिन्	पदनाम
४	१	मेहना	पदनाम	३	१९	यामि	याच्ञाकर्मा
१	७	म्रोकी	रात्रिनाम	२	१९	यावति	वधकर्मा
		य		२	१५	युगत्	क्षिप्रनाम
३	१७	यज्ञः	यज्ञनाम	२	१४	युध्यति	गतिकर्मा
२	१४	यतते	गतिकर्मा	२	१४	युध्यती	,,
३	१८	यतस्रुचः	ऋत्विङ्नाम	२	५	योक्त्राणि	अङ्गुलिनाम
२	३	यदवः	मनुष्यनाम	२	५	योजनानि	,,
३	१९	यन्तारः	याच्ञाकर्मा	१	१२	योनिः	उदकनाम
३	१९	यन्ति	,,	३	४	योनिः	गृहनाम
३	१९	यन्धि	,,	२	१४	योशिष्टि	गतिकर्मा
५	४	यमः	पदनाम	२	१४	योषिष्टि	,,
५	६	यमः	,,	३	१४	यौति	अर्चतिकर्मा
१	७	यम्या	रात्रिनाम			र	
५	५	यमी	पदनाम	१	७	रजः	रात्रिनाम
१	१३	यव्याः	नदीनाम	४	१	रजः	पदनाम
३	३	यह्वः	महन्नाम	२	१४	रजति	गतिकर्मा
१	१२	यशः	उदकनाम	३	१४	रजयति	अर्चतिकर्मा
२	७	यशः	अन्ननाम	३	१४	रञ्जयति	,,
२	१०	यशः	धननाम	३	३०	रजसी	द्यावापृथिवी
१	१२	यहः	उदकनाम	२	१७	रणः	संग्रामनाम
२	९	यहः	बलनाम	२	१०	रत्नम्	धननाम
२	२	यहुः	अपत्यनाम	५	३	रथः	पदनाम
१	१३	यह्व्यः	नदीनाम	२	१४	रथर्यति	गतिकर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्या०	खण्ड०	रेफादयः	विषयः
३	२९	रेजति	उत्तरपदनाम
२	१२	रेळ्वते	क्रुध्यतिकर्मा
१	१२	रेतः	उदकनाम
३	१६	रेभः	स्तोतृनाम
३	१४	रेभति	अर्चतिकर्मा
१	१३	रेवत्यः	नदीनाम
१	१०	रैवतः	मेघनाम
१	१६	रोचते	ज्वलतिकर्मा
५	५	रोदसी	पदनाम
३	३०	रोदसी	द्यावापृथिवी
१	१३	रोधचक्राः	नदीनाम
३	३०	रोधसी	द्यावापृथिवी
१	१३	रोधस्वत्यः	नदीनाम
१	१३	रोहितः	,,
२	५	रोहितः	अङ्गुलिनाम
१	१५	रोहितोऽग्नेः	आदिष्टोपयोजनानि
३	१४	रौति	अर्चतिकर्मा
१	१०	रौहिणः	मेघनाम
		ल	
२	१४	लजति	गतिकर्मा
२	१४	लोटते	,,
२	१४	लोठते	,,
४	१	लोधम्	पदनाम
१	२	लोहम्	हिरण्यनाम
		व	
४	२	वक्षः	पदनाम
१	१३	वक्षणाः	नदीनाम

अ०	ख०	वकारादयः	विषयः
१	११	वग्नुः	वाङ्नाम
२	२०	वज्रः	वज्रनाम
२	१४	वञ्चति	गतिकर्मा
२	२०	वधः	वज्रनाम
२	९	वधः	बलनाम
१	१३	वध्वः	नदीनाम
३	१४	वन्दते	अर्चतिकर्मा
१	५	वनम्	रश्मिनाम
१	१२	वनम्	उदकनाम
३	२४	वनर्गुः	स्तेननाम
५	२	वनस्पतिः	पदनाम
४	२	वनुष्यति	,,
२	१२	वनुष्यति	क्रुध्यतिकर्मा
२	६	वनोति	कान्तिकर्मा
३	७	वपुः	रूपनाम
३	२	वम्रकः	ह्रस्वनाम
३	२९	वम्रीभिः	उत्तरपदनाम
२	७	वयः	अन्ननाम
२	१३	व्यथिः	क्रोधनाम
१	१४	व्यथ्ययः	अश्वनाम
४	१	व्यन्तः	पदनाम
३	८	वयुनम्	प्रशस्यनाम
३	९	वयुनम्	प्रज्ञानाम
४	२	वयुनम्	पदनाम
२	१३	वरः	क्रोधनाम
२	९	वर्गः	बलनाम
२	७	वर्चः	अन्ननाम
१	१०	वृत्रः	मेघनाम
२	१४	वृजति	गतिकर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	वकारादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	वकारादयः	विषयः
५	४	वरुणः	पदनाम	२	१४	वञ्चति	गतिकर्मा
५	६	वरुणः	,,	२	१४	वहते	,,
२	१	व्रतम्	कर्मनाम	१	१४	वह्निः	अश्वनाम
२	१४	वर्त्तते	गतिकर्मा	१	१२	वाः	उदकनाम
३	४	वरूथम्	गृहनाम	१	११	वाक्	वाङ्नाम
४	२	वन्दी	पदनाम	५	५	वाक्	पदनाम
३	७	वर्पः	रूपनाम	३	१५	वाघतः	मेधाविनाम
३	४	वर्म	गृहनाम	३	१८	वाघतः	ऋत्विङ्नाम
१	१३	वय्यः	नदीनाम	५	४	वाचस्पतिः	पदनाम
२	१०	वरिवः	धननाम	२	७	वाजः	अन्ननाम
१	१०	वराहः	मेघनाम	२	९	वाजः	बलनाम
४	२	वराहः	पदनाम	१	१४	वाजी	अश्वनाम
१	१०	वलः	मेघनाम	२	१७	वाजे	संग्रामनाम
१	१०	वलिशानः	,,	४	२	वाजगन्ध्यम्	पदनाम
१	११	वल्गुः	वाङ्नाम	५	६	वाजिनः	,,
२	१४	वल्गूयति	गतिकर्मा	१	८	वाजिनीवती	उषोनाम
३	१४	वल्गूयति	अर्चतिकर्मा	१	८	वाजिनी	,,
३	२३	वव्रः	कूपनाम	१	८	वाजिनीवती	,,
३	७	वव्रिः	रूपनाम	४	२	वाजपस्त्यम्	पदनाम
२	६	वश्मि	कान्तिकर्मा	३	१४	वाजयति	अर्चतिकर्मा
२	६	वष्टि	,,	२	१७	वाजसातौ	संग्रामनाम
१	७	वसौ	रात्रिनाम	२	१६	वाञ्छति	कान्तिकर्मा
१	७	वसु	,,	१	११	वाणः	वाङ्नाम
२	१०	वसु	धननाम	१	११	वाणी	,,
१	५	वसवः	रश्मिनाम	१	११	वाणीची	,,
५	६	वसवः	पदनाम	५	४	वाताः	पदनाम
१	७	वस्ना	रात्रिनाम	२	१४	वाति	गतिकर्मा
१	७	वस्नौ	,,	४	३	वताप्यम्	पदनाम
१	९	वस्तो	अहर्नाम	२	१५	वातरंहाः	क्षिप्रनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	खण्ड	वकारादयः	विषयः	अध्याय	खण्ड	वकारादयः	विषयः
३	८	वामः	प्रशस्यनाम	३	१५	विधाता	मेधाविनाम
५	४	वायुः	पदनाम	५	५	विधाता	पदनाम
३	१	व्यानसिः	बहुनाम	३	५	विधेम	परिचरणकर्मा
४	२	व्राः	पदनाम	२	४	विनङ्गृसौ	बाहुनाम
१	१२	वारि	उदकनाम	२	५	विपः	अङ्गुलिनाम
२	३	व्राताः	मनुष्यनाम	३	१५	विपः	मेधाविनाम
३	३	व्राधत्	महन्नाम	३	१५	विपन्युः	”
३	३	व्राधन्	”	३	१५	विपन्यवः	”
३	३	व्राधम्	”	३	१५	विप्रः	”
४	२	वार्यम्	पदनाम	३	१५	विपश्चित्	”
१	१४	वार्याणाम्	अश्वनाम	१	११	विपा	वाङ्नाम
१	१३	वार्वत्यः	नदीनाम	५	३	विपाट्छुतुद्री	पदनाम
४	२	वाश्यानः	पदनाम	१	१२	विपुः	उदकनाम
१	११	वाशी	वाङ्नाम	२	५	विश्वाः	अङ्गुलिनाम
४	१	वाशी	पदनाम	१	८	विभावरी	उषानाम
५	४	वास्तोष्पतिः	”	१	३	वियत्	अन्तरिक्षनाम
१	९	वासरम्	अहर्नाम	२	१९	वियातः	बधकर्मा
४	१	वाहः	पदनाम	४	१	वियुते	पदनाम
४	२	वाहिष्ठः	”	३	३	विरप्शी	महन्नाम
२	१७	विखादः	संग्रामनाम	२	५	विशः	अंगुलिनाम
३	१५	विग्रः	मेधाविनाम	२	१७	विवाक्	संग्रामनाम
३	११	विचर्षणिः	पश्यतिकर्मा	३	३	विवक्षसे	महन्नाम
३	११	विचष्टे	”	३	३	विविक्षिथः	”
४	३	विजामातुः	पदनाम	२	३	विवस्वन्तः	मनुष्यनाम
२	९	विट्	बलनाम	३	५	विवासति	परिचरणकर्मा
२	१०	वित्तम्	धननाम	२	३	विशः	मनुष्यनाम
३	१७	विदथः	यज्ञनाम	३	१	विश्वम्	बहुनाम
४	३	विदथानि	पदनाम	५	४	विश्वकर्मा	पदनाम
४	१	विद्रधे	”	३	११	विश्वचर्षणिः	पश्यतिकर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्या०	खण्ड०	वकारादयः	विषयः	अध्या०	खण्ड०	वकारादयः	विषयः
५	६	विश्वेदेवाः	पदनाम	२	९	वृजनम्	बलनाम
५	५	विश्वानरः	”	२	१९	वृणक्ति	वधकर्मा
५	६	विश्वानरः	”	२	१०	वृतम्	धननाम
१	१५	विश्वरूपा बृ-	आदिष्टोपयो-	२	१०	वृत्रम्	”
		हस्पतिः	जनानि	१	१०	वृत्रः	मेघनाम
१	१२	विषम्	उदकनाम	२	१७	वृत्रतूर्ये	संग्रामनाम
१	४	विष्टपम्	साधारणनाम	४	३	वृन्दम्	पदनाम
२	१	विष्टी	कर्मनाम	२	५	वृशः	अङ्गुलीनाम
२	१	विष्ट्वी	”	२	१९	वृश्चति	वधकर्मा
३	१७	विष्णुः	यज्ञनाम	३	२०	वृश्चति	दानकर्मा
४	२	विष्णुः	पदनाम	५	६	वृषाकपिः	पदनाम
५	६	विष्णुः	”	५	६	वृषाकपायी	”
४	१	विषुणः	”	१	१०	वृषन्धिः	मेघनाम
१	१०	विषन्धिः	मेघनाम	५	३	वृषभः	पदनाम
२	१४	विविष्टि	गतिकर्मा	२	६	वेति	कान्तिकर्मा
१	४	विष्टपम्	साधारणनाम	२	८	वेति	अत्तिकर्मा
२	६	विश्मति	कान्तिकर्मा	२	१४	वेति	गतिकर्मा
४	३	विस्रुहः	पदनाम	२	१०	वेदः	धननाम
३	३	विहायाः	महन्नाम	२	१४	वेदति	गतिकर्मा
२	२	वीजम्	अपत्यनाम	३	१५	वेधाः	मेधाविनाम
२	९	वीळु	बलनाम	३	१५	वेनः	”
४	२	वीरिटे	पदनाम	३	१७	वेनः	यज्ञनाम
४	३	वीरुधः	”	५	४	वेनः	पदनाम
२	९	वृक्	बलनाम	२	६	वेनति	कान्तिकर्मा
२	२०	वृकः	वज्रनाम	२	१४	वेनति	गतिकर्मा
३	२४	वृकः	स्तेननाम	३	१४	वेनति	अर्चतिकर्मा
४	२	वृकः	पदनाम	२	१	वेपः	कर्मनाम
३	१८	वृक्तवर्हिषः [यथाः	ऋत्विङ्नाम	२	८	वेवेष्टि	अत्तिकर्मा
३	१३	वृत्रस्यनुतेपुरुहूत	उपमानाम	२	१	वेशः	कर्मनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	खण्ड	वकारादयः	विषयः
२	६	वेशति	कान्तिकर्मा
२	१४	वेशिष्टि	गतिकर्मा
२	१	वेदः	कर्मनाम
२	६	वेष्टि	कान्तिकर्मा
२	१४	वेविष्टि	गतिकर्मा
२	६	वेसति	कान्तिकर्मा
३	२९	वेतसः	उत्तरपदनाम
५	१	वैश्वानरः	पदनाम
१	३	व्योम	अन्तरिक्षनाम
१	१२	व्योम	उदकनाम
१	६	व्योमा	दिङ्नाम
		श	
१	१२	शकम्	उदकनाम
२	१	शक्तिः	कर्मनाम
५	३	शकुनिः	पदनाम
२	१	शक्म	कर्मनाम
२	१	शक्मम्	"
२	४	शक्वरी	बाहुनाम
२	११	शक्वरी	गोनाम
३	१९	शग्धि	याच्ञाकर्मा
२	१	शग्म	कर्मनाम
३	६	शग्मम्	सुखनाम
३	६	शग्म्यम्	"
१	११	शची	वाङ्नाम
२	१	शची	कर्मनाम
३	९	शची	प्रज्ञानाम
३	१	शतम्	बहुनाम
३	६	शतरा	सुखनाम

अध्याय	खण्ड	शकारादयः	विषयः
२	१९	श्नथयति	बधकर्मा
१	११	शब्दः	वाङ्नाम
३	६	शम	सुखनाम
२	१	शमी	कर्मनाम
२	१९	शम्नाति	बधकर्मा
४	२	शम्बः	पदनाम
१	१०	शम्बरः	मेघनाम
१	१२	शम्बरम्	उदकनाम
२	९	शम्बरम्	बलनाम
४	२	शशमा	पदनाम
४	१	शंयो	"
३	४	शरणम्	गृहनाम
३	१०	श्रत्	सत्यनाम
२	१९	श्रथति	बधकर्मा
२	९	शर्द्धः	बलनाम
५	३	श्रद्धा	पदनाम
३	४	शर्म्म	गृहनाम
३	६	शर्म	सुखनाम
५	५	शर्मा	पदनाम
२	५	शर्य्या	अङ्गुलिनाम
४	२	शर्य्या	पदनाम
४	३	शरारुः	"
२	७	श्रवः	अन्ननाम
२	१०	श्रवः	धननाम
१	७	शर्वरी	रात्रिनाम
२	१९	श्नथति	बधकर्मा
२	९	शवः	बलनाम
२	१०	शवः	धननाम
४	२	श्वघ्नी	पदनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	रादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	शकारादयः	विषयः
		शवति	गतिकर्मा	३	७	शिल्पम्	रूपनाम
		शवति	परिचरणकर्मा	३	६	शिवम्	सुखनाम
	१९	श्वसति	बधकर्मा	३	६	शिंवाता	,,
२	१९	श्वसिति	,,	४	१	शिश्रीते	पदनाम
३	१४	शशमानः	अर्चतिकर्मा	३	७	शिष्पम्	रूपनाम
४	३	शशमानः	पदनाम	२	१५	शीभम्	क्षिप्रनाम
३	१	शश्वत्	बहुनाम	४	१	शीरम्	पदनाम
३	७	शष्पम्	रूपनाम	१	७	शीणा	रात्रिनाम
३	१४	शंसति	अर्चतिकर्मा	२	१५	शु	क्षिप्रनाम
२	६	शंसनत्	कान्तिकर्मा	१	१२	शुक्रम्	उदकनाम
२	५	शाखाः	अङ्गुलिनाम	२	१५	शुघनसाः	क्षिप्रनाम
३	६	शातपन्ता	सुखनाम	३	६	शुनम्	सुखनाम
१	१५	श्यावाःसवितुः	आदिष्टोपयोज-	५	३	शुनासीरौ	पदनाम
४	३	श्रायन्तः	पदनाम [नानि	१	१२	शुभम्	उदकनाम
२	१०	श्वात्रम्	धननाम	२	१५	शुरध्युः	क्षिप्रनाम
४	२	श्वात्रम्	पदनाम	४	३	शुरुधः	पदनाम
२	१४	श्वात्रति	गतिकर्मा	४	३	श्रुष्टी	,,
१	७	श्यावी	रात्रिनाम	२	९	शुष्णम्	बलनाम
४	३	शाशदानः	पदनाम	२	९	शुष्मम्	,,
३	२०	शिक्षति	दानकर्मा	२	१५	शूः	क्षिप्रनाम
४	१	शिताम	पदनाम	२	१५	शूघनाः	क्षिप्रनाम
४	१	शिप्रे	,,	२	१५	शूघनाशः	,,
४	३	शिप्रे	,,	२	१५	शूघीनासः	,,
२	१	शिमी	कर्मनाम	२	१५	शूर्त्ताः	,,
४	२	शिपिविष्टः	,,	२	१७	शूरसातौ	संग्रामनाम
१	७	शिरिणा	रात्रिनाम	२	९	शूषम्	बलनाम
४	३	शिरिम्बिठः	पदनाम	३	६	शूषम्	सुखनाम
३	६	शिलगुः	सुखनाम	१	१७	शृङ्गाणि	ज्वलतोनाम
२	१	शिल्पम्	कर्मनाम	२	१९	शृणाति	बधकर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	खण्ड	शकारादयः	विषयः
४	३	शृम्भाः	पदनाम
३	२९	शेपः	उत्तरपदनाम
५	५	श्येनः	पदनाम
१	१४	श्येनासः	अश्वनाम
३	६	शेवम्	सुखनाम
१	८	श्वेत्या	उषोनाम
३	६	शेवृधम्	सुखनाम
२	२	शेषः	अपत्यनाम
१	७	शोकी	रात्रिनाम
२	१४	श्चोतति	गतिकर्मा
१	१६	शोचति	ज्वलतिकर्मा
१	१७	शोचिः	ज्वलतोनाम
१	११	श्लोकः	वाङ्नाम
		ष	
२	१४	षःकति	गतिकर्मा
२	१४	ष्वःकति	”
२	१४	ष्वष्कति	”
		स	
[illegible]	[illegible]	सचति	गतिकर्मा
२	१७	सगमन्	संग्रामनाम
३	१८	सग्धि	याञ्चाकर्मा
१	३	सगमम्	अन्तरिक्षनाम
१	३	सगरः	”
२	१७	सङ्खे	संग्रामनाम
२	१७	संङ्ख्ये	”
२	१७	संयुगे	”
२	१७	संङ्गथे	”
२	१७	संङ्गमे	”
२	१७	सङ्गाः	”

अध्याय	खण्ड	सकारादयः	विषयः
२	१४	सचति	गतिकर्मा
३	२९	सचते	उत्तरपदनाम
४	२	सचा	पदनाम
२	६	संकृत्	कान्तिकर्मा
१	१२	सत्	उदकनाम
३	२९	सतः	उत्तरपदनाम
३	१०	सत्रा	सत्यनाम
१	१२	सतिनम्	उदकनाम
१	१२	सतीकम्	”
१	१२	सतीनम्	”
१	१२	सत्यम्	”
१	१२	सदनम्	”
१	१२	सद्म	”
२	१७	सद्म	संग्रामनाम
३	४	सद्म	गृहनाम
३	३०	सद्मनी	द्यावापृथिवी
३	३०	सदसी	”
४	३	सदान्वे	पदनाम
३	३०	सधे	द्यावापृथिवी
२	५	सनाभयः	अंगुलिनाम
३	२५	सनुतः	निर्णीतान्तर्हितनाम
३	२७	सनेमि	पुराणनाम
१	१७	स्वामन्	संग्रामनाम
१	५	सप्तऋषयः	रश्मिनाम
५	६	सप्तऋषयः	पदनाम
१	१४	सप्तिः	अश्वनाम
३	५	सपति	परिचरणकर्मा
३	१४	सपति	अर्चतिकर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	सकारादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	सकारादयः	विषयः
२	९	सान्द्रासः	बलनाम	२	१४	सर्पति	गतिकर्मा
४	३	सप्रथाः	पदनाम	१	१२	सर्पिः	उदकनाम
३	५	सपर्यति	परिचरणकर्मा	५	५	सरमा	पदनाम
३	१८	सबाधः	ऋत्विङ्नाम	३	१	सरिरम्	बहुनाम
२	१७	समत्सु	संग्रामनाम	१	१२	सर्वम्	उदकनाम
२	१७	समनम्	"	२	१४	स्रवति	गतिकर्मा
२	१७	समनीके	"	१	१३	स्रवन्त्यः	नदीनाम
२	१७	समरणे	"	१	१३	सरस्वत्यः	"
२	१७	समर्ये	"	१	११	सरस्वती	वाङ्नाम
४	२	समस्य	पदनाम	५	५	सरस्वती	पदनाम
२	१७	समितिः	संग्रामनाम	५	४	सरस्वान्	"
२	१७	समिथे	"	२	१४	स्रंसति	गतिकर्मा
२	१७	समीके	"	२	१४	स्रंसते	"
२	१७	समीथे	"	२	१४	सर्स्रते	"
१	३	समुद्रः	अन्तरिक्षनाम	१	१२	सलिलम्	उदकनाम
५	६	समुद्रः	पदनाम	३	१	सलिलम्	बहुनाम
२	१७	समोहे	संग्रामनाम	४	३	सललूकम्	पदनाम
२	१७	सम्मोहे	"	१	४	स्वः	साधारणनाम
२	१७	संयत्	"	१	१२	स्वः	उदकनाम
२	१७	संयुगे	"	४	२	स्वघ्नाः	पदनाम
२	१४	स्यन्दते	गतिकर्मा	२	१७	संवतम्	संग्रामनाम
२	१४	स्यन्दयति	"	२	१७	सुंवतः	"
२	१४	स्यमति	"	५	४	सविता	पदनाम
१	११	सरः	वाङ्नाम	५	६	सविता	"
१	१२	सरः	उदकनाम	३	१४	स्वदति	अर्चतिकर्मा
१	१२	सर्गाः	"	१	१२	स्वधा	उदकनाम
१	१२	सर्णीकम्	"	२	७	स्वधा	अन्ननाम
५	६	सरण्यूः	पदनाम	२	२०	स्वधितिः	वज्रनाम
१	१३	सरितः	नदीनाम	३	२०	स्वधे	द्यावापृथिवी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	सकारादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	सकारादयः	विषयः
१	११	स्वनः	वाङ्नाम	२	१५	सार्चिवित्	विप्रनाम
३	१७	सवीनम्	यज्ञनाम	२	१५	साचीवित्	"
३	१४	स्वपिति	अर्चतिकर्मा	२	१५	साचीवत्	"
३	२२	स्वपिति	स्वपतिकर्मा	१	१६	स्तामुः	स्तोतृनाम
१	३	स्वयम्भूः	अन्तरिक्षनाम	१	५	साध्याः	रश्मिनाम
४	३०	सवीमनि	पदनाम	५	६	साध्याः	पदनाम
१	१२	स्वर्णीकम्	उदकनाम	२	२०	सायकः	वज्रनाम
१	११	स्वरः	वाङ्नाम	१	११	स्वाहा	वाङ्नाम
२	१४	स्वरति	गतिकर्मा	५	२	स्वाडाक्षतयः	पदनाम
३	१४	स्वरति	अर्चतिकर्मा	१	१३	सिन्धवः	नदीनाम
३	२२	स्वस्ति	स्वपितिकर्मा	४	३	स्तिपाः	पदनाम
५	५	स्वस्तिः	पदनाम	४	३	स्तिपानाम्	"
१	९	स्वसराणि	अहर्नाम	२	७	सिनम्	अन्ननाम
३	४	स्वसराणि	गृहनाम	४	२	सिनम्	पदनाम
४	४	स्वसराणि	पदनाम	५	५	सिनीवाली	"
२	५	स्वसारः	अंगुलिनाम	१	१२	सिरा	उदकनाम
२	१४	सश्चति	गतिकर्मा	३	२९	सिषक्ति	उत्तरपदनाम
२	७	ससम्	अन्ननाम	३	२९	सिषक्तु	"
४	२	ससम्	पदनाम	२	१४	सिस्रति	गतिकर्मा
३	२२	सस्ति	स्वपितिकर्मा	२	१४	सिसर्ति	"
४	२	सस्निम्	पदनाम	२	७	सीनम्	अन्ननाम
२	१४	सस्रति	गतिकर्मा	४	२	सीम्	पदनाम
२	१४	संस्रति	"	२	१४	सीयते	गतिकर्मा
१	१३	सस्रुतः	नदीनाम	१	१३	सीराः	नदीनाम
३	२५	सस्वः	निर्णीतान्तर्हितनाम	३	१२	सुकम्	सर्वपदसमाम्नायः
१	१२	सहः	उदकनाम	१	१२	सुक्षेम	उदकनाम
२	९	सहः	बलनाम	१	१२	सुखम्	"
३	१	सहस्रम्	बहुनाम	३	६	सुगम्यम्	सुखनाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यायः	खण्डः	सकारादयः	विषयः	अध्यायः	खण्डः	सकारादयः	विषयः
३	१६	सुत्	स्तोतृनाम	१	८	सूनृतावती	"
२	७	सुतः	अन्ननाम	३	६	स्यूमकम्	सुखनाम
२	७	सुतम्	"	१	१२	सूरा	उदकनाम
४	१	सुतुकः	पदनाम	३	१६	सूरिः	स्तोतृनाम
३	१६	स्तुप्	स्तोतृनाम	५	६	सूर्यः	पदनाम
५	३	सुदत्रः	पदनाम	१	११	सूर्या	वाङ्नाम
३	६	सुदिनम्	सुखनाम	५	६	सूर्या	पदनाम
३	८	सुनीथः	प्रशस्यनाम	२	२०	सृकः	वज्रनाम
५	४	सुपर्णः	पदनाम	४	२	सृणिः	पदनाम
१	११	सुपर्णी	वाङ्नाम	२	१९	स्तृणाति	वधकर्मा
१	५	सुपर्णाः	रश्मिनाम	३	२९	स्तृभिः	उत्तरपदनाम
१	१४	सुपर्णाः	अश्वनाम	२	१७	स्पृधः	संग्रामनाम
४	१	सुप्रायणाः	पदनाम	४	३	सृप्रः	पदनाम
१	११	सुपर्णी	वाङ्नाम	१	१२	स्तृतीकम्	उदकनाम
२	१९	स्फुरति	वधकर्मा	२	१४	स्रेधति	गतिकर्मा
२	१९	स्फुलति	"	२	१९	स्नेहति	वधकर्मा
४	३	सुमत्	पदनाम	२	१९	स्नेहयति	"
३	६	सुम्नम्	सुखनाम	१	५	स्वेदयः	रश्मिनाम
१	८	सुम्नावरी	उषोनाम	३	१४	स्तोभति	अर्चतिकर्मा
१	१२	सुरा	उदकनाम	५	५	सोमः	पदनाम
४	१	सुविते	पदनाम	४	३	सोमानम्	"
४	३	सुविदत्रः	"	४	२	सोमोऽअच्छाः	"
४	३	सुशिप्रः	"	३	६	स्योनम्	सुखनाम
२	५	सुहस्त्यः	अङ्गुलिनाम	१	१२	स्रोतः	उदकनाम
३	२३	सूदः	कूपनाम	१	१३	स्रोत्याः	नदीनाम
२	२	सूनुः	अपत्यनाम	३	१४	स्तौति	अर्चतिकर्मा
१	८	सूनरी	उषोनाम			ह	
	८	सूनृता	"	१	१७	हरिणः	ज्वलतोनाम
		सूनृता	अन्ननाम	२	१४	हनति	गतिकर्मा
		सूनृतावरी	उषोनाम	२	१४	हन्तात्	"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	खण्ड	हकारादयः	विषयः	अध्याय	खण्ड	हकारादयः	विषयः
	१४	हन्ति	,,	५	३	हविः	पदनाम
	१४	हम्मति	,,	५	३	हविर्धाने	,,
	१४	हम्यति	,,	५	३	हस्तघ्नः	,,
	१४	हयः	अश्वनाम	१	१४	हंसासः	अश्वनाम
	१४	हयति	,,	१	१४	हार्याणाम्	,,
२	१४	हयन्तात्	गतिकर्मा	४	२	हासमाने	पदनाम
१	१७	हरः	ज्वलतोनाम	३	१२	हिकम्	सर्वपदसमाम्नायः
२	१३	हरः	क्रोधनाम	४	३	हिनोत	पदनाम
४	१	हरः	पदनाम	१	७	हिम	रात्रिनाम
३	४	हर्म्यम्	गृहनाम	१	७	हिमा	,,
२	३	हरयः	मनुष्यनाम	१	२	हिरण्यम्	हिरण्यनाम
४	२	हरयाणः	पदनाम	१	१३	हिरण्यवर्णाः	नदीनाम
२	६	हर्यति	कान्तिकर्मा	३	१५	हिरुक्	निर्णीतान्तर्हितनाम
२	१४	हर्यति	गतिकर्मा	३	२४	हुरश्चित्	स्तेननाम
२	१४	हर्यन्ताम्	,,	१	१७	हृणिः	ज्वलतोनाम
३	२	ह्रस्वः	ह्रस्वनाम	२	१३	हृणिः	क्रोधनाम
१	१३	हरस्वत्यः	नदीनाम	२	१२	हृणीयते	क्रुध्यतिकर्मा
१	६	हरितः	दिङ्नाम	२	१३	हेडः	क्रोधनाम
१	१३	हरितः	नदीनाम	२	१२	हेडते	क्रुध्यतिकर्मा
२	५	हरितः	अङ्गुलिनाम	२	२०	हेतिः	वज्रनाम
१	१५	हरितआदित्यस्य	आदिष्टोपयोजनानि	१	२	हेम	हिरण्यनाम
१	१५	हरी इन्द्रस्य	,,	१	१२	हेम	उदकनाम
२	८	ह्वयति	अत्तिकर्मा	१	२	हेमा	हिरण्यनाम
३	१४	ह्वयति	अर्चतिकर्मा	१	१२	हेमा	उदकनाम
३	१४	ह्वयते	,,	१	११	होता	वाङ्नाम
२	१३	ह्वरः	क्रोधनाम	३	१७	होत्रा	यज्ञनाम
२	८	ह्वरति	अत्तिकर्मा				
१	१२	हविः	उदकनाम				

इति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ निघण्टोः शुद्धिपत्रम् ॥

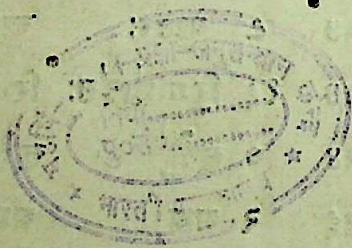
पृ०	पं०	अशुद्धम्	शुद्धम
९	१३	०	में
१	१९	योगिक	यौगिक
८	९	सर्वम्	सर्वम्
८	१०	पवित्रम्	पवित्रम्
९	१	सस्रुतः	सस्रुतः
९	८	ह्वार्याणाम्	ह्वार्याणाम्
९	१	ऋतावर्य्यः	ऋतावर्य्यः (नोट)
१०	१५	अभीशु	अभीशू
१०	२	कर्त्तुम्	कर्त्तुम् (नोट)
११	०	अ० १।	अ० २।
११	३	जामयः	जामयः
११	२	सस्रुतः	सस्रुतः (नोट)
११	७	सुतम्	सुतम् (नोट)
१२	०	अ० १	अ० २
१२	५	बैलि	बैल
१२	८	वृन्द्रियम्	वृन्द्रियम्
१२	१७	१२	१३
१२	४	हृणीयते	हृणीयते (नोट)
१३	५	दभ्नोति	दभ्नोति (नोट)
१५	४	अस्तमीके	अतमीके
१५	९	पृत्सु	पृत्सु

पृ०	पं०	अशुद्धम्	शुद्धम्
१७	९	ववंक्षसे	विवंचसे
१७	१२	दुरोणे	दुरोणे
१९	५	भगम्	भगो
१८	११	भन्दति	भन्दते
२०	१२	बर्हिषः	बर्हिषः
२०	२	मनुष्याः	मनुष्याः (नोट)
२१	१२	अद्य	अघ
२१	१	हस्वति	हस्वति (नोट)
२२	१	सिषक्ति	सिषक्ति (नोट)
२३	३	मध्या	मध्या
२४	९	सृभ्वाः	निसृभ्वाः
२४	९	ऋदरः	ऋदूदरः
२४	१६	रिशादसः	रिशादसः
२४	७	सूर्त्तौ	सूर्त्तौ
२६	२	अश्वा	अश्वा
२७	७	२ २४	३ २४
२८	२८	४ ३	४ २
२८	४१	अल्पम्	अल्पकम्
३२	०	क्रणिका	क्रमणिका
३९	७	ह्रदनात्	ह्रदमानात्
४०	७	नान	नाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

पृ०	पं०	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृ०	पं०	अशुद्धम्	शुद्धम्
४०	३५	क्षय	क्षयः	४७	२७	पुरन्धि	पुरन्धौ
४१	११	क्षिप्रकर्मा	क्षिप्रनाम	४८	१९	पृणाति	पृणाति
४२	३६	२।१४	३।१९	५९	४२	सुनासीरौ	शुनासीरौ
४२	३७	३।१९ द्यति	२।१४ द्यति	५९	४४	सुरण्युः	शुरण्युः
४३	२०	१।६	१।९	५९	४५	सुरुधः	शुरुधः
४३	२१	„	पदनाम	६०	५२	स्यामन्	स्यगमन्
४५	१९	निर्णि	निर्णी	६४	२०	अङ्गुल	अङ्गुलि

इति



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.